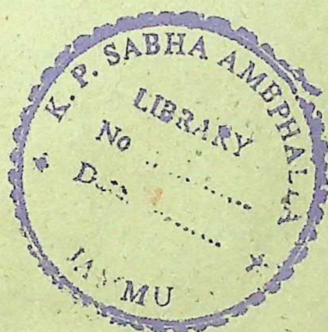
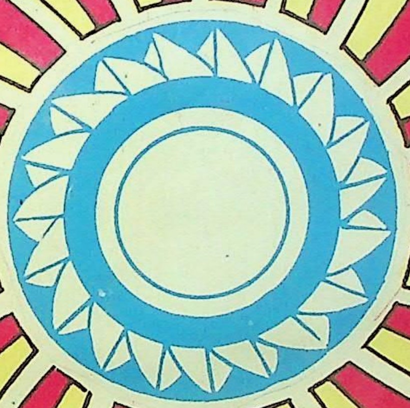
NMENT SERVICE





जिनवाणी



म्बर-1991 मार्गशीर्ष-२०४८



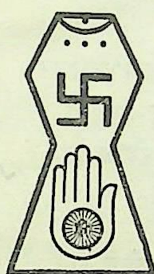
सम्यग्ज्ञान

जीवन को सुन्दर बनाने के लिये आवश्यक है कि जीवन में सम्यग्ज्ञान की ज्योति जगे। सम्यग्ज्ञान की ज्योति जगेगी तो विचारों में परिवर्तन आएगा और लगेगा कि धर्म परलोक की चीज नहीं है।

—पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा.

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा, कल्याणी ।
द्रोह, मोह, छल, मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ।।



विवादं च उदीरेई,
अहम्मे अत्तपन्नहा ।
वुग्गहे कलहे रत्ते,
पावसमणे त्ति वुच्चई ।।

—उत्तराध्ययन १७/१२

जो शान्त हुए विवाद को पुनः उखाड़ता है, जो अधर्म में अपनी प्रज्ञा का हनन करता है, जो कदाग्रह (विग्रह) तथा कलह में व्यस्त है, वह पापश्रमण कहलाता है ।

दिसम्बर, १९९१
वीर निर्वाण सं० २५१८
मार्गशीर्ष, २०४८

वर्ष : ४८ अंक : १२

मानद सम्पादक :
डॉ० नरेन्द्र भानावत, एम.ए.,पी-एच.डी.

सम्पादन :
डॉ० (श्रीमती) शान्ता भानावत
एम.ए., पी-एच.डी.

संस्थापक :
श्री जैनरत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक :
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
बापू बाजार दुकान नं० १८२-१८३ के ऊपर
जयपुर–३०२००३ (राजस्थान)
फोन : ५६५९९७

सम्पादकीय सम्पर्क सूत्र :
सी-२३५ ए, दयानन्द मार्ग, तिलक नगर
जयपुर–३०२००४ (राजस्थान)
फोन : ४७४४४

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं० ३६५३/५७

स्तम्भ सदस्यता : १००१ रु०
संरक्षक सदस्यता : ५०१ रु०
आजीवन सदस्यता : देश में २५१ रु०
आजीवन सदस्यता : विदेश में ७५१ रु०
त्रिवर्षीय सदस्यता : ५५ रु०
वार्षिक सदस्यता : २० रु०

मुद्रक :
फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
जयपुर–३०२००३

अनुक्रमणिका

☐ प्रवचन/निबन्ध ☐

कामना-विजय और सत्य-पालन	: आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा.	१
जैनागमों में वनस्पति विज्ञान	: अ.प्र. मुनि श्री कन्हैयालालजी म. 'कमल'	६
घुटन का आत्म-समर्पण	: महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर	११
सत्संगति का महत्त्व	: सुश्री प्रकाशलता बोर्दिया	२१
विश्व शान्ति और जैन धर्म	: डॉ. सन्तोषकुमारी जैन	२३

☐ कथा/प्रसंग/सूक्ति ☐

सच्ची भक्ति	: श्री कन्हैयालाल गौड़	२०
दयालु राजा	: श्री बलवन्तसिंह हाड़ा	२५
स्वाध्याय चिन्तन	: श्री ललितकुमार कोठारी	३८
क्रूर पशु भी दयालु होते हैं [६४]	: श्री राजेन्द्रप्रसाद जैन	४४
सामायिक किसलिए ?	: कुमारी आशा जैन	५१
पर्युषण पर्वाराधन प्रतिवेदन	: श्री चौरड़िया एवं डोसी	५२

☐ महिला-स्तम्भ ☐

आधुनिक भारतीय नारी : एक दृष्टि	: ललित सिंघवी	२६

☐ प्रश्नमंच कार्यक्रम [५८] ☐

प्रमाद	: श्री पी. एम. चौरड़िया	३०

☐ कविता ☐

आचार्य बत्तीसी	: सं० श्री भँवरलाल बोथरा	१७
चुने हुए मुक्तक	: साध्वी प्रियदर्शना 'प्रियदा'	२९

☐ स्तम्भ ☐

अपनी बात :		
बहता पानी निर्मला	: डॉ. नरेन्द्र भानावत	iii
साहित्य-समीक्षा :		
'जिनवाणी' का श्रद्धांजलि विशेषांक	: अनुपमा कर्णावट	३९
समाज-दर्शन	: संकलित	६४
साभार प्राप्ति स्वीकार	: मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल	७४

अपनी बात



बहता पानी निर्मला

☐ डॉ. नरेन्द्र भानावत

संतों का जीवन निर्मल, निर्विकार और निर्द्वन्द्व होता है। वे सतत जागरूक और क्रियाशील रहते हैं। उनका किसी के प्रति राग-द्वेष नहीं होता। वे अपने आत्म-स्वभाव में सदैव रमण किया करते हैं। सत्य के प्रति उनकी अगाध निष्ठा होती है और उसी की खोज में उनकी साधना निरन्तर गतिशील रहती है। उन्हें ठहराव पसन्द नहीं। वे किसी जाति, कुल, वर्ण, रंग की सीमा में बन्धे नहीं रहते। उनके चिन्तन में स्वतन्त्रता और व्यवहार में समानता बनी रहती है। अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ते रहने में ही वे अपने जीवन की सार्थकता मानते हैं।

संत-जीवन को गंगा की उपमा दी गई है। गंगा का पानी निरन्तर बहते रहने के कारण निर्मल बना रहता है। कैसा भी पानी उसके सम्पर्क में आये, वह निर्मल बन जाता है। गंगा अपने उद्गम से बहती हुई अपने में नाना जड़ी-बूंटियों का, पेड़-पौधों का रस मिलाये, पर्वतीय प्रदेशों का खनिज लवण मिलाये, नाना प्रकार के रसायन मिलाये वहती रहती है। उसके स्वभाव में निर्मलता और बहाव में सरसता है। संत भी समन्वय और सामंजस्य का स्वभाव लिये रहते हैं। बिविधता में एकता का दर्शन कर वे मानव-मानव को ही नहीं वरन् प्राणिमात्र को मित्र-दृष्टि से देखते हैं।

संतों की चर्या इस प्रकार रहती है कि वे संसार में रहते हुए भी अपने को कमलवत बनाये रखें। सत्य के प्रति संगति ही उनका जीवन है। जैन संतों का जीवन तो सचमुच आश्चर्यकारी है। इन्द्रियजयता के वे आदर्श हैं। उनका अपना कोई घर नहीं होता। जीवन-निर्वाह के लिए खाद्य आदि पदार्थों का वे संग्रह नहीं करते। अपने पास कोई पैसा आदि नहीं रखते, किसी वाहन का उपयोग नहीं करते। उनका अपना कोई निश्चित आवास, गाँव या नगर नहीं होता न सांसारिक परिवार होता है। वे वस्तु और व्यक्ति के ममत्व से दूर होते हैं। उनका जीवन श्रमनिष्ठ और स्वावलम्बी होता है।

संत सत्य और अहिंसा के उपासक होते हैं। मन, वचन और कर्म से वे एकरूप होते हैं और सबके कल्याण की कामना करते हैं। वे किसी का बुरा

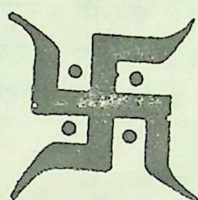
नहीं सोचते हैं, न किसी को मन, वचन, काया से कष्ट पहुँचाते हैं। उनकी प्रत्येक चर्या में अहिंसा और विवेक अनुस्यूत रहता है। उठने-बैठने, चलने-फिरने, खाने-बोलने में किसी प्रकार की असावधानी न हो, उसके लिए वे सदैव जागरूक रहते हैं।

पावस ऋतु में जीवों की विशेष उत्पत्ति होती है। स्थान-स्थान पर पेड़, पौधे, घास आदि उग आती हैं। नदी-नाले उफन पड़ते हैं। इस कारण संतों के लिए व्यवस्था है कि वे चार माह का वर्षावास एक नियत स्थान पर बितायें। इससे जीव-रक्षण में उन्हें मदद मिलती है, साथ ही ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय, साधना के लिए विशेष अवसर मिल पाता है। पर वर्षावास के बाद सामान्य अवस्था में एक स्थान पर ठहरने का विधान नहीं है। उन्हें तुरन्त विहार कर देनां चाहिए। किसी वस्तु, व्यक्ति के प्रति आसक्ति न पैदा हो, इस दृष्टि से भी वर्ष के आठ माह विहार करते रहने का विधान किया गया है। जिस प्रकार एक जगह बराबर रहने से पानी पवित्र नहीं रह पाता है, वह बन्ध जाता है। उसकी पवित्रता और निर्मलता के लिए यह जरूरी है कि पानी निरन्तर बहता रहे। संतों के विषय में भी यही बात है—बहता पानी निर्मला।

लोक-कल्याण की दृष्टि से भी संतों का निरन्तर विचरण करते रहना आवश्यक है। संसार के सामान्य प्राणी मोह, माया, प्रपंच में उलझे रहते हैं। खाना-पीना और मौज करना जैसी भावना से उनकी चेतना निम्न स्तर पर बनी रहती है। उनकी चेतना को ऊर्ध्वमुखी बनाने, उनमें मानवीय सद्भावनाओं को विकसित करने, उनकी सुषुप्त दिव्य शक्तियों को जागृत करने में संतों की भूमिका बड़ी प्रभावकारी होती है। वर्षावास में संतों की जो ज्ञान-गंगा एक नियत स्थान पर बँधी रहती है वह वर्षावास के बाद जन-जन के द्वार के लिए फूट पड़ती है, बह चलती है।

अब यह समय आ गया है। संतों की ज्ञान-गंगा आपके ग्राम और नगर की ओर बह रही है। आप उसमें अवगाहन करें। आपके चिन्तन और व्यवहार में जहाँ भी दोष है, त्रुटि है, अशुद्धि है, उसको शुद्ध करें, सम्यक् बनायें। यह गंगा सबके लिए है। जहां-जहाँ अँधेरा है वहाँ यह प्रकाश करती है। जहाँ निराशा है वहाँ आशा का संचार करती है। जहाँ क्लेश-विग्रह है वहाँ करुणा और अनुग्रह का अनुराग बिखेरती है। इस गंगा में ऐसी ताकत है कि वह बिखरे हृदयों को जोड़ती है। प्रतिकार को प्यार में बदलती है। आज सर्वत्र भय, हिंसा और आतंक का वातावरण है। ऐसी परिस्थिति में इस गंगा के तट पर आप आयें। इसके जल का आचमन करें, इसके अन्तस् में अवगाहन करें। दूर खड़े न रहें। यदि यह अवसर खो दिया तो फिर पछतायेंगे। वस्तु से व्यक्ति बनाने की कला है संतों की संगति। इनका संग ही सच्चा सत्संग है। □ □ □

प्रवचनामृत



कामना-विजय और सत्य-पालन*

☐ आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा०

साधना के क्षेत्र में कुछ साधक और कुछ बाधक कर्म होते हैं। यदि साधक, साधक कर्म को स्वीकार करे तो सुख, शान्ति और यदि बाधक कर्म करे तो दुःख और अशान्ति होगी। शास्त्र की भाषा में इसी को उपादेय और हेय कहते हैं। बाधक कर्मों में अनेक विकार रहते हैं, जो साधना में व्यवधान, रुकावट उपस्थित करते हैं, जिनमें भय और लोभ ये दो प्रमुख हैं।

ये दोनों विकार साधना के क्षेत्र में साधक को आगे बढ़ने से रोकते हैं। परमार्थ की साधना तो बहुत ऊँची है, किन्तु व्यवहार साधना में भी ये दोनों बाधक हैं। यदि कोई लोभवश अर्थ संचय करना चाहे तो उसे भी भय का सामना करना पड़ता है और अर्थ-संचय के बाद भी जीवन भर उसके संरक्षण का भय तन-मन पर सवार रहता है। फिर भी उसको जीतना आसान है किन्तु लोभ को जीतना उतना आसान नहीं है। लोभाधीन प्राणी मौत का भी मुकाबला करते देखा जाता है।

बड़े-बड़े महाजन लोभ के वश में होकर सब कुछ बर्बाद कर लेते हैं और पीढ़ियों की कमाई अतुल धनराशि लोभ की वेदी पर भेंट चढ़ा कर, फकीर हो जाते हैं। इस सम्बन्ध के सैकड़ों उदाहरण आप सबके सामने होंगे कि किस तरह रोज घर में दीवाली जलाने वाले जन लोभवश सट्टे और जुए में अपना दिवाला निकाल लेते हैं तथा ऊँचे-ऊँचे महलों में रहने वाले प्रियजनों को झोंपड़ी में रहने को विवश कर देते हैं।

अतएव भगवान् महावीर स्वामी ने कहा—कामना को वश में करो। कामना के कारण ही मनुष्य विविध जन्म-मरण करता और अनचाहे भी दुःख प्राप्त करता है। कामना पर विजय दुःख पर विजय है। जैसाकि शास्त्र में कहा है—'कामे कमाहि कमियं खु दुक्खं।' द. २ ॥ कामना की विजय दुष्कर प्रतीत होती

*आचार्य श्री के प्रवचन से संकलित।

है, क्योंकि उसके लिए तन, मन, वाणी पर संयम करना पड़ता है। आनन्द ने कामना पर विजय प्राप्त करते हुए मन, वचन, काया से स्थूल हिंसा करने एवं कराने का त्याग कर लिया। हर एक पाप तीन प्रकार से होता है, करना, कराना और करने वाले को प्रोत्साहित करना, प्रशंसा करना। मनुष्य स्वयं पाप करता है, उसकी अपेक्षा कराने में सैकड़ों गुणा अधिक कर लेता है। अतः अनुमोदन नहीं त्यागने की स्थिति में भी, करने, कराने का त्याग किया है।

परिहार्य और अपरिहार्य रूप हिंसा में भी श्रावक को परिहार्य के बाद अपरिहार्य त्याग का धीरे-धीरे अभ्यास बढ़ाना चाहिए। यह पहला व्रत है। इसके बाद साधना क्षेत्र में दूसरा स्थान सत्य का आता है। साधना में अगर अहिंसा वायु की तरह आवश्यक है तो सत्य को भी पानी की तरह प्राण रक्षक समझना चाहिए। सत्य से विचलित कोई भी साधना सफल नहीं होती। मगर पूर्वाचार्यों ने बतलाया कि अहिंसा के पालन में सत्य आदि व्रत स्वयं आ जाते हैं। क्योंकि जहाँ हिंसा है, वहाँ सत्यादि व्रत नहीं रह सकते।

झूठ, चोरी, कुशील आदि भी एक प्रकार से हिंसा है। देखिए झूठ बोलने वाला अपनी हत्या करता है अर्थात् सत्य बोलना आत्मा का स्वभाव है और इस दृष्टि से झूठ बोलना उसकी हत्या हुई। फिर नकली को असली और असली को नकली बना कर कहने वाला मिथ्याभाषी, किसी भी पदार्थ के सही रूप का हनन करता है। अतः झूठ बोलने वाला वाणी से हिंसा का कारण बनता है।

स्थूल और सूक्ष्म भेद से भी असत्य–झूठ दो प्रकार का है। साधक के लिए यदि सर्वथा त्याग सम्भव न हो तो भी उसे झूठ की मर्यादा तो करनी होगी, ऐसे झूठ से बचना होगा जिससे कि दूसरे की हानि हो।

संसार के सभी धार्मिक सम्प्रदायों ने एक स्वर से हिंसा की तरह झूठ को भी त्याज्य माना है। जगत् में लाखों का लेनदेन सत्य से होता है। यदि भरोसा नहीं निभाया गया तो मनुष्य विश्वासघाती समझा जायगा और झूठ से उसका विश्वास समाप्त हो जायगा। इसलिए सद्गृहस्थ को स्थूल असत्य से बचना आवश्यक है।

सत्य सदाचार की पालना में सत्संग की तरह बाल-काल के संस्कारों का भी बड़ा हाथ है। एक साधु को एक बार सजीव भिक्षा (बालक के रूप में) प्राप्त हुई। साधु ने भिक्षा लाकर गुरु को बतलाई। भिक्षा-पात्र भारी था, अतएव उस बालक का नाम वज्रकुमार रखा गया। अब बच्चे का लालन-पालन कैसे हो? यह समस्या सामने आई, क्योंकि मंडली साधु की थी। आखिर

साध्वियों के द्वारा बालक शय्यातरी के संगोपन में रख दिया गया। उसी के घर में साधुओं का भी डेरा था। उस बच्चे को जन्म घूंटी धर्म की मिलती रही।

कुछ दिनों के बाद बच्चे को खुशहाल देख कर उसकी असली माँ उसे लेने आई किन्तु साधु मण्डली बालक देने को तैयार नहीं हुई, जिससे विवाद खड़ा हुआ। राजा के समक्ष निर्णय के लिए यह प्रकरण रखा गया। जन्म देने वाली माँ विविध प्रकार के खिलौने, मिठाई आदि लेकर आई और संघ की ओर से शय्यातरी रजोहरण, मुँहपत्ती पुस्तक, आसन, माला (सुमरनी) आदि धार्मिक उपकरण लेकर आयी। दोनों सामग्रियों के बीच बच्चे को रखा गया। बच्चा धार्मिक उपकरण की ओर बढ़ा और उसने खिलौनों की ओर मुंह फेर कर भी नहीं देखा।

तात्पर्य यह कि एक अबोध बच्चा भी धार्मिक संस्कारों के कारण खिलौनों को छोड़ कर धार्मिक उपकरणों की ओर बढ़ा। यदि इसी प्रकार माताएँ अपने बच्चों में जन्म से ही धार्मिक और अच्छे संस्कार डालें तो आगे चलकर बच्चों को अपना जीवन ऊँचा उठाने में कोई दिक्कत नहीं होगी।

भगवान् महावीर स्वामी ने आनन्दादि को सम्बोधित करके बड़े झूठ के पाँच प्रकार बतलाये हैं—

१—**कन्यालीक**—कन्या का सम्बन्ध बनाने में झूठ बोलना, कन्या के दोषों को छिपाकर, अच्छा बताना, वय में छोटी को बड़ी और बड़ी को छोटी कहना आदि इस प्रकार यदि वैवाहिक सम्बन्ध किया तो झूठ बोलने का पातक लगेगा तथा कन्या भी अपने ससुराल में सुखमय जीवन नहीं व्यतीत कर सकेगी। कन्या की तरह बच्चे के लिए भी समझना। लोग स्वार्थवश दूसरे की हानि का भी विचार नहीं करते। एक भाई ने किसी जानकार से पूछा कि यह लड़का कैसा है? अपनी बाई का सम्बन्ध करना है। उसने कहा पढ़ा लिखा होशियार तो है। मगर मृगी का दौरा होता है। बिचारा उम्मीदवार धरा रह गया। यह बड़ा झूठ है। नौकरी आदि में भी बात करने का अवसर आ सकता है। श्रावक का कर्तव्य है कि दूसरे को धोखे में न डाले और किसी का अहित हो, ऐसा भी न कहे।

२—**गवालीक**—गाय, भैंस आदि पशु के सम्बन्ध में झूठ बोलना भी बड़ा असत्य है। दुधारु गाय, भैंस को खराब या खराब को दुधारु बताना, धोखा देकर गाय, भैंस, बैल, घोड़ा आदि जानवरों को दूसरे के गले लगाना झूठ है।

३—**भौमालीक**—पराई जमीन को अपनी बताकर ले लेना या टैक्स बचाने के लिए अपनी को पराई कहना।

४—**न्यासापहार**—दूसरे की रकम (रुपये पैसे आदि) को हड़पने की बुद्धि से झूठ बोलना, इधर-उधर की बात कर टालना आदि।

५—**झूठी साक्षी**—न्यायालय, पंचायत आदि में स्वार्थवश झूठी गवाही देना, असत्य को सत्य और सत्य को असत्य बतलाना।

गृहस्थ का धर्म है कि वह दूसरे के हानिकारक बड़े झूठ को कभी नहीं बोले। बहुत बार खाकर न आने पर भी 'भोजन कर लिया' ऐसा कहना, ठहरने की स्थिति नहीं है, कहकर ठहर जाना आदि छोटे-छोटे झूठ भी मनुष्य अनावश्यक रूप से बोल जाता है। यों तो सभी प्रकार के झूठ वर्जित एवं निन्दित हैं किन्तु यदि सम्पूर्ण झूठ छोड़ने को शक्ति न हो, तो बड़े झूठ से तो बचना ही चाहिए।

देवालय की ध्वजा और गाड़ी के चक्के के समान अपनी बातों को हमेशा बदलने वाले मर्द (व्यक्ति) दु:खमय जीवन व्यतीत करते तथा अपनी आत्मा को दूषित कर लेते हैं। लोक में उनकी प्रीति और प्रतीति कम हो जाती है। सत्य का पालन करने वाला जीवन में सदा सुखी रहता है। अतएव कवि ने बड़ा ही उत्तम परामर्श दिया है—

ना नर गजां नापिये, ना नर लीजे तोल।
'परशुराम' नर नार का, बोल बोल में बोल॥

मनुष्य की कीमत उसकी वाणी से है। नाप-तोल से उसकी कीमत नहीं होती। सत्य की महिमा ही वाणी में निहित है। गृहस्थ आनन्द सत्य का संकल्प लेकर बड़े ही सम्माननीय व्यक्ति बन गये।

यदि कोई सेठ स्वयं झूठ का त्याग करे किन्तु मुनीम को झूठ बोलने की छुट दे दे, तो यह भी सेठ के लिए स्वयं झूठ बोलने के समान पापपूर्ण है। थोड़े लाभ के लिए, झूठ बोलकर अपने जीवन को लांछित करना, शोभनीय नहीं होता। लेन-देन में सौदेबाजी (मोलभाव घट बढ़कर करना) भी ग्राहक और व्यापारी दोनों के लिए परेशानी का कारण है। सौदेबाजी से दूर रहने पर ग्राहक और व्यापारी दोनों का समय बच जाता है और अनावश्यक झूठ बोलने से भी छुटकारा मिल जाता है।

यदि झूठ से व्यवहार अशुद्ध होगा, तो प्रामाणिकता के अभाव में पूजा-पाठ आदि भी लांछित होंगे। शुभ कर्म करने वाले पर आक्षेप की अधिक सम्भावना रहती है। संसार का नियम है कि जो उजला वस्त्र होगा, उसमें दाग जल्दी नजर आता है, किन्तु जो वस्त्र पहले से काला है, उसमें नवीन दाग का कोई असर नहीं पड़ता। अनार्य लोगों की अपेक्षा, एक भक्त गृहस्थ का जीवन उजला

है। गृहस्थ धर्म की दृष्टि से उसका यह कर्तव्य हो जाता है कि मन, वचन और काया से न तो झूठ बोले और न बोलावे। सन्त का जीवन व्रती गृहस्थ से भी अधिक उजला होता है। उसको सर्वथा झूठ का त्याग है। सर्व त्यागी भद्रबाहु और देश त्यागी गृहस्थ आनन्द का आदर्श आप सबके सामने है।

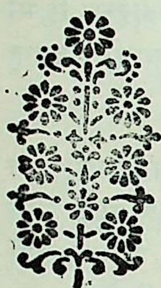
पाटलिपुत्र के राजा नन्द महामुनि भद्रबाहु के ज्ञानबल तथा आचारबल से बहुत प्रभावित थे। उनके समय में पाटलिपुत्र के लोगों का चरित्र बहुत ऊँचा था। पाटलिपुत्र में नगरी की खुली दुकानों से कोई चोरी के रूप में माल नहीं उठाता था। चीनी यात्री ह्वेनसांग, फाहियान आदि, यहाँ के लोगों के सत्य व्यवहार से बड़े प्रभावित थे। इस सम्बन्ध में उन्होंने अपने यात्रा विवरण में यहाँ के लोगों की प्रशंसा की है।

दुर्दैव से एक बार पाटलिपुत्र में बारह वर्षों का लगातार दुर्भिक्ष पड़ा। क्षुधा की पीड़ा से लोक जीवन सिहर उठा जिसका प्रभाव सन्त जीवन पर भी पड़ा, क्योंकि ज्ञान और सदाचार की सुरक्षा के लिए शरीर रक्षा आवश्यक है और एतदर्थ सन्तों को शुद्ध आहार, वहीं मिल सकता है, जहाँ लोगों में स्वस्थ मन और कुछ उत्सर्ग करने की शक्ति हो। पाटलिपुत्र तो अकाल की चपेट में कंगाल बन गया था। अतएव भद्रबाहु वहाँ से उत्तर की ओर निकल पड़े और पक्षी की भांति अपना घोंसला बदल दिया। भद्रबाहु ने देश के कोने-कोने में धर्म का संदेश फैलाया और साथ ही आत्म-साधना का तेज भी चमकाया।

आज लोगों का चरित्र बल इतना अधिक क्षीण हो गया है कि सन्तों को भी समय-समय पर नैतिक जीवन की शिक्षा देनी पड़ती है। धर्म-रक्षण के लिए आज सन्तों का उपदेश ही पर्याप्त नहीं है, इसके लिए हर गृहस्थ का भी यह कर्तव्य है कि वह अपनी जीविका संचालन के साथ-साथ सत्य, अहिंसा आदि का भी पालन करें तथा दूसरों को भी उस मार्ग में चलने की प्रेरणा करें। साधना पथ पर स्वयं चलते और दूसरों को चलाते हुए मानव अक्षय पुण्य का भागी बनता है। जहाँ सौभाग्य से समाज में दोनों कार्यों को करने वाले होंगे, वहाँ धर्ममयता एवं शान्ति रहेगी।

आज समाज में ऐसे अवकाश प्राप्त लोगों की आवश्यकता है जो नैतिक सुधार के साथ भावी प्रजा को धर्म की शिक्षा दें। स्वाध्याय की प्रेरणा देकर युवकों में रुचि जागृत करें और लोक मानस में ज्ञान की ज्योति जगा सकें। गृहस्थ आनन्द और मुनि भद्रभाहु की सी साधना का लक्ष्य हर मानव का हो तो सबका लोक और परलोक सुखमय बन सकता है।

□ □ □



जैनागमों में वनस्पति विज्ञान

□ अनुयोग प्रवर्तक मुनि श्री कन्हैयालालजी म. 'कमल'

प्राणीमात्र के शरीरों का निर्माण एवं उपचय आहार से होता है और आहार योग्य पुद्गल इस लोक में सर्वत्र व्याप्त हैं, किन्तु मानव का तथा पशु-पक्षियों का आहार प्रायः वन में ही पैदा होता है। आहार कई प्रकार के हैं। मानव का आहार अन्न, शाक एवं फल है। पशु-पक्षियों का प्रमुख आहार तृण आदि है अतः वे चरने के लिए वन में रहते हैं या जाते हैं। मानव अन्न, शाक एवं फलों को अपने घर में खाते हैं। इससे स्पष्ट है कि वनस्पति काय के बिना मानव के आहार की पूर्ति सम्भव नहीं है।

मानव का स्वास्थ्य :

मानव के स्वास्थ्य का संरक्षण एवं संवर्धन सदा वन में उत्पन्न जड़ी-बूटियों के विविध योगों-प्रयोगों से ही होता है। इस प्रकार आहार तथा स्वास्थ्य के हेतु वनस्पति कायिकों का उपयोग जीवनपर्यन्त होता रहता है।

इस लोक में अनन्त जीवात्मायें अनन्त काल तक वनस्पति कायिक जीवों के रूप में रही हैं, रह रही हैं और रहेंगी। इसलिए वनस्पति कायिक जीवों की हिंसा का अल्पीकरण करने के लिए तथा उनकी हिंसा से विरत होने के लिए अनन्त जीव वाली, असंख्येय जीव वाली, संख्येय जीव वाली तथा प्रत्येक जीव वाली वनस्पतियों का विज्ञान अत्यावश्यक है। क्योंकि इनके ज्ञान के बिना प्रत्याख्यान सम्भव नहीं है। वनस्पतिकाय के कई प्रकार हैं। उन सबकी संक्षिप्त जानकारी यहां अध्ययन के आधार पर संकलित है।

वनस्पति कायिक दो प्रकार के हैं:—

(१) सूक्ष्म वनस्पति कायिक (२) बादर-स्थूल वनस्पति कायिक।

सूक्ष्म वनस्पति कायिक दो प्रकार के हैं:—

(१) पर्याप्त (२) अपर्याप्त।

बादर-स्थूल वनस्पति कायिक भी दो प्रकार के हैं:—

(१) प्रत्येक शरीर वाले (२) साधारण शरीर वाले।

प्रत्येक शरीर वाले बारह प्रकार के हैं:—

(१) वृक्ष (२) गुच्छ (३) गुल्म (४) लता (५) वल्ली (६) पर्वक (७) तृण (८) वलय (९) हरित (१०) औषधि (११) जलरूह (१२) कुहण।

(१) वृक्ष दो प्रकार के हैं:—

(अ) एक अस्थिक-गुठली वाले, (ब) अनेक बीज वाले।

एक अस्थिक-गुठली वाले अनेक प्रकार के हैं:—

नीम, आम आदि।

इनके (१) मूल (२) कन्द (३) स्कन्ध (४) त्वचा (५) शाल (६) प्रवाल, असंख्य जीव वाले हैं। (७) पत्ते—प्रत्येक जीव वाले हैं। (८) पुष्प—अनेक जीव वाले हैं। (९) फल—एक अस्थिक-गुठली वाले ये प्रत्येक जीव वाले हैं।

अनेक बीज वाले अनेक प्रकार के हैं—अगथिया, तिंदु, केथ आदि।

इनके (१) मूल (२) कंद (३) स्कंध (४) त्वचा (५) शाल (६) प्रवाल असंख्य जीव वाले हैं।

पत्ते—प्रत्येक जीव वाले हैं। पुष्प—अनेक जीव वाले हैं। फल—अनेक जीव वाले हैं।

(१) गुच्छ अनेक प्रकार के हैं—बैंगन, शल्यकी, बोंडकी आदि।

(३) गुल्म अनेक प्रकार के हैं—सैन्टिक, नोमालिक आदि।

(४) लतायें अनेक प्रकार की हैं—पद्मलता, नागलता आदि।

(५) वेलड़ियां अनेक प्रकार की हैं—पुष्पफली, कालिंगी, तुंबी आदि।

(६) पर्वक अनेक प्रकार के हैं—इक्षु, इक्षुवाडी, वीरण आदि।

(७) तृण अनेक प्रकार के हैं—सेटिक, भक्तिक, होतिक आदि।

(८) वलय अनेक प्रकार के हैं—ताल, तमाल, तक्कलि आदि ।

(९) हरित अनेक प्रकार के हैं—अज्जोरूह, वोडाण, हरितक आदि ।

(१०) औषधियाँ अनेक प्रकार की हैं—शाली, व्रिही, गेहूँ, जौ, चंवला आदि ।

(११) जलज अनेक प्रकार के हैं—उदक, अवक, पनक, शैवाल आदि ।

(१२) कुहन अनेक प्रकार के हैं—आय, काय, कुहण, कुणक, आदि ।

वृक्ष अनेक प्रकार के आकार वाले हैं—ताल, सरल, नारियल आदि ।

इनके पत्ते और स्कन्ध एक-एक जीव वाले हैं ।

जिस प्रकार सरसों की वर्तिका में चिकनाई से चिपके हुए सरसों के दाने अलग-अलग हैं फिर भी एक साथ संलग्न हैं तथा तिलों के पापड़ में तिल अलग-अलग हैं फिर भी सब तिल संलग्न हैं, इसी प्रकार प्रत्येक शरीर वालों के अलग-अलग शरीर एक साथ संलग्न हैं ।

साधारण शरीर वाले वनस्पति कायिक अनेक प्रकार के हैं:—अवक, पणक, शैवाल आदि ।

(क) तृणमूल संख्येय जीव वाले हैं ।

(ख) कंदमूल असंख्येय जीव वाले हैं ।

(ग) वंशीमूल अनन्त जीव वाले हैं ।

सिंघाड़ों का गुच्छा अनेक जीव वाला होता है । उसके पत्ते प्रत्येक जीव वाले हैं । फल दो जीव वाले हैं:—

प्रत्येक जीव वाली वनस्पतियों के लक्षण:—जिन वनस्पतियों के (१) मूल (२) कन्द (३) स्कन्ध (४) त्वचा-छाल (५) शाल-शाखा (६) प्रवाल (७) पत्ते (८) पुष्प (९) फल (१०) बीज तोड़ने पर उनके दोनों विषम भाग दिखाई दें, वे सब वनस्पतियाँ प्रत्येक जीव वाली हैं । जिन वनस्पतियों के मूल की, कन्द की, स्कन्ध की, शाखाओं की छाल पतली हों वे सब वनस्पतियाँ प्रत्येक जीव वाली हैं ।

अनन्त जीवों वाली वनस्पतियों के लक्षण:—जिन वनस्पतियों के (१) मूल (२) कन्द (३) स्कन्ध (४) त्वचा-छाल (५) शाल-शाखा (६) प्रवाल (७) पत्ते (८) पुष्प (९) फल (१०) बीज तोड़ने पर उनके दोनों भाग

समभाग वाले दिखाई दें, वे सब वनस्पतियाँ अनन्त जीव वाली हैं। जिन वनस्पतियों के मूल की, कन्द की, स्कन्ध की, शाखाओं की, छाल मोटी हों वे सब वनस्पतियाँ अनन्त जीव वाली हैं।

जिन वनस्पतियों के मूल, कंद, स्कन्ध, त्वचा, शाखा, प्रवाल, पत्ते तोड़ने पर चक्राकार समभाग दिखाई दें। जिनके मूल यावत् पत्तों की गाठें चूर्ण वाली हों। जिनके मूल यावत् पत्तों की शिराएं अदृश्य हैं। जिनके मूल यावत् पत्तों की संधियां दूध वाली हैं या बिना दूध वाली हैं, किन्तु अदृश्य हों तो वे सब वनस्पतियाँ अनन्त जीव वाली हैं।

अनन्त जीवों वाली वनस्पतियाँ :

विभिन्न प्रकार के पुष्प:—(१) जलज पुष्प (२) स्थलज पुष्प। जलज पुष्प नालिकाबद्ध होते हैं। स्थलज पुष्प वृन्तबद्ध होते हैं। जो नालिकाबद्ध पुष्प हैं वे सब संख्येय जीव वाले हैं। शेष स्थलज पुष्प संख्येय जीव वाले असंख्येय और अनन्त जीव वाले भी होते हैं। थूहर के पुष्प और थूहर जैसे अन्य पुष्प भी अनन्त जीव वाले हैं।

सभी प्रकार की कुहण वनस्पतियां अनन्त जीव वाली हैं।

किन्तु कुछ कंदुक वनस्पतियां अनन्त जीव वाली हैं और कुछ असंख्य जीव वाली हैं।

प्रत्येक जीव वाली वनस्पतियाँ :

द्म्य कन्द, उत्पलिनी कन्द और अन्तरकन्द तथा भिली ये सब अनन्त जीव वाली वनस्पतियां हैं, किन्तु भिस और मृणाल प्रत्येक जीव वाले हैं।

पलाण्डु-प्याज, लशुन, कंदली कुसुंब और ऐसी अन्य वनस्पतियाँ प्रत्येक जीव वाली हैं। सभी प्रकार के कमल, पानी से बाहर और भीतर रहने वाले उनके पत्ते, उनकी कर्णिका तथा कमलों के फल प्रत्येक जीव वाले हैं। सभी प्रकार के बांस, सभी प्रकार के इक्षु, सभी प्रकार के एरण्ड, सोंठ, विहेंग, सभी प्रकार की वनस्पतियां, सभी प्रकार की पर्वज वनस्पतियां और इनके पत्ते प्रत्येक जीव वाले हैं, किन्तु इनके पुष्प अनेक जीव वाले हैं। सभी प्रकार के तुम्बे, सभी प्रकार की ककड़ियां, विभिन्न प्रकार के कुण्माण्ड, और तिंदु प्रत्येक जीव वाले हैं।

जीवों की उत्पत्ति:—उत्पन्न होने वाले बीज में कभी बीज का जीव उत्पन्न होता है और कभी उसमें नया जीव भी उत्पन्न होता है। मूल में और पहले पत्ते

में प्रायः एक ही जीव रहता है। सभी प्रकार की कोंपलें प्रारम्भ में अनन्त जीव वाली होती हैं। बाद में कुछ अनन्त जीव वाली रहती हैं और कुछ प्रत्येक जीव वाली हो जाती हैं। साधारण वनस्पति कायिक सभी जीवों की शरीर रचना एक साथ होती है। वे सभी एक साथ श्वासोच्छ्वास लेते हैं और आहार भी एक साथ ग्रहण करते हैं। वे आहार के पुद्गल और श्वासोच्छ्वास के पुद्गल एक साथ ग्रहण करते हैं।

निगोद के जीव:—जिस प्रकार तपे हुए लोहे के गोले में अग्नि व्याप्त रहती है उसी प्रकार एक साधारण शरीर में निगोद के जीव व्याप्त रहते हैं।

निगोद के जीव दो प्रकार के हैं:—(१) सूक्ष्म (२) बादर-स्थूल। निगोद के एक दो तीन यावत् असंख्य जीवों के साधारण शरीर आँखों से नहीं दिखाई देते हैं, किन्तु अनन्त जीवों के साधारण शरीर ही आँखों से दिखाई देते हैं।

प्रत्येक जीव:—इस लोक में प्रत्येक जीव इतने अधिक हैं जो असंख्य लोकाकाशोंके प्रत्येक आकाश प्रदेश में एक-एक जीव स्थापित करने पर भी पूरे स्थापित नहीं होते।

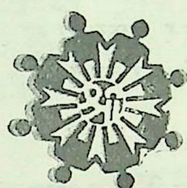
अनन्त जीव:—इस लोक में निगोद के अनन्त जीव इतने अधिक हैं जो अनन्त लोकाकाशोंके प्रत्येक आकाश प्रदेश में एक-एक जीव स्थापित करने पर भी पूरे स्थापित नहीं हो पाते।

सूक्ष्म निगोद के जीव जिनाज्ञा से जानने योग्य हैं। क्योंकि वे आँखों से दिखाई नहीं देते।

वनस्पति कायिक जीवों की योनियाँ:—साधारण वनस्पति कायिक जीव दो प्रकार के हैं।—पर्याप्तक और अपर्याप्तक। जो पर्याप्तक हैं वे वर्ण, गंध, रस और स्पर्श से गुणा करने पर संख्येय प्रकार के हैं। उनकी संख्येय लाखों योनियाँ हैं। एक पर्याप्तक के आश्रय में कभी संख्येय, कभी असंख्येय और कभी अनन्त अपर्याप्तक उत्पन्न होते रहते हैं। उन्नीस प्रकार की साधारण वनस्पतियों की त्वचा, छाल, प्रवालों में पुष्प फलों में मूल भाग, अग्र भाग, मध्य भाग और बीजों में कुछ की कितनी योनियाँ हैं और कुछ की कितनी योनियाँ।

—द्वारा, डॉ० सोहनलाल संचेती,
महावीर भवन (निम्बाज की हवेली) जोधपुर–३४२००१

ललित निबन्ध



घुटन का आत्म-समर्पण

☐ महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर

मनुष्य परम श्रेय के प्रति समर्पित है। जीवन में प्राप्त होने वाली हर सफलता पर उसे गर्व है, तो असफलता पर खेद भी। मेहनत करने के बावजूद जब व्यक्ति को असफलता का सामना करना पड़ता है, तब उसका अपने आपसे भी खीझना स्वाभाविक है।

मनुष्य खड़ा है पुरुषार्थ और भाग्य के दोराहे पर। वह सुख और सफलता को भगवान् का अमृत मानता है; किन्तु दुःख और असफलता को भगवान् का वरदान मानने के लिए तैयार नहीं है। लड़ रहा है वह अपने भाग्य के साथ, पर यदि वह भाग्य का आतमीय बन जाए, तो उसके साथ उसकी लड़ाई समाप्त हो सकती है।

प्राप्त कर्तव्य में पुरुषार्थी का उपसंहार ही भाग्योदय है।

मनुष्य सुख-सुविधाओं का इतना चाही है कि हर असफलता/प्रतिकूलता उसका जीवन हराम कर देती है। जीवन का यथार्थ सुख तनाव-शून्यता में है। किसी कार्य में असफल होना पहली पराजय है, मगर उसे मन में रहने के लिए न्यौता देना दूसरी पराजय है। पहली पराजय को भाग्य की चुनौती कहा जा सकता है; किन्तु दूसरी पराजय प्रज्ञा-दृष्टि और जीवन-बोधि की कमी की द्योतक है।

यों तो व्यक्ति आठों याम कुछ न कुछ सोचता रहता है। सोच चाहे चाहा हो या अनचाहा, मेहमानवाजी करवा ही जाता है। जीवन-दर्शन के प्रति सोच तब गर्भज होता है, जब असफलताएँ ठेठ हृत्तन्त्री को झकझोर डालती हैं।

असफलता जीवन्त चिन्तन की जननी है। जीवन में क्रान्ति चरम वेदना के क्षणों में ही घटित होती है। जब व्यक्ति चारों तरफ से असहाय, अशरण और निराधार खड़ा हो, उस समय थोड़ी-सी सूझ भी डूबते को तिनके का सहारा बनती है। असफलता पर असफलता पाने वाले सम्राट् के लिए मकड़ी

की सोलह बार फिसलन और आखिरी बार घर-जाल-की-देहरी पर दस्तक सफल प्रेरणा का लाजवाब जीवन्त सूत्र सिद्ध हुआ है।

मनुष्य का प्रयास रहना चाहिये कि वह जीवन को भरपूर सफलता से जिये। तनाव और घुटन भरी जिन्दगी जीना चलते-फिरते "शव" को कन्धे पर ढोना है।

तनाव दुःखदायी स्वप्न-यात्रा है। सपनों के साथ बितायी गयी रात मात्र समय बिताना है, नींद की आवश्यकता को आपूर्त करना नहीं। धन, परिवार या अन्य सुविधाएँ होते हुए भी व्यक्ति घुटन-भरी जिन्दगी क्यों जिये ?

धुएँ-सी जिन्दगी जीने के बजाय दीपक-सी जिन्दगी जीना लाख गुना बेहतर है। धुएँ-सी जिन्दगी मौत है। जीवन, जलना है अनिमेष दीपक का।

मनुष्य विवश है। उसकी विवशताएँ ही उसे प्रेरित करती हैं स्वयं के लिए सोचने को। भीड़-भरी जिन्दगी में भी मनुष्य को अपने लिए सोचने की कुण्ठित या उन्मुक्त जिज्ञासा जाग्रत होती है। वह अपनी मुँह-बोली मौलिकता से अस्तित्व को पहचानने के निए अन्तःप्रेतित होता है। उसकी यह अन्तःप्रेरणा ही अध्यात्म की ओर कदम बढ़ाना है।

मनुष्य की अन्तर जिज्ञासा यदि सघन-से-सघनतर हो जाए, तो सत्य की खोज के लिए वह न केवल चिंतन करता है, अपितु अपने कृतित्व को उस पथ पर संयोजित भी करता है। वह अपने-आपसे ही पूछता है—आखिर मैं कौन हूँ, मेरा जीवन-स्रोत, मेरी मौलिकताएँ और मेरे मापदण्ड क्या हैं, यह दुनिया क्या है, और मैं यहाँ क्यों हूँ, सुख-सुविधाओं के अम्बार लगने के बावजूद दुःख और तनाव के कारण क्या हो सकते हैं ?

चिंतन की गहराइयों में उसकी जहाँ तक पहुँच हो सकती है, वह तल-स्पर्श करने का अदम्य पुरुषार्थ करता है। वह उस आखिरी सत्ता को भी खोज निकालना चाहता है, जो संसार-चक्र की धुरी है। चिंतन की इस आत्यन्तिक गहराई का नाम ही जीवन-समीक्षा और योग-अनुप्रेक्षा है।

कविताओं की रहस्यवादिता जिस सत्ता/शक्ति से जुड़ी है, योगी को उसकी झलक अपने भीतर मिलती है, जबकि कल्पना की जमुहाई लेने वाले कवियों को उसका प्रतिबिम्ब प्रकृति के सहस्रमुखी/सहस्रबाहु रूप में मिलता है। उस शक्ति का नाम फिर आत्मा दें या परमात्मा, उससे तादात्म्य की अनुभूति ही ध्यान की स्नातक सफलता है।

यह सत्ता ही अस्तित्व की मौलिकता है। उसका परिचय-पत्र क्या ? यदि ध्यान से उसकी उपलब्धि हो जाए, तो विजय का उन्माद कैसा ? यदि हृत्तन्त्री में उसकी झंकृति न भी हो, तो हार का शिकवा कैसा ? हाथ में प्राप्त हो या अप्राप्त, पैसा तो पर्स में ही है। आखिर है तो वही व्यष्टि बनाम समष्टि का व्यक्तित्व।

एक व्यक्ति की घड़ी खो गयी थी, सो वह उसे ढूंढ़ने लगा। पड़ौसी भी उसकी मदद करने लगे। सारी गली छान ली, पर घड़ी की छाँह भी हाथ न लगी। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते पड़ौसी ने पूछा—"घड़ी खोयी कहाँ थी ?" कहा—"घर में"।

पड़ौसी सकते में आ गया। कहने लगा—"यह कैसी मूर्खता, घर में खोयी घड़ी को ढूँढ़ रहे हो गली में ? व्यक्ति ने कहा—बात तेरी पते की है, पर-घर में अँधेरा जो ठहरा। गली में तो रोशनी बह रही है।

घर में खोयी वस्तु घर में ही ढूँढ़नी पड़ती है, फिर चाहे घर में अँधेरा हो, या उजाला। भीतर में पाले गये तनाव के अँधेरे से बिदक कर कहीं और आँख फैलाना सत्य की खोज नहीं, मात्र क्षितिजों में आकाश की सीमा ढूँढ़ना है, कोरा भटकाव है।

आठों पहर चलने वाले इन्सान को भी यह खबर नहीं है कि वह कहाँ जा रहा है, उसका लक्ष्य क्या है, वह लक्ष्य-पूर्ति के लिए कितना समर्पित है ? सुबह से शाम की यात्रा में जिन्दगी यूँ ही तमाम होती है। मेहनत की कुल्हाड़ी से खाई खूब खोदता है, पर स्वयं की राख से ही उसे पाट डालता है। हाथ सिर्फ माटी लगती है, रत्नों का संभार नहीं।

मनुष्य स्वयं चेतना की विराटता का सूत्र है। उसे अपनी गतिमान चेतना का समन्वय स्थापित कर स्वयं में आनन्द का उत्सव मनाना चाहिये। उसका उत्सव महोत्सव की रंगीनियाँ पाये, इसकी बजाय उसने स्वयं को दलदल के कगार पर ला खड़ा किया है। इससे उसकी घुटन घटी नहीं है, बल्कि सौ गुना बढ़ी है।

कहते हैं, आर्य विकसित सभ्यता के प्रवर्तक हैं। आज⋯आज आर्यता स्वयं प्रश्नचिह्न बनकर उपस्थित है स्वयं आर्य के समक्ष। गुण का पुजारी कहलाने वाला आर्य भी बेईमानी और बलात्कार पर उतर आये, तो अनार्य की परिभाषा क्या होगी ? आने वाले आर्यों की "आर्यता" किसी समय इतनी छिछली होगी, यह कभी पूर्वज अनार्यों ने सोचा भी न होगा। अनार्यों ने खुद को माँजने के लिए आर्यों की संस्कृति अपनायी। परिस्थितियाँ चेहरे बदलती हैं।

अनार्य कदम बढ़ा रहा है आर्यता की देहरी की ओर, और आर्य आँखें गड़ा रहा है अनार्यता के अन्धकूप की ओर।

युगों-युगों में अमृतवाही कही जाने वाली गंगा में भी आज अमृत की खोज करनी पड़ रही है। जिस गंगा के दो-चुल्लू पानी से सरोवर पवित्र हो जाते थे, आज वही गंगा मैली हो रही है। स्वर्ग से उतरी उसकी दूध-जैसी धारा पर इतना मैल चढ़ गया है कि उसकी धुलाई के लिए धोबी-घाट की तलाश जारी है। एक बात तय है कि पावनताएँ कितनी भी कुण्ठित हो जाएँ; किन्तु एकाग्रचित्त से एकनिष्ठ होकर कोशिश की जाए तो पावनता की वापसी सहज सम्भव है।

मेरी शिकायत यात्रा से नहीं, भटकाव से है। मनुष्य की जिन्दगी ठौर-ठौर घूमने वाले बंजारे-सी है। केवल पाँव चले तो कोई शिकायत नहीं, पर मन भी चलतापुर्जा रहे तो जीवन की एकाग्र अखण्डता लंगड़ी खायेगी ही।

पाँव-का-योग और मन-का-वियोग ही संन्यास है। मन की पलकों का न झपकना ही अध्यात्म के धरातल में ध्यान की निष्ठा है। वह तो घरबारी ही है जिसके पाँव तो एक घर से, एक परिवार से बँधे हैं; पर मन घर-घर में गोचरी करता फिरता है। मन की इस प्रवृत्ति का नाम ही अन्तर्जगत का दारिद्रय है।

पाँव तो चलने ही चाहिये। चलते पाँव ही तो कर्मयोग की कथा के पात्र हैं। पाँव प्रतीक है कर्मयोग का। पाँव रुका कि पटाक्षेप हुआ कर्मयोग के नाटक का। क्या नहीं सुना है बचपन से—"बहता पानी निर्मला, रुके तो गंदा होय"। पानी है परिचायक/रूपक पाँव का।

मन की व्यवस्था पाँवों से कर्मयोग से ठीक विपरीत है। यदि मन का चलना ही कर्मयोग कहा जाए तो मन से बड़ा कर्मयोगी संसार में कोई भी नहीं है। यहाँ तक कि संसार की सारी योजनाओं का व्यवस्थापक भी मन की कर्मयोगिता के सामने कुबड़ा लगेगा।

जीवन की अपेक्षा मनोकर्म की नहीं, मनोयोग की है। मनोयोग है मन की एकाग्रता। समुन्दर की लहरों की तरह छितराने वाला मन कर्मयोग नहीं, वरन् जीवन-रोग है। तनाव और घुटन का मवाद रिसता है मन के घाव से ही।

इसलिए मन रोग है और रोग-मुक्ति जीवन-स्वास्थ्य की अनिवार्य शर्त है।

मन है सुविधावादी/अवसरवादी। अच्छे विचारक और बुरे विचार की प्रतिस्पर्धा का विरोधी है वह। जो भी चीज उसे उसके अनुकूल लगेगी, वह उसके साथ रहने में ही अपना सत्संग मानेगा। ध्यान है विचारों का मौन। विचार चाहे अच्छे हों या बुरे, तनाव की जड़ हैं, जहाँ अच्छाइयां हैं वहाँ बुराइयाँ भी हैं, जहाँ बुराइयाँ हैं, वहाँ अच्छाइयाँ भी है। ध्यान अच्छे भाव/बुरे-भाव-से-मुक्त, मात्र स्वभाव है।

जो व्यक्ति मन में है, वह अधार्मिक है। अधर्म है विभाव-में-रमण, धर्म है स्वभाव में-रमण। मन की हर परिणति स्वभाव के लिए चुनौती है। मन के कर्मयोग के रहते व्यक्ति का अवसरवाद और पाखण्ड नामर्द नहीं हो सकता।

अमन है जीवन में सदाबहार चमन करने का राज़। सुख, दु:ख तो एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, धूप-छाँव का खेल है। जीवन में जरूरत है उस आनन्द की, जिसके प्रास्ताविक से उपसंहार तक कहीं भी तनाव न हो। जीवन आनन्द के लिए है, पुण्य कृत्य के लिये है, तनाव या दम घुटाने के लिए नहीं।

अमन-दशा में मन की मृत्यु नहीं होती, वरन् मन विलय पा लेता है आत्मा के धरातल पर। मन का देह से जोड़ जीवन में संसार-निर्माण की आधारशिला है। यदि साक्षित्व-का-सर्वोदय हो जाए तो बिना किसी ननुनच के मन में तादात्म्य का निरोध हो सकता है।

कहते हैं; जंगल से गुजरते समय गौतम बुद्ध की भेंट अंगुलिमाल से हुई। अंगुलिमाल था रक्त-पिपासु हत्यारा और गौतम थे चेतना-के-शिखर।

अंगुलिमाल ने गौतम को ललकारा और जिस पगडण्डी पर वे चल रहे थे, वहीं ठहरने का निर्देश दिया। गौतम मुस्कुराये और चलते-चलते ही कहा, मैं तो ठहरा हुआ हूँ, हे निर्देशक! चलना तू बन्द कर।

गौतम का वक्तव्य प्राणवन्त था, पर अंगुलिमाल के लिए वह उलटबाँसी था। चलते राही गौतम स्वयं को रुके हुए बता रहे थे और पहाड़ी की चोटी पर खड़े अंगुलिमाल को चलता हुआ। यह बात तो उसे बाद में समझ में आयी कि व्यक्ति का चलना तो वास्तव में उसी दिन समाप्त हो जाता है, जिस दिन मन की चाल की वैशाखी हाथ से छूट जाती है।

गौतम ने कहा—"अंगुलिमाल! अपने मन में बहते गन्दे नाले को देख! मुझ रुके हुए को रुकने को क्यों कह रहा है? जिन कृत्यों से तू जुड़ा है, उन्हें जाग कर परख, कितने भयंकर हो सकते हैं उसके परिणाम! जीवन मृत्यु की

अ्रोर बढ़ने के लिए नहीं; छीना-झपटी अ्रौर भाग-दौड़ के लिए नहीं; तनावमुक्त अ्रानन्दमय महाकरुणा के लिए है।

कहते हैं; अ्रंगुलिमाल का दिल बदल गया। वह फर्शाधारी से काषाय-धारी बन गया। यह एक अ्रभिनव क्रान्ति थी।

चूँकि अ्रंगुलिमाल ने हजारों लोगों के घर उजाड़े थे, कितनों की हत्याएँ की थीं, इसलिए ठौर-ठौर पर उसके दुश्मन थे। पर साधक को तो मृत्यु के प्रति भी मित्रभाव रहता है। भिक्षाचर्या के लिए निकलने पर पहले ही दिन लोगों ने उसे पत्थरों से मारकर अ्रधमरा कर दिया। जीवन की अ्राखिरी घड़ी में उसने गौतम को अ्रपने पास पाया। वह कृतज्ञ था। मार के बीच भी मुस्कान थी, उसके मृत्युंजयी चेहरे पर।

गौतम ने उससे पूछा—"वत्स ! तेरा क्या भाव है ? अ्रंगुलिमाल ने कहा, भन्ते ! ठहरे हुए का क्या भाव।"

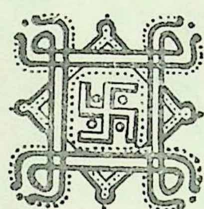
गौतम बोले—"पुत्र ! तुम्हें प्रणाम है। तुम्हारा मरण डाकू का नहीं, महामहोत्सव है अ्ररिहन्त का। तुम निर्वाण पा रहे हो जिन !"

जीवन-भर सोयी दशा में पाप-कृत्यों का कृतित्व अ्रदा करने वाला व्यक्ति यदि जागकर छोटे-से-पुण्य कृत्य को भी अ्रपनी सम्पूर्ण समग्रता से करे, तो निर्वाण की सम्भावना को नकारा नहीं जा सकता। जागृत-अ्रवस्था में अ्रन्तरनेत्रों का विमोचन ही ध्यान की भूमिका है। ध्यान है शिवनेत्र। यदि वह नेत्र खुले, तो व्यक्ति सूरदास है।

जीवन बना हुअ्रा है गलाघोंट संघर्ष और ध्यान है उससे मुक्ति का उपाय। मनुष्य ने भले-बुरे बिचारों का पर्दा बुना है अ्रौर वह पर्दा ही उसके लिए घुटन का कारण है। उस पर्दे को उठाने का नाम ही ध्यान है। समाधि है विचारों-के-पार झांकने की क्षमता। समाधि है शान्ति; विचारों की शान्ति; मन की ऋषिता। इस प्रतिक्रिया एवं संघर्ष-मुक्त स्थिति की प्राप्ति ही जीवन में सम्यक् शान्ति की उपलब्धि है।

—जितयशा श्री फाउण्डेशन
९ सी, एस्प्लानेड रो (ईस्ट), कलकत्ता-७०० ०६९

पुरानी पोथी :



आचार्य बत्तीसी

संकलनकर्त्ता—श्री भँवरलाल बोथर ।

(तर्ज—धर्म जिनेश्वर मुझ हिवड़े बसो, प्यारा प्राण समान । राग प्रभाती)

सुमिरण मोटो रे आचारज तणो, पंचम काल मझार ।
तीजे पद और शरणो तीसरो, मंगलदातार ।।टेर।।

रीयां नगरी रे अति रलीयामणी, लादूराम साहूकार ।
कानूदे माँ कुखे, जनमियां धन-धन कुशलकुमार ।।१।।

1794 सतरासो के वरस चोराणवे, फागुन मास श्रीकार ।
शुक्ल पक्ष की शुभ तिथि, सप्तमी लीधो संयम भार ।।२।।

कुल चौमासा सैंतालीस किया, कियो घणो उपकार ।
1840 अठारह सौ चालीस वरसे, छोड्यो यह संसार ।।३।।

तीन दिवस को संथारो सरध्यो, धन्य पूज्य कुशलेश ।
पूज्य हुवे बड़े भाग्य सूं, मुनिवर श्री गुमनेश ।।४।।

जोधाणे का अख्ये सेठजी, महेश्वरी कुल श्रृंगार ।
चैना बाई माई जन्मीया, कण्ठ में अति सुकुमार ।।५।।

1818 अठारह सौ साल अठारह, मगसर मास श्रेकार ।
शहर मेड़ता बेला लाभ की, सुद ग्यारस बुधवार ।।६।।

छोड्या सुख वैभव सभी, बण गये अणगार ।
जिन शासन में उज्ज्वल दीपता, वरत्या जय जयकार ।।७।।

मर्यादा ले इक्कीस बोल की, कठिन कियो आचार ।
1858 अठारह सौ साल अठावन, पहुँचा स्वर्ग मझार ।।८।।

उग्र विहारी व्रतधारी वड़े, चालीस कीनों चौमास ।
पूज्य हुवे गुरु भाई, अति गुणनिधि दुर्गादास ।।९।।

शिष्य महा प्रतापी आपके, अमित गुणा की धाम ।
"गंग गुलाबा" दम्पति पायो, पुत्र रत्न अभिराम ।।१०।।

दीक्षा लीधी गढ़ मंडोर में, सुद बैसाख सुमास ।
सम्वत अठारे सै अड़तालीस, तिथी पंचमी खास ।।११।।

महा प्रतापी मुनिवर देखने, सकल संघ हुवा साथ ।
अगहन सुद तेरस, बयासी में, बना दिये पूज्य राय ।।१२।।

साठ सहस्र श्रावक समझाविया, समकित दे अनमोल ।
पाखण्डी निन्दक चरणे पड़िया, पण्डित बना अडोल ।।१३।।

जिनवर शासन दीपायो गणो, पहला पूज्य गणाय ।
सम्प्रदाय कहलाई आपकी, धन्य धन्य रत्न मुनिराय ।।१४।।

उन्नीस सौ में स्वर्ग सिधारिया, जेठ मास प्रचण्ड ।
पांच प्रहर लौ संथारो हुयो, पाले सुव्रत अखण्ड ।।१५।।

दूजे पट पर पूज्य विराजिया, मुनिवर श्री हमीर ।
"नग पितु ज्ञानी माँ का" लाडला, धन धन गुण गम्भीर ।।१६।।

फागण बद सातम अमृत घड़ी, शुभ 'बर गाँव' मंझार ।
अठारह सौ बासठ साल में, कर मुनि व्रत स्वीकार ।।१७।।

विनयचन्द्र श्रावक समझावीया, तीर्थंकर गुण कीन ।
चौवीसी घर घर गावे सभी, जिनवर गुण लवलीन ।।१८।।

कार्त्तिक कृष्णा पड़वा आगई, उन्नीसौ दस साल ।
पाँच प्रहर को संथारो कियो, पाम्या मरण अबाल ।।१९।।

साल दस की माघ पंचमी, शुक्ल पक्ष अवधार ।
तीजे पट्ट पर पूज्य विराजिया, **कजोड़ीमल** अणगार ।।२०।।

बावन चौमासा स्वामी किया, ग्राम नगर पुर जाय ।
साल छत्तीस आखा तीज ने, तज औदारिक काय ।।२१।।

विनयचन्द्र आचार्य शिरोमणि, जन्म फलौदी शहर ।
सैंतीसा के जेठ सुमास में, पूज्य हुवे अजमेर ।।२२।।

साठ चौमासा कीना दीपता, कीनो उग्र विहार ।
साल बहत्तर अगहन मास में, दीनो तज संसार ।।२३।।

साल बहत्तर फाल्गुन अष्टमी, कृष्ण पक्ष परमान ।
पंचम पाट पर पूज्य विराजिया, शोभाचन्द्र सुज्ञान ।।२४।।

नगर जोधपुर माँही जनमिया, सुद पंचम गुरुवार ।
साल नवदे कार्तिक मास में, वरत्या मंगलाचार ।।२५।।

सत्ताइसे संजम आदरीयो, ओलखियो आचार ।
सूत्र सिद्धान्त घणा कण्ठे किया, समझिया आगम सार ।।२६।।

साल तियासी ऐसो आवीयो, अमावस रविवार ।
स्वर्ग सिधाया श्रावण मास में, पासी शिव सुखसार ।।२७।।

छप्पन चौमासा स्वामी किया, तारण तरण जहाज ।
शिष्य बने बड़भागी शूरमा, 'सागर' मुनि महाराज ।।२८।।

गुणसठ दिन को संथारो सरध्यो, महिमा कही न जाय ।
गुरु भाई आचार्य विराजता, शुध चरित्र चित्त लाय ।।२९।।

मारवाड़ पीपाड़ सुहावणो, जन्मे हस्ति मुनिन्द ।
सन्तजनों में सुन्दर सोहता, सुमनन में अरबिन्द ।।३०।।

साल सितर संयम भार ले, पढ्यो घणो रो ज्ञान ।
सत्यासी की आखा तीज को, पायो पद परधान ।।३१।।

गुण मंडित पंडित मृदु भाषिया, खण्ड करो पाखण्ड ।
माया तम हरिये बन जाइये, सूरज भानु प्रचण्ड ।।३२।।

दोहा

चरित्र बत्तीसी भाव सूं, पढ़े सुने नर नार ।
मंगल मोद रहे सदा, पावे सौख्य अपार ।।
सुमिरण मोटो आचारज तणो, पंचम काल मंझार ।
तीजो पद और शरणो तीसरो, मुद मंगल दातार ।।

[आचार्य विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार जयपुर की हस्तलिखित प्रति से संकलित]

————

लघु कथा—



सच्ची भक्ति

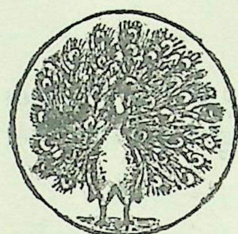
□ श्री कन्हैयालाल गौड़

एक सच्चा जिज्ञासु एक गुरु के पास गया। उनसे प्रार्थना की कि सन्त प्रवर ! मुझे कोई ऐसी युक्ति बता दीजिये, जिससे भगवान् के साक्षात् दर्शन मिल जायें। सन्त ने आज्ञा दी कि उस दालान् में वर्ष भर तक निरन्तर भजन और उपासना करके अपने मन को पवित्र कर डालो, तब भगवान् का साक्षात्कार होगा। उसने गुरु की आज्ञानुसार पूरे वर्ष भर वहीं बैठ कर दिन-रात भजन किया। वर्ष पूरा होने के दिन जब वह भक्त भजन में मग्न था, गुरु महाराज ने घर की मेहतरानी से कहा कि उसके पास जाकर झाड़ू दे और खूब धूल उड़ा। मेहतरानी ने वैसा ही किया। इस पर वह भोला भक्त डण्डा लेकर उठा और भंगिन से कहने लगा—तूने मेरा आनन्द क्यों बिगाड़ दिया ? थोड़ी देर पश्चात् वह अपने गुरु के पास जाकर कहने लगा—गुरुदेव ! एक वर्ष तो व्यतीत हो गया, पर भगवान् के दर्शन नहीं हुए। तब गुरु बोले—मन का क्रोध विषैले साँप की तरह उछलता और काटता है। क्या दर्शन पाने के यही लक्षण हैं ? जा एक वर्ष और मन जीत कर अभ्यास कर। भक्त लज्जित हुआ और पुनः एक वर्ष तक मन लगाकर अभ्यास किया।

जब दूसरा वर्ष पूर्ण होने को आया तो गुरु महाराज ने पुनः उस भंगिन को बुलाकर कह दिया, इस बार उसके भजन के समय खूब शोर गुल मचा और उसके ऊपर कुछ कूड़ा भी डाल दे। इस बार भक्त ने इस विषय पर उतना क्रोध तो नहीं किया, परन्तु कसमसा कर भंगिन से कहा—दुष्ट यह तेरा कैसा स्वभाव पड़ गया है कि भक्तों का कुछ विचार नहीं रखती तथा संभल कर झाड़ू नहीं लगाती ? फिर जब उसने जाकर गुरुजी से प्रार्थना की तो गुरु महाराज ने उत्तर दिया कि अब तक तेरे मन रूपी साँप का सिर नहीं कुचला गया है। काटता तो नहीं पर फुंकार मारता है। जा फिर एक वर्ष तक भजन कर। बेचारा अपनी कमी पर लजाकर फिर भजन में लग गया।

जब तीसरा वर्ष पूर्ण होने आया तो गुरु महाराज ने भंगिन से कहा—आज तू बाल्टी में मिट्टी घोल कर ले जा और जब वह भजन में मस्त होकर बैठा हो तो उसे खूब नहला दे। जब उसने ऐसा किया तो भक्त जो इस समय भजन में आनन्द मग्न था, सच्ची भक्ति से भंगिन के पैरों पर गिर पड़ा और बोला कि "तेरे ही द्वारा मेरा सुधार हुआ और आज मेरी कामना पूर्ण हुई।"

—१७, लाला लाजपतराय मार्ग, उज्जैन–४५६ ००६



सत्संगति का महत्त्व

☐ सुश्री प्रकाशलता बोर्दिया

अंग्रेजी की एक बहुत पुरानी कहावत है कि 'A man is known by the company he keeps' अर्थात् किसी व्यक्ति की पहचान उसकी संगति के द्वारा की जाती है। स्पष्ट है कि हमारे बारे में लोकमत का यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण आधार होता है कि हम किस प्रकार के व्यक्तियों के साथ रहते हैं, उठते हैं, बैठते हैं।

अतः लौकिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से सत्संगति का महत्त्व वादातीत है। इसे सभी धर्मों में स्वीकार किया गया है। ईश्वर एवं शैतान की कल्पना इसी को प्रतीकात्मक रूप में प्रकट करती है। सत्संगति हमारे नैतिक मूल्यों को स्पष्टता एवं दृढ़ता प्रदान करती है तो कुसंगति कुण्ठा, सन्ताप, अनास्था, अकर्मण्यता जैसे निषेधात्मक मूल्यों को उत्प्रेरित करके जीवन में जहर घोल देती है। सन्त कबीर ने इस तथ्य को बड़े रोचक ढंग से उजागर किया है—

कबिरा संगत साधु की, हरै और की व्याधि ।
संगत बुरी असाधु की, आठों पहर उपाधि ।।

मनोवैज्ञानिकों ने भी यह सिद्ध कर दिया है कि विचारों का प्रभाव मनुष्य के समूचे व्यक्तित्व पर पड़ता है। बुरे विचार मनुष्य में केवल दोष उत्पन्न करते हैं जबकि सद्विचार आत्मा को शान्ति प्रदान करते हैं और व्यक्तित्व को अधिक सुव्यवस्थित करते हैं। मन में अच्छे विचार लाने से व्यक्ति का उत्साह बढ़ता है, उसकी कार्यकुशलता में भी वृद्धि होती है। किसी ने ठीक ही कहा है कि जीवन रूपी खेती विचार रूपी बीज के अनुरूप ही उगती है। सत्संगति से हमारे मन में जैसा विचार उत्पन्न होता है, उसी के अनुरूप हमारे कार्य की दिशा बदल जाती है। मनुष्य जैसे लोगों की संगति करता है, वैसा ही हो जाता है, जैसा कि 'विदुर-नीति' में भी कहा गया है :—

यादृशैः संनिविशते यादृशांश्चोपसेवते ।
यादृगिच्छेच्च भवितुं, तादृम् भवति पुरुषः ।।

मनुष्य जैसे लोगों के साथ रहता है, जैसे लोगों की सेवा करता है और जैसा होना चाहता है, वैसा ही हो जाता है। अंग्रेजी की प्रसिद्ध कहावत है,

'I will tell you the character of a persons, if you tell me the company he keeps' रहीम कहते है कि कुसंगति में रहकर अपनी कुशलता की कामना करना नासमझदारी है ।

हमारे नैतिक मूल्यों पर सत्संगति अथवा कुसंगति का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है क्योंकि इससे अच्छी या बुरी आदतें बनने लगती हैं जो आगे चलकर मनुष्य के चरित्र का अंग बन जाती हैं। इसलिए हमारे साहित्य में सत्संगति की महिमा का आख्यान स्थान-स्थान पर हुआ है।

अनेक वर्षों तक खोज एवं परीक्षण करने के उपरान्त बाल विशेषज्ञ इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि वंश परम्परानुगत गुण-दोषों की अपेक्षा संगति से प्राप्त गुण-दोष अधिक सबल सिद्ध होते हैं।

सत्संग के प्रभाव से नीच और पतित प्राणियों के उद्धार की कथाओं से देश-विदेशों के धर्म ग्रन्थ भरे पड़े हैं। बुद्ध, सुकरात, महावीर स्वामी, ईसा, रामानंद, कबीर, गांधी आदि महान् आत्माओं के सम्पर्क में आने पर कितने व्यक्तियों का कल्याण हुआ है, इसका हिसाब किसके पास है ? महात्मा भर्तृहरि का यह कथन मनन करने योग्य है कि—"जब मैं थोड़ा ज्ञान प्राप्त कर हाथी के समान मदान्ध हो रहा था, उस समय मेरा मन 'मैं ही सर्वत्र हूं', ऐसा सोचकर घमण्ड में चूर था, परन्तु जब विद्वानों के पास रहकर मैंने कुछ-कुछ ज्ञान प्राप्त किया तो 'मैं मूर्ख हूं' ऐसा समझने के कारण ज्वर के समान मेरा दर्प दूर हो गया।"

यह एक ध्रुव सत्य है कि महत्वाकांक्षा का मोती सत्संगति की सीपी में पलता है। हमें चाहिये कि हम सदैव उन्हीं लोगों के साथ रहें जिनके द्वारा हमें लक्ष्य-प्राप्ति की प्रेरणा प्राप्त हो तथा जो इस दिशा में हमारी सहायता कर सकते हों। हमें ऐसे ही व्यक्तियों के साथ सम्बन्ध बनाने चाहिये जो किसी महान् कार्य को करने में लगे हों। महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति के साथ रहकर हम किसी महान् साध्य की साधना के साधक बन सकते हैं।

प्रवक्ता-अर्थशास्त्र (शिक्षा)
श्री जवाहर विद्यापीठ शिक्षक महाविद्यालय
कानोड़, जिला-उदयपुर (राज.)

विश्व-शान्ति और जैन-धर्म

☐ डॉ० सन्तोषकुमारी जैन

वर्तमान विश्व अशान्ति की चक्की में पिसा जा रहा है। एक ओर गरीबी है, तो दूसरी ओर आरामतलबी। एक ओर उत्पीड़न है, तो दूसरी ओर महत्त्वाकांक्षाओं की अटूट लालसा। 'अहिंसा परमो धर्मः' का सन्देशवाहक जैन-धर्म इनके लिए निदान प्रस्तुत करता है। अहिंसा का ठीक-ठीक अर्थ है—'आत्मा की पवित्रता।' वह परमात्मा का रूप और सत्य का प्रतीक है। 'शान्ति' जिसे कहा जाता है, वह विधि रूप अहिंसा का ही रूप है, अन्य कुछ नहीं। जो भी पवित्र भाव हैं, वे सभी अहिंसा के ही भेद हैं—सत् श्रद्धा, सत्य ज्ञान और सत्य आचरण तथा क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिन्चन्य और ब्रह्मचर्य आदि।

अहिंसक व्यक्ति विश्व के सभी प्राणियों को अपना मित्र समझता है—जो मेरा अनिष्ट चाहते हैं तथा कर्त्तव्य-विमुख हैं, उन्हें यदि मैं रास्ते पर नहीं ला सकता तो उनके प्रति मेरी तटस्थ बुद्धि है, किन्तु जो गुणी और आदरणीय हैं, वे मेरे विशेष आदर के पात्र हैं, जो दीन-दुःखी हैं—उनका दुःख दूर करने में मैं सदा दया का बर्त्ताव करूँ—

सत्त्वेषु मैत्रीं, गुणिषु प्रमोदं,
क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा परत्वं।
माध्यस्थ भावं विपरीत वृत्तौ,
सदा ममात्मा विद्धातु देव ॥

['सामायिक पाठ'—आचार्य श्री अमतिगति]

अहिंसा धर्म में विश्वास करने वाला व्यक्ति प्राणी मात्र से प्रेम और दयापूर्ण व्यवहार करता है। अगर हम अपने स्वार्थ और हित के लिए दूसरे से वैर करते हैं; उसके साथ कटु व्यवहार करते हैं तो संघर्ष पैदा होता है। यही हिंसा है। लेकिन अगर हम दूसरे का हित करके स्वयं कष्ट सहते हैं, तो सन्तोष मिलता है और यही शान्ति का साधन है। 'झूठी क्रान्ति अशान्ति का कारण है।'—अगर क्रान्ति का मूल लक्ष्य जीवन की पवित्रता को बढ़ाने का न हो, तो वह भ्रान्त मस्तिष्क की उपज है और ऐसी क्रान्ति जिस समाज में होगी, उसका पतन अवश्यम्भावी है।

अतः शान्ति के लिए अहिंसा आवश्यक है। यह प्राणी मात्र के लिए शक्ति का शस्त्र है। साम्प्रदायिकता को नष्ट करने के लिए स्याद्वाद, आर्थिक विषमताओं को दूर करने के लिए अपरिग्रह अहिंसा धर्म की ही देन है। आज की

सभ्यता और संस्कृति की दौड़ में मानव अहंकारी, स्वार्थी, असहिष्णु, बहुखर्ची, व अनुदार हो रहा है। यही संघर्ष की जड़ है। इसका एक मात्र निदान है— 'अहिंसा।'

'अहिंसा' धर्म या जैन धर्म के अनुसार परमात्मा अनन्त हैं। उनकी सत्ता प्रत्येक व्यक्ति में है। गृहस्थ मुक्त आत्माओं का पूजन अपने स्वभाव की शुद्धि के लिए करते हैं, उनसे फल प्राप्ति हेतु नहीं। 'मुक्ति' का साधन आत्मा को परमात्मा के समान शुद्ध समझकर राग-द्वेष, क्रोध, लोभ, अहंकार इत्यादि का परित्याग करना है। 'जैन' वह है—जिसने अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करली है और 'जिन' अर्थात् विजेता हो गया है, तथा जो शुद्ध भोजन करता है, छना हुआ पानी पीता है, नित्य आत्म-शुद्धि हेतु सामायिक-स्वाध्याय करता है, मधु, माँस और मदिरा का सेवन नहीं करता, रात्रि भोजन नहीं करता तथा पाँच अणुव्रतों या पाँच महाव्रतों का पालन करता है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी न करना), ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का अंशतः पालन करना 'अणुव्रत' है और पूर्णतः 'महाव्रत'। गृहस्थ व्यक्ति अणुव्रतों का पालन करता है तथा जैन साधु महाव्रतों का पालन करते हैं, वे अपरिग्रह की चरम सीमा को प्राप्त पूर्ण निर्विकार होते हैं। चलते समय भी राह देखकर चलते हैं ताकि चींटी की भी हत्या न हो। कभी किसी वाहन का उपयोग नहीं करते। मीलों की यात्रा पैदल ही करते हैं। घोर तपश्चरण में लीन रहते हुए अपने उपदेश की वाणी फैलाते हैं।

जहाँ भी अहिंसा के पुजारी बैठे हैं, वहीं पर जैन धर्म है, जिस दिल में विश्व-शान्ति की चाहत है, वही दिल जैन मन्दिर है और जो भी दूसरों के लिए जीता है, वही जैन धर्मावलम्बी है। मात्र जैन घर में पैदा होने वाला या जैन तीर्थंकरों की पूजा करने वाला जैन नहीं है। जो भी इसके प्रमुख सिद्धान्तों को मानता है, वही इसका सच्चा अनुयायी है और जो जैन का बेटा होकर हिंसा, असत्य, परिग्रह अपनाता है—मानवता का हनन करता है उसे 'जैन' कहलाने का कोई अधिकार नहीं। तीर्थंकरों के उपदेश के समय जिस प्रकार पशु-पक्षी, मानव, देव, प्राणी सभी एक ही समवशरण अर्थात् स्वनिर्मित सुन्दर सभा में बैठते थे, उसी प्रकार यह विचारधारा विश्व के प्राणीमात्र के हित की कल्पना करती है, इसे विश्वमात्र के हित में देखा जाये और मूल विचारधारा को अपनाया जाये। ठीक 'दिनकरजी' की एक कविता में अभिव्यक्त विचारों की तरह कि भारत मात्र एक भूखण्ड नहीं, एक संस्कृति का नाम है।

—५६, बड़ा लाल स्ट्रीट, अपर बाजार, रांची (बिहार)

प्रेरक संस्मरण

दयालु राजा

□ श्री बलवन्तसिंह हाड़ा

झालावाड़ रियासत के राजा, राजराणा राजेन्द्रसिंह उपनाम 'सुधाकर' एक रसिक कवि एवं दयालु शासक थे। उनका 'पृथ्वी विलास' नामक आलीशान महल गावड़ी के सरोवर के किनारे बना हुआ था। सायंकाल राजा महल के सामने लगे बगीचे में बैठकर गुणीजनों के साथ साहित्य, गायन, संगीत आदि का आनन्द लेते रहते थे। एक दिन जब उनकी साहित्यिक सभा चल रही थी, चारों ओर धुँआ फैल गया। राजा ने एक संतरी से इतना धुँआ आने का कारण पूछा। संतरी ने पता लगाकर कहा कि महाराज, सरोवर की पाल पर एक लकड़हारे का परिवार रहता है, उसकी झोंपड़ी से यह धुँआ आ रहा है। राजा ने संतरी से लकड़हारे को बुलवाया।

लकड़हारे ने डरते हुए राजा से अभिवादन किया—'खमा घणी महाराज!' राजा ने तिरछी नजर कर कहा कि इतना धुँआ क्यों कर रखा है, देखते नहीं हमारी सभी की आँखों में धुँआ घुस रहा है। तुम अपनी झोंपड़ी कहीं दूर हटालो। लकड़हारे ने कांपते हुए स्वर में हाथ जोड़कर अर्ज किया, 'अन्नदाता! हुक्म सर आँखों पर, वर्षा ऋतु होने से ईंधन गीला हो गया है, जल नहीं रहा है, इसी से धुँआ अधिक निकल रहा है, बच्चे दिनभर वर्षा होने से भोजन न बनने के कारण भूखे हैं। मैं कल अपनी झोंपड़ी हटा लूंगा। आज तो आपको सहन करना ही पड़ेगा। हम भी तो आपके शोर शराबे को रोज सहन करते रहे हैं, कभी शिकायत की? गरीब झोंपड़ी आपको सहन नहीं हुई, खैर ईश्वर ही हमारा मालिक है।'

इस प्रकार के शब्द लकड़हारे के सुनकर उनके दीवान भाया शादीलाल जी जो वहाँ उपस्थित थे, नाराज होकर बोले—'संतरी, जाओ इसकी झोंपड़ी को इसी समय हटा दो, इसे राजा से किस तरह बात करना चाहिए, नहीं आता, लकड़हारा कांपते हुए राजा के चरणों में पड़ गया। राजा ने उसे उठाया और अपने पास बिठाया। राजा दीवान से बोले कि संतरी भेजकर राज-भोज में से इसके परिवार के सदस्यों के लिए पर्याप्त भोजन पहुँचाओ। काना भील नामक इस लकड़हारे को अपने सभी गुणीजनों के साथ बिठाकर स्वयं के सामने भोजन करवाया।

राजा ने अपने निजी अभियन्ता से अपने पाकेट खर्च की राशि से झोंपड़ी की जगह एक पक्का मकान शीघ्र बनवाने का आदेश दिया। राजा की दयालुता—संवेदनशीलता को सभी जनों ने मुक्त कंठ से सराहा। आज भी यह छोटा सा पक्का मकान सरोवर के किनारे उस दयालु राजा की याद दिलाता रहता है।

—खाल की हवेली ...

महिला-स्तंभ :



आधुनिक भारतीय नारी : एक दृष्टि

□ ललित सिंघवी

नारी को नारायण का रूप दिया गया है। उसका स्थान सबसे ऊँचा है। वह हम सब की जननी है और वह ममता-मातृत्व की मूर्ति है। वैदिक युग में भी नारी का सम्मान था। वह पुरुष के साथ प्रत्येक धार्मिक-सामाजिक काम में समान रूप से भाग लेती थी। ब्रह्मवादिनी गार्गी व मैत्रेयी ने शास्त्रार्थों में भाग लिया था। जैन शास्त्रों के अनुसार छत्तीस हजार साध्वियों का नेतृत्व बड़े अच्छे ढंग से महासती चन्दनबाला ने किया। मृगावती, मैनासुन्दरी, मदनरेखा आदि बहुत सी नारियों का वृतांत स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया है। मध्यकाल में आकर नारी की स्थिति गिर गई। वह पुरुष की दास बन गई। नारी की सेवा व आत्मसमर्पण की भावना का पुरुष ने अनुचित लाभ उठाया। उसे सहधार्मिणी के स्थान से गिरा दिया। वह भोग-विलास की सामग्री, घर की चारदीवारी में बन्दी, तथा बच्चों का पालन करने वाली मात्र रह गई। नारी की स्वतन्त्रता छिन गई। उसकी शिक्षा समाप्त हो गई। पुरुष के अत्याचार का शिकार बन गई। कहीं जन्म लेते ही उसका गला घोंट दिया जाता, कहीं बचपन में ही उसका विवाह कर दिया जाता, पति की मृत्यु के बाद उसे जबरदस्ती आग में झोंक दिया जाता। इस तरह नारी के विकास का क्रम मध्यकाल में अवरुद्ध हो गया। भगवान् महावीर ने जो नारी मुक्ति का सिद्धान्त दिया, उसकी सार्थकता कम होती गई।

आधुनिक युग में अनेक समाज-सुधारकों जैसे राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी आदि ने नारी को स्वतंत्र कराने का बीड़ा उठाया। सती-प्रथा बन्द हुई। बाल विवाह पर रोक लगी। विधवाओं के साथ सहानुभूति उमड़ने लगी। वह घर की चारदीवारी से बाहर निकलने लगी। धीरे-धीरे समय वदलने के साथ-साथ वह शिक्षा पाने लगी।

पश्चिमी शिक्षा ने भी उसे बल प्रदान किया। स्वतन्त्रता के बाद भारतीय नारी को पुरुष के समान अधिकार मिल गये। आर्थिक दृष्टि से वह स्वतंत्र हो

रही है। पुरुषों के अत्याचारों से मुक्त हो रही है। समाज में उसका सम्मान बढ़ा है। वह दफ्तरों में काम करती है। स्कूलों-कॉलेजों में पढ़ाती है, अस्पतालों में मरीजों की सेवा करती है, कचहरियों में वकील-जज पद ग्रहण करती है। वह आई. ए. एस. बनकर शासन का काम सम्भालती है। अपने आपको कूटनीतिज्ञ समझने वाले पुरुषों को उसने मात दी है व अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारत का सम्मान बढ़ाया है।

आधुनिक भारत में अभी समाजवाद नहीं आया है। समाज में मुख्यतया तीन वर्ग हैं—उच्च वर्ग, मध्य व निम्न वर्ग। तीनों वर्गों में आधुनिक नारियों की स्थिति पृथक्-पृथक् है। प्रथम वर्ग की नारियां अनुकूल वातावरण पाकर ऊँची शिक्षा पा लेती हैं। वे प्राचीनता, भारतीय संस्कृति व पुरुष प्रकृति से विक्षुब्ध हैं। वे पाश्चात्य भौतिकवादी वातावरण को महत्त्व देती हैं। वैवाहिक जीवन को नापसन्द करती हैं। मध्यम वर्ग की नारी प्राचीनता और नवीनता में, पाश्चात्य संस्कृति और भारतीयता में मेल बिठाना चाहती है। उसे रूढ़ियों से छुटकारा मिल गया है। गृहस्थ जीवन में वह अपने पति के साथ मिलकर काम करना अपना कर्तव्य समझती है। तीसरे वर्ग की नारी अशिक्षित व रूढ़िग्रस्त है। वह आधुनिक युग की चेतना से अलग घर की चारदीवारी में रहती है। वह इस युग में पुरुष के अहं के आगे अपना आत्म-समर्पण करती है। इस प्रगतिशील युग में नारी की यह दैन्य स्थिति मानव जाति के लिए निस्सन्देह विडम्बना है।

आधुनिक भारतीय नारी से तात्पर्य उच्च व बुर्जुआ वर्ग की उस नारी से है जिसने भारतीयता को छोड़कर पाश्चात्य भौतिकवाद को अपनाया हुआ है। वह शिक्षिता है, उसे कोई बन्धन नहीं। भारतीयता व सादगी से उसे घृणा है। उसमें लज्जा व संकोच का अभाव है। वह चुस्त व भड़कीला सूट पहनकर अपने अंगों का प्रदर्शन दिखाती है। सुर्खी, पाऊडर, क्रीम, लिपस्टिक व तरह-तरह के लोशनों से अपना श्रृंगार करती है, कभी पुरुषों की तरह 'बेलबॉटम' पहनती है। कभी-कभी मादक द्रव्यों के सेवन में भी रोक नहीं करती हैं। लड़के और लड़की में अन्तर करना कठिन है—पूर्ण हिप्पी। कभी-कभी रंग-बिरंगी साड़ी व तीन अंगुल का ब्लाउज पहनकर अपने अंगों का प्रदर्शन करती है। प्रतिदिन ही नहीं, दिन में कई बार अपना साज-श्रृंगार करती है और पोशाकें बदलती है। वह रति की मूर्ति व अप्सरा है। उसने कालिदास की कल्पना को साकार कर दिया है। आधुनिक भारतीय नारी तितली है। वह रंग-बिरंगे परिधान व श्रृंगार से विभूषित अपने नशीले नयनों से काम-बाण छोड़ती हुई, हँसी बिखेरती हुई सिनेमा व क्लबों में मंडराती है। सिनेमा के अभिनेता उसके इष्टदेव हैं। वह फिल्मी अभिनेत्रियों के आदर्श पर चलती है। फिल्मी गीत व

गजलें उसका कण्ठाहार है। जासूसी उपन्यास व फिल्मी रसालें उसके धर्मग्रन्थ हैं। उसकी दिनचर्या फिल्मी गीतों के गुनगुनाने से शुरू होती है। वह बनावटी प्रसाधनों से अपने को सजाती है। नौकरानी के बिना रोटी नहीं बना सकती। वह एकाकी रहना पसन्द करती है। विवाह से उसे घृणा है।

यह उजली, सुन्दर, मनोहर व सभ्य दिखाई देने वाली आधुनिक नारी व्यग्र व अशान्त है। ज्यों-ज्यों दिन ढलता है, उसकी निराशा बढ़ती जाती है। वह एकान्त में रोती है। पाश्चात्य सभ्यता के अन्धानुकरण ने उसका जीवन विलासी बना दिया है। वह अपने कर्तव्य व अपने गौरवमय पद से गिर गई है। क्या उसके जीवन की सफलता सिनेमा स्टार बनकर अपने यौवन के प्रदर्शन में है? क्या होटलों में शौकीन व विलासी मैनेजरों व अफसरों के संकेतों पर नाचने में है? नहीं-कभी भी नहीं। उसे अपने हृदय को टटोलना होगा। अपनी कमजोरी को पहचानना होगा। वह अपके साज-शृंगार, हाव-भाव व स्वतन्त्र विहार से अपने आपको फिर गिरा रही है। वह मानव की विलास पूर्ति का साधन बन रही है और अपने गौरवमय पद से गिर रही है।

सदियों की गुलामी के बाद नारी की दशा सुधरी है। समाज में उसका सम्मान बढ़ा है। नारी की मुक्ति का मतलब अबाध अनैतिक सम्बन्ध नहीं, इससे नारी के प्रति प्रेम व सम्मान की भावना नष्ट हो जायेगी। उसका जीवन दुःख व दर्दों से युक्त व नीरस बन जायेगा। नारी स्वतन्त्रता का मतलब विवाह की उपेक्षा नहीं। विवाह में मिलन है, संगठन है, व्यवस्था है, उत्साह है, प्रगति है।

नारी को अपने अतीत के शोषण को नही भुलाना चाहिए। उसे अपनी आन्तरिक दुर्बलताओं को देखना होगा, अपने इन भद्दे संस्कारों को छोड़ना होगा। उच्च आदर्श कायम करना होगा। मर्यादा में रहना होगा। लुभावने, आकर्षक व वासनामय रूप को बदलना होगा। उसे वीर भगवन्तों की वाणी को अपने जीवन में पूर्ण रूप से उतारना होगा। तभी सीता माता जैसा आदर्श, लक्ष्मीबाई जैसा शौर्य, महादेवी वर्मा जैसा काव्य, मीरा जैसी भक्ति का आदर्श कायम रह सकेगा। और तभी बड़ी कठिनाई से मिले उसके अधिकार सुरक्षित रह पायेंगे, उसका जगत में सम्मान होगा और आधुनिक भारतीय नारी जीवन अपनी वैदिक कालीन महिमा से मंडित होगा।

मैं उन माता-पिता को निवेदन करूँगा कि वे आज से ही अपने बालक-बालिकाओं को उच्च संस्कार से संस्कारित करें। उनका रहन-सहन नियमित करें। उन्हें भौतिकवादी आँधी से दूर रखें। ये ही बालक-बालिकायें आगे चलकर अपने देश का इतिहास बनायेंगे और अपनी संस्कृति को गौरवान्वित करेंगे।

—५२५७/४, सुल्तान विड़ रोड, अमृतसर-१४३ ००१

चुने हुए मुक्तक

□ साध्वी प्रियदर्शना "प्रियदा"

[१]

कोई कहता है, जीवन एक खेल है,
कोई कहता है, जीवन एक मेल है ।
जो ऊब चुके हैं, इस जीवन से,
वे कहते हैं, जीवन एक जेल है ।।

[२]

अनेक कार्यों का, बोझ ढो रहा है आदमी,
सबको अधूरे छोड़, सो रहा है आदमी ।
जीवन में सुख और आनन्द का द्वार खुले भी कैसे ?
स्वयं अपनी समस्याओं पर रो रहा है आदमी ।।

[३]

राह अनेक हैं, किन्तु मंजिल तो एक है,
विश्वास अनेक हैं, किन्तु देव तो एक है ।
कोई कितना ही भटके, अनजान राहों पर,
मान्यतायें अनेक हैं, किन्तु सत्य तो एक है ।।

[४]

हम नहीं कहते, आप अपनी परम्परा छोड़ दें,
हम नहीं कहते, आप सम्बन्धों को तोड़ दें ।
जहाँ तक आत्मा की मुक्ति का प्रश्न है,
हम चाहते हैं, आप अपने को सत्य से जोड़ दें ।।

[५]

चलना जीवन की गति है,
कुछ आगे बढ़ना ही प्रगति है ।
भटकना मत अनजान राहों पर,
सत्य–ध्येय को पाना ही सुगति है ।।

[६]

मीठी मुस्कान जीवन का ओज है,
गमगीन जीवन धरती का बोझ है ।
हम अपने ही कुविचारों से दुःखी हैं,
यह अन्तर्मन की खोज है ।।

—महावीर ट्रेडिंग कं०, ११–५२–५६, दूसरा माला
गोदावरी स्ट्रीट, विजयवाड़ा–५२०००१ (आंध्र प्रदेश)



प्रमाद*

प्रस्तोता—श्री पी० एस० चौरड़िया

[१]

(१) **प्रश्न**—प्रमाद क्या है ?

उत्तर—(१) जिससे या जिसके कारण जीव भान भूले, वह प्रमाद है।
(२) विषयों में राग और द्वेष करना प्रमाद है।
(३) 'अनुत्साहः प्रमादः' अर्थात् कर्तव्य के प्रति जो अनुत्साह है, वही प्रमाद है।
(४) प्रमाद पाप का मूल है, अनेक अनर्थों की जड़ है और मानवीय शक्ति का विनाशक है। हमारे कीमती समय का सबसे बड़ा शत्रु प्रमाद है, खालीपन और निठल्लापन है।

(२) **प्रश्न**—प्रमाद के पर्यायवाची शब्द बताइये ?

उत्तर—गफलत, लापरवाही, गलती, असावधानी, आलस्य, नशा, उन्माद, सुस्ती, टालमटोल आदि।

(३) **प्रश्न**—'उत्तराध्ययन' सूत्र के कौनसे अध्ययन में भगवान् महावीर ने गौतम स्वामी को ३६ बार उपदेश देकर क्षण भर का भी प्रमाद न करने की प्रेरणा दी है ?

उत्तर—१०वें अध्ययन 'द्रुम पत्रक' में।

[२]

(१) **प्रश्न**—'स्थानांग' सूत्र में प्रमाद के ६ भेद कौन-कौन से बताए गए हैं ?

---

*श्री एस. एस. जैन युवक संघ, मद्रास द्वारा आयोजित कार्यक्रम जिसमें स्वाध्याय संघ, युवक संघ एवं बालिका मण्डल ने भाग लिया।
—सम्पादक

उत्तर—(१) मद्य, (२) निद्रा, (३) विषय, (४) कषाय, (५) द्यूत, (६) प्रतिलेखना में प्रमाद।

(२) **प्रश्न**—'प्रवचनसारोद्वार' में प्रमाद के ८ भेद कौन-कौन से बताए गए हैं ?

उत्तर—(१) अज्ञान, (२) संशय, (३) मिथ्यात्व, (४) राग, (५) द्वेष, (६) स्मृति-भ्रंश, (७) अनादर, (८) योग दुष्प्रणिधानता।

(३) **प्रश्न**—प्रमाद का अपर नाम क्या है ?

उत्तर—'आस्रव'।

[३]

(१) **प्रश्न**—'उट्ठिए नो पमायए'

—आचारांग १/५/२

उपर्युक्त शब्दों का अर्थ बताइये ?

उत्तर—उठो, प्रमाद मत करो।

(२) **प्रश्न**—'अप्पमादो अमतंपद, पमादो मच्चुनो पद'

—धम्मपद २/१

उपर्युक्त शब्दों का अर्थ बताइये ?

उत्तर—अप्रमाद अमरता का मार्ग है, प्रमाद मृत्यु का। सदा जागृत रहने वाला प्रबुद्ध पुरुष अमर रहता है।

(३) **प्रश्न**—जे छेए से विप्पमाय न कुन्जा'

—सूत्रकृतांग (१/१४)

उपर्युक्त शब्दों का अर्थ बताइये ?

उत्तर—जो प्रमाद (आलस्य) नहीं करता, वह वस्तुतः चतुर है।

[४]

(१) **प्रश्न**—प्रमाद जीवन का अभिशाप क्यों है ?

उत्तर—प्रमादियों के जीवन के जो अमूल्य क्षण जा रहे हैं, वे वापस आने वाले नहीं हैं, जीवन की अमूल्य घड़ियाँ यों ही व्यर्थ हो जाती हैं। खोए समय को किसी भी कीमत पर वापस अर्जित नहीं किया जा सकता। इसलिए प्रमाद को जीवन का अभिशाप कहा गया है।

(२) **प्रश्न**—द्रव्य प्रमाद क्या है ?

उत्तर—खाने, पीने, नहाने, धोने, भोग-उपभोग और खेल-कूद, नाटक आदि देखने में जो समय पूरा किया जाता है, वह द्रव्य प्रमाद है। मद्य, निद्रा, विकथा, नशा आदि द्रव्य प्रमाद के कारण हैं।

(३) **प्रश्न**—कर्म बन्ध के पाँच कारण कौन-कौन से हैं ?

उत्तर—(१) मिथ्यात्व, (२) अव्रत, (३) प्रमाद, (४) कषाय, (५) योग।

[५]

(१) **प्रश्न**—'जो पुरुष सोते हैं, वे आलसी हैं, उनके लिए जगत् में सारभूत अर्थ (लक्ष्य) नष्ट हो जाते हैं। इसलिए सतत जागते रहकर पूर्वार्जित कर्मों को नष्ट करो।'

उपर्युक्त उत्तम विचार किस ग्रन्थ से लिए गए हैं ?

उत्तर—'बृहत्कल्प भाष्य' (३३८३) से।

(२) **प्रश्न**—'संसार की सभी चीजें बनी हैं, इसलिए बिगड़ने वाली हैं, नश्वर हैं, अतः तुम लक्ष्य की प्राप्ति में प्रमाद मत करो, क्योंकि प्रमाद आदमी की जीवित मृत्यु है।'

उपर्युक्त विचार किसने व्यक्त किए ?

उत्तर—'तथागत बुद्ध' ने।

(३) **प्रश्न**—'समय बड़ा भयंकर है और इधर प्रतिक्षण जीर्ण-शीर्ण होता हुआ निर्बल शरीर है। अतः साधक को सदा अप्रमत्त होकर भारंड पक्षी (सदा सतर्क रहने वाला एक पौराणिक पक्षी) की तरह विचरण करना चाहिए।'

उपर्युक्त उत्तम विचार किस सूत्र से लिए गए हैं ?

उत्तर—उत्तराध्ययन सूत्र (४/६) से।

[६]

(१) **प्रश्न**—आलस्य में पड़े रहने वाला व्यक्ति सुखोपभोग के लिए क्यों तड़पता रहता है ?

उत्तर—आलसी व्यक्ति स्वयं तो परिश्रम नहीं करता है, बल्कि जो

परिश्रम कर सुखी होते हैं, उनसे ईर्ष्या करता है, मौका पड़ने पर उनसे छीना-झपटी करता है। इन सब कार्यों से उसे क्लेश, भय और अशान्ति होती है। वह सुखी नहीं बन सकता, फिर भी सुख प्राप्त करने के लिए तड़पता रहता है।

(२) **प्रश्न**—पुरुष प्रमाद के होने से और प्रमाद के न होने पर क्या कहलाता है ?

उत्तर—प्रमाद के न होने पर पुरुष पण्डित (ज्ञानी) होता है और प्रमाद के होने पर बाल (अज्ञानी) कहा जाता है।

(३) **प्रश्न**—सावधान एवं असावधान आदमी के वर्ताव में क्या अन्तर होता है ?

उत्तर—एक सावधान (अप्रमत्त) व्यक्ति खतरों का सामना हिम्मत और धैर्य से करता है। वह एक-एक करके उनसे निपटता रहता है, जबकि एक असावधान (प्रमत्त) व्यक्ति खतरों के बीच निरुद्देश्य भटकता रहता है और प्रायः हार, थक कर उनके आगे हथियार डाल देता है।

[७]

(१) **प्रश्न**—कबीरा सोता क्या करै, उठि कै जपो दयार ।
एकै दिन है सोवना, लम्बे पाँव पसार ।।

उपर्युक्त दोहे में संत कबीर ने क्या प्रेरणा दी है ?

उत्तर—संत कबीर ने व्यर्थ में समय बर्बाद न कर, अधिक-से-अधिक समय प्रभु-स्मरण में लगाने की प्रेरणा दी है क्योंकि अंत में तो प्रत्येक को (मृत्यु आने पर) चिर निद्रा में सोना ही है।

(२) **प्रश्न**—चन्दन मुनि किस बात का, किया जाय अभिमान ।
तन, धन, यौवन, रूप, बल, चपला-चमक समान ।।

उपर्युक्त दोहे में चन्दन मुनि ने क्या कहा है ?

उत्तर—जिस प्रकार वर्षा के दिनों में आकाश में बिजली चमकती है, लेकिन वह चमक कुछ क्षणों से अधिक नहीं रहती, ठीक उसी प्रकार यह तन, धन, युवावस्था, रूप, बल भी क्षणिक हैं, इसलिए इनको प्राप्त होने पर गर्व न करो, बल्कि अप्रमत्त भाव से जीवन व्यतीत करो।

(३) **प्रश्न**—काल करे सो आज कर, आज करै सो अब ।
पल में परलै होयगी, बहुरि करेगा कब ।।

उपर्युक्त दोहे में कवि ने क्या सन्देश दिया है ?

उत्तर—यह जीवन क्षण-भंगुर है। न मालूम किस समय यह मृत्यु को धारण करले ! अतः बिना प्रमाद के जो भी करना हो, उसे तुरन्त कर डालो, भविष्य के लिए स्थगित न करो क्योंकि आने वाला कल आएगा अथवा नहीं, इस बात की कोई गारन्टी नहीं है।

[८]

(१) **प्रश्न**—इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि, इमं च मे किच्चं इमं अकिच्चं।
तं एवमेव लालप्पमाणं, हरा हरंति त्ति कहं पमाए ।।

भावार्थ—यह मेरे पास है और यह नहीं है, यह मुझे करना है और यह नहीं करना है—इस प्रकार व्यर्थ बकवास करते हुए पुरुष को उठाने वाला (काल) उठाकर ले जाता है। इस स्थिति में प्रमाद कैसे किया जाए ?

शास्त्र की उपर्युक्त वाणी कहाँ से ली गई है ?

उत्तर—उत्तराध्ययन सूत्र (१४/१५) से।

(२) **प्रश्न**—'धीरो मुहूत्तमपि नो पमाए।'

अर्थ—धीर पुरुष को मुहूर्त्त मात्र भी प्रमाद नहीं करना चाहिये।

उपर्युक्त वाणी किस शास्त्र से ली गई है ?

उत्तर—आचारांग (२/१/६६) से।

(३) **प्रश्न**—स्वर्ण स्थाले क्षिपति स रजः पाद शौचं विधत्ते ।
पीयूषेण प्रवरकरिणा बाह्यत्यैन्धभारम् ।।
चिन्तारत्नं विकिरति कराद् वायसोड्डायनार्थं ।
यो दुष्प्राप्यं गमयति मुधा मर्त्यजन्म प्रमत्तः ।।

भावार्थ—जो व्यक्ति आलस्य अथवा प्रमाद के वश मनुष्य जन्म को निरर्थक गंवा रहा है, वह अज्ञानी पुरुष मानो सोने के थाल में मिट्टी भर रहा है, अमृत से पैर धो रहा है, श्रेष्ठ हाथी पर ईन्धन ढो रहा है और चिन्तामणि रत्न को कौए उड़ाने के लिए फेंक रहा है।

उपर्युक्त विचार किस ग्रन्थ से लिए गए हैं ?

उत्तर—सिन्दूर प्रकरण ५ से।

[६]

(१) **प्रश्न**—तीव्र प्रमादी और मंद प्रमादी में क्या अन्तर है ?

उत्तर—तीव्र प्रमादी सुधबुध भूल जाता है। उसमें मानव कर्तव्य का भान नहीं रहता, किन्तु मंद प्रमादी प्रमाद को तत्काल छोड़कर जागृत हो सकता है। मंद प्रमादी प्रेरणा देने पर वापस साधना में लग जाता है लेकिन महा प्रमादी को साधना भारभूत लगती है, उसका उसमें मन नहीं लगता।

(२) **प्रश्न**—पुरुषार्थ प्रमादहीन कब कहलाता है ?

उत्तर—जब पुरुषार्थ आत्मा के स्वभाव एवं स्वरूप के विकास के हित में नियोजित किया जाता है, तब वह पुरुषार्थ प्रमादहीन कहलाता है।

(३) **प्रश्न**—समय के दुरुपयोग को पापों की जड़ क्यों मानना चाहिए ?

उत्तर—जितने भी निकृष्टतम पाप होते हैं, उन सबके पीछे मुख्य कारण समय का दुरुपयोग है। 'खाली दिमाग शैतान का घर' यह उक्ति निःसार नहीं है। बच्चे अक्सर बुराइयाँ खाली समय में सीखा करते हैं। घरों में स्त्रियों के पारस्परिक झगड़े अक्सर खाली समय में ज्यादा खड़े हो जाया करते हैं।

[१०]

(१) **प्रश्न**—कर पल-पल का उपयोग।

कर लेता आलस्य से, अपना ही नुकसान।
पल-पल का उपयोग कर, बनता मनुज महान्॥
बनता मनुज महान्, असंभव संभव होता।
पाता अनुपम लाभ कि, बीज वक्त पर बोता॥
कहे 'चौथमुनि' जो करे, पल-पल का उपयोग।
अवसर देता है उसे, सुन्दरतम संयोग॥

उपर्युक्त कुंडलियाँ के रचयिता कौन हैं ?

उत्तर—श्री मुनि चौथमल (छाप्पर)।

(२) **प्रश्न**—गौतम प्रमाद क्षण का मत कर।

ज्यों रजनीगण के जाने पर, तरु पत्र पुराने जाते झर।
वैसे नश्वर मानव-जीवन, गौतम ! प्रमाद क्षण का मत कर॥१॥

कुश नोक लटकते ओस बिन्दु, कुछ देर ठहरते ज्यों उस पर।
वैसे मानव का जीवन है, गौतम ! प्रमाद क्षण का मत कर ।।२।।

यह अल्पकाल की आयु और, जीवन बहु विघ्नों का है घर।
कर दूर पुराकृत कर्म-धूलि, गौतम ! प्रमाद क्षण का मत कर ।।३।।

चिर दिन से भी सब जीवों को, मानव जीवन है दुर्लभतर।
होते हैं कर्म-विपाक तीव्र, गौतम ! प्रमाद क्षण का मत कर ।।४।।

'उत्तराध्ययन सूत्र' के १०वें अध्ययन की उपर्युक्त कड़ियों का हिन्दी अनुवाद किसने किया ?

उत्तर—आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. ने।

(३) **प्रश्न**—क्यों अति मान करे नर मूरख।

क्यों अति मान करे नर मूरख, पाय विभूति रहे रंग रातो।
देह लखी बल युक्त सदा, बलहीन जनों पर जोर जमातो।।
यौवन रंग पतंग समो, मत होय अरे मद में मदमातो।
वो मुनि 'सोहन' ना समझे, तब ही जग माहीं रहे दुःख पातो।।

उपर्युक्त छन्द के रचयिता कौन हैं ?

उत्तर—'श्री सोहन मुनि'।

[११]

(१) **प्रश्न**—अप्रमाद क्या है ?

उत्तर—विषयों से अलिप्त रहकर हृदय से जागृत रहना ही अप्रमाद है।

(२) **प्रश्न**—विकथा रूपी प्रमाद का क्या फल होता है ?

उत्तर—विकथा आत्म अवनति का असाधारण कारण है। इससे वाणी भी गंदी होती है और चरित्र भी भ्रष्ट होता है। ऐसा साधक अविश्वसनीय बन जाता है। विकथा में रमने वाले व्यक्ति के और साँप के दो-दो जीभ होती हैं। साँप तो काटता है तब जहर चढ़ता है किन्तु विकथा में लीन व्यक्ति तो बिना काटे भी जहर फैला देता है। ऐसा व्यक्ति कभी भी अपनी मूल बात पर स्थिर नहीं रह सकता।

(३) **प्रश्न**—एक अप्रमत्त की हिंसा एवं एक प्रमत्त की अहिंसा में क्या फर्क है ?

उत्तर—एक अप्रमत्त की हिंसा इसलिए हिंसा नहीं है कि उसकी इच्छा वहाँ हिंसा करने की हुई नहीं, किन्तु एक प्रमत्त व्यक्ति की अहिंसा भी इसलिए हिंसा है कि चूंकि उसके मन में गहरे कही हिंसा का सूक्ष्म संकल्प बना हुआ है ।

[१२]

(१) **प्रश्न**—प्रमत्त संयत गुणस्थान एवं अप्रमत्त संयत गुणस्थान में क्या अन्तर है ?

उत्तर—प्रमादी साधु के गुणस्थान को प्रमत्त-संयत गुणस्थान कहा जाता है । इसमें सत्य के आचरण का पूर्ण संकल्प होता है । जीवन त्यागमय, साधनामय बन जाता है । अप्रमादी साधु के गुणस्थान को अप्रमत्त संयत गुणस्थान कहा जाता है । इस अवस्था में प्रमाद का अभाव होता है । अतः यह पूर्व अवस्था से भी अधिक विशुद्ध है ।

(२) **प्रश्न**—अहासुहं देवाणुप्पिया !
मा पडिबंध करेह !

उपर्युक्त शब्दों का अर्थ बताइये ?

उत्तर—हे देवानुप्रिय ! जैसे सुख हो, वैसे करो परन्तु धर्म-कार्य में प्रमाद मत करो ।

(३) **प्रश्न**—प्रमाद कब छूटता है ?

उत्तर—अज्ञान तथा मोह से संसार के दुःख-सागर में डूबा हुआ मानव जब ज्ञान का प्रकाश पा लेता है, तो प्रमाद छूट जाता है । अज्ञान और प्रमाद योग्य पुरुषार्थ से दूर हो जाते हैं ।

—89, Audiappa Naicken Street
Sowcarpet, Madras–600 079

गाढा य विवाग कम्मुणो, समयं गोयम ! मा पमायए ।

कर्मों का विपाक अति तीव्र है, इसलिए हे गौतम ! समय मात्र का भी प्रमाद मत कर ।

—भगवान महावीर

स्वाध्याय-चिन्तन

□ श्री ललितकुमार कोठारी

- स्वाध्याय एक ऐसी दिव्य ज्योति है जो हमारे अन्तरंग जीवन को प्रकाशमान कर देती है। यह ज्योति जब तक जलती रहेगी, तब तक जीवन में अशान्ति का अन्धेरा टिक नहीं पायेगा।
- स्वाध्याय में स्थिर रहने वाला व्यक्ति बहिर्जगत से विमुख होकर अन्तर्जगत में पहुँच जाता है।
- स्वाध्याय में तल्लीन व्यक्ति अपने जीवन की पुस्तक को पढ़ता है और अपने आपका गहराई से निरीक्षण और परीक्षण भी कर लेता है।
- स्वाध्याय एक ऐसा उद्यान है जिसमें ज्ञान के फूल अपनी सौरभ से महक रहे हैं। जिसने इस सौरभ को ग्रहण किया, उसका जीवन सुरभित हो उठा।
- स्वाध्याय हमारे जीवन में अज्ञान के सघन अन्धकार को दूर कर देता है और ज्ञान के प्रकाश को फैलाता है।
- स्वाध्याय में संलग्न व्यक्ति मन में शान्ति का अनुभव करता है,' जीवन में धार्मिक क्रान्ति करता है और भ्रान्ति को समाप्त कर देता है।
- स्वाध्याय एक ऐसा राजमार्ग है जिस पर अग्रसर व्यक्ति मोक्ष मार्ग की ओर बढ़ता है, मोक्ष मार्ग ही उसका चरम एवं परम लक्ष्य होता है।
- स्वाध्याय जीवन जीने की सच्ची और अच्छी कला है, जो व्यक्ति इस कला में पारंगत है, उसका जीवन सुन्दर बन जाता है।
- स्वाध्याय एक ऐसी प्रचण्ड अग्नि है, जो हमारे जन्म-जन्मान्तरों की कर्म-घास को भस्मसात् कर देती है।
- स्वाध्याय एक बहती हुई अमृत धारा है। जो व्यक्ति इस धारा से लाभ उठा लेते हैं, उनका जीवन अमृतमय बन जाता है।
- स्वाध्याय एक ऐसा जलाशय है, जिसमें स्नान करने वाला व्यक्ति अपने कर्म-मल को धो डालता है।
- स्वाध्याय एक ऐसी संजीवनी बूटी है जो हमारी आत्मा में अध्यात्म का प्राण संचार कर देती है।
- स्वाध्याय एक नन्दनवन है जिसमें विचरण करने वाला व्यक्ति आधि, व्याधि और उपाधि के ताप से मुक्त होता है और समाधि को प्राप्त करता है।

—इलाजी का बाजार, पीपाड़ शहर—३४२६०१

साहित्य-समीक्षा :

'जिनवाणी' का श्रद्धांजलि विशेषांक : ज्ञान, श्रद्धा और समर्पण का भावभीना दस्तावेज*

❑ सुश्री अनुपमा कर्णावट

एक दीर्घकालीन उत्कट प्रतीक्षा के पश्चात् **'जिनवाणी'** का नयनाभिराम आचार्य श्री हस्तीमलजी म० **श्रद्धांजलि विशेषांक** जब इन आतुर नेत्रों के समक्ष दृष्टिगत हुआ तो उस अलौकिक क्षण का रोमांच मात्र अपूर्व व अकल्पनीय नहीं वरन् अवर्णनीय भी था। गत तीन मास से 'जिनवाणी' का अलगाव अवश्य था किन्तु बेसब्री के इस तीव्र आलम की पृष्ठभूमि में जो अलग सबब था, वह था उस मृत्युजंयी आध्यात्मिक आलोकमान भास्कर की प्रखर जीवन-रश्मियों से अपने जीवन में उजाला प्राप्त करने की आकांक्षा। संयम-साधना के उस सजग प्रहरी की गौरव-गाथा से हम अपरिचित तो नहीं क्योंकि उनके विशाल जीवन-समुद्र की अथाह जल-राशि की प्रेरक लहरों से तो सभी के तन-मन सराबोर हैं, किन्तु फिर भी उस अपार सागर की अतल गहराइयों का स्पर्श कर उसमें से अधिकाधिक मणि-रत्नों को चुनने की उत्कट अभिलाषा ने ही सब्र का पैमाना छलका दिया। यद्यपि उनके समग्र जीवन-दृश्यों को एक पुस्तक में समेट कर उनका वास्तविक स्वरूप चित्रित करना तो सम्भव नहीं किन्तु फिर भी 'जिनवाणी' के श्रद्धांजलि विशेषांक ने उनकी जीवन-झांकी के विविध पहलुओं को सलीके से सहेज कर इतने आकर्षक, विस्तृत और सहज रूप में प्रस्तुत किया कि मात्र दो पलकों में सब कुछ न समेट पाने की विवशता ने अतृप्त सजल नयनों में अश्रुकण छलका कर दृष्टि को निर्निमेष बना दिया। वस्तुत: इसके लिए 'जिनवाणी' के सम्पादक अपने समस्त लेखकों के साथ बधाई के सिंहासन पर विराजमान होने के निर्विरोध अधिकारी हैं।

विशेषांक का ढांचा सुव्यवस्थित बनाने हेतु इसका चार खण्डों में विभाजन उपयुक्त शैली का परिचायक है। चारों खण्ड अपना पृथक् अस्तित्व रखते हुए भी परस्पर सम्बद्ध हैं। प्रस्तुतिकरण इतना चित्ताकर्षक, सरल एवं

*सम्पादक—डॉ० नरेन्द्र भानावत, प्रकाशक—सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर–३, मई, जून, जुलाई, १९९१, पृष्ठ ४२४, मूल्य १०.००।

मार्मिक हुआ है कि पाठक अभिभूत होकर अपने आप आराध्य के प्रति श्रद्धा से नत मस्तक हो जाता है। विशेषांक के चार खण्डों के अतिरिक्त एक लघु किन्तु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग 'अपनी बात' है जो 'गागर में सागर' उक्ति को चरितार्थ करता है। सम्पादक डॉ० नरेन्द्र भानावत द्वारा संक्षिप्त व सारगर्भित भाषा में लिखित आचार्य श्री के जीवन-अध्याय को पलटते ये चन्द प्रारम्भिक पृष्ठ पाठक के हृदय में श्रद्धा एवं अथाह भावनाओं का ज्वार उद्वेलित कर देते हैं और विशेषांक प्राप्ति में हुए विलम्ब से उत्पन्न समस्त गिले-शिकवे एक झटके में उस मूक प्रत्युत्तर से विलुप्त हो जाते हैं।

विशेषांक के प्रथम खण्ड में विविध संघों के आचार्यों, सन्तों, मनीषियों एवं श्रद्धालु श्रावकों के भावोद्गार संकलित हैं। जैन धर्म के उन आध्यात्मिक ज्योति-स्तम्भों—जो स्वयं वन्दनीय हैं, श्रद्धा के पात्र हैं—के द्वारा स्वयं श्रद्धालु होकर उस ज्योतिपुंज का गौरव-गान करना उसे आराध्यों का आराध्य बना देता है। जैन समाज का प्रबुद्ध वर्ग का उस महामनीषी के प्रति अपने हृदयोद्गार प्रस्तुत करते-करते भाव विह्वल होकर स्वाभाविक लेखन की सीमाएँ लाँघ जाना उस सरस्वती पुत्र के उत्कर्ष की पराकाष्ठा ही तो है। उन सुरभित भाव-प्रसूनों में संस्मरणों के चित्ताकर्षक रंग सम्मिलित होकर अद्वितीय और अनुपम सौन्दर्य की रचना कर देते हैं एवं पाठक के साथ ऐसा अटूट रिश्ता कायम कर लेते हैं कि पाठक भी प्रसंगों के रथ पर सवार होकर श्रद्धा की पवन के साथ भावनाओं की सैर करने लगते हैं। यद्यपि कहीं-कहीं लेखों में अनन्य गुरु-भक्तों की लेखनी भावनाओं से बहुत ऊपर उठ कर कुछ चामत्कारिक भी रचित कर डालती है किन्तु उस दिव्य साधक के जीवन-वृत्त के साथ जुड़ कर वह अतिशयोक्ति होने का अहसास नहीं देती। प्रत्येक रचना आचार्य श्री के नवीन जीवन-पहलू को उभारती है चाहे वह सुश्रावक प्रो० कल्याणमल लोढ़ा का उत्कृष्ट ज्ञानवर्धक लेख हो या श्रद्धालु भक्त श्री चाँदमल कर्णावट के मर्मस्पर्शी दृष्टान्त, उपाचार्य श्री देवेन्द्र मुनिजी की भाव-भीनी श्रद्धांजलि हो अथवा महासती श्री मैना सुन्दरीजी महाराज की गुरु-भक्ति से ओत-प्रोत भावनाएँ और या फिर विभिन्न सन्तों, श्रावकों द्वारा लिखे प्रेरक प्रसंग ही क्यों न हों, सभी कुछ अविस्मरणीय हैं जो पाठक के गहरे अन्तर्मन को छूकर उसे बार-बार यह विश्वास दिलाते हैं कि—

"जिन्दगी के जहर को अमृत बना कर पी गए हैं,
शूल में भी फूल जैसे मुस्करा कर जी गए हैं।
मौत बेचारी उन्हें क्या छू सकेगी,
जो लाखों दिलों में प्यार बनकर जी गए हैं।।"

विशेषांक का द्वितीय खण्ड 'काव्यांजलि' है जिसमें कवियों के भाव-प्रसून पद्यात्मक शैली में आचार्य श्री को अर्पित हैं। अलंकारों की प्रचुरता एवं शब्दों की जटिलता एक उत्कृष्ट काव्य का सृजन तो कर सकती है किन्तु वह पाठक के हृदय पर अमिट प्रभाव तभी अंकित कर पाती है जब उनमें भावनाएँ अन्तर्निहित हों। इसी प्रकार भावनाओं की अभिव्यक्ति भी उपयुक्त शब्द-चयन के अभाव में शून्य हो जाती है किन्तु यदि भावनाओं एवं कला का उचित सामंजस्य हो तो सृजन के धरातल पर ठोस काव्य रचना निर्मित हो जाती है और यह यहाँ संकलित प्रत्येक कविता की विशेषता है। श्रद्धालु भक्तों के हृदय से निकली ये कविताएँ गुरु-विछोह से व्यथित पाठकों को यही सन्देश देती हैं कि—

"आँखों में अगर मुस्कान है तो इन्सान तुम से दूर नहीं,
पंखों में अगर जान है तो आसमान तुम से दूर नहीं।
शाख पर बैठ कर विहंग ने यह गीत गाया,
श्रद्धा में अगर जान है तो भगवान तुम से दूर नहीं॥"

यद्यपि समस्त कविताएँ हार्दिक अभिव्यक्ति की परिचायक हैं किन्तु फिर भी कुछ कविताएँ विशेष उल्लेखनीय है जिनमें शब्द-लालित्य एवं सरल भावनाओं का अद्भुत संगम है। श्री नथमल लूणिया की कविता में परम पूज्य गुरुवर का पूर्ण व्यक्तित्व उजागर हुआ है। श्री ज्ञानेन्द्र बाफना की 'सादर नमन, वन्दन, अभिनन्दन' कविता में समस्त पाठकों की हार्दिक अव्यक्त अनुभूति का परिचय है जो गौरव-गान से ओतप्रोत है। किन्तु चरमोत्कर्ष पर है श्री पुखराज महनोत रचित 'घर-घर गुरु हस्ती ले आओ' जिसकी एक-एक पंक्ति अगाध ज्ञान व अपार प्रेरणा का मूल स्रोत है। भावनाओं को आधुनिक शैली में आकार देने वाली यह रचना हस्ती की जीवन-झांकी की सजीव प्रस्तुति है।

विशेषांक का अत्यन्त ज्ञानवर्धक अंग इसका तृतीय खण्ड है जिसमें विशिष्ट व्यक्तियों की लेखनी द्वारा सामान्य जन को समाधिमरण, संलेखना एवं संथारे से परिचित कराने का सफल प्रयास किया गया है। लेख ज्ञानोपयोगी होने के साथ ही उपदेशात्मक शैली के स्थान पर सहज, रुचिकर एवं प्रवाहपूर्ण भाषा में रचित होने के कारण बोझिलता का समावेश नहीं होने देते। प्रारम्भ में स्वयं आचार्य श्री के प्रवचन से संकलित लेख हैं जो अपने आप में पर्याप्त व सम्पूर्ण है जो पाठक पर अमिट छाप इसलिए भी छोड़ता है, क्योंकि कथनी व करनी में अद्भुत साम्य रखने वाले उस सन्त ने अपने जीवन के संध्या-काल में इन्हीं कथनों को अक्षरशः चरितार्थ कर दिखाया था।

तत्पश्चात् विविध विद्वानों के दृष्टिकोणों की प्रस्तुति अत्यन्त उपयोगी है। इस सम्बन्ध में श्री पी० एम० चोरड़िया का प्रश्नोत्तर कार्यक्रम अत्यन्त स्वाभाविक शैली में लिखा गया है जो जिज्ञासु पाठकों के हृदय में जन्मे अनेक प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत कर मील का पत्थर साबित हुआ है। इस प्रकार सम्पूर्ण खण्ड विविध जानकारियों से भरपूर है जो अपनी विशिष्ट उपस्थिति का अहसास कराता है।

विशेषांक का सबसे अन्तिम किन्तु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व मर्मस्पर्शी खण्ड है (श्री ज्ञानेन्द्र बाफना द्वारा संकलित) आचार्य श्री के अन्तरंग युवा मनीषी शिष्य श्री गौतम मुनि का "जीवन का संध्या काल : आँखों देखा हाल" जिसमें पाली से विहार से लेकर निमाज में उनके समाधिस्थल तक के समस्त प्रेरक एवं मार्मिक प्रसंगों की अभिव्यक्ति के साथ-साथ प्रासंगिकता के अनुसार आप श्री के कुछ अन्य महत्वपूर्ण जीवन वृतान्तों का भी समावेश है जो साक्ष्य को अधिक सार्थ बना देते हैं।

सम्पूर्ण वृत्तान्त इतनी रोचक, परिष्कृत एवं प्रवाहमय शैली में है कि पाठक के अन्तर्मन की गहराइयों का स्पर्श कर उसे निमग्न कर देता है। हृदय की तूलिका द्वारा भावनाओं के रंगों से बनी बहुआयामी तस्वीर मस्तिष्क के कैनवास पर इतनी जीवन्त बन पड़ी है कि पाठक-गण के सजल नेत्र उसका अवलोकन करते-करते बरबस किसी दिव्य, आकर्षण में खो जाते हैं। प्रभावशाली रोचक शैली में रचित यह साक्ष्य ज्यों-ज्यों अपने प्रेरक प्रसंगों के साथ गन्तव्य की ओर अग्रसर होता है त्यों-त्यों पाठक अधिकाधिक पाने की लालसा लिए मानसिक धरातल पर जो अटूट सम्बन्ध इससे महसूस करता है, उनकी अनुभूति अवर्णातीत है। घड़ी की टिक्-टिक् के श्वासों के साथ स्पन्दन को भी विस्मृत कर वह भावनाओं के एक नवीन संसार में पहुँच जाता है जहाँ मुमुक्षु हृदय का अनुभव शेष रह जाता है और उस स्वर्णिम क्षणों में अपने आराध्य से विलग रहने की विवशता अपने जीवन की वृहद त्रासदी जानकर वह यहाँ वर्णित एक-एक साक्ष्य को आत्मसात करने हेतु आतुर हो उठता है। कुछ स्थल तो इतने मार्मिक बन पड़े हैं कि पाठक की समस्त वेदना सब्र के बाँध तोड़ती हुई अश्रुपूरित नेत्रों से भावनाओं की निर्मल धारा के साथ फूट पड़ती है। स्थान-स्थान पर प्राकृतिक उपमानों के खूबसूरत प्रयोग एवं प्राकृतिक दृश्यों की पृष्ठभूमि से तत्कालीन परिस्थितियों का स्वरूप अधिक सुन्दरता से उभारा जाना, वृत्तान्त को नया आयाम देने में सक्षम है।

सम्पूर्ण विवरण न केवल घटनाक्रम की जानकारी देता है वरन् अपने उतरार्ध में उन साधु-साध्वियों एवं श्रावक-श्राविकाओं की भावनाओं का वाहक

भी बनता है जो बार-बार अपने गुरु के विछोह की कल्पना मात्र से व्यथित हो जाते हैं और उनके समाधि-मरण के पश्चात् तो उनका हृदय रो उठा इस प्रकार के साथ कि—

"चाँद को गरूर है कि मेरे पास नूर है,
हम किस पर गरूर करें कि हमारा चाँद अब हम से दूर है।"

विश्वास नहीं होता कि कल जो वर्तमान, हमारा अपना वर्तमान था, वह आज अतीत बन चुका है किन्तु यह भी सत्य है कि अतीत की कोख से ही वर्तमान का अंकुर फूटता है। अतः हमें अब उस अंकुर को आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज साहब के बताए उपदेशों के जल से सींचित कर उसे भविष्य के गहन धर्म वट-वृक्ष में परिणित करना है।

"कहता अतीत हम तुमको राह बताते हैं,
कहता भविष्य हम तुम से आस लगाते हैं।"

और यह 'आत्म-साक्ष्य' निश्चय ही समय-समय पर प्रेरणा स्रोत बन कर हमारा मार्ग प्रशस्त करेगा व आत्म-उत्थान में सहायक होगा। इसी अटल विश्वास के साथ 'जिनवाणी परिवार' को इस विशेषांक के प्रकाशनार्थ एक बार पुनः हार्दिक बधाई एवं अन्त में अपने आराध्य श्री को समर्पित यह छन्द—

"व्यक्ति चला जाता स्मृति रह जाती है,
फूल की मिट्टी में महक रह जाती है।
धन्य हैं हमारे वे शिरोमणि सन्त कि जिनके पश्चात्—
श्रद्धा व विश्वास भरी गाथा रह जाती है॥"

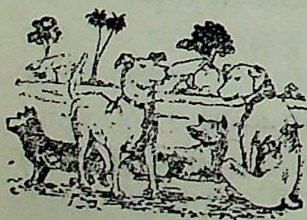
—द्वारा श्री चन्दुलालजी कर्णावट, ११/२०-२१
राजपूत होस्टल के पास, पावटा 'बी' रोड, जोधपुर (राज०)

□ □ □

बाल कथामृत* (६४)

□ १८ वर्ष तक के बच्चे इस कहानी को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर १५ दिन में "जिनवाणी" कार्यालय को भेजें। उत्तरदाताओं के नाम पत्रिका में छापे जायेंगे। प्रथम, द्वितीय व तृतीय आने वालों को क्रमशः २५, २० व १५ रुपयों की उपहार राशि मण्डल द्वारा प्रदान की जायेगी। इसके अलावा वर्ष भर के लिए निम्न १३ प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्रदान किये जायेंगे। १. श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन एडवोकेट, भवानीमंडी की ओर से उनकी माताजी श्रीमती बसन्तीबाई की पुण्य स्मृति में ११ रुपये का एक पुरस्कार। २. श्री रिखबराजजी कर्णावट, जोधपुर की ओर से उनके पिता श्री पनराज जी कर्णावट की पुण्यस्मृति में १० रुपये का एक पुरस्कार। ३. श्री कैलाशजी बोहरा, भवानीमण्डी की ओर से उनके पिता श्री शान्तिलालजी की स्मृति में ११) रु० का एक पुरस्कार। ४. जे. एल. जैन ट्रस्ट, इन्दौर द्वारा ११) रु० का एक पुरस्कार। ५. ६. ७. ८. श्री रिखबचन्दजी कांकरिया, मद्रास की ओर से उनके पिता श्री मोहनलालजी कांकरिया, माता श्रीमती झणकारबाई कांकरिया की पुण्य स्मृति में तथा पूज्य महासती श्री सरलाजी एवं विमलाजी की दीक्षा स्मृति एवं धर्मपत्नी श्रीमती पिस्तादेवी के दो वर्षी तप करने के उपलक्ष्य में १०-१०) रु० के चार पुरस्कार। ९. श्री रघुदासजी जैन, सवाईमाधोपुर की ओर से उनके पिता श्री रामजसजी जैन एवं माता श्रीमती मोत्यादेवी जैन की पुण्यस्मृति में १०) रु० का एक पुरस्कार। १०. ११. श्री विनयचन्दजी जैन, दिल्ली की ओर से ११-११) रु० के दो पुरस्कार उनके पिता श्री प्रेमचन्दजी जैन एवं माता श्रीमती इन्द्राकुमारी जैन की पुण्यस्मृति में। १२. श्री सुरेश राजेन्द्रकुमारजी मेहता, बम्बई की ओर से ११) रु० का एक पुरस्कार अपने दादाजी श्री घेवरचन्दजी मेहता की पुण्यस्मृति में। १३. श्री प्रकाशचन्दजी शिशोदिया, रामपुरा की ओर से ११) रु० का एक पुरस्कार अपनी मातुश्री श्रीमती भँवरबाईजी की स्मृति में।

—सम्पादक



क्रूर पशु भी दयालु होते हैं

□ श्री राजेन्द्रप्रसाद जैन

पश्चिम के जाने माने फिल्म निर्देशक 'वाल्टडेनेज' ने अपनी फिल्म 'डेजर्टस' के अंकन के लिए अपने जीवन को खतरे में डाल कई पहाड़ों, कन्दराओं एवं भयानक जंगलों में पशु-पक्षियों के जीवन एवं स्वभाव का निकट से अध्ययन किया।

*श्री राजीव भानावत द्वारा सम्पादित—परीक्षित स्तम्भ।

उस दिन वे अपनी फिलम के दृश्यांकन के लिए अफ्रीका के जलते, तपते, बीहड़ रेगिस्तान में घूम रहे थे तभी उन्होंने देखा कि दूर एक खूंकार शेर पानी के एक मात्र उस छोटे से जलाशय की ओर बढ़ रहा है जहाँ कई छोटे पशु अपनी प्यास बुझा रहे थे, तभी उन्होंने साश्चर्य देखा कि अपने शिकार से आँख मिचौनी कर वह शेर एक झाड़ी के नीचे बैठ गया और जब सब पशु प्यास बुझा वहाँ से चल दिये तो वह उठा और जलाशय की ओर बढ़ा। जलाशय में नाम मात्र का पानी बचा था फिर भी शेर ने एक विचित्र सी तृप्ति का आभास दिया और पानी पीने लगा तथा पानी समाप्त होते ही वहाँ से चल दिया।

शेर के हाव-भाव एवं तृप्ति व सन्तुष्टि की भाव-भंगिमा देख वाल्टडेनेज आश्चर्य चकित हो गये। उनके ललाट पर उभरी अजीब सी सिलवटों से उनके मनोभावों का एहसास करते, उनकी जिज्ञासा का समाधान करने को, पास ही खड़े वन्य-जीवों के जीवन एवं स्वभाव के पारखी उस बुजुर्ग अफ्रीकी ने कहा—

"मेरे मालिक ! वन-राज को अपने प्राणों से कहीं अधिक अपना धर्म प्यारा है…उसकी असीम शक्ति का तकाजा भी यही है कि उसके साये अन्य जीव भी फले फूलें।"

बुजुर्ग के इन शब्दों ने 'वाल्टडेनेज' की आँखें खोलदीं। अपने भावों को अभिव्यक्ति देने को वे स्वयं को रोक नहीं पाये और भावातिरेक में दार्शनिक अंदाज में कह उठे—

"इसे पीड़ाकारी विडम्बना नहीं तो क्या कहूँ कि जिन प्राणियों को हम क्रूर कहते नहीं अघाते, उनके हृदय में इतनी दया, इतनी करुणा…वही इंसान जिसे सभ्य एवं दयालु बनाने को इतने मज़हब काम कर रहे हैं, इतने साधु-संत इस सरज़मी पर अमन, अहिंसा और इन्सानियत के पैगाम दे रहे हैं, वही इंसान दया, करुणा एवं संवेदना से अपना दामन बचाते क्रूरता की ओर बढ़ रहा है।"

और फिर भारी मन वे फ़िलमांकन के लिए आगे बढ़ गये।

—एडवोकेट, भवानीमंडी (राज.)

अभ्यास के लिए प्रश्न

उपर्युक्त कहानी पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

१. वाल्टडेनेज ने अपनी फिलम के अंकन के लिए किनके जीवन का अध्ययन किया ?

२. अफ्रीका के बीहड़ रेगिस्तान में उन्होंने क्या देखा ?

३. उनके आश्चर्य का कारण क्या था ?

४. वन्य जीवों के पारखी बुज़ुर्ग अफ्रीकी ने वाल्टडेनेज से क्या कहा ?

५. 'बुजुर्ग के शब्दों ने वाल्टडेनेज की आँखें खोल दीं।' क्यों और कैसे ?

६. 'वनराज को अपने प्राणों से कहीं अधिक अपना धर्म प्यारा था।' यहाँ किस धर्म की ओर संकेत किया गया है ?

७. वाल्टडेनेज ने दार्शनिक अंदाज में क्या कहा ?

८. साधु-संत किस बात का उपदेश देते हैं ?

९. उनके उपदेश का प्रभाव हम पर क्यों नहीं पड़ता ?

१०. आप कैसे कह सकते हैं कि आज का इन्सान क्रूरता की ओर बढ़ रहा है ?

११. 'जीव दया के महत्त्व' पर १० पंक्तियाँ लिखिए।

१२. आप कोई ऐसा घटना-प्रसंग लिखिए जिसमें क्रूर पशु ने दयापूर्ण बर्ताव किया हो।

'जिनवाणी' के अक्टूबर, १९९१ के अंक में प्रकाशित श्री बलवंतसिंह हाड़ा की कहानी **'कीमती पत्थर'** (९२) के उत्तर जिन बाल पाठकों से प्राप्त हुए हैं, उन सभी को बधाई।

पुरस्कृत उत्तरदाताओं के नाम

प्रथम—श्री राजेशकुमार पोरवाल द्वारा श्री गोरधनलालजी पोरवाल वार्ड नं. ३, मकान नं. ३३, पोस्ट ऑफिस के सामने, **भवानीमंडी**–३२६ ५०२।

द्वितीय—श्री दीपक जैन द्वारा श्री दानमलजी जैन, ७०६, महावीर नगर, टोंक रोड, **जयपुर**–३०२ ०१८।

तृतीय—सुश्री व्रजेशकुमारी भाटी द्वारा श्री लक्ष्मीनारायणजी भाटी, रेलवे फाटक बाहर, धर्मशाला के पास, **चौमहल्ला** (राज.)।

प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त उत्तरदाता

१. श्री सुरेशकुमार राठौर द्वारा श्री लक्ष्मीनारायणजी राठौर, रेलवे फाटक बाहर, जिनिंग फैक्ट्री के सामने, **चौमहल्ला** (राज.)।

२. सुश्री मन्जू लूणावत द्वारा श्री उगमराजजी प्रकाशचन्दजी लूणावत कपड़े के थोक व्यापारी, **पीपाड़ शहर** (राज.)।

३. श्री सुनीलकुमार भाटी द्वारा श्री लक्ष्मीनारायणजी भाटी, रेलवे फाटक बाहर, निकट पुलिस चौकी, **चौमहल्ला**–३२६ ५१५।

४. सुश्री शालिनी सिंघी द्वारा श्री दिनेशचन्द्रजी सिंघी, टी. एल. डी.–III, एस. डी.–I, रा. रा. वि. मंडल, **सिरोही**–३०७ ००१।

५. श्री सुरेशकुमार जैन द्वारा श्री संपतराजजी बोथरा, गांधी वाड़ी पो. **नागौर**–३४१ ००१।

६. सुश्री कुणाल सिंघी द्वारा श्री महेन्द्रकुमारजी सिंघी, पुराने बस स्टेण्ड के पास, **सिरोही**–३०७ ००१।

७. श्री वीरेन्द्र जैन द्वारा महावीर ग्रायरन एण्ड टिम्बर मर्चेण्ट, बैंक ग्रॉफ बड़ौदा के पास, **बजरिया, सवाईमाधोपुर** (राज.)।

८. श्री विवेक रातड़िया, रामटेकरी पोस्ट ग्रॉफिस के पास, **मंदसौर**–४५८ ००१।

९. सुश्री टीना जैन द्वारा श्री ग्रभिनन्दनजी जैन, घोड़ी बावड़ी के सामने, **ग्रालनपुर, सवाईमाधोपुर**–(राजस्थान)।

१०. सुश्री शिखा जैन द्वारा श्री प्रेमबाबूजी जैन, ई. एस. ग्राई. डिस्पेंसरी के सामने, स्टेशन **बजरिया, सवाईमाधोपुर** (राज.)।

११. सुश्री रेखा जैन द्वारा श्री शान्ताप्रसादजी जैन, १२१, इन्द्रा कॉलोनी, **बजरिया, सवाईमाधोपुर**–(राजस्थान)।

१२. सुश्री सुभद्रा जैन द्वारा श्री ज्ञानचन्दजी जैन, सिन्धी कॉलोनी, कटरा, **नदबई** (भरतपुर)।

अन्य उत्तरदाता

जयपुर से दिनेशकुमार जैन, मांगीलाल हिरण 'मुमुक्षु', सुनीलकु सांखला, शैलेष वर्मा, सीमा कोठारी, **पचपहाड़** से नीताकुमारी बोहरा, ना से विमलकुमार जैन, नवरतनमल बोथरा, शर्मिला बोथरा, **सवाईमाधोपुर** मनीषकुमार जैन, **अजमेर** से रेणुका शर्मा, **बजरिया** से पिंकी शर्मा, प्रकाश जैन, वीरेन्द्र जैन, **जोधपुर** से अनिल जैन, रीता शांडिल्य, **नवानिया** से क जैन, **बम्बोरा** से अरविंद नागौरी, आशा नागौरी, चन्द्रशेखर नागौरी, **नदब** सुभद्रा जैन, **शिरपुर** से पीयूष चंदनमल राखेचा, **आलनपुर** से मधु जैन, **कोट** संदीपकुमार जैन, **जलगांव** से नरेश जैन, सीमा जैन, **श्री महावीर जैन धा** **पाठशाला, बजरिया** से राकेश जैन, धनराज जैन, अनिलकुमार जैन, म जैन, अनिल जैन, प्रकाशचन्द्र, चन्द्रप्रकाश, त्रिलोकचन्द, अजय, आशीष, अ पारस, पंकज, मनीष, सुरेन्द्र, लोकेश, रेखा, मंजू, मधु, पद्मा, शकुन्तला, म (नाथूलालजी), नीतू (रमेशचन्द्रजी), पिंकी (जम्बूकुमारजी) दीपलता, पि (बाबूलालजी), शिमला, नीतू (ओमप्रकाशजी), सरिता, डिम्पल, म (छीतरमलजी), माया, पिंकी (माणकचन्दजी), ममता (लल्लूलालजी हेमलता, प्रकाश, सुरेखा, विनीता, मोनिका, सुनीता, शीतल, अंशु, यो गौतमचन्द, प्रवीण ।

विशेष—श्री धन सुरेश जैन ने महावीर जैन धार्मिक पाठशाला, बजरि सवाईमाधोपुर के छात्र-छात्राओं को प्रेरणा देकर उत्तर भिजव तदर्थ उनके सहयोग के लिए आभार ।

—सम्पा

नोट—बाल कथामृत [९१] के उत्तर हमें निम्न बाल पाठकों से विलम्ब प्राप्त हुए अतः उनके नाम नवम्बर, १९९१ के अंक में प्रकाशित न किये जा सके । प्रोत्साहनार्थ यहाँ उनके नाम दिये जा रहे हैं । भविष्य समय पर ही उत्तर भिजवायें ।

श्री महावीर जैन धार्मिक पाठशाला **बजरिया, सवाईमाधोपुर** से आशी अमित, ममता (लल्लूलालजी), हेमलता, प्रकाश, शकुन्तला, म (नाथूलालजी), दीपलता, रेखा, सुरेन्द्र, मधु, ममता (छीतरमलजी), डिम्प सरिता, प्रकाश, नीतू (ओमप्रकाशजी), शिमला, पिंकी (जम्बूकुमारजी), पि (बाबूलालजी), पंकज, पिंकी (माणकचन्दजी), माया, मनीष, शिखा, मं अजय, नीतू (रमेशचन्द्रजी), चन्द्रप्रकाश, त्रिलोक, पद्मा, लोकेश, पार

विनीता, सुरेखा, मोनिका, शीतल, सुनीता, टीना अंशु, योगेश, गौतम, प्रवीण, **जलगांव** से नरेश, सीमा हुंडीवाल।

'उपयोग में आवे वही धन है, अन्यथा पत्थर है।' भावना को व्यक्त करने वाले घटना-प्रसंग

[१]

एक गांव में एक अकेली विधवा बुढ़िया रहती थी। वह कठोर परिश्रम से रुपये कमाकर उससे अपना गुजारा चलाती व बाकी बचे रुपयों से वह जेवर बनवाकर अपने पास रखती ताकि वक्त-बेवक्त मुसीबत में उसके काम आ सके। यही उसका नित्य क्रम था। थोड़े दिनों बाद उसके मन में चारों धाम यात्रा करने का विचार आया और वह चारों धाम यात्रा करने के लिए रुपये बचाने लगी।

अगला वर्ष भयंकर अकाल की चपेट में आ गया और गांव में त्राहि-त्राहि मच गई। अनेक लोग भूखों मरने लगे, और लोगों को भूखा ही सोना पड़ता। इस पर बुढ़िया ने चिंतन किया कि मेरे पास जो जेवर पड़े हैं उन्हें क्यों न बेचकर अकाल पीड़ितों की सहायता में लगा दिया जाए क्योंकि "उपयोग में आवे वही धन है, अन्यथा पत्थर है।" उसके चिंतन ने दिशा बदली और उसने अपने द्वारा एकत्रित धन राशि अकाल पीड़ितों की सहायता में लगा दी।

—राकेश पोरवाल, भवानीमंडी

[२]

मिडास नामक एक मनुष्य को लगा कि सुख धर्म में नहीं, किन्तु धन में रहता है। अपनी भक्ति में प्रभु को प्रसन्न करके उसने प्रभु से ऐसा बर माँग लिया कि वह जिस वस्तु को छूए, वही सोने में बदल जाये। वरदान मिलते ही उसने अपने मकान को, पलंग को, पोशाक को और अन्य कई वस्तुओं को छूकर सोने का बना लिया। उसने सोचा कि अब चारों ओर सुख ही सुख है, परन्तु कुछ देर बाद ही उसे भूख लगी। छूने पर थाली सोने की बन गई, रोटी सोने की बन गई, पीने का पानी भी सोने का बन गया। अब उसे अत्यन्त कठिनाई हुई। सोने को चबाया नहीं जा सकता था और न सुनहरा पानी पिया ही जा

सकता था। इस प्रकार संसार में सर्वस्व प्रतीत होने वाला धन अब उसके लिए पत्थर के समान ही था, जो उसके जीवन के लिए किसी काम का नहीं था। आखिर परेशान होकर उसने प्रभु से प्रार्थना की कि मेरे वरदान को वापस लेने का कष्ट करें। मैं जिस स्थिति में था, उसी में सुखी था। पत्थर के समान अनुपयोगी धन मेरे लिए व्यर्थ ही है।

—दीपक जैन, जयपुर

[३]

किसी गाँव में एक धनी सेठ था। वह बहुत कंजूस था। कभी किसी की मदद नहीं करता। एक दिन सेठ ने अपनी सोने की अशर्फियों को मटके में भरकर अपने बाग में गाड़ दी। यह उसकी जीवन भर की पूँजी थी। प्रतिदिन आधी रात को उठकर सेठ उन अशर्फियों को गड्ढे से निकाल कर देखता। एक दिन आधी रात को सेठ ने गड्ढा खोदकर मटका निकाला। ज्यों ही उसे खोलकर देखा तो गश खाकर गिर पड़ा। उसमें अशर्फियों की जगह कंकड़-पत्थर भरे हुए थे। कुछ सम्भलने पर सेठ ने देखा कि मटके में एक कागज रखा है। उसने खोलकर देखा। वह एक पत्र था। उसमें किसी अज्ञात व्यक्ति ने लिखा था कि सेठजी ! ये अशर्फियां आपके किसी काम की नहीं। आप इनका कुछ उपयोग नहीं कर सकते। मैं एक मुसीबत का मारा हूँ। अतः इन्हें ले जा रहा हूँ। यदि इनसे मेरा भाग्य बदला तो दुगुनी आपको लौटा दूँगा। पत्र पढ़कर सेठ को कुछ आशा बंधी। अब भी वह आधी रात को उठकर मटका निकालकर देखता। इसी प्रकार एक वर्ष बीत गया। अब सेठ को उस अज्ञात व्यक्ति पर सन्देह होने लगा। फिर भी वह मटका देखना न भूलता।

एक बार जब आधी रात को सेठ ने मटका निकालकर देखा तो उसकी आँखें खुशी से चमक उठीं। मटके में दुगुनी अशर्फियाँ रखी थीं। साथ ही एक पत्र भी था। सेठ ने पत्र पढ़ना शुरू किया—'सेठजी, आपकी अशर्फियों से मैंने व्यापार शुरू किया और भाग्य ने साथ दिया। आज मैं करोड़ों का मालिक हूँ। आपकी राशि आपको दुगुनी लौटा रहा हूँ। मैंने अपने धन से कई स्कूल, अस्पताल एवं संस्थाएँ स्थापित की हैं और गरीबों एवं अनाथों की सहायता करने में अपने धन का उपयोग कर रहा हूँ। यह सब आपकी अशर्फियों की सहायता से सम्भव हुआ है। यदि वे उसी प्रकार मटके में रहतीं तो पत्थर के समान थीं। मैंने उनका उपयोग किया जिसका सुपरिणाम आपके सामने हैं।

—ब्रजेशकुमारी भाटी, चौमहल्ला

[४]

केवल पैसा ही बहुत था उस सेठ के पास ऐसी बात नहीं। दिल भी बहुत बड़ा था उस सेठ का। लगातार अकाल पड़ने की स्थिति में जब शासन ने हार मान ली तो सेठ ने अपने धन का सदुपयोग किया। स्थान-स्थान पर भोजन-शालाएँ खुलवा दीं। भूख से तड़प-तड़प कर मरने वालों को मानो भगवान मिल गये। सभी सेठ के प्रति शुभ-कामना व्यक्त कर रहे थे। पर कुदरत को अभी यह मंजूर कहाँ था। चार वर्ष के अकाल के बाद पाँचवें वर्ष भी बरसात नहीं हुई। इधर सेठ के पास एक-एक पाई भोजन के कार्य में खर्च हो चुकी थी।

शाम को सेठ को उदास देखकर सेठानी ने बात पूछी तो सेठ बोले—तिजोरी की एक-एक पाई दया-दान के काम में खर्च हो चुकी है। यहाँ तक कि तुम्हारे गहने भी मैं सब बेच चुका हूँ पर अभी भी अकाल की स्थिति के कारण लोग भूखे मर रहे हैं, यह मुझसे देखा नहीं जाता—कहते-कहते सेठ की आँखों से अश्रुधार बह निकली। सेठानी ने कहा—उदास मत होइये, धीरज रखिये। यह मेरे गले में जो मंगल सूत्र है यह भी आज तो हीरे जवाहरात के कारण लाखों रुपये का है, इसे बेचकर लोगों की जान बचाइये। सेठ बोले—तुम्हारे सौभाग्य का चिह्न बेच दूँ ? तो सेठानी ने कहा—मेरे प्रदेश के लाखों लोगों की जान बचे तो मेरा सच्चा सौभाग्य है। मंगलसूत्र बेच दीजिये। यदि यह मेरे गले में रहेगा तो पत्थर के समान है और इसके बदले लाखों लोगों की जान बचेगी तो ही धन है।

—सुरेशकुमार राठौड़, चौमहल्ला

सामायिक किसलिए ?

☐ कुमारी आशा जैन

१. किसी को दुःख नहीं पहुँचाने के लिए।
२. बुद्धिमान बनने के लिए।
३. सुसंगति के लिए।
४. अच्छी आदतें जीवन में अपनाने के लिए।
५. अपनी बुद्धि को स्थिर और सात्विक बनाने के लिए।
६. अपनी आत्मिक शक्ति के विकास के लिए।
७. महापुरुषों के बताये मार्ग का अनुसरण करने के लिए।
८. आत्म-विश्वास बढ़ाने के लिए। बाद में पछताना न पड़े इसलिए।

—छोटी कसरावद (खरगोन) म. प्र.

पर्युषण पर्वाराधना प्रतिवेदन

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के २६० स्वाध्यायियों द्वारा ११४ क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना सम्पन्न

संत-सतियों के चातुर्मास से वंचित ग्राम/शहरों में योग्य स्वाध्यायियों को भेजकर अष्ट दिवसीय पर्युषण पर्व की आराधना का महान् रचनात्मक धार्मिक कार्य श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा विगत ४७ वर्षों से किया जा रहा है।

महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, मेवाड़, मारवाड़ तथा पल्लीवाल, पोरवाल क्षेत्रों आदि के विभिन्न छोटे-बड़े, दूर-नजदीक के ११४ क्षेत्रों में २६० स्वाध्यायियों ने वर्ष १९९१ में अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान की हैं।

सभी क्षेत्रों में पर्युषण पर्व के दिनों में शास्त्रवांचन, विभिन्न विषयों पर सारगर्भित प्रवचन, प्रतिक्रमण, दया, पौषध, उपवास, आयम्बिल, एकासन आदि अनेकानेक धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न कराये। अनेक स्थानों पर धार्मिक पाठशालाएँ शुरू करवाने तथा सामूहिक स्वाध्याय करने की प्रेरणा, नये स्वाध्यायी बनाने का कार्य किया गया। हिंसक पदार्थों से बनी वस्तुओं का निषेध, दुर्व्यसनों का त्याग, दहेज प्रथा, मृत्युभोज आदि कुरीतियाँ मिटाने की प्रेरणा की गयी।

विभिन्न क्षेत्रों में इस कार्यालय को प्राप्त रिपोर्टों के अनुसार स्वाध्यायियों द्वारा दी गयी सेवाओं की क्षेत्रानुसार नामावली इस प्रकार है—

महाराष्ट्र क्षेत्र

१. नागपुर—
१. श्री नवरतनमलजी डोसी, जोधपुर
२. श्री सुनीलजी छाजेड़, जलगाँव
३. श्री मनोजजी संचेती, जलगाँव

२. एदलाबाद—
१. श्री प्रकाशचन्दजी जैन, जलगाँव
२. श्री अशोकजी हुंडीवाल, जलगाँव

३. लातुर— १. श्री हरकचन्दजी ओस्तवाल, मद्रास
२. श्री प्रसन्नकुमारजी बम्ब, पहुरदामा
३. श्री लालचन्दजी छिंगावत, जलगाँव

४. देवलगांवमही— १. श्री राजमलजी ओस्तवाल, मद्रास
२. सौ. अनिता नावरिया, प्रवरासंगम
३. कु. कविता खिंवसरा, चालीसगांव

५. मांडल— १. श्री प्रकाशचन्दजी हुण्डीवाल, जलगाँव
२. कु. मनीषा श्रीश्रीमाल, शेन्दूर्णी
३. कु. मनीषा बोरा, चालीसगांव

६. नागद— १. सौ. ताराबाई डाकलिया, जलगाँव
२. सौ. केशरदेवी सिंघवी, जलगाँव
३. सौ. मोहनीदेवी कटारिया, जलगाँव

७. बरखेड़ी— १. सौ. रसीलाबाई बरड़िया, जलगाँव
२. श्रीमती विमला सिंघवी, धूलिया
३. कु. गुणवन्ती लोढा, शाहपुर

८. पहुर १. श्री पारसमलजी गिड़िया, जोधपुर
२. श्री दलीचन्दजी चोरड़िया, जलगाँव

९, लासूर— १. सौ. मंगलाबाई चोरड़िया, जामनेर
२. कु. संगीता बोरा, न्यायडोंगरी
३. कु. संगीता सकलेचा, बरखेड़ी

१०. पिंपलगांव राजा— १. श्री हीरालालजी मंडलेचा, फत्तेपुर
२. कु. ललिता खिंवसरा, मांडल
३. कु. ममता लोढ़ा, पहुर

११. पहुरदामा— १. श्री प्रकाशचन्दजी बांठिया, पाचोरा
२. कु. उज्ज्वला लुंकड़, बाकोद
३. कु. अरुणा बाफना, चालीसगांव

१२. भण्डारा— १. श्री दीपचन्दजी संचेती, धूलिया
२. श्री ललितजी चोरड़िया, शिरपुर
३. श्री दिनेशजी पिछोलिया, जलगाँव

१३. उस्मानाबाद— १. श्री दीपचन्दजी बोथरा, पाचोरा
२. कु. वर्षा ओस्तवाल, शेन्दुर्णी
३. कु. वन्दना खिंवसरा, चालीसगांव

१४. **भड़गांव**— १. श्री मुन्नालालजी भण्डारी, जोधपुर
२. श्री वीरेन्द्रजी जैन, जलगाँव
३. श्री सन्तोषजी सुराणा, जलगाँव

१५. **गोरेगाँव**— १. श्री कुन्दनमलजी दाणी, डूँगला
२. श्रीमती आशा दाणी, डूँगला

१६. **वाघली**— १. कु. ममता भगोता, इन्दौर
२. श्रीमती टीकमबाई डांगी, इन्दौर

१७. **केलसी**— १. श्री धर्मीचन्दजी कटारिया, रणसीगांव

१८. **आलेगाँव**— १. श्री दीपचन्दजी बोरा, न्याय डोंगरी
२. कु. संगीता धाड़ीवाल, पाचोरा
३. कु. अर्चना बांठिया, पाचोरा

१९. **कलमसरा**— १. सौ. ललिता कटारिया, जलगांव
२. सौ. कान्ता लुंकड़, जलगांव

२०. **शहापुर**— १. श्रीमती कमलबाई जैन, भड़गांव
२. कु. चंचलबाई लोढ़ा, जलगांब
३. कु. सुवर्णा डूंगरवाल, राजणी,

२१. **राजणी**— १. सौ. बादामबाई चोरड़िया, शिरपुर
२. कु. सविता सुराणा, शिरपुर
३. कु. मीना टाटिया, खलना

२२. **धरणगांव**— १, सौ. ज्योति गादिया, भुसावल
२. कु. मधुबाला लोढ़ा, शहापुर
३. कु. गुणवन्ती ओस्तवाल, शहापुर

२३. **हीरापुर**— १. श्री पारसमलजी जैन, नैनवा
२. श्री सुशीलकुमारजी भण्डारी, जलगांव
३. श्री सुनीलजी जैन, जलगांव

२४, **कजगांव**— १. श्री गोपीलालजी जैन, बजरिया (स. मा.)
२. कु. छाया कोठारी, राजणी
३. कु. ज्योति लुंकड़, बाकोद

२५. **खलना**— १. श्री विनयकुमारजी जैन, आलनपुर
२. श्री रवीन्द्रजी सुराणा, जलगांव
३. श्री इन्द्रचन्दजी खिवसरा, चालीसगांव

२६. **उम्बरखेड़**— १. श्री कजोड़मलजी जैन, आलनपुर

	२. श्री विनोदजी चोरड़िया, जलगांव
	३. श्री गौतमचन्दजी जैन, जलगांव
२७. बोरकुण्ड—	१. श्री निहालचन्दजी जैन, देई
	२. श्री महावीरजी जैन, नैनवा
२८. बाकोद—	१. श्री नरेन्द्रमोहनजी जैन, श्यामपुरा
	२. श्री दिनेशजी खिवसरा, धूलिया
	३. श्री महेशजी भण्डारी, जलगांव
२९. तोंडापुर—	१. श्री धर्मचन्दजी जैन, श्यामपुरावाले (स.मा.)
	२. कु. अनीता कोठारी, राजणी
	३. कु. मीना बोथरा, बरखेड़ी
३०. पलासखेड़ा—	१. श्रीमती चांदाबाई लोढ़ा, सिल्लोड़
	२. कु. शोभा लोढ़ा, सिल्लोड़
३१. काशमपुरा—	१. श्री सुनीलजी संकलेचा, जलगांव

मध्य प्रदेश क्षेत्र

१. भोपाल—	१. डॉ. उदयलालजी जारोली, नीमच
	२. श्री पनराजजी ओस्तवाल, जालना
	३. श्री कैवन्नाजी जवेरी, इन्दौर
२. बेतूल—	१. श्रीमती लीलाबाई कोठारी, बड़वाह
	२. कु. आशा खाब्या, कुशलगढ़
	३. कु, अंजना डोसी, कुशलगढ़
३. श्योपुरकलां—	१. श्री दीपचन्दजी चोरड़िया, इन्दौर
	२. श्री सुनीलजी तातेड़, इन्दौर
४. बेरछा—	१. श्री करणराजजी मेहता, जोधपुर
	२. कु. साधना खाब्या, कुशलगढ़
	३. कु. अरुणा चोरड़िया, कुशलगढ़
४. सिवनी मालवा—	१. श्री बाबूलालजी दसेड़ा, सीतामऊ
	२. श्री सुरेशजी जैन, सीतामऊ
	३. श्रीमती शान्तिदेवी संघवी, इन्दौर
५. सुकमा—	१. श्री प्रकाशजी कोठारी, इन्दौर
	२. श्री जिनेश्वरजी जैन, इन्दौर
६. गौतमपुरा—	१. श्री लक्ष्मीचन्दजी जैन, छोटी कसरावद
	२. श्रीमती झम्मुबाई सिसोदिया, खाचरोद

७. बुरहानपुर— १. श्री घीसूलालजी बाघमार, मद्रास
२. श्री नीलमचन्दजी बाघमार, मद्रास

८. संजीत— १. श्री मांगीलालजी जैन, सिंगोली
२. श्री प्रकाशजी नागौरी, सिंगोली
३. श्री नाथूलालजी गांधी, सिंगोली

९. महागढ़— १. श्री सम्पतराजजी बोथरा, जोधपुर
२. श्री समरथमलजी लोढ़ा, महागढ़

१०. उन्हेल— १. श्री मांगीलालजी नागौरी, पारसोली
२. श्री मोहनलालजी पितलिया, पारसोली

११. हाटपिपल्या— १. श्री नरेन्द्रकुमारजी डूंगरवाल, कानोड़

१२. सतखण्डा— १. श्री सागरमलजी लोढ़ा, महागढ़

१३. बड़वानी— १. श्री सरदारमलजी मुणोत, किशनगढ़
२. श्री नरेन्द्रकुमारजी मोदी, किशनगढ़

१४. देवकर— १. श्री दिनेशकुमारजी नाहटा, नगरी
२. श्री महेशकुमारजी नाहटा, नगरी

१५. बागबहरा— १. श्रीमती बालीबाई भण्डारी, नान्द्रा
२. श्री नरेन्द्रजी गोलेच्छा, करही

१६. मगरदा— १. श्री केशरीमलजी भटेवरा, इन्दौर
२. श्री शंकरलालजी घूंघरिया, उज्जैन

१७. बेरला (दुर्ग)— १. श्री मोहनलालजी पीपाड़ा, इन्दौर
२. श्रीमती रीता पीपाड़ा, इन्दौर

१८. अंजड़— १. कु. कान्ता भेलावत, खाचरौद
२. कु. संगीता जैन, इन्दौर
३. कु. मीनाक्षी जैन, इन्दौर

१९. छोटी कसरावद— १. कु. आशा जैन, इन्दौर
२. कु. किरण जैन, इन्दौर
३. श्रीमती स्नेहलता जैन, इन्दौर

२०. बागली— १. श्री गौतमकुमारजी डूंगरवाल, उदयपुर

मेवाड़ क्षेत्र

१. भादसोड़ा— १. श्री केवलमलजी लोढ़ा, जयपुर
२. श्री दिनेशकुमारजी जैन, जयपुर

३. श्री मांगीलालजी हिरण, जयपुर

२. **गिलुण्ड**— १. श्री चाँदमलजी कर्णावट, उदयपुर
२. श्री सुरेशचन्दजी हींगड़, पहुना

३. **दरीबामाइन्स**— १. श्रीमती सुशीला बोहरा, जोधपुर
२. श्रीमती कमला मेहता, जोधपुर
३. सुश्री कमला जैन, जोधपुर

४. **जावरमाइन्स**— १. श्री धर्मचन्दजी नागौरी, कानोड़
२. सुश्री मोहनकंवर जैन, पीपाड़
३. सुश्री चन्दु जीरावला, जोधपुर

५. **भिण्डर**— १. श्री मदनलालजी धींग, बोहेड़ा
२. श्री शान्तिलालजी चौपड़ा, जोधपुर

६. **बड़ा महुआ**— १. श्री पुखराजजी गिड़िया, जोधपुर
२. श्री रतनलालजी जीरावला, जोधपुर

७. **बनेड़िया**— १. श्री मोहनराजजी चामड़, जोधपुर
२. श्री रिखबचन्दजी मेहता, जोधपुर

८. **नवाणिया**— १. श्री मानसिंहजी खारीवाल, सहाड़ा
२. श्री चतरसिंहजी खारीवाल, बड़ा महुआ

९. **छोटा भटवाड़ा**— १. श्री उमरावसिंहजी चौधरी, फूलियाकलां
२. श्री कुशलसिंहजी चौधरी, फूलियाकलां

१०. **पारसोली**— १. श्री रिखबलालजी मारु, कपासन

११. **भीमगढ़**— १. श्री मनोहरलालजी पोखरणा, भादसोड़ा
२. श्री शंकरलालजी लोढ़ा, भादसोड़ा
३. श्री नक्षत्रमलजी चोरड़िया, भादसोड़ा

मारवाड़ क्षेत्र

१. **खण्डप**— १. श्री रिखबराजजी कर्णाबट, जोधपुर
२. श्रीमती प्रेमलता भण्डारी, जोधपुर
३. सुश्री सन्तोष मेहता, जोधपुर

२. **बाड़मेर**— १. डॉ. पदमचन्दजी मुणोत, जोधपुर
२. श्री सुगनचन्दजी भण्डारी, जोधपुर

३. **डेह**— १. श्री सरदारचन्दजी भण्डारी, जोधपुर
१. श्री जतनराजजी मेहता, मेड़तासिटी

४. दासपां— १. श्री जवरीमलजी छाजेड़, जोधपुर
२. श्री सुगनचन्दजी छाजेड़, जोधपुर

पोरवाल क्षेत्र

१. अलीगढ़ रामपुरा— १. श्री भंवरलालजी सिंघी, जयपुर
२. श्री महाबीरप्रसादजी जैन, जयपुर
३. श्री प्रकाशचन्दजी पारख, जयपुर

२. सुमेरगंजमण्डी— १. श्रीमती प्रेम नवलखा, जयपुर
२. श्री मनीषकुमारजी जैन, जयपुर

३. मालपुरा— १. श्री सागरमलजी पींचा, नागौर
२. श्री भंवरलालजी पींचा, नागौर
३. श्री विमलचन्दजी नाहटा, नागौर

४. कुस्तला— १. श्री पारसचन्दजी जैन, सवाई माधोपुर
२. श्री धर्मचन्दजी जैन, कुस्तला

५. पचाला— १. श्री राधेश्यामजी गोटेवाला, सवाई माधोपुर
२. श्री मदनलालजी जैन, सवाई माधोपुर

६. दूणी— १. श्री सौभाग्यमलजी जैन कुस्तला
२. श्री धर्मचन्दजी जैन, करेलावाले, सवाई माधोपुर

७. बगावदा— १. श्रीमती रूपीदेबी, आलनपुर
२. श्रीमती कान्ताबाई, आलनपुर
३. श्री मूलचन्दजी जैन, बगावदा

८. बाबई— १. श्रीमती मोहनीदेवी जैन, आलनपुर
२. कु. ज्योति जैन, वजरिया (स. मा.)

९. उनियारा— १. श्री लड्डूलालजी जैन, चोरू

१०. खातोली— १. श्री रामकल्याणजी जैन, केथूदा

११. जरखोदा— १. श्री लड्डूलालजी जैन, बगावदा
२. श्री पारसचन्दजी जैन, सवाईमाधोपुर (देवलीवाला)
३. कु. अनीता जैन, सवाई माधोपुर
४. कु. त्रिशला जैन, सवाई माधोपुर

१२. देई— १. श्री उच्छबरायजी जैन, अलीगढ़
२. श्री राजेन्द्रकुमारजी जैन, आलनपुर

१३. बून्दी— १. श्री नेमीचन्दजी कर्णावट, भोपालगढ़
२. श्री मिलापचन्दजी डागा, बून्दी

१४. **महावीरनगर (जयपुर)**	१. श्री कन्हैयालालजी लोढ़ा, जयपुर
	२. श्री पारसचन्दजी जैन, जयपुर
१५. **उखलाणा—**	१. श्री शोभाग्यमलजी जैन, अलीगढ़
	२. श्री ब्रजमोहनजी जैन, उखलाणा
	३. श्री रामविलासजी जैन, उखलाणा
१६. **चौथ का बरवाड़ा—**	१. श्री विमलचन्दजी डागा, जयपुर
	२. श्री महावीरजी जैन, जयपुर
	३. श्री प्रकाशजी पारख, जयपुर

पल्लीवाल क्षेत्र

१. **खेरली—**	१. श्री तेजराजजी भण्डारी, जयपुर
	२. श्रीमती शान्ता मोदी, जयपुर
	३. श्री सुशीलकुमारजी जैन, जयपुर
२. **भरतपुर—**	१. श्री जशकरणजी डागा, टोंक
	२. डॉ. धर्मचन्दजी जैन, भरतपुर
	३. श्री शान्तिलालजी जैन, भरतपुर
३. **नसियां कॉलोनी— (गंगापुर)**	१. श्री संजयकुमारजी जैन, इन्दौर
	२. कु. दक्षा जैन, इन्दौर
४. **हिण्डौन सिटी—**	१. श्री श्रीपालजी देशलहरा, जयपुर
	२. श्री सुनीलजी सांखला, जयपुर
	३. श्री कृष्णमोहनजी जैन, लहचोड़ा
५. **बडेर—**	१. श्री उम्मेदमलजी जैन, जरखोदा
	२. श्री शिवकुमारजी जैन, जरखोदा
६. **बरगमां—**	१. श्री कजोड़ीलालजी जैन, खेरली
	२. श्री मिट्ठुनलालजी जैन, बरगमां
७. **खोह—**	१. श्री धर्मचन्दजी जैन, नसियां कॉलोनी (गंगापुर)
	२. श्री प्रेमचन्दजी जैन, रसीदपुर
८. **डेहरामोड़—**	१. श्री देवेन्द्रकुमारजी जैन, फाजिलाबाद
	२. श्री रतनलालजी जैन, डेहरामोड़

अन्य क्षेत्र

१. **कानपुर—**	१. श्री प्रकाशमलजी चोरड़िया, मद्रास
	२. श्री दिनेशजी भेरविया, प्रतापगढ़

२. **शाहदरा-दिल्ली**— १. श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन, दिल्ली
२. श्री धर्मचन्दजी मेहता, पीपाड़ शहर
३. श्रीमती अकलकंवर मोदी, जोधपुर

३. **जिन्द**— १. श्री फूलचन्दजी मेहता, उदयपुर
२. श्री इन्द्रचन्दजी चोरड़िया, दिल्ली
३. श्री प्रकाशजी सालेचा, जोधपुर

४. **नरेला मंडी-दिल्ली**— १. श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफणा, जोधपुर
२. श्री विनोदजी छल्लाणी, जोधपुर

५. **नांगल राया-दिल्ली**— १. श्री हीराचन्दजी हीरावत, जयपुर
२. श्री अनिलजी कोठारी, जयपुर
३. श्री बुद्धिप्रकाशजी जैन, जयपुर

६. **नाभा**— १. श्री नरपतराजजी भण्डारी, जोधपुर
२. श्री दिलरूपचन्दजी भण्डारी, जोधपुर

श्री बर्धमान जैन स्वाध्याय संघ, समदड़ी एवं श्री स्थानकवासी जै स्वाध्याय संघ जोधपुर द्वारा संयुक्त रूप से निम्न स्थानों पर पर्युषण पर्वाराध करायी—

१. **मजल**— १. श्री चंचलमलजी चोरड़िया, जोधपुर
२. श्री मनीषजी सिंघवी, बारणी

२. **भलेरों का वाड़ा**— १. श्री श्रीपालजी मेहता, पीह
२. श्री टीकमचन्दजी पीह

३. **अजीत** १. श्री सोहनलालजी जीरावला, जोधपुर

स्थानीय सेवा

पोरवाल क्षेत्र—

१. **जवाहरनगर (जयपुर)**—१. श्री राजेन्द्रकुमारजी पटवा, जयपुर

२. **हाउसिंग बोर्ड (स.मा.)**—१. श्री लल्लूलालजी जैन, हाउसिंग बोर्ड
२. श्री धर्मेन्द्रकुमारजी जैन, हाउसिंग बोर्ड

३. **इन्द्रगढ़**— १. श्री पारसचन्दजी जैन, इन्द्रगढ़
२. श्री सुरेशजी पोरवाल, इन्द्रगढ़

४. **डांगरवाड़ा**— १. श्री लड्डूलालजी जैन, डांगरवाड़ा
२. श्री महावीरप्रसादजी जैन, डांगरवाड़ा

५. सूरवाल—	१. श्री रामकरणजी जैन, सूरवाल
	२. श्री पदमचन्दजी जैन, सूरवाल
६. देवली (भोजां)—	१. श्री प्रभुदयालजी जैन, देवली
	२. श्री धनराजजी जैन, देवली
७. झुण्डवा—	१. श्री उम्मेदमलजी जैन, झुण्डवा

पल्लीवाल क्षेत्र

१. सहाड़ी—	१. श्री सुमेरचन्दजी जैन, सहाड़ी
	२. श्री सुरेशचन्दजी जैन, सहाड़ी
२. डेहरा—	१. श्री स्वरूपचन्दजी जैन, डेहरा
	२. श्री भागचन्दजी जैन, डेहरा
३. कंजोली—	१. श्री महेशचन्दजी जैन, कंजोली
४. फाजिलाबाद—	१. श्री मगनचन्दजी जैन, फाजिलाबाद
५. नदबई—	१. श्री ज्ञानचन्दजी जैन, नदबई

मध्य प्रदेश क्षेत्र

१. बरेली—	१. श्री बाबूलालजी नाहर, बरेली

मेवाड़ क्षेत्र

१. बोहेड़ा—	१. श्री हीरालालजी रांका, बोहेड़ा
	२. श्री प्रकाशचन्दजी धींग, बोहेड़ा

अन्य क्षेत्र

१. लखनऊ—	१. श्री अरुणजी मेहता, लखनऊ

निम्न क्षेत्रों में स्थानीय स्वाध्यायियों की पर्वाराधना हेतु नियुक्ति की गयी थी। पर्युषण की रिपोर्ट कार्यालय में प्राप्त नहीं हो पाने के कारण सेवा देने वाले स्वाध्यायियों के नाम नहीं देकर मात्र क्षेत्र/स्थान का नाम ही दिया जा रहा है—

पोरवाल क्षेत्र—१. चकेरी, २. आदर्शनगर, ३. फलोदी क्वारी, ४. कुण्डेरा, ५. नैनवा, ६. समीधि, ७. केथूदा, ८. पाचोलास, ९. खिजूरी, १०. बणज्यारी, ११. भेडोला, १२. पावढेरा, १३. मुई, १४. खांजना चौड़, १५. बलरिया, १६. जैनपुरी, १७. कोहल्या, १८. चोरु, १९. छारोदा, २०. रांवल, २१. करमोदा, २२. खदुपुरा।

पल्लीवाल क्षेत्र—१. हरसाना, २. पहरसर, ३. दातियां, ४. नांगल पहाड़ी।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त सहायता

कानपुर २५००/-, नरेला दिल्ली ११००/-, जीन्द ११००/-, सदर-नागपुर ११००/-, शाहदरा दिल्ली ११००/-, लातुर १०००/-, नाभा ७५१/-, खैरागढ़ ६५१/-, बड़वानी ६००/-, मालपुरा ५५१/-, डेह ५०१/-, जावर माइन्स ५००/-, दरीबा माइन्स ४५१/-, बड़ामहुआ ३७१/-, बागली ३०१/-, दासपां ३०१/-, पहुना ३०१/-, उन्हेल ३००/-, गिलुण्ड २५३/-, बाड़मेर २५१/-, गोपालगढ़ २५१/-, हाटपीपल्या २५१/-, भिण्डर २५१/-, भरतपुर २५१/-, पीपलगांव राजा २०१/-, सिवनी मालवा २०१/-, दूणी १५१/-, संजीत १५१/-, पारसोली १०१/-, अलीगढ़ १०१/-, नवाणिया १०१/-, भड़गांव ९३/-, सुमेरगंज मण्डी ५१/-, भीमगढ़ ५१/-, सतखण्डा ३१/-

योग = १६,२२९/-

महाराष्ट्र स्वाध्याय संघ को प्राप्त सहायता

लासूर १२४२/-, भण्डारा ११११/-, देवलगांवमही ८०१/-, आलेगांव ६३१/-, भड़गांव ५०१/-, धरणगांव ५०१/-, कलमसरा ५००/-, बाकोद ४०१/-, पहुरदामा ३८१/-, वरखेड़ी ३०१/-, पहुर २५१/-, मांडल २५१/-, नागद २०१/-- कजगांव २०१/-: शहापुर १५१/-

योग = ७४२५/-

व्यक्तिगत प्राप्त सहायता—स्वा. संघ, जोधपुर को

१. श्री मंगलचन्दजी दर्गाजी हिरण, दासपां	२०१.००
२. श्री जशकरणजी डागा, टोंक	१२८.२५
३. श्री शिवराजजी धनराजजी वाणीगोत, दासपां	१०१.००
४. श्रीमती सुशीला बोहरा, जोधपुर	१०१.००
५. श्री पदमचन्दजी मुणोत, जोधपुर	९६.००
	६२७.२५

कुल प्राप्त पर्युषण सहायता—
१६२२९/- + ७४२५/- + ६२७.२५/-
= २४,२८१.२५ रुपये मात्र
(अक्षरे चौबीस हजार दो सौ इक्यासी रुपये पच्चीस पैसे मात्र)

अन्त में हम उनी क्षेत्रों के संघों का आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने हमें सेवा का अवसर प्रदान किया। सभी स्वाध्यायी बन्धुओं का भी हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर प्रवास आदि के कष्टों को उठाकर भी स्वाध्याय संघ के निर्देशानुसार अष्टदिवसीय पर्युषण पर्व की आराधना करवायी।

आशा है, क्षेत्रों एवं स्वाध्यायियों को सम्पूर्ण समाज का सहयोग भविष्य में भी इसी प्रकार मिलता रहेगा, जिससे यह संघ चहुंमुखी विकास करता हुआ अपनी अमूल्य सेवाएँ समाज को प्रदान करता रहेगा।

भवदीय

चंचलमल चौरड़िया
सचिव
स्वाध्याय संचालन समिति, जोधपुर

सम्पतराज डोसी
संयोजक
स्वाध्याय संघ, जोधपुर

१०१ रुपये में १०८ पुस्तकें प्राप्त करें

अ. भा. जैन विद्वत् परिषद् द्वारा प्रारम्भ की गई "ज्ञान प्रसार पुस्तक-माला" के अन्तर्गत अब तक ८० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। कुल १०८ पुस्तकें प्रकाशित करने की योजना है। प्रत्येक पुस्तक का फुटकर मूल्य दो रुपया है पर जो व्यक्ति या संस्था १०१ रुपये भेजकर ट्रैक्ट साहित्य सदस्य बन जायेंगे, उन्हें १०८ पुस्तकें निःशुल्क प्रदान की जायेंगी। कुछ पुस्तकें अप्राप्त हैं, वे दुबारा प्रकाशित होने पर सदस्यों को भेजी जायेंगी।

तपस्या, विवाह, जयन्ती, पुण्यतिथि पर प्रभावना के रूप में वितरित करने के लिए १०० या अधिक पुस्तकें खरीदने पर २५ प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा।

कृपया १०१ रुपये मनीआर्डर या ड्राफ्ट द्वारा "अखिल भारतीय जैन विद्वत् परिषद्" के नाम सी-२३५ ए, तिलक नगर, जयपुर-३०२००४ के पते पर भेजें।

—डॉ० नरेन्द्र भानावत
सम्पादक-संयोजक

समाज-दर्शन

'आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान' के लिए कृतियां आमन्त्रित

परम श्रद्धेय आचार्य श्री हस्तीमल जी म. सा. की पुण्य स्मृति में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा **'आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान'** का शुभारम्भ किया जा रहा है। इसके नियम आदि इस प्रकार हैं—

१. यह सम्मान ग्यारह हजार रुपयों का होगा और प्रतिवर्ष सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की ओर से जैन धर्म सम्बन्धी, दर्शन, इतिहास, कला, संस्कृति, साहित्य (काव्य, कथा, निबन्ध, नाटक, जीवनी आदि विधाएँ) विषयक किसी प्रकाशित अथवा अप्रकाशित ग्रंथ पर दिया जायेगा। रचनाओं का मौलिक होना अनिवार्य है। मौलिकता का प्रमाण-पत्र लेखक/प्रकाशक को देना होगा। सम्पादित (संकलित) ग्रंथ स्वीकार्य एवं मान्य नहीं होंगे। सम्मान राशि के साथ प्रशस्ति-पत्र एवं स्मृति-चिह्न भी प्रदान किया जायेगा।

२. मण्डल यह राशि सम्मानार्थ उस विद्वान् को भी भेंट स्वरूप दे सकता है जिसने जैन धर्म सम्बन्धी दर्शन, इतिहास, कला, संस्कृति, साहित्य आदि क्षेत्र में विशिष्ट योगदान दिया है।

३. इस सम्मान के लिए देश-विदेश के विद्वान् समान रूप से अधिकारी होंगे।

४. प्रकाशित अथवा अप्रकाशित ग्रंथ हिन्दी भाषा में होना चाहिए।

५. सम्मान-वर्ष के पूर्व ५ वर्ष की अवधि में प्रकाशित ग्रंथ ही विचारार्थ स्वीकार्य होंगे।

४. ग्रंथ की (प्रकाशित अथवा अप्रकाशित) चार प्रतियाँ मण्डल को भेजना आवश्यक है।

७. ग्रंथ ७ जनवरी, १९९२ तक मण्डल कार्यालय में पहुँच जाने चाहिए। इस तिथि के बाद प्राप्त ग्रंथों पर विचार नहीं किया जायेगा।

८. मण्डल की सम्मान चयन-समिति का निर्णय सर्वमान्य होगा।

९. ऐसे ग्रंथों पर विचार नहीं किया जायेगा जो खण्डों में प्रकाशित हो रहे हों और अभी तक अपूर्ण हों, लेकिन अपने आप में पूर्ण किन्तु खण्डों में प्रकाशित ग्रंथ पर विचार किया जा सकता है।

उक्त सम्मान के लिए विचारार्थ अपनी कृतियाँ कृपया निम्न पते पर भेजें :—

—मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
बापू बाजार, जयपुर-३०२ ००३ (राजस्थान)

जोधपुर—श्रद्धेय पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म. सा. के सिर में मेद जो धीरे-धीरे किन्तु निरन्त बढ़ती जा रही थी, उसे २४ नवम्बर को प्रात: निकलवा दी है। आचार्य प्रवर के रत्नत्रय की साधना में सहायक स्वास्थ्य पूर्णत: अनुकूल है। आचार्य श्री का विहार बालोतरा की ओर एवं उपाध्याय श्री मानचन्द्र की म० सा० का विहार पिपाड़ की ओर सभावित है।

जोधपुर में स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के तत्त्वावधान में दिनांक २८-१०-९१ से १-११-९१ तक स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, मेवाड़, मारवाड़ एवं अन्य क्षेत्रों के कुल ७२ स्वाध्यायियों ने भाग लिया। शिविर कार्यक्रम प्रात: ५ बजे से रात्रि ९.३० बजे तक चलता था जिसमें सामायिक, प्रतिक्रमण, नवतत्त्व, षडावश्यक, देव, गुरु, धर्म का स्वरूप, कषाय-विजय आदि विषयों पर विद्वान शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। अध्यापन हेतु श्री सम्पतराज जी डोसी, श्री फूलचन्द जी मेहता, श्री केवलमल जी लोढ़ा, श्री धर्मचन्द जी जैन, श्री प्रकाश जी सालेचा आदि ने अपनी अमूल्य सेवायें प्रदान कीं। शिविर का संचालन श्री उदयलाल जी जारोली, नीमच ने किया।

शिविरार्थियों को परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द जी म. सा., उपाध्याय श्री मानचन्द जी म. सा. आदि सन्त मुनिराज एवं सतीवृन्द का पावन सान्निध्य एवं साथ ही निरन्तर सामायिक-स्वाध्याय की प्रेरणा प्राप्त हुई।

एक जनवरी से "जिनवाणी" पत्रिका के शुल्क में वृद्धि

वर्तमान में कागज की महँगाई और पोस्टेज दरों में अत्यधिक वृद्धि होने के कारण "जिनवाणी" पत्रिका के शुल्क में बढ़ोतरी करने का निर्णय लिया गया।

यह बढ़ोतरी (नया शुल्क) दिनांक १ जनवरी, १९९२ से प्रभावी होगी :—

क्र.	विवरण	वर्तमान शुल्क	संशोधित शुल्क
१.	स्तम्भ सदस्यता	रु. १,००१/–	रु. २,०००/–
२.	संरक्षक सदस्यता	रु. ५०१/–	रु. १,०००/–
३.	आजीवन सदस्यता (देश में)	रु. २५१/–	रु. ३५०/–
४.	आजीवन सदस्यता (विदेश में)	रु. ७५१/–	१०० डालर
५.	त्रिवार्षिक सदस्यता	रु. ५५/–	रु. ८०/–
६.	वार्षिक सदस्यता	रु. २०/–	रु. ३०/–

चैतन्यमल ढढ्ढा
मंत्री

जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान में स्नेह-सम्मेलन

जयपुर—जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, बजाज नगर में संस्थान के पूर्व छात्रों का एक स्नेह-सम्मेलन श्री जम्बूकुमार जैन के संयोजन में २६ नवम्बर को आयोजित किया गया। संस्थान के परामर्शक श्री श्रीचन्द जी गोलेछा, अधिष्ठाता श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा, डॉ० नरेन्द्र भानावत, श्री सुमतिचन्द्र जी कोठारी आदि ने अपने विचार व्यक्त किये और छात्रों को जीवन-निर्माण की प्रेरणा दी।

चातुर्मासिक उपलब्धियां

मेड़ता—आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म० सा० के आज्ञानुवर्ती शिष्य पं० रतन श्री शुभेन्द्र मुनि जी एवं तत्त्व चिन्तक श्री प्रमोद मुनिजा का चातुर्मास धर्मध्यान, ज्ञान, स्वाध्याय एवं तप-त्याग के साथ सम्पन्न हुआ। इस चातुर्मास में श्री बुधराज जी कोठारी और श्री बुधराज जी बागमार ने सपत्नीक शीलव्रत के प्रत्याख्यान किये। पर्युषण में आठ दिन बाजार बंद रहा। आठों ही दिन नवकार मंत्र का जाप किया गया। बारह बच्चों ने प्रतिक्रमण सीखा। भूधर ज्ञानशाला के ७० बच्चों को धार्मिक शिक्षण दिया गया। संतों का विहार जोधपुर की ओर हुआ है।

सवाईमाधोपुर—यहाँ परम विदुषी, शासन प्रभाविका महासती श्री मैना

सुन्दरी जी, मधुर व्याख्यानी महासती श्री रतनकँवर जी आदि ठाणा ८ का सामायिक स्वाध्याय भवन, बजरिया में यह प्रथम चातुर्मास धर्मध्यानपूर्वक सम्पन्न हुआ। चातुर्मासकाल में महापुरुषों के जन्म, दीक्षा एवं पुण्यतिथि आदि विशिष्ट पर्वों का तप, त्याग के साथ आयोजन किया गया। बाल संस्कार शिविर, नवपद आराधना, शान्ति जाप, सामूहिक दयाव्रत, उपासक दशांग एवं अंतगड सूत्र की परीक्षा, प्रश्नमंच, अन्त्याक्षरी, भजन, भाषण आदि प्रतियोगिता, जैन रत्न युवक संघ शिविर आदि विविध आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए।

चातुर्मास के मंगल प्रवेश के साथ ही तेले की तपस्या की लड़ी प्रारम्भ हो गई। विहार के दिन भी एक बहिन ने तेले का पारणा किया। शरदपूर्णिमा की रात को श्राविकाओं द्वारा १५-१५ सामायिक करके धर्म जागरणा, नवपद ओली तप की आराधना, सामायिक के सामूहिक बेले, तेले आदि सम्पन्न हुए। प्रत्येक रविवार को बाल संस्कार शिविर आयोजित हुए। मासखमण आदि कई तपस्याएँ हुई। ज्ञान पंचमी को जैनरत्न ग्रंथालय की स्थापना हुई।

२२ नवम्बर को विदाई समारोह में इस क्षेत्र के लगभग ७००० धर्मप्रेमी भाई-बहिनों ने भाग लिया। संघ अध्यक्ष श्री महावीरप्रसाद जी लुहिया, उपाध्यक्ष श्री रिद्धिचंद जी जैन आदि ने चातुर्मासिक उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। संघ की ओर से शीलव्रत ग्रहण करने वाले भाई-बहिनों का सम्मान किया गया। महासतियां जी का विहार कुण्डेरा, श्यामपुरा क्षेत्र को परसते हुए पल्लीवाल क्षेत्र की ओर हुआ है।

पालासनी—यहाँ चातुर्मास-काल में महासती श्री सरलेश प्रभाजी आदि ठाणा ३ की प्रेरणा से विशेष धर्मजागृति हुई। जैन घरों की संख्या सिर्फ ८ होते हुए भी ९ बालक-बालिकाओं ने प्रतिक्रमण सीखा। श्री अशोक भण्डारी ने केवल ७ दिन में प्रतिक्रमण सीखकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। महासतीजी की प्रेरणा से २१ अजैन बन्धुओं ने सजोड़े शीलव्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। कई बेले, तेले, चौले के साथ आठ अठाइयाँ आदि सम्पन्न हुईं। पर्युषण के आठ दिनों में व्यापार बंद रहा। अखण्ड शान्तिजाप किया गया। दीपावली पर्व पर सभी जैन व कई जैनेतर भाइयों ने पटाखे न छोड़ने के नियम लिये। जैन, मेघवाल, राजपूत आदि परिवार के कई बालकों ने जीवनपर्यंत सप्त कुव्यसन के त्याग कर अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया। सतियों का विहार बिसलपुर की ओर हुआ है।

बारणी—यहाँ महासती जी श्री सायरकँवर जी, शांतिप्रभाजी एवं निर्मल प्रभाजी का चातुर्मास तप, त्यागपूर्वक सम्पन्न हुआ। उपवास, बेले, तेले, पचोले,

अठाई, पन्द्रह, पचीस आदि की तपस्याएँ हुईं। एकान्तर तप, दया का मासखमण, दया की पचरंगी, आयम्बिल ओली आदि तपस्याएँ एवं शान्तिजाप हुए।

डॉ० भानावत को ग्रन्थ भेंट

जोधपुर—यहां महामन्दिर स्थित श्री शान्तिनाथ जैन श्वेताम्बर मन्दिर में प्रमुख साहित्यकार मुनि श्री नरेन्द्र विजय जी 'नवल' के सान्निध्य में आयोजित एक समारोह में २१ नवम्बर को 'जिनवाणी' के सम्पादक, राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं अ० भा० जैन विद्वत् परिषद् के महामंत्री डॉ० नरेन्द्र भानावत को पू० मुनि श्री जिनेन्द्र विजयजी 'जलज' की प्रेरणा से श्री देवेन्द्र धाम, जोधपुर के सौजन्य से अभिधान राजेन्द्र कोष का पूरा सैट (सात भागों में) जो कि मूल रूप में दुर्लभ है, समाजसेवी श्री लक्ष्मीचन्द जी सुराणा ने सम्मानार्थ भेंट किया। डॉ० भानावत ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जैन अध्ययन-अनुसंधान में यह सैट बड़ा उपयोगी, मार्गदर्शक और आधारभूत है। स्वाध्याय संचालन समिति के सचिव श्री चंचलमल जी चौरड़िया ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किये।

हार्दिक अभिनन्दन एवं बधाई

नासिक—श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ द्वारा श्रमण संघीय सलाहकार श्री जीवन मुनिजी का ५२वां दीक्षा महोत्सव तप त्यागपूर्वक मनाया गया। श्री कमल मुनिजी, श्री प्रकाश मुनिजी आदि ने मुनि श्री के संयमी जीवन पर प्रकाश डाला। महाराष्ट्र स्वास्थ्य मंत्री की श्रीमती पुष्पा ताई मुख्य अतिथि थीं। संघमंत्री श्री शान्तिलालजी दुग्गड़ ने मुनि श्री के जीवन व व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। समारोह की अध्यक्षता श्री बंशीलालजी लोढ़ा ने की। इस अवसर पर श्रीमती आशालता बागमार ने ५३ उपवास के प्रत्याख्यान ग्रहण किये।

अजमेर—यहाँ १० नवम्बर को उग्र तपस्वी श्री सहज मुनिजी म० सा० की १०९ दिन की तपस्या का पारणक महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता बैंगलोर के उदारमना समाजसेवी श्री जेठमलजी चौरड़िया ने की। मुख्य अतिथि थे सिकन्दराबाद के श्री हस्तीमलजी मुणोत। समारोह का संयोजन संघ मंत्री श्री जीतमलजी चौपड़ा ने किया। इस अवसर पर मुनि श्री के नाम से एक आधुनिक प्रसूतिगृह के निर्माण की योजना को मूर्तरूप देने की घोषणा की गई। इसके लिए स्व० श्री मनमोहनजी लोढ़ा की धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पाकँवर ने जयपुर रोड स्थित अपना विशाल भवन देने

की घोषणा की । आचार्य श्री आनन्द ऋषिजी की म० सा० की ओर से मुनि श्री को **'तपस्वी रत्न'**, प्रवर्तक भण्डारी श्री पदमचन्दजी म० सा० की ओर से **'तपोगगन के पूर्ण चन्द्र'** की उपाधि से विभूषित किया गया । श्री राम मुनि 'निर्भय' द्वारा रचित **'राम गान'** पुस्तक का विमोचन श्री जे० डी० जैन ने किया ।

अहमदनगर—आचार्य श्री आनन्द ऋषिजी म० सा० की शिष्या विदुषी साध्वी श्री ज्ञानप्रभाजी को **'जैन दर्शन में जीवतत्त्व'** विषय पर पूना विश्व-विद्यालय ने पी० एच० डी० की उपाधि प्रदान की है ।

गंगा शहर—केन्द्र सरकार ने श्री विमलचन्दजी डागा को फिल्म सेन्सर बोर्ड का सदस्य नियुक्त किया है । आप अ० भा० साधुमार्गी जैन संघ के मंत्री श्री चम्पालालजी डागा के छोटे भाई हैं ।

बोदवड़—जैन नवयुवक मण्डल के अध्यक्ष श्री कान्तिलाल बिरधीचन्द जैन अरबन कॉपरेटिव ऑफ क्रेडिट सोसाइटी के निदेशक पद पर नियुक्त किये गये हैं ।

जलगाँव—भोपालगढ़ निवासी श्री चैनरूपचन्दजी बाफना की धर्मपत्नी श्रीमती प्रकाशदेवी ने चातुर्मास प्रारम्भ से ही आयाम्बिल की तपस्या शुरू की । २६ अक्टूबर को ९४वें आयम्बिल की तपस्या चालू थी । आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के भोपालगढ़ के चातुर्मास में आपने मासखमण की तपस्या की थी ।

जयपुर—२१ नवम्बर को लाल भवन में आचार्य श्री नानेश के शिष्य पं० र० श्री विजय मुनिजी आदि ठाणा ३ के सान्निध्य में जैन श्रावक संघ, जयपुर की ओर से मासखमण करने वाले तपस्वी भाई-बहिनों का अभिनन्दन किया गया । पर्यटन मंत्री सुश्री पुष्पा जैन एवं कृषि सचिव श्री एम० एल० मेहता ने तप के महत्त्व पर प्रकाश डाला । संघ अध्यक्ष श्री उमरावमलजी चौरड़िया ने सभी का स्वागत किया । कार्यक्रम का संचालन संयुक्त मंत्री श्री उत्तमचन्दजी डागा ने किया ।

मद्रास—भारतीय जीवजन्तु कल्याण बोर्ड (पर्यावरण एवं वन मंत्रालय भारत सरकार) ने श्री अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ के मंत्री श्री चम्पा-लालजी डागा, गंगा शहर (बीकानेर) को बोर्ड का ऑनरेरी जीव-जन्तु कल्याण अधिकारी नियुक्त किया है ।

जोधपुर—श्री जैन रत्न युवक संघ, जोधपुर के युवारत्न श्री चन्द्रेश भण्डारी ने भारतीय जूनियर चेम्बर, राजस्थान के ग्यारहवें राज्य अधिवेशन में आयोजित "प्रभावी सार्वजनिक भाषण प्रतियोगिता" में प्रथम स्थान प्राप्त किया। जयपुर में राज० विश्वविद्यालय के ह्यूमेनिटी हॉल में आयोजित इस राज्यस्तरीय प्रतियोगिता में समस्त राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों से आये जेसी सदस्यों ने भाग लिया। भारतीय जूनियर चेम्बर के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जेसी राजीव लोइवाल ने इस अवसर पर आयोजित 'अवार्ड नाइट' में श्री भण्डारी को **'आउटस्टेण्डिग पब्लिक स्पीकर'** की उपाधि से सम्मानित किया। श्री भण्डारी अब दिसम्बर में नागपुर में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय अधिवेशन में अखिल भारतीय स्तर की प्रतियोगिता में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करेंगे।

सभी का हार्दिक अभिनन्दन एवं बधाई।

संक्षिप्त समाचार

बैंगलोर—कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ की ओर से इस वर्ष पर्युषण पर्वाराधना के लिए प्रेरणा देने हेतु विजयवाड़ा, ऊटी, कुन्नूर, बेलगांव, यादगिरि, शिमौगा, बाड़ावार, गजेन्द्रगढ़, होस्पेट, सोरापुर, इलकल, गुन्टलपेट और कोप्पल इन तेरह स्थानों पर ३६ स्वाध्यायियों ने जाकर अपनी सेवाएं प्रदान कीं।

कवर्धा—वाणीभूषण श्री रतन मुनिजी के सान्निध्य में श्री सतीश मुनिजी की प्रेरणा से श्री रतन धार्मिक शब्द पहेली प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें ४० प्रतियोगियों ने भाग लिया। साथ ही आयम्बिल ओली तप पर ९ दिन का अखण्ड नवकार महामंत्र जाप चला।

जयपुर—अ० भा० श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेंस के जयपुर संभाग ने आचार्य श्री आनन्द ऋषि शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में ५ लाख की राशि से विकलांग सहायता कोष की स्थापना की घोषणा की है। उदयपुर संघ ने भी 'जीवन प्रकाश योजना' में ११ हजार एक रुपये देने की घोषणा की है।

पीपलिया कलां—अ० भा० समता बालक एवं बालिका मण्डली का नवां वार्षिक अधिवेशन संघ अध्यक्ष श्री भँवरलालजी बैद के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रमुख समाजसेवी श्री गणपतराजजी बोहरा

को 'समाज रत्न' की उपाधि से विभूषित करते हुए अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया। श्री गुलाब चौपड़ा मण्डली के अध्यक्ष एवं श्री गिरीश लोढ़ा मंत्री चुने गये।

मनावर—यहाँ की अहिंसा प्रचार समिति ने जबलपुर में वधशाला न खोलने के लिए एवं सप्ताह में एक दिन बूचड़खाना बन्द करने के लिए भारत के प्रधानमंत्री एवं मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेजे हैं।

मण्डया (कर्नाटक)—महासती सूर्याकान्ताजी के सान्निध्य में पाँच मासखमण व अन्य तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। १० से १६ अक्टूबर तक धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया जिसमें १०३ शिविरार्थियों ने भाग लिया।

टोंक—जीव दया मण्डल ट्रस्ट की प्रेरणा से टोंक के नागरिकों ने यहाँ औद्योगिक क्षेत्र में 'मिट कटिंग प्लांट' न स्थापित करने के लिए जिला कलेक्टर को ज्ञापन दिया है।

चित्तौड़गढ़—यहाँ ११ नवम्बर को अ० भा० वीरवाल जैन समाज का ३४वां वार्षिक सम्मेलन प्रवर्तक श्री अम्बालालजी म० सा०, श्रमण संघीय महामंत्री श्री सौभाग्य मुनिजी 'कुमुद', डॉ० राजेन्द्र मुनिजी आदि के सान्निध्य में श्री फकीरचन्दजी मेहता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। वीरवाल समाज को जागृत कर नई चेतना का संचार करने के लिए विचार-विमर्श किया गया। इस अवसर पर २० व्यक्ति अहिंसा का धर्म-बोध पाकर वीरवाल जैन समाज के सदस्य बने। इन्दौर की कमला माताजी, वीरवाल समाज के अध्यक्ष श्री नानालालजी एवं महामन्त्री श्री दलीचन्दजी वीरवाल ने अपने विचार व्यक्त किये।

मद्रास—यहाँ गठित कोसाणा एसोशियेशन के अध्यक्ष श्री लालचन्दजी बागमार, उपाध्यक्ष श्री देवराजजी नाहर, मंत्री श्री जवाहरलालजी बगमार, सहमंत्री श्री बादलचन्दजी बागमार और कोषाध्यक्ष श्री पदमचन्दजी बागमार चुने गये।

शोक-श्रद्धांजलि

बड़ी सादड़ी—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री सुजानमलजी मारू का ६९ वर्ष की आयु में ६ नवम्बर को दुखद निधन हो गया। आप

धर्म-परायण, उदार-हृदय, कर्मठ समाजसेवी एवं वरिष्ठ स्वाध्यायी थे। आचार्य श्री नानेश के प्रति आपकी श्रद्धा-भक्ति थी। २१ वर्ष तक आप अ० भा० साधुमार्गी जैन संघ के शाखा संयोजक रहे। उल्लेखनीय सेवाओं के लिए आप संघ द्वारा सम्मानित किये गये। स्थानीय संघ के वर्षों तक आप मंत्री रहे और आपके नेतृत्व में कई प्रवृत्तियां सफलता पूर्वक चलीं। आप राष्ट्रीय विचारधारा के सादगी प्रिय व्यक्ति थे। मरणोपरान्त आपके परिवार ने आपके नेत्र दान कर एक आदर्श उपस्थित किया।

सादड़ी—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री हिम्मतमलजी मूलचन्दजी खींवसरा का ६७ वर्ष की आयु में २ सितम्बर को निधन हो गया। आपने ५५ वर्ष की आयु में ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कर आदर्श उपस्थित किया था। आपने दो बार नेत्र चिकित्सा शिविर लगवाये और वर्षी तप किया।

भवानी मण्डी—यहाँ के प्रमुख समाज-सेवी एवं अहिंसा प्रेमी श्री बागमलजी जैन आवर वालों का ७२ बर्ष की आयु में २१ नवम्बर को निधन हो गया। आप शुद्ध मावे की मिठाई के लिए प्रसिद्ध थे। दया, करुणा एवं संवेदना के धनी श्री जैन धर्म-परायण व्यक्ति थे। भारत सरकार के जीवजन्तु कल्याण बोर्ड ने आपको ऑनरेरी पशु कल्याण अधिकारी के पद पर नियुक्त किया था।

जोधपुर—धर्मनिष्ठ श्री विजयराजजी कांकरिया की धर्मपत्नी श्रीमती मुन्नीदेवी कांकरिया का ८५ वर्ष की आयु में एक अक्टूबर को आकस्मिक निधन हो गया। सन्त-सतियों की सेवा में आप अग्रणी थीं। आचार्य श्री के चातुर्मास में आप अलग से अपना चौका लगाकर रहतीं और सेवा का लाभ लेती थीं। आपका जीवन धार्मिक क्रियाओं से ओतप्रोत था। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

अजमेर—श्री जैनरत्न हितैषी श्रावक संघ, अजमेर के सदस्य श्री सरदारमलजी लोढ़ा (सुपुत्र स्व० श्री बाहुमलजी लोढ़ा) की धर्मपत्नी श्रीमती मदनकँवर का ६ अक्टूबर को ६६ बर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। आपकी आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के प्रति अनन्य भक्ति थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

ब्यावर—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक एवं ख्याति प्राप्त ज्योतिषी श्री बालचन्दजी मेहता की धर्मपत्नी श्रीमती सायरकँवर का १४ नवम्बर को आकस्मिक निधन हो गया । आप धर्म-परायण, सेवा-भावी, सुज्ञ श्राविका थीं । आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के प्रति आपकी अटूट भक्ति थी ।

दुर्ग—यहाँ की प्रतिष्ठित श्राविका श्रीमती अलोल बाई धर्मपत्नी स्व० श्री सूरजमलजी मेहता का १४ नवम्बर को ७८ वर्ष की आयु में निधन हो गया । आपके कई व्रत, नियम एवं प्रत्याख्यान थे ।

मद्रास—यहाँ की प्रतिष्ठित श्राविका श्रीमती सुगनी बाई चौरड़िया धर्मपत्नी स्व० श्री मेघराजजी चौरड़िया का ८२ वर्ष की आयु में २३ नवम्बर को दस दिन के चौविहारी संथारे के साथ निधन हो गया । आप धर्म-परायण महिला थीं ।

हैदराबाद—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री पारसमलजी पीतलिया (सिरीयारी, राजस्थान) की धर्मपत्नी श्रीमती सुन्दर सेलू बाई का ४५ वर्ष की आयु में २६ नवम्बर को निधन हो गया । आप धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं ।

जयपुर—राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय से १५ वर्ष पूर्व सेवा-निवृत्त प्रिन्सिपल श्री एम० एल० सोलंकी का ७३ वर्ष की आयु में २ दिसम्बर को निधन हो गया । आप राजस्थान के प्रमुख शिक्षाविद्, समाजसेवी और भारत स्काउट एवं गाइड के प्रधान थे और विशिष्ट सेवाओं के लिए 'सिलवर एलिफेन्ट' पुरस्कार से सम्मानित हुए थे ।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति हम सम्यक् ज्ञान प्रचारक मण्डल 'जिनवाणी' एवं अ० भा० श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक-विह्वल परिवार-जनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं ।

—**सम्पादक**

□ □ □

साभार प्राप्ति स्वीकार

२५१) रु. 'जिनवाणी' की आजीवन सदस्यता हेतु प्रत्येक

३००३. श्री पवनसिंहजी मेहता, जयपुर
३००४. श्री महावीरकुमारजी भाणावत, कानोड़
३००५. श्री आर. सी. जैन, अहमदाबाद
३००६. शा. मानमल पारसमल एण्ड कम्पनी, अहमदाबाद
३००७. श्री धर्मेन्द्रजी नागौरी, उदयपुर
३००८. गौतम मिनरल्स, उदयपुर
३००९. श्री अरुणकुमार जैन, बम्बई
३०१०. श्री पी. एम. सुराणा, जोधपुर
३०११. श्री कमलचन्दजी घोड़ावत, दिल्ली
३०१२. डॉ. ए. आर. मेहता, जोधपुर
३०१३. श्री महेन्द्रकुमारजी सिंघी, गुलबर्गा
३०१४. पारस इण्ड्रस्ट्रीज, जोधपुर
३०१५. श्री पी. सी. मेहता, नयी दिल्ली
३०१६. श्री रामचन्द्रजी लाभचन्द्रजी पालीवाले, बम्बई
३०१७. श्री सुगनचन्दजी नवरतनमलजी चौरड़िया, जोधपुर
३०१८. श्री भंवरलालजी सिंघवी, जोधपुर
३०१९. श्री भंवरलालजी धनपतराजजी टाटिया, जोधपुर
३०२०. श्रीमती विजय मेहता, जोधपुर
३०२१. श्री बाबूलाल के. जैन, हैदराबाद
३०२२. श्री विमलकुमारजी कमलकुमारजी बाघमार, मेड़ता सिटी
३०२३. श्री रणजीतकुमारजी श्रीमाल, मेड़ता सिटी
३०२४. श्री पारसमलजी कमलकुमारजी दुगड़, मेड़ता सिटी
३०२५. श्री रायपालजी कोठारी, मेड़ता सिटी
३०२६. श्री निलेशकुमारजी महेशकुमारजी मूथा, मेड़ता सिटी
३०२७. श्री अखेराजजी विजयराजजी कोठारी, जोधपुर

३०२८. श्री महेन्द्रकुमारजी कोठारी, बल्लारी

३०२९. श्रीमती सुशीलाकुमारी, बून्दी

३०३०. श्री तोलारामजी मिन्नी, मद्रास

३०३१. श्री प्रेमचन्दजी चपलोत, जयपुर

'जिनवाणी' को सहायतार्थ भेंट

१०००) रु० श्री कल्याणमलजी कांकरिया, जोधपुर
मातुश्री श्रीमती मुन्नीदेवी कांकरिया की पावन स्मृति में भेंट।

२५१) रु० श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, बिलाड़ा
पं. रत्न श्री ज्ञानमुनिजी म. सा. एवं श्री नंदीषेणजी म. सा. के सफल चातुर्मास होने की प्रसन्नता में भेंट।

२५१) रु० श्री पदमचन्दजी प्रेमचन्दजी हीरावत, जयपुर
चि. अजय और सौ. कां. अभिलाषा के विवाह के उपलक्ष्य में भेंट।

२५१) रु० श्री शान्तिमलजी विनोदकुमारजी गोटावत, बैंगलोर
श्रीमान् भंवरलालजी गोटावत, उनकी धर्मपत्नी एवं उनकी पुत्र-वधू का कर्नाटक एक्सप्रेस में रेल दुर्घटना में असामयिक दु:खद निधन हो गया, उनकी स्मृति में भेंट।

२०१) रु० श्री प्रेमचन्दजी चपलोत, जयपुर
चि. अजय और सौ. कां. अभिलाषा के विवाह के उपलक्ष्य में भेंट।

२०१) रु० श्री पारसमलजी पितलिया, कांचीगुड़ा
धर्मपत्नी श्रीमती सलुबाई की पुण्य स्मृति में भेंट।

१०१) रु० श्री वर्धमान स्थानकवासी स्वाध्याय संघ, मन्डया
चातुर्मास की खुशी में भेंट

१०१) रु० मूसल परिवार, जयपुर की ओर से
श्री सरदारमलजी मूसल की प्रथम पुण्य तिथि पर भेंट।

१०१) रु० डॉ. नरेन्द्रजी भानावत, जयपुर
सुपौत्र (सुपुत्र राजीव भानावत) के जन्म के उपलक्ष्य में भेंट।

१०१) रु० श्री अशोकजी जितेन्द्रकुमारजी नाहर, अहमदाबाद
आचार्य श्री के दर्शन करने के उपलक्ष्य में भेंट।

१०१) रु० श्री हीराचन्द्रजी मुन्नालालजी रांका (जैन) भडगांव
पुत्रवधू सौ. कां. इन्दुमती रांका के २१ उपवास के उपलक्ष्य में भेंट।

१०१) रु० श्री फतेहचन्द्रजी चौरड़िया, मेलापुर
माताजी श्रीमती सुगनीबाई चौरड़िया की पुण्य स्मृति में भेंट।

१०१) रु० श्री गजपतसिंहजी सम्पतसिंहजी जैन, भरतपुर
अपने पूज्य पिताजी के स्वर्गवास होने की पुण्य स्मृति में भेंट।

१०१) रु० श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पालासनी
महासती श्री सरलेश प्रभाजी म. सा., श्री इन्द्र प्रभाजी म. सा. एवं श्री मुक्ति प्रभाजी म. सा. के चातुर्मास पूर्ण होने की खुशी में भेंट।

१००) रु० श्री सुशीलजी, मद्रास
महासती श्री ज्ञानप्रभाजी म. सा., पी. एच-डी. की परीक्षा में उत्तीर्ण होने की खुशी में भेंट।

५१) रु० श्रीमती गुलाब कौर, जोधपुर
आचार्य श्री एवं उपाध्याय श्री के जोधपुर चातुर्मास एवं पुत्र एवं पुत्रवधू के मौन तेले की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

३१) रु० श्री निहालचंदजी जैन, देई
पूज्य पिताजी की छठी पुण्य स्मृति में भेंट।

३१) रु० महावीर पान भण्डार, बजरिया
महासती श्री मैना सुन्दरजी म. सा. के प्रथम चातुर्मास की खुशी में भेंट।

३१) रु० श्री कजोड़ीलालजी जैन (नेताजी) खेरली
चि. सुशीलकुमारजी जैन के विवाह के उपलक्ष्य में भेंट।

२५) रु० श्री प्रवीणकुमारजी सुराणा, कल्याणपुरा (म. प्रा.)
श्री शान्तिकंवरजी म. सा. एवं श्री रमणीक कँवरजी म. सा. के प्रथम चातुर्मास की खुशी में भेंट।

२५) रु० महावीर युवक मण्डल, गडून्डा
चातुर्मास सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

२१) रु० श्री राजकुमारजी, भवानीमण्डी
पिताजी श्री बागमलजी कुण्डल बोहरा की पुण्य स्मृति में भेंट।

११) रु० श्री वीरेन्द्रलालजी रामेश्वरप्रसादजी जैन, डेहरा
महासती श्री मैना सुन्दरीजी म. सा. के दर्शन करने के उपलक्ष्य में भेंट।

११) रु० श्री रामेश्वरप्रसादजी जैन, डेहरा
आचार्य श्री एवं उपाध्याय श्री के दर्शन करने के उपलक्ष्य में भेंट।

११) रु० श्री राजेशजी मेहता, दुर्ग
श्रीमती अलोलबाई मेहता की पुण्य स्मृति में भेंट।

साहित्य प्रकाशन हेतु सहायता

१०००) रु० श्री कल्याणमलजी कांकरिया, जोधपुर
मातुश्री श्रीमती मुन्नीदेवी कांकरिया की पावन स्मृति में भेंट।

साहित्य प्रकाशन के आजीवन सदस्यता ५०१) रुपये

४१६. श्री अनूपचन्दजी सेठिया, कलकत्ता
४१७. श्री राजेन्द्रकुमारजी जैन, कोटा
४१८. श्री संजयजी सिंघवी, जोधपुर

भूल सुधार पृ० ८०–जिनवाणी पत्रिका–माह नवम्बर, १९९१
'जिनवाणी' के सहायतार्थ भेंट

'जिनवाणी' के सहायतार्थ भेंट में क्रम संख्या २ में श्री संजीवजी कोठारी, जयपुर के भेंट के 'रु० ५०१)' के स्थान पर 'रु० २०१)' पढ़ें।

—मंत्री सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल

यह शरीर नौका रूप है, जीवात्मा उसका नाविक है और संसार समुद्र है। महर्षि इस देह रूपी नौका के द्वारा संसार-सागर को तैर जाते हैं।

उत्तराध्ययन २३/७३

(Regd. No. R. J. 2529
Licenced to post without prep… No. 6)

जिनवाणी



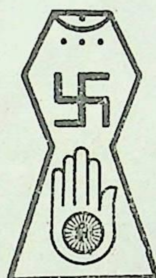
मार्च 1991

चैत्र २०४८

Plastics ABF and HIP माल आ. गय

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा, कल्याणी ।
द्रोह, मोह, छल, मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ।।



संत तिवायए पाणे,
अदुवा अण्णेहिं घायए ।
हवंतं वाऽणुजाणाइ,
वेरं वड्ढेति अप्पणो ।।

—सूत्रकृतांग–१/१/१/३

जो व्यक्ति स्वयं किसी प्रकार से प्राणियों का वध करता है अथवा दूसरों से वध कराता है या प्राणियों का वध करते हुए अन्य व्यक्तियों का अनुमोदन करता है, वह संसार में अपने लिए वैर बढ़ाता है ।

मार्च, १९९१
वीर निर्वाण सं० २५१७
चैत्र, २०४८

वर्ष : ४८ **अंक : ३**

मानद सम्पादक :
डॉ० नरेन्द्र भानावत, एम.ए.,पी-एच.डी.

सम्पादन :
डॉ० (श्रीमती) शान्ता भानावत
एम.ए., पी-एच.डी.

संस्थापक :
श्री जैनरत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक :
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
बापू बाजार दुकान नं० १८२-१८३ के ऊपर
जयपुर–३०२००३ (राजस्थान)
फोन : ५६५९९७

सम्पादकीय सम्पर्क सूत्र :
सी-२३५ ए, दयानन्द मार्ग, तिलक नगर
जयपुर–३०२००४ (राजस्थान)
फोन : ४७४४४

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं० ३६५३/५७

स्तम्भ सदस्यता : १००१ रु०
संरक्षक सदस्यता : ५०१ रु०
आजीवन सदस्यता : देश में २५१ रु०
आजीवन सदस्यता : विदेश में ७५१ रु०
त्रिवर्षीय सदस्यता : ५५ रु०
वार्षिक सदस्यता : २० रु०

मुद्रक :
फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
जयपुर–३०२००३

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो ।

अनुक्रमणिका

☐ प्रवचन/निबन्ध ☐

मन की मर्यादा : आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. १
नयवाद—एक विश्लेषण : श्री रमेश मुनि शास्त्री ६
नियमित साधना : एक वरदान : श्री चांदमल कर्णावट १६
सुसाहुणों गुरुणो : श्री माणक मल भंडारी १९
सामायिक से ४२ लाभ : भंडारी सरदार चन्द्र जैन २२
भगवान महावीर के सिद्धान्तों की आज के युग में उपयोगिता : बीना सिंघवी २४
The Salient Features of Jain Saints : Sadhvi Vijayashreeji ४५
पर्युषण पर्वाराधना विवरण : श्री शांतिलाल बोहरा ५१
स्वाभाविक आहार-शाकाहार [८] : श्री जशकरण डागा ५३

☐ कथा/प्रसंग/सूक्ति ☐

पछतावा : श्री हेमन्त भंडारी ५
सूखी डाली की सीख : श्री हरिकृष्णदास गुप्त 'सियहरि' ७
उत्थान और पतन का रहस्य : श्री नैनमल विमलचन्द्र सुराणा ८
मृत्यु निश्चित फिर क्यों डरें : श्री बलवन्तसिंह हाड़ा २१
जायदाद का बंटवारा [८९] : श्री नरेन्द्र सिंघवी ३७
अनूठी देश भक्ति व धीरता : श्री गदाधर भट्ट ४८
ज्ञानामृत [२५] समता ही सामायिक है : डॉ० प्रेमचन्द रांवका ४९
लगन : श्री श्रीपाल देशलहरा ५०

☐ प्रश्नमंच–कार्यक्रम [५२] ☐

परोपकार : श्री पी. एम. चौरड़िया ३०

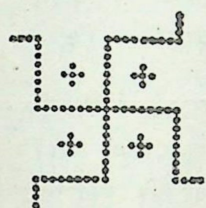
☐ कविता ☐

महावीर ! महावीर !! : शशिकर 'खटका राजस्थानी' ६
जीवन की परिभाषा : कुमारी आशा जैन १५
दो कविताएँ : अनीता मेहता 'नेकी' २३

☐ स्तम्भ ☐

जिन्दगी आग की दरिया है : प्रो० फूलचन्द 'मानव' vi
अपनी बात : भगवान महावीर का जीवन-दर्शन और हमारा दैनिक व्यवहार : डॉ० नरेन्द्र भानावत i
साहित्य-समीक्षा : डॉ० नरेन्द्र भानावत ६२
समाज-दर्शन : संकलित ६४
साभार प्राप्ति स्वीकार : ७५

अपनी बात :



भगवान महावीर का जीवन-दर्शन और हमारा दैनिक व्यवहार

□ डॉ० नरेन्द्र भानावत

भगवान महावीर राज परिवार में जन्मे थे। कहा जाता है कि उनके जन्म के साथ राज्य की भौतिक समृद्धि में सब प्रकार की अभिवृद्धि हुई। अत: उनका नाम वर्द्धमान रखा गया पर इस भौतिक समृद्धि में उनका मन नहीं रमा। बाहरी सुख-सुविधाएँ प्राप्त करके भी वे भीतर से रिक्तता का अनुभव करते रहे। यह रिक्तता बाहरी धन-सम्पत्ति, सत्ता-प्रभुता से भरनी सम्भव नहीं थी। इसके लिए आध्यात्मिक सिद्धि की खोज में वे निकल पड़े। उन्होंने राजसी ठाट-बाट, सुख-समृद्धि और राज-सत्ता का भोग छोड़ा। वे विरागी और वीत-रागी बने। साढ़े बारह वर्ष की कठोर साधना के बाद उन्होंने जीवन का सत्य खोज निकाला और संसार के प्राणियों को अपना अनुभव-अमृत बांटते हुए कहा कि इस संसार में चार चीजें दुर्लभ हैं—मनुष्य जन्म, श्रुत ज्ञान, उस पर श्रद्धा और संयम में पराक्रम। इन चारों के सम्यक् परिपालन से मनुष्यता का विकास होता है। दूसरे शब्दों में महावीर ने यह अनुभव किया कि पुद्गलों से बना हुआ शरीर वास्तविक जीवन नहीं है। वास्तविक जीवन वह है जो कभी नष्ट नहीं होता। अजर-अमर बना रहता है। जो बाहरी देह दिखायी देती है, वह जब प्राणीमात्र के प्रति नेह में पकती है, पचती है, तब जिस चेतना का विकास होता है, उससे जीवन की दुर्लभता का बोध होता है।

भगवान महावीर ने देह से परे जो आत्म-तत्त्व है, उससे साक्षात्कार किया था। आत्म-साक्षात्कार के क्षणों में जो उन्होंने अनुभव किया, वही उनका जीवन-दर्शन बन गया। महावीर का जीवन-दर्शन जड़ता का नहीं, जागृति का जीवन-दर्शन है। वह 'पर' के प्रति उत्तेजना का नहीं, स्व-संवेदना का जीवन दर्शन है। महावीर का सम्पूर्ण जीवन स्वतन्त्रता, समानता और लोक-कल्याण के लिए समर्पित है। स्वतन्त्रता अर्थात् सम्पूर्ण मुक्ति। जिसमें आत्मा अपने सुख-दुःख के लिए किसी अन्य सत्ता पर निर्भर नहीं। आत्मा के मन, वचन, कर्म ही उसके सुख-दुःख के लिए उत्तरदायी हैं। जीवात्मा अपने श्रम और पुरुषार्थ से इतनी सक्षम और समर्थ है कि वह अपने भाग्य की स्वयं विधायक है। प्रत्येक जीव

स्वतन्त्र है और अपने में शिव बनने की ताकत समेटे हुए है, अहिंसा, संयम और तप रूप धर्म द्वारा प्रत्येक जीव अपने विकारों और विभावों को हटाकर अपनी चेतना का चरम विकास कर सकता है। इसी अर्थ में आत्मा परमात्मा बन सकती है और परमात्मा बनने की यह स्वतन्त्रता सभी जीवात्माओं को है।

महावीर ने अपनी चित्त वृत्ति के निर्मल दर्पण में यह अनुभव किया कि जैसे मैं स्वतन्त्र हूँ, वैसे अन्य जीव भी स्वतन्त्र हैं। जैसे मुझे अपनी आत्मा प्यारी है, वैसे अन्य जीवों को भी अपनी आत्मा प्यारी है। सब जीवों को सुख प्रिय है और दुख अप्रिय। सभी जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। महावीर ने अपनी सूक्ष्म संवेदना के स्तर पर यह जाना कि इस सृष्टि में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति में भी जीव है। चाहे ये चर्म चक्षुओं से चलते-फिरते न दिखाई देते हों पर एक इन्द्रिय से लेकर पाँच इन्द्रियों और मन तक जीव का विकास है। इन सबको जीवित रहने का अधिकार है। मनुष्य पाँच इन्द्रियों और मन से सम्पन्न है। अतः उसका विवेक इसमें है कि वह स्थावर और त्रस सभी जीवों के प्रति प्रेम और मित्रता का व्यवहार करे। जब ये सभी जीव अपने अस्तित्व में सन्तुलन बनाये रखते हैं तब सृष्टि में सुख, शान्ति और समता का वातावरण होता है, पर ज्यों ही यह सन्तुलन बिगड़ता है, दूसरे शब्दों में जब पर्यावरण असन्तुलित होता है, दूषित होता है तो संसार में दुःख, अशान्ति और विषमता बढ़ती है।

जीवन और समाज में समता, शान्ति और सन्तुलन बनाये रखने का सूत्र है—व्यक्ति दूसरे प्राणियों को आत्मवत समझे, अपनी इच्छाओं पर नियन्त्रण करे, आवश्यकताओं को कम करे और इन्द्रियों पर संयम रखे। मन में उठने वाली क्रोध, मान, माया, लोभ आदि प्रवृत्तियों को उपशान्त करे, विचारों में समता लाये। किसी वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति को एक ही दृष्टिकोण से न देखे वरन् विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार कर उसकी सम्पूर्णता को समझे। दूसरे शब्दों में महावीर का यह जीवन-दर्शन अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त सिद्धान्त के रूप में हमारे सामने विवेचित-विश्लेषित हुआ है।

भगवान महावीर का जीवन-दर्शन, जीवन की समग्रता और सम्पूर्णता का दर्शन है। इसमें सम्यक्दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र का युगपत सन्तुलन है। निवृत्ति और प्रवृत्ति का सुन्दर समन्वय है। निवृत्ति की कूख से प्रवृत्ति प्रस्फुटित हो, प्रवृत्ति में आसक्ति न हो, वह सेवा रूप में हो। निवृत्ति जीवन में जड़ता-निष्क्रियता न लाये, वह समरसता-सरसता पैदा करे। उसमें से त्याग का रस फलित हो। इसी अर्थ में अहिंसा का विधि-निषेध और प्रवृत्ति-निवृत्ति रूप फलित होता है।

परिग्रह केवल वस्तु का नहीं, विचार का भी होता है। परिग्रह का मूल है—मूर्च्छा—मोह। महावीर का जीवन-दर्शन मोह पर जबरदस्त चोट करता है। मोह का प्रभाव व्यापक है। उसका रूप सर्वग्रासी है, वह ज्ञान को, संवेदना को, चारित्र-आचार सबको ग्रस लेता है। अज्ञान, प्रमाद, आसक्ति, मिथ्या दृष्टि सब इसी के रूप हैं। आज की उपभोक्ता संस्कृति के परिणामस्वरूप इन्द्रिय विषय-सेवन के जो विविध रूप हैं, वे मोह के ही परिणाम हैं। मोहाविष्ट व्यक्ति जीवित रहते हुए भी जड़ होता है, मृत-मूर्छित होता है।

महावीर का जीवन-दर्शन मन, वचन और कर्म की एकरूपता पर बल देता है। धर्म के नाम पर पनपने वाले बाह्य आडम्बर, प्रदर्शन सब पर वह चोट करता है। उसका बल है—वीतरागता पर, वेष-विन्यास पर नहीं, निर्ग्रन्थता पर, ग्रन्थ आदि साम्प्रदायिक व्यामोह पर नहीं। जाति, मत, सम्प्रदाय, लिंग, वर्ण आदि परम आत्मा के साक्षात्कार में बाधक नहीं। श्रमण समता का आचरण कर मुक्त हो सकता है, तो सद्‌गृहस्थ भी अनासक्त रहकर परम चेतना से साक्षात्कार कर सकता है। श्रमणाचार और श्रावकाचार के रूप में महावीर ने व्रत साधना की भूमिका निश्चित की है। इस दृष्टि से महावीर का जीवन-दर्शन गूढ़ और गम्भीर होते हुए भी सहज और व्यावहारिक है। अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार व्रतों पर आरोहण करने का सबके लिए समान अवसर है।

महावीर के जीवन-दर्शन की जीवन्तता इस बात से स्पष्ट है कि ढाई हजार वर्षों के बाद भी उनकी शासन-परम्परा आज भी अविच्छिन्न रूप से प्रवहमान है। देशकाल के अनुसार आचार-सोपानों में किंचित् परिवर्तन भले ही आया हो, पर मोटे तौर से उसकी अर्थभित्ति अब भी वैसी ही सुदृढ़ है।

यह सब होते हुए भी यह प्रश्न उठना सहज स्वाभाविक है कि महावीर का जीवन-दर्शन आज हमारे दैनिक व्यवहार में कितना उतर पाया है? क्या हम सच्चे अर्थों में उसके अनुरूप जीवन जी पा रहे हैं?

समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखें तो महावीर का जीवन-दर्शन, जिसके लिए क्षत्रियोचित गुणवत्ता आवश्यक थी, वह आज लुप्त सी हो गयी है। महावीर के अनुयायी मोटे तौर से जन्मना वैश्य हैं। महावीर ने अहिंसा, संयम और तप रूप जिस धर्म की विवेचना की और उसे जीवन में उतारने के लिए जो विधि-विधान नियत किये, वे आज निर्जीव, प्रभावहीन और यान्त्रिक मात्र हो गये हैं। अहिंसा मोटे तौर से निषेधपरक अधिक रह गयी है। उसका विधेयात्मक रूप जो सेवा, प्रेम और करुणा में प्रतिफलित होना चाहिये, वह गौण हो गया है। हम द्रव्य हिंसा से बचने का प्रयास तो करते हैं, पर भाव हिंसा रूप, क्रोध, मान, माया,

लोभ से बच नहीं पाते। खेती करने से कतराते हैं, पर उद्योग-व्यवसाय में, कल-कारखानों में, ऊँची दर पर व्याज कमाने में अपनी सम्पत्ति का उपयोग करने में नहीं हिचकते। अहिंसा का यह कैसा विचित्र उपयोग है कि उससे परिग्रह घनीभूत होता चलता है। हमारा मन, वचन, कर्म आज परिग्रह से ग्रस्त है। सभी ओर परिग्रह ही पूजा जा रहा हैं। तथाकथित साधकों को संसार का परिग्रह निरन्तर कसता जा रहा है। परिग्रह का ही परिणाम है—प्रदर्शन। यह प्रदर्शन सामाजिक उत्सवों में ही नहीं, धार्मिक अनुष्ठानों में भी देखा जा सकता है। वीतराग प्रभु की मूर्ति को सजाने-संवारने में भी परिग्रह की होड़ है। उसकी प्रतिष्ठा में वीतराग देव के गुण इष्ट नहीं हैं, इष्ट है—धन की बोली और बाहरी भजन-कीर्तन की टोली। महावीर का अनेकान्त दर्शन आज एकान्तवादिता में कैद हो गया है। लगता है, हम महावीर के संस्कारों की विरासत को आत्मसात करने में नहीं वरन् उनकी भौतिक सम्पदा पर अधिकार करने में, तीर्थ-स्थलों के स्वामित्व को सिद्ध करने में अपने वीरत्व का, श्रम और शक्ति का प्रदर्शन कर रहे हैं।

महावीर के दर्शन को जीवन में उतारने वाले साधक के व्यक्तित्व की एक विशिष्ट छाप जन-मानस पर पड़नी चाहिए। वह आज कहाँ है? महावीर ने जन्म को नहीं, कर्म को महत्त्व दिया, पर आज हममें जिनत्व का कर्म कितना है? हम जन्म से जैन हैं पर हमारा व्यवहार कितना आत्मजयी और इन्द्रिय-संयमी है? संसार के सुख-वैभव को छोड़कर एकदम अकिंचन और अपरिग्रही हमारा साधु वर्ग और हम अनुयायी कितने परिग्रही और कितने सांसारिक प्रपंचों में उलझे रहने वाले?

महावीर ने धर्म को आत्मा का स्वभाव कहा है। क्षमा, विनय, सरलता और सन्तोष को धर्म का लक्षण बताया। धर्ममय होने के लिए दिनचर्या का विधान किया। दिन के चार प्रहर में साधक प्रथम प्रहर में स्वाध्याय, दूसरे में ध्यान करे, फिर एक प्रहर में भिक्षाचर्या और अन्तिम प्रहर में स्वाध्याय करे। रात्रि के चार प्रहर में प्रथम प्रहर में स्वाध्याय, दूसरे में ध्यान, फिर एक पहर में निद्रा और अन्तिम प्रहर में स्वाध्याय करे। इस प्रकार एक दिन-रात के ८ प्रहरों में चार प्रहर स्वाध्याय, दो प्रहर ध्यान और एक प्रहर भोजन और एक प्रहर निद्रा। तब कहीं जीवन धर्ममय हो पाता है। पर आज हमारी दिनचर्या का कितना अंश आहार और निद्रा में ही बीतता है? जीवन में प्रमाद शेष रह गया है और प्रमोद भाव ओझल होता जा रहा है। निरन्तर तनाव, बेचैनी और व्यग्रता। जीवन में टेन्शन है, अटेन्शन की स्थिति आ ही नहीं पाती।

महावीर ने सद्गृहस्थों के लिए पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रतों का विधान किया है। अणुव्रत और गुणव्रत तो जीवन भर के लिए हैं,

पर प्रतिदिन के लिए शिक्षाव्रत हैं। समता-साधना के लिए सामायिक है। प्रवृत्तियों के संकोच के लिए देशावकाशिक व्रत है। आत्म-गुणों के पोषण के लिए पौषध व्रत है और जरूरतमन्दों के लिए, समाज के लिए, परोपकार के लिए अपने अर्जन का विसर्जन है। अपनी सम्पत्ति का लोक-कल्याण के लिए सदुपयोग है।

महावीर ने धर्म-आराधना के लिए दैनिक जीवन में षट् कर्मों का विधान किया। प्रतिदिन आवश्यक होने से, अवश्य करणीय होने से इन्हें "आवश्यक" भी कहा गया। संख्या में ६ होने से ये षडावश्यक कहे जाते हैं। यथा : सामायिक, २४ तीर्थंकरों की स्तुति, वन्दना, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग और प्रत्याख्यान। वर्तमान में इन षडावश्यकों को हम प्रतिक्रमण में सम्मिलित कर लेते हैं। प्रतिदिन प्रातः सायं इन्हें करने का विधान है। इसके पीछे बड़ी मनोवैज्ञानिक पकड़ और गहरी धारणा है। इनके माध्यम से प्रत्येक साधक अपनी दैनन्दिनी चर्या का अन्तरावलोकन करता है, कृत त्रुटियों के प्रति सजग होकर प्रायश्चित्त करता है और भविष्य में ऐसी त्रुटियाँ न हों, इसके लिए प्रत्याख्यान करता है, संकल्पबद्ध होता है और इस प्रकार धीरे-धीरे वह अपना अन्तर-निरीक्षण, परीक्षण करता हुआ धर्म को जीवन व्यवहार में उतारता चलता है, धर्ममय होता चलता है, पर यह विधि आज रुढ़ि मात्र हो गई है। इसकी तेजस्विता गायब हो गयी है। साधक वाचिक रूप से प्रतिक्रमण के पाठों का उच्चारण कर लेता है पर मन के स्तर पर उनका पाचन-चिन्तन और अनुभवन नहीं कर पाता।

उक्त स्थिति केवल जैन धर्मावलम्बियों की ही नहीं है, विश्व में जितने भी धर्म हैं, न्यूनाधिक रूप से उन सभी की यही स्थिति है। धर्म जीवन से अलग-थलग दिखाई देता है। लोग उसे पोशाक बनाकर ओढ़ते-पहनते हैं। धर्म उनका वर्म (कवच) बनता है, पर धर्म चर्म नहीं बनता। वह उपचार बनता है, पर आचार नहीं। नाव बनता है, पर भाव नहीं। इस विसंगति का कारण मेरी समझ में यह है कि हम धर्म को आदर्श (value) के रूप में नहीं, कीमत (price) के रूप में अंगीकार करने के अभ्यासी बनते चले जा रहे हैं। धर्म का उपयोग हम मुद्रा या सिक्के के रूप में करने लगे हैं, उससे हम पद, प्रभुता और प्रतिष्ठा खरीदने लगे हैं। इसीलिए सम्यक् दर्शन की बजाय बाह्य प्रदर्शन बढ़ा है। धर्म आत्म-धर्म न रहकर बाजार धर्म बन गया है। आत्म-मूल्य न रहकर बाजार-मूल्य रह गया है। वह हमारे छिद्रों को पूरने वाला, क्षतों को सहलाने वाला न रहकर क्षतिपूर्ति का साधन मात्र रह गया है।

धर्म की वास्तविक फसल आत्म-केन्द्र में स्थित रहने से ही पकती है, पर आज हम फसल को विस्मृत कर केवल बाड़ की रक्षा करने में ही धर्म समझ बैठे हैं। विभिन्न मत-मतान्तर और साम्प्रदायिक व्यामोह बाड़ रूप ही हैं। बाड़

की सार्थकता इस बात में है कि वह केन्द्र में उगी हुई फसल की रक्षा करने में उपयोगी साधन बने। आवश्यकता है इस बात की कि हम महावीर के जीवन-दर्शन की जो सच्ची फसल है, उसे अपने केन्द्र में प्रतिष्ठापित करें।

महावीर के जीवन-दर्शन की मूल चेतना आत्म-ज्ञान है, 'स्व' की पहचान है। "स्व" की पहचान के लिए ही "स्व" का विस्तार है। ऐसा विस्तार कि वह "सर्व" बन जाये। कठिनाई तब पैदा होती है, जब हम उस "स्व" की विश्वनीयता और दिशा को सम्यक् रूप से पकड़ नहीं पाते। जब धर्म और जीवन परस्पर ओत-प्रोत होते हैं तो जागृति बनी रहती है। ज्यों-ज्यों प्रमाद बढ़ता है, त्यों-त्यों "स्व" की विश्वसनीयता और 'स्व' विस्तार की दिशा धुंधली होती जाती है। हम "घर" को ही "स्व" विस्तार की दिशा समझने लगते हैं। आज हम जिस भौतिक चकाचौंध और विज्ञान के तकनीकी युग में रह रहे हैं, उस युग की यही सबसे बड़ी त्रासदी है।

कविता

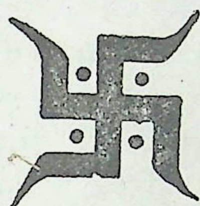
जिंदगी आग का दरिया है खंगालो मुझको

□ प्रो० फूलचन्द 'मानव'

उठने वाले की तरह, गिरने से टालो मुझको,
जिन्दगी आग का दरिया है खंगालो मुझको।
पहले मिलते हैं, मुस्कराते, दनदनाते हैं,
ऐसे खामोश पलों में आजमा लो मुझको।
पर कटे पंछी से ख्वाबों को सहेजोगे कहाँ,
मेरी बस्ती है, मेरा प्यार जगा लो मुझको।
आदतन आज कभी यूं ही न कुछ याद आया,
वक़्त सरका है तो सुख चैन से पालो मुझको।
खून की बात करोगे तो उठेगा ही धुंआ,
अपने पानी में ही पंजाब मिला लो मुझको।
सत्य साथी सहीं सोचे हैं सवेरा भी यहाँ,
बस बुरे वक़्त की दुनिया से निकालो मुझको।
तंग हालात ने देखा है यह उठता जो धुंआ,
काली मिट्टी के करिश्मे-सा बना लो मुझको।
दर्द का जन्म मुहब्बत का आईना 'मानव',
यूं करो आज ही पर्दे से उठा लो मुझको।

—३५७, फेज ६, मोहाली-१६००५५ (चंडीगढ़)

प्रवचनामृत :



मन की मर्यादा*

□ आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा०

संसार में जितने प्राणी हैं, उनमें से कोई दुःखमय जीवन जीना नहीं चाहता। मनुष्य का तो कहना ही क्या ? वह तो सबसे बढ़कर बुद्धिमान प्राणी है। फिर भी देखा जाता है सुख चाहते हुए भी अज्ञानवश वह दुःख के मार्ग पर स्वयं चलता रहता है। दूसरों को दुःख में पड़ा देख कर भी मनुष्य उनसे सीख ग्रहण नहीं कर पाता तथा उन्हीं कारणों को स्वयं अपनाता है जिससे उसके दुःख घटने के बजाय बढ़ते रहते हैं। सम्यक्ज्ञान पूर्वक चारित्र से दुःख के इस बन्धन को काटा जा सकता है। सद्ज्ञान प्राप्ति के लिए सद्गुरु की शरण और अटूट लगन की जरूरत रहती है। संसार में मोह का सबसे बड़ा रूप लोभ है जो कि मानव की आंखों में अहर्निश समाया रहता है। संसार के सकल अनर्थों की जड़ यही लोभ है जो सतत सबको नचाते रहता है। यदि मनुष्य अपने बढ़ते परिग्रह पर नियन्त्रण कर ले तो वह स्वयं को सुधार कर दूसरों को भी आसानी से सुधार सकता और कर्म के भार से हल्का रह सकता है। जब तक हृदय में मोह है, तब तक सद्ज्ञान की स्थिरता असंभव है। अगर लोभ से सर्वथा पिण्ड छुड़ाना कठिन है तो उसकी दिशा बदली जा सकती है और गुरु सेवा या जप-तप तथा सद्गुणों की ओर मोड़ा जा सकता है। ऐसा करने पर परिग्रह का बन्धन भी ढीला सहज हो सकेगा।

साधारणतः मानव, मोह का पूर्ण रूप से त्याग नहीं कर सकता, पूर्ण अपरिग्रही नहीं बन सकता तो क्या वह उस पर संयम भी नहीं कर सकता ? ऊँची डालियों के फूल हम नहीं पा सकते तो क्या नीचे के कांटों से दामन भी नहीं छुड़ा सकते, अवश्य छुड़ा सकते हैं। जब शरीर के किसी अंग में अनावश्यक मांस-वृद्धि हो जाती है तो उससे शारीरिक कार्यों में बाधा पड़ती है। उस बाह्य वृद्धि को पट्टी बांधकर या अन्य उपचार के द्वारा रोकना पड़ता है, सीमित करना पड़ता है। वैसे ही बढ़ा हुआ परिग्रह भी अच्छे कार्यों में, साधनों में बाधक होता है। अतः उस पर नियम की पट्टी लगानी आवश्यक होती है। इसीलिये

* आचार्य श्री के प्रवचन [२८ सितम्बर, १९६३ पीपाड़] से संकलित।

आनन्द गाथापति ने भी भगवान् महावीर स्वामी के समक्ष इच्छा परिमाण का व्रत स्वीकार किया।

यदि मन का नियमन नहीं किया गया, तो मन में कभी शांति नहीं रहेगी। जिसने सम्पदा पर बाह्य दृष्टि से तो परिमाण किया है किन्तु इच्छा पर नियमन नहीं किया तो उसे सच्ची शांति प्राप्त नहीं होती और उसका व्रत धारण भी विधि पूर्वक नहीं समझा जाएगा। इसीलिए परिग्रह परिमाण का दूसरा नाम शास्त्र में इच्छा परिमाण भी रखा है। जब इच्छा में सीमा होगी तो मन में आकुलता नहीं रहेगी।

आनन्द के पास १२ करोड़ की सम्पदा तथा ४० हजार का पशुधन था। वह अपनी बढ़ी हुई सम्पदा की बेल को सीमा के अन्दर रखना चाहता था। इसीलिए उसने संकल्प किया कि भगवन्! इस कही गई वर्तमान सम्पदा से अधिक का मैं संचय नहीं करूँगा। वस्तुतः इच्छा पर नियन्त्रण होने से सहज ही त्याग की ओर मन बढ़ता है जिससे जीवन में एक अलौकिक आनन्दानुभव होता है जो धन के लिए सतृष्ण होने पर कभी संभव नहीं।

आनन्द ने पांचवें व्रत में (नौ प्रकार के परिग्रह) १. खित्त, २. वास्तु, ३. धन, ४. धान्य, ५. हिरण्य, ६. सुवर्ण, ७. दास-दासी, ८. पशु और ९. अन्य सामान का परिमाण किया। जैसे—

(१) खित्त याने खुले मैदान की भूमि, खेत आदि। (२) वास्तु याने गृह, प्रासाद आदि, यथा-घर, गोशाला, घुड़शाला, हाट, हवेली आदि। वास्तु परिमाण के सम्बन्ध में आनन्द ने नियम किया कि वर्तमान में जितने मकान हैं उससे अधिक अब नहीं बढ़ाऊँगा। इस प्रकार का व्रती दैववश प्राप्त होने वाले नयी मिल्कियत, दान, पुरस्कार या अन्य किसी भी प्रकार की ऐसी सम्पत्ति से अपने को विमुख रखेगा जिसके चलते कि आज जगह-जगह महाभारत का श्री गणेश होता है। जब तक मनुष्यों के मन में संतोष का रूप स्थिर नहीं होता तब तक सरकार द्वारा किया गया नियमन एवं लाखों का व्यय भी व्यर्थ ही जंचता है, इच्छा परिमाण के अन्तर्गत जो भावना निहित है, वह शासन तन्त्र से प्राप्त नहीं हो सकती।

नौ परिग्रहों में से किसी परिग्रह में काल-विशेष में अधिक नियन्त्रण की आवश्यकता पड़ती है। आज ऐसे बहुत सारे परिवार हैं, जहां दास-दासी रखने की आवश्यकता नहीं होती। मनुष्य अपना काम आप कर लेता है और इसमें वह किसी प्रकार की हीनता का अनुभव नहीं करता। दास रखने की आवश्यकता काम की अधिकता, रोगी या कमजोरी की दशा एवं प्रभुता या बड़प्पन के प्रदर्शन

करने आदि के लिए होती है। आज अधिकांश अल्प समय के वेतन-भोगी दास से काम चला लिया जाता है। अपने करके दास-दासी थोड़े ही घरों में रक्खे पायेंगे। किन्तु मध्य युग में तो दास-दासी रखने की प्रथा थी, चाहे जरूरत हो या नहीं। आनन्द ने इसका भी परिमाण कर लिया। क्योंकि दास के साथ अनात्म भाव से काम लेना अहिंसा के विपरीत याने धार्मिकता के विरुद्ध है। उसके सैकड़ों दास थे।

आज कुछ लोग नौकर रखकर यह तर्क उपस्थित करते हैं कि हम मजदूर लोगों का पालन करते हैं। ऐसी दुहाई देने वाले कहाँ तक सच कहते हैं, यह उनका हृदय ही जानता है। आज के कारखाने स्वार्थ के लिए चलते हैं या लोक-पालन के लिए? इसका जवाब तो स्वयं से पूछना चाहिए।

जिन घरों में संस्कार अच्छे होते हैं, वहाँ के बच्चे भी धर्म-भावना से सदा प्रेरित रहते हैं। अतः हर गृहस्थ को अपने अमर्यादित लोभ पर नियन्त्रण करना आवश्यक है। कहा भी है—

अति लोभो न कर्तव्यः, लोभो नैव च नैव च।
अति लोभ प्रसादेन, सागरः सागरं गतः॥

जिस प्रकार एक मोटरगाड़ी है, जिसकी तेल वाली टंकी में पैट्रोल तो डाला गया किन्तु पानी की टंकी में पानी नहीं डाला तो ऐसी गाड़ी में यात्रा करना खतरे से खाली नहीं होगा। ऐसे ही जीवन की यात्रा में व्रत नियम के जल की टंकी भी आवश्यक है। क्योंकि इसके बिना जीवन रूपी गाड़ी को भयंकर खतरा हो सकता है।

धनी घरों में बच्चे प्रारम्भ से ही अर्थ की घूंटी पाते हैं अतः श्रीमन्त घरों के बच्चों में अनायास धर्म की ओर प्रवृत्ति नहीं हो पाती। ऐसे बच्चों के मन में सदा धनोपार्जन की कामना रहती है। उनमें सेवा देने वाले, धर्म भावना वाले लोग बहुत कम मिलते हैं। क्योंकि मन में सेवा की रुचि जगाने के लिए परिग्रह पर नियन्त्रण आवश्यक है। घर के जन-जन में अर्थ रुचि देखने वाला बच्चा सेवा रुचि या प्रेम रुचि वाला कैसे हो सकता है। गुणियों के प्रति यदि आदर भाव जागृत हो, तो समाज सेवी भी इसके लिये मिल सकेंगे। समाज में गुण प्रेम होना आवश्यक है। राजिया कवि ने ठीक कहा है—

गुण ओगुण जिण गांव, सुणे न कोई साँभले।
उण नगरी बिच नांव, रोही भले री राजिया॥

कोई व्यक्ति धर्म के लिए समाज सेवा या प्रचार में अपना समस्त जीवन लगा दे फिर भी समाज यदि उसके प्रति आदर न करे तो ऐसे व्यक्ति की सत्प्रवृत्ति आगे कैसे बढ़ेगी ? कोई सोना, चांदी, भूमि, भवन, पशुधन आदि परिग्रह की अपेक्षा यदि गुणों की ओर अधिक ध्यान लगावे, तो ऐसे सद्‌गुणियों का समाज में आदर होना चाहिये । महामात्य शकटार की पत्नी लाछलदे ने अपनी सातों कन्याओं तथा दोनों पुत्रों स्थूलभद्र तथा श्रीयक पर बचपन से ही सुन्दर संस्कार डाले थे । फलतः उनका भविष्य उज्ज्वल निकला ।

प्रजापति गीली मिट्टी के पिण्ड से विभिन्न रूपों का निर्माण करता है। कारीगर अपनी कला का रूप गीली मिट्टी के पिण्ड पर ही बना सकता है । सूखी मिट्टी के पिण्ड से रूप निर्माण नहीं होता । एक कुशल कारीगर या प्रजापति की तरह कोमल अवस्था में यदि माता-पिता सुसंस्कार के चाक पर बच्चों को चढ़ावें तो उनका जीवन निश्चय सुसंस्कृत हो सकता है। यदि पुत्र को सुसंस्कृत न बनाया जाय तो सिर्फ एक घर की हानि होगी किन्तु यदि बालिका में सुसंस्कार नहीं दिए जाय तो पितृ और श्वसुर घर दोनों को धक्का लगेगा तथा भावी संतानों पर भी कुप्रभाव पड़ेगा । जो बालिका कुसंस्कार लेकर ससुराल जायेगी, वह वहां भी कुसंस्कार का रोग फैलायेगी । अतः लड़के की अपेक्षा लड़की की शिक्षा पर माता-पिता को अधिक ध्यान देना आवश्यक है ।

प्राचीन काल के पुरुषों ने स्त्रियों को मर्यादा का पाठ पढ़ाकर समाज का बड़ा उपकार किया है । उनके लिये पक्षपात की बात कर स्त्री जाति के प्रति उनकी सद्‌भावना और सम्मान बुद्धि पर लांछन लगाना, उनके सद्‌विचारों को गलत रूप में समझना है ।

मनुष्य बहुमूल्य हीरे जवाहिरातों को अधिक सुरक्षित रखता है, वैसे ही हीरे जवाहिरातों से भी अधिक वेशकीमती स्त्रियों की सुरक्षा का प्रबन्ध क्या उनके आदर का सूचक नहीं है ? लाछलदे ने बहुमूल्य जवाहिरातों से भी बढ़कर अपनी पुत्रियों की सुशिक्षा एवं रक्षा की ओर ध्यान दिया । साथ ही पुत्रों की शिक्षा पर भी कुछ कम ध्यान नहीं रखा और उन्हें सभी विद्याओं में सुसम्पन्न किया । महामंत्री शकटार ने पुत्रों को धनुर्विद्या, राजनीति, अर्थनीति, ज्योतिष, ब्रह्मज्ञान आदि सिखाने का उचित प्रबन्ध किया । चौदहों विद्याओं का निरूपण एक कवि ने अपनी कविता में अच्छी तरह किया जो इस प्रकार है—

राग[१] रसायण[२] नृत्यगत,[३] नटबाज़ी बेदंग[५] ।
अश्व चढ़न[६] व्याकरण[७] पुनि, जानत ज्योतिष[८] अंग ।
धनुष बाण[९] रथ हांकवो,[१०] चित चोरी[११] ब्रह्मज्ञान[१२] ।
जल तिरवो[१३] धीरज वचन,[१४] चौदह विद्या निधान ॥

उस समय पाटलिपुत्र में रूप कोषा नाम की एक विख्यात वेश्या थी। अपने रूप और गुणों के कारण वह नगर नायिका मानी जाती थी। उसके रूप लावण्य की प्रशंसा सारे देश में छायी हुई थी। साथ ही वह मनोविज्ञान में भी निपुण थी। विभिन्न उद्देश्य को लेकर लोग उसके पास आया करते थे। शकटार ने सोचा कि अपने पुत्र को सभी विद्याओं में दक्ष बनाने के लिए इसे वेश्या का संग भी कराना चाहिए। क्योंकि नीति कहती है दक्षता के लिए "वारांगना राज सभा प्रवेशः" की भी आवश्यकता होती है। राजकीय पदों में सफलता प्राप्ति के लिए विद्या का बहुमुखी रूप न हो तो सफलता नहीं मिलती। कहा भी है—"हाकिमी गरम की, दुकानदारी नरम की और बहू-बेटी शरम की" आदि।

शकटार ने स्थूलभद्र को रूप कोषा के घर प्रशिक्षण के लिए भेजने का निश्चय किया परन्तु स्थूलभद्र सुसंस्कार के कारण जाने को अनिच्छुक हुए आदि बातें आगे सुस्पष्ट होंगी। किन्तु इस उपरोक्त कथन से हमें यह सीख लेनी है कि अपनी संतान को सुशिक्षा देकर भावी पीढ़ी का जीवन सुमधुर व सुन्दर बनाने में संस्कार की बड़ी आवश्यकता है। क्योंकि उत्तम जीवन निर्माण में ही स्व पर का कल्याण संभव है। □

पछतावा

□ सं० हेमन्त भण्डारी

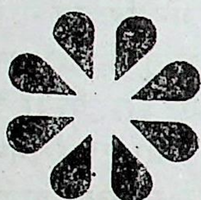
रौकान नामक एक जैन श्रमण एक पहाड़ी की तलहटी में रहता था। पहाड़ी के समान ही उसका सादा जीवन था। वैसा ही प्रकृत और वैसा ही नैसर्गिक। एक दिन सूनी झोंपड़ी पाकर एक चोर ने तुरन्त पता कर लिया कि चोरी करने के लिए वहाँ कुछ भी नहीं है। वह सकते में आकर कुछ देर तक सोचता रहा।

रौकान लौटकर आया तो अभागे चोर से उसकी भेंट हुई। "तुम्हें तो बहुत पहले ही मेरी खोज-खबर लेनी चाहिये थी, भाई।" वह चोर की तरफ देखते हुए बोला, "खैर कुछ भी हो, तुम्हें खाली हाथ नहीं जाने दूँगा। कृपया मेरे कपड़ों की यह तुच्छ भेंट ही स्वीकार करो।"

चोर के अचरज की सीमा न रही। उसने चुपचाप कपड़े लिए और वहाँ से खिसक गया। एक छोटी सी चट्टान पर निरावृत्त बैठा रौकान चाँद की तरफ टकटकी लगाये देखता रहा। फिर फुसफुसाया "बेचारा चोर! काश! मैं उसे यह खूबसूरत चाँद दे पाता।"

—बी–७, न्यू लाइट कॉलोनी, टोंक रोड, जयपुर–३०२ ०१५

गीतिका :



महावीर ! महावीर !!

□ शशिकर 'खटका राजस्थानी'

महावीर–महावीर किया करो, दुःख न किसी को दिया करो ।
वह बेड़ा पार लगायेगा, तुम नाम उसी का लिया करो ।।

दुर्लभ है मानव का जीवन,
पुण्य योग से पाया ।
लोभ मोह, ईर्ष्या का—
क्यों नयनों में छाया ?

प्रेम बिना तो जग ज्वाला है, तुम इसका प्याला पिया करो ।

बोलो किसको शक्ति मिली है,
हिंसा का पथ अपना कर ?
मानवता के सभी गुणों को,
मन-ही-मन में दफना कर ?

यदि फटा हुआ मन देखो तो, तुम स्नेह-सूत्र से सिया करो ।

यह है तेरा, यह है मेरा,
यह सब बातें थोथी हैं ।
दुनिया पागल बनकर के नित,
जीवन इसमें खोती है ।

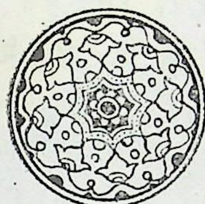
जीने दो सबको ही जग में, मुस्काकर सब जीया करो ।

त्याग तपस्या से जीवन के,
हर इक क्षण को महकालो ।
करुणा की धारा से जग के,
उपवन को सब चहकालो ।

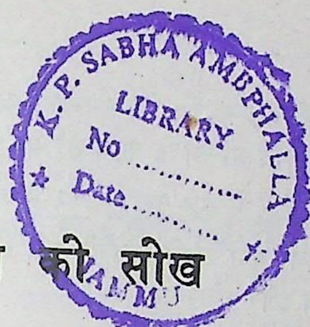
बिखरे शूलों को चुनकर के, जंगल को तुम बगिया करो ।
महावीर–महावीर किया करो, दुःख न किसी को दिया करो ।।

—कवि कुटीर, विजय नगर (अजमेर) राज.

प्रकृति :



सूखी डाली की सीख



☐ श्री हरिकृष्णदास गुप्त 'सियहरि'

किसी हरे-भरे पेड़ में एक निपट सूखी डाली देख, अन्य डालियों से उसकी तुलना-सी करते हुए मैं कुछ सोचने लगता हूँ।

मुझे यूँ सोचते देख, वह डाली कुछ विचलित-सी हो उठती है। उससे रहा नहीं जाता। मुझसे पूछ बैठती है—

"मुझे देखकर यह सोचने क्या लगे ? मैं तुम्हें तिरस्करणीय लग रही हूँ न ? बस इसलिए कि निपट सूखी हूँ। किसी को देने के लिए, मेरे पास कुछ नहीं है। फल-फूल छोड़, पत्ते तक भी नहीं।"

बात सच होती है, पर इस सच को स्वीकार करते मुझसे नहीं बनता। स्वीकार करने का अर्थ होता—स्वयं तिरस्करणीय बनना। अतः मैं जल्दी से उत्तर में कहता हूँ—

"न, न, यह बात नहीं। तिरस्करणीय तुम क्यों होने लगी ? मुझे तो बस जरा तुम पर तरस-सा कुछ आ रहा था, और कोई बात नहीं।"

सुनकर, जैसे मेरी तह में पहुँच, स्वर में तीखापन लाकर वह प्रत्युत्तर में कहती है—

"बस-बस रहने दो अपने तरस को अपने पास ही। मैं इतनी दीन-हीन नहीं, जो मुझे इसकी आवश्यकता हो। और कुछ किसी को देने के लिए भले ही मेरे पास में न हो, पक्षियों को तो मैं आश्रय एवं विश्राम दे ही सकती हूँ।"

तभी एक पक्षी उड़ता-उड़ता उस पर आकर बैठ जाता है—कुछ इस तरह कि जैसे उसके कथन का प्रत्यक्ष प्रमाण दे रहा हो, फलतः वह आगे कहती है, इस बार निरीह-से किन्तु आत्म-विश्वास भरे स्वर में—

"और हाँ, पक्षी भी मुझे तिरस्करणीय समझ कर मुझसे दूर ही रहें, तब भी मुझे कोई चिन्ता नहीं। किसी दिन इस पेड़ से पृथक् होकर धरती पर तो मुझे गिरना ही है। तब ईंधन बनकर तो किसी के काम आ ही जाऊँगी।

इतने पर ही बस नहीं। ईंधन बनकर जल जाने पर भी काम की रहूँगी। राख भी बर्तन आदि माँजने के काम तो आ ही जाया करती है।"

प्रत्युत्तर में यह सब सुनकर मैं जैसे सर्वथा निरुत्तर होकर रह जाता हूँ।

डाली मुझे अभी छोड़ती नहीं। इतना और कहती है, इस बार स्वर में आत्मीयता और घोलकर—

"एक बात कहूँ! बुरा न मानना। तुम अपनी ओर भी तो देखो—कितने काम के हो? किसी के कितने काम आ रहे हो?"

सुनकर मैं उस डाली के प्रति नत-मस्तक होकर रह जाता हूँ—बहुत कुछ सोचता हुआ और साथ ही बहुत कुछ पाया हुआ-सा होकर।

सच, यूँ कहकर उसने मुझे एक सीख दी होती है—अनमोल सीख! और इस तरह अपनी न-कुछ अवस्था में भी अपने अपूर्व दातारपन के जैसे उसने मुझे प्रत्यक्ष दर्शन करा दिये होते हैं।

—८८२, गली बेरीवाली, कूचा पातीराम
दिल्ली-११० ००६

उत्थान और पतन का रहस्य

☐ श्री नैनमल विनयचन्द्र सुराणा

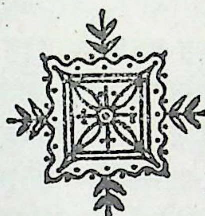
एक चिन्तक को एक स्वप्न आया कि एक ही नगर के निवासी साधु एवं वेश्या दोनों का एक साथ देहान्त हुआ। वेश्या स्वर्ग में गई और साधु नरक में गया। वेश्या का उत्थान हुआ और साधु का पतन हुआ।

चिन्तक चौंक कर जग गया। इस विचित्र स्वप्न का विचार करके वह आश्चर्य में डूब गया। स्वप्न का रहस्य ज्ञात करने के लिये वह एक जीवन-द्रष्टा के पास गया और उसे स्वप्न की बात कही। जीवन-द्रष्टा ने कहा, "बात ठीक तो है। वेश्या अपने अधम जीवन की निरन्तर निन्दा करती थी और धीरे-धीरे वह अपना जीवन सुधार रही थी। वह साधु के चारित्र की अन्तरात्मा से नित्य प्रशंसा करती थी। साधु अपने चारित्र का मन में मिथ्या अभिमान रखता था और वेश्या का तिरस्कार करके दिन भर उसकी निन्दा करने में ही लीन रहता था।"

वेश्या में गुण था—अपनी निन्दा और अन्य की प्रशंसा।
साधु में दोष था—स्वयं की प्रशंसा और अन्य की निन्दा।
इस कारण वेश्या का उत्थान हुआ और साधु का पतन।

—सुराणा कुटीर, पुराना बस स्टैण्ड, सिरोही (राज.)

धारावाही लेखमाला [२]



नयवाद—एक विश्लेषण

□ श्री रमेश मुनि शास्त्री
[उपाध्याय श्री पुष्कर मुनिजी के शिष्य]

(३) **व्यवहार नय :**

संग्रह नय के द्वारा जिन अर्थों का ग्रहण हुआ है, उनका विधिपूर्वक विभाग करने वाला व्यवहार नय है। तात्पर्य यह है कि इस नय के द्वारा जो गृहीत अर्थ है, उस अर्थ का विशेषत: परिबोध करना हो, तब उसका पृथक्करण किया जाता है। उसका विशद रूप से विश्लेषण करने के लिये व्यवहार नय की अत्यधिक आवश्यकता होती है। तात्पर्य की भाषा में यह भी कहा जा सकता है कि संग्रह नय जिस सामान्य को ग्रहण करता है, व्यवहार नय उस सामान्य को भेदपूर्वक ग्रहण करता है। प्रस्तुत नय सभी द्रव्यों और उनके विषय में सदा भेदानुसारी वचन-प्रवृत्ति करता है। यह सामान्य को नहीं, किन्तु विशेष को ग्रहण करता है। इसमें उपचार होता है। उपचार के अभाव में इस नय का प्रयोग नहीं होता।

व्यवहार नय दो प्रकार का है—सामान्य भेदक और व्यवहार भेदक। सामान्य संग्रह में दो भेद करने वाला नय सामान्य भेदक व्यवहार नय कहलाता है। जैसे द्रव्य के दो प्रकार हैं—जीव द्रव्य और अजीव द्रव्य। विशेष संग्रह में अनेक भेद करने वाले नय को विशेष भेदक व्यवहार नय कहते हैं। जिस प्रकार संसार जीव के चार प्रकार प्रतिपादित हैं—नारक, तिर्यञ्च, मनुष्य और देव। प्रस्तुत नय का प्रधान प्रयोजन है—व्यवहार की सिद्धि।

व्यावहारिक दृष्टिकोण—पर्याय को नहीं, किन्तु द्रव्य को ग्रहण करता है। इसलिये इस नय का विषय भेदात्मक, विशेषात्मक होने पर भी द्रव्य रूप है, पर्याय रूप नहीं। यही कारण है कि प्रस्तुत नय द्रव्यार्थिक नय के अन्तर्गत है।

लोक विरुद्ध विसंवादी और वस्तुस्थिति की उपेक्षा करने वाली भेद विषयक कल्पना व्यवहाराभास है। व्यवहार नय द्रव्य और पर्याय के वास्तविक भेद को मानता है किन्तु जो नय द्रव्य और पर्याय इन दोनों के अवास्तविक भेद को स्वीकार करता है, वह व्यवहार नयाभास कहलाता है।

(४) ऋजुसूत्र नय :

ऋजुसूत्र पदार्थ की अतीत और अनागत पर्यायों को छोड़कर वर्तमान समय की पर्याय को जानता है। पदार्थ की अतीत पर्याय का विनाश हो गया और अनागत पर्याय का उत्पादन हुआ अत: अतीत और अनागत पर्याय आकाश-कुसुम की भाँति सम्पूर्ण सामर्थ्य से विहीन होकर किसी भी प्रकार की अर्थक्रिया नहीं करती है। इसलिये वह अवस्तु है। क्योंकि अर्थक्रिया करने वाला ही वास्तव में 'सत्' है। अपने मूलभूत स्वरूप में स्थित परमाणु पारस्परिक संयोग से और कथंचित् समूह रूप होकर किसी कार्य में प्रवर्तित होते हैं। इसीलिए ऋजुसूत्र नय की दृष्टि से स्थूल रूप को धारण नहीं करने वाले स्वरूप में अवस्थित परमाणु ही वास्तव में सत् है, ऐसा कहा जा सकता है। तात्पर्य यह है कि ऋजुसूत्र नय की दृष्टि से निज स्वरूप ही वस्तु है, पदार्थ है और जो पर-स्वरूप है, वह वस्तु नहीं है, अनुपयोगी है।

ऋजुसूत्र नय के विषय में यह भी ज्ञातव्य है कि वह क्षण स्थायी सुख-पर्याय को प्रधान रूप से ग्रहण करता है, किन्तु सुख-पर्याय की प्रमुख आधारभूत स्थायी आत्मतत्त्व को स्वीकार नहीं करता है। इस नय के अनुसार पदार्थ की प्रत्येक पर्याय (अवस्था) भिन्न है। प्रथम और द्वितीय क्षण की पर्याय अर्थात् अवस्था में भेद है। जिस क्षण जो पर्याय है, वह उसी समय तक सीमित है। इस पर से यह स्पष्ट हो जाता है कि एक वस्तु की पर्याय दूसरी पर्याय से भिन्न हैं।

प्रस्तुत नय लौकिक-व्यवहार के विरोध की कोई चिन्ता नहीं करता। क्योंकि नैगम-संग्रह आदि नयों से लोक-व्यवहार तो चलता ही है। इस नय में पर्याय की प्रधानता है। द्रव्य का अस्तित्व गौण रूप से रहता है।

इस नय के दो प्रकार हैं—सूक्ष्म ऋजुसूत्र नय और स्थूल ऋजुसूत्र नय। सूक्ष्म ऋजुसूत्र नय एक समय मात्र की वर्तमान पर्याय को ग्रहण करता है। स्थूल ऋजुसूत्र नय अनेक समयों की वर्तमान पर्याय को ग्रहण करता है।

ऋजुसूत्र नय द्रव्य को गौण करके पर्याय को प्रधानता देता है किन्तु ऋजुसूत्र नयाभास द्रव्य का एकान्तत: निषेध करता है। वह पर्यायों को ही वास्तविक मानता है और पर्यायों में अनुगत रूप से रहने वाले द्रव्य का अपलाप करता है, एकान्त रूप से निषेध करता है।

(५) शब्दनय :

शब्दनय काल, कारक, लिंग, संख्या, पुरुष और उपसर्ग आदि के भेद से शब्दों में अर्थभेद का प्रतिपादन करता है। प्रस्तुत नय और पूर्व के दो नय

शब्दशास्त्र से सम्बन्धित हैं। इसका कार्य है—शब्दों के भेद से अर्थ में भेद करना। यह नय एक ही पदार्थ में काल, कारक, लिंग आदि के भेद से भेद मानता है। जैसे मेरु था, मेरु है और मेरु होगा।

प्रस्तुत उदाहरण में शब्दनय भूत, वर्तमान और भविष्य, इन काल के भेद से मेरु पर्वत के भी तीन प्रकार स्वीकार करता है। यहाँ जो भेद का उल्लेख हुआ है, वह काल-पर्याय की दृष्टि से है। इसी प्रकार यह घट को करता है। इस घट में जल है। यहाँ पर कारक के भेद से शब्दनय घट में भी भेद स्वीकार करता है। लिंग के तीन प्रकार हैं—स्त्रीलिंग, पुल्लिग और नपुंसक लिंग। उक्त लिंगों में से भिन्न-भिन्न अर्थ का परिज्ञान होता है। शब्दनय स्त्रीलिंग से वाच्य अर्थ का परिबोध पुल्लिग से नहीं स्वीकार करता है। पुल्लिग से वाच्य अर्थ का ज्ञान नपुंसक लिंग से नहीं मानता है। जैसे—

पुल्लिग—तटः।

स्त्रीलिंग—तटी।

नपुंसक लिंग—तटम्।

उपसर्ग के कारण भी एक ही धातु के अनेक अर्थ हो जाते हैं। विहार, प्रहार, आहार, संहार आदि के अर्थ में जो विभिन्नता दृष्टिगोचर होती है, उसका यही कारण है। 'वि' उपसर्ग लगाने से विहार का वाच्य अर्थ गमन हो गया। 'प्र' उपसर्ग लगाने के कारण 'प्रहार' का अर्थ 'चोट' हो गया। 'आ' उपसर्ग प्रयुक्त होने से 'आहार' का अर्थ भोजन हो गया। 'सम्' उपसर्ग लगाने से संहार का शाब्दिक अर्थ 'नाश' हो गया।

इस प्रकार विभिन्न संयोगों के आधार पर विविध शब्दों के अर्थ-भेद की जो अनेक परम्पराएँ चल रही हैं, वे सभी शब्दनय के अन्तर्गत आ जाती हैं। इसी नय के आधार पर शब्द-शास्त्र का उत्तरोत्तर विकास होता रहा है।

लिंग, कारक, काल आदि के भेद से शब्द को वाच्य-पदार्थ में एकान्त रूप से भेद मानने वाले को शब्दनयाभास कहते हैं।

काल का भेद होने पर पर्याय का भी भेद होता है। फिर भी द्रव्य एक वस्तु बना रहता है। शब्दनय भिन्न-भिन्न पर्यायों को मानता है, इसलिये वह पर्याय दृष्टि वाला है और द्रव्य को प्रधानता नहीं देता है। किन्तु शब्दनयाभास भिन्न-भिन्न कालों में अनुगत रहने वाले द्रव्य का सर्वथा रूप से अपलाप करता है, एकान्ततः निषेध करता है, इसलिये वह शब्दनयाभास हो गया।

(६) **समभिरूढ़नय :**

शब्दनय काल, कारक, लिंग आदि के भेद से अर्थ में भेद मानता है। वह एक लिंग वाले पर्यायवाचक शब्दों में भेद को स्वीकार नहीं करता है। इस सन्दर्भ में यह ज्ञातव्य है कि शब्द भेद के आधार पर अर्थ भेद करने वाली बुद्धि आगे बढ़ती है और वह व्युत्पत्ति-भेद के आधार से पर्याय वाचक शब्दों में अर्थ भेद मानती है तब समभिरूढ़ नय होता है। तात्पर्य यह है कि यह नय पर्यायवाची शब्दों में निरुक्ति के भेद से भिन्न अर्थ मानता है। इस नय का स्पष्ट मत है कि जहाँ-जहाँ शब्दभेद है, वहाँ-वहाँ अर्थभेद भी अवश्य है। शब्दनय अर्थ का भेद वहीं करता है, जहाँ लिंग, काल आदि का भेद होता है। परन्तु इस नय का मन्तव्य है कि प्रत्येक शब्द का वाच्य अर्थ भिन्न-भिन्न होता है। भले ही शब्दों में लिंग, संख्या, कारक एवं काल आदि का भेद नहीं हो। उदाहरण के लिये हम इन्द्र, शक्र और पुरन्दर शब्द को लें। शब्दनय की दृष्टि से इन तीनों शब्दों का अर्थ एक है। क्योंकि ये एक ही शब्द के पर्यायवाची शब्द हैं और इनका लिंग भी एक ही हैं किन्तु समभिरूढ़ नय की अपेक्षा से इनके अर्थ में अवश्य अन्तर है।

जो ऐश्वर्यशाली है, वह इन्द्र है।

जो शक्ति सम्पन्न है, वह शक्र है।

जो नगर का ध्वंस करता है, वह पुरन्दर है।

इन शब्दों की व्युत्पत्ति भिन्न-भिन्न है, अतः इनका वाच्य अर्थ भी भिन्न है। इनकी प्रवृत्ति भी भिन्न-भिन्न है।

शब्दनय एक लिंग वाले शब्दों में अर्थ भेद को स्वीकार नहीं करता है, किन्तु समभिरूढ़ नय पर्यायवाची शब्दों में अर्थ भेद भी मानता है।

जैन दर्शन के मतानुसार प्रत्येक पदार्थ अपने स्वरूप में निष्ठ होता है। एक पदार्थ का अन्य पदार्थ में संक्रमण नहीं हो सकता। शब्द और अर्थ इन दोनों की एक दूसरे के प्रति नियामकता नहीं होगी तो वस्तु सांकर्य हो जायेगा। पट का अर्थ घट और घट का अर्थ पट न समझने के लिये नियम क्या होगा, इसलिये शब्द की अपने अर्थ के प्रति नियामकता होनी चाहिये, यह नियामकता ही इस नय की मौलिकता है।

समाभिरूढ़ नय पर्याय भेद से अर्थ में भेद मानता है पर अभेद का अपलाप नहीं करता किन्तु उसे मुख्यता नहीं देता। समभिरूढ़ नयाभास पर्यायवाची

शब्दों के अर्थ में रहने वाले अभेद का अपलाप कर एकान्त रूप से भेद का ही समर्थन करता है। इसलिये वह नयाभास हो गया।

(७) एवंभूतनय :

एवंभूतनय निश्चय प्रधान है। उसका मन्तव्य है कि जिस शब्द का जो व्युत्पत्ति अर्थ है, वह अर्थ जब घटित होता हो, तब ही पदार्थ को उस शब्द का वाच्य मानना चाहिये। तात्पर्य यह है कि शब्दों की निज प्रवृत्ति के निमित्तभूत क्रिया से संयुक्त पदार्थों को ही शब्दों का वाच्य मानने वाला विचार एवंभूतनय है। जैसे इन्द्रासन पर जिस समय शोभायमान हो रहा हो, उस समय उसको 'इन्द्र' कहना चाहिये, अन्य समय नहीं।

समभिरूढ़ नय उस समय क्रिया हो, अथवा न हो पर शक्ति की दृष्टि से अन्य शब्दों का प्रयोग भी स्वीकार कर लेता है। परन्तु प्रस्तुत नय में ऐसा नहीं है। यह नय वर्तमान समय में शक्ति की अभिव्यक्ति देखता है।

क्रियाविहीन पदार्थ को उस शब्द का वाच्य मानने का सर्वथा अपलाप करने वाले विचार को एवंभूत नयाभास कहते हैं। जिस समय में जो क्रिया हो रही है, उस काल में उस क्रिया से सम्बन्धित विशेषण, किंवा विशेष्य नाम का व्यवहार वाले अभिप्राय को एवंभूत नय कहते हैं। किन्तु यह नय अपने से भिन्न दृष्टिकोण का अपलाप नहीं करता।

एवंभूत नयाभास एकान्त रूप से क्रिया युक्त पदार्थ को ही शब्द का वाच्य मानता है और इसके साथ उस क्रिया से विहीन वस्तु को उस शब्द के वाच्य होने का निषेध करता, इसलिये वह एवंभूत नयाभास है।

संग्रह दृष्टि का आधार अभेद है और व्यवहार दृष्टि का आधार भेद है। संग्रह नय भेद को स्वीकार नहीं करता है और व्यवहार नय अभेद को नहीं मानता है। नैगम नय का आधार अभेद और भेद ये दोनों हैं, और ये एक पदार्थ में रहते हैं, ये सर्वथा रूप से दो नहीं हैं। परन्तु मुख्य और गौण भाव से दो हैं। इस दृष्टि से विचार करने पर ज्ञात होता है कि इन दोनों में मुख्यता तो एक की ही रहती है। दूसरा गौण रूप से सामने रहता है। कभी धर्म मुख्य होता है तो कभी धर्मी। तात्पर्य यह है कि अपेक्षा अथवा प्रयोजग के अनुसार क्रम में परिवर्तन होता है।

ऋजुसूत्र का आधार है—चरम भेद। प्रस्तुत नय केवल वर्तमान पर्याय का समर्थन करता है। उसी को वास्तविक मानता है। पूर्वपर्याय और पश्चात्

पर्याय को नहीं। जहाँ शब्दनय है, वहाँ अर्थभेद है, यह शब्दनय का मूलभूत आधार है। प्रत्येक शब्द का अर्थ एक सा नहीं है, अर्थ पृथक्-पृथक् होता है। एक ही अर्थ के दो वाचक नहीं हो सकते। यही समभिरूढ़ नय की मूलभित्ति है। एवंभूत नय के मन्तव्यानुसार अर्थ के लिये शब्द का प्रयोग उसकी प्रस्तुत क्रिया के अनुसार होता है। समभिरूढ़ नय अर्थ क्रिया में अप्रवर्तित शब्द को उसका वाचक स्वीकार नहीं करता है। वह वाच्य और वाचक इन दोनों के प्रयोग को त्रैकालिक मानता है किन्तु एवंभूतनय वाच्य और वाचक के प्रयोग को केवल वर्तमान काल में ही स्वीकार करता है। इस दृष्टि से उक्त नयों के सम्बन्ध में इस प्रकार विचार किया जा सकता है।

(१) नैगम नय—अर्थ का अभेद, और भेद, तथा दोनों।

(२) संग्रह नय अभेद।

क—पर संग्रह—चरम अभेद।

अपर संग्रह—अवान्तर भेद।

(३) व्यवहार नय—भेद अवान्तर भेद।

(४) ऋजुसूत्र—चरम भेद।

(५) शब्दनय—भेद।

(६) समभिरूढ़ नय—भेद।

(७) एवंभूतनय—भेद।

इन सात नयों में संग्रह नय की दृष्टि अभेद और अन्य नयों की दृष्टियाँ भेद है। नैगम नय की दृष्टि भेद और अभेद इन दोनों से युक्त है। वह संयुक्त दृष्टिकोण इस बात का परिचायक है कि भेद में अभेद है और अभेद में भेद है। जैन दर्शन भेद के साथ अभेद का भी समर्थक है। चेतन और अचेतन ये दोनों पदार्थ सत् हैं। इसलिये सत्व धर्म की अपेक्षा से अभिन्न हैं। पर इन दोनों में स्वभाव भेद अवश्य है। इसलिये भिन्न-भिन्न हैं। वास्तव में भेद और अभेद ये दोनों तात्त्विक हैं। अभेद शून्य भेद में अर्थक्रिया नहीं होती और भेदशून्य अभेद में अर्थक्रिया नहीं होती है। कारण और कार्य इन दोनों का सम्बन्ध नहीं मिलता। पूर्व क्षण उत्तर क्षण का कारण तभी बनता है जबकि इन दोनों में एक ध्रुव अथवा अभेदांश माना जाये। इसीलिये जैन दर्शन अभेदाश्रित भेद और भेदाश्रित अभेद को मानता है।

इन सात नयों का एक दूसरे से क्या सन्बन्ध है, इस विषय में भी चिन्तन हुआ है। उत्तर-उत्तर नय का विषय पूर्व-पूर्व नय से अल्प होता चला गया है।

इन सातों नयों में नैगम नय का विषय भेद और अभेद सामान्य और विशेष दोनों को ग्रहण करने के कारण सबसे अधिक है। वह कभी सामान्य को मुख्यता देता है, और विशेष को गौण रूप प्रदान करता है। वह कभी विशेष को प्रमुखता देता है तो सामान्य को गौण रूप से ग्रहण करता है।

इस सन्दर्भ में यह ज्ञातव्य है कि नैगम नय की अपेक्षा संग्रह नय का जो दृष्टिकोण है वह संकीर्ण है। इसका प्रमुख कारण यह है कि वह केवल सामान्य और अभेद का ही ग्रहण करता है। संग्रहनय की अपेक्षा व्यवहार नय का विषय अल्प है। कारण यह है कि संग्रह नय के द्वारा जो-जो विशेषताएँ गृहीत हैं उन्हीं-उन्हीं विशेषताओं के आधार पर प्रस्तुत नय भेद करता है। व्यवहार नय से भी ऋजुसूत्र नय का जो विषय है, वह अल्प है। इसका मुख्य हेतु यह है कि यह द्रव्यग्राही और त्रिकालवर्ती सद् विशेष को ग्रहण करता है। किन्तु ऋजुसूत्र वर्तमान समय की पर्याय को ग्रहण करता है। इसीलिये यहीं से पर्यायार्थिक नय का प्रारम्भ होता है। ऋजुसूत्र नय की अपेक्षा शब्द नय का विषय अल्प है। इसका कारण यह है कि वह काल, कारक, संख्या, लिंग आदि के भेद से अर्थ में भेद मानता है। शब्द नय से भी समभिरूढ़ नय का जो विषय है, वह कम है। क्योंकि वह पर्यायवाचक शब्दों में किसी भी प्रकार का भेद नहीं मानता है। समभिरूढ़ नय से भी एवंभूत नय का विषय अल्प है, इसका मुख्य हेतु यह है कि वह अर्थ को उस शब्द का वाच्य तभी स्वीकार करता है जब अर्थ अपनी व्युत्पत्तिमूलक क्रिया में लगा हुआ हो। स्पष्ट यह है कि पूर्व-पूर्व नय की अपेक्षा से उत्तर-उत्तर नय सूक्ष्म है और सूक्ष्मतर भी होता गया है। एक नय अन्य नय पर आधारित है। प्रत्येक नय का विषय क्षेत्र उत्तरोत्तर अल्प होने के कारण से इनका एक दूसरे से पारस्परिक सम्बन्ध है। (क्रमशः)

जीवन की परिभाषा

□ कुमारी आशा जैन

निराशा नहीं, आशा है जीवन,
संग्रह नहीं, त्याग है जीवन,
संहार नहीं, सृजन है जीवन,
द्वेष नहीं, प्रेम है जीवन,
स्पर्धा नहीं, सामंजस्य है जीवन,
संघर्ष नहीं, सहयोग है जीवन,
मलिनता नहीं, पवित्रता है जीवन,
पशुता नहीं, मानवता है जीवन।

—छोटी कसरावद—४५१ २२८ (म० प्र०)

साधकों का पृष्ठ [१]

नियमित साधना : एक वरदान

सम्माननीय साधक बन्धुश्रो !

श्राशा है श्रापकी साधना नियमित-निर्बाध चल रही होगी। श्रापको यह ज्ञात ही होगा कि हम घर पर रहते हुए जो साधना करते हैं, उसमें तीनों योगों (मन-वचन-काया) की साधना समाहित है। ध्यान मन की साधना के लिए है तो मौन वाणी की साधना है श्रौर चौदह नियम का पालन, श्रावक व्रतों का पालन एवं विगय का त्याग जैसे व्रत मुख्यतया काययोग की साधना में सहायक हैं। हममें से कई साधक वंदन, ध्यान, मौन, तप, त्याग एवं स्वाध्याय श्रादि नियमित करते हैं, जैसा कि पत्रों से ज्ञात होता है। शेष सभी साधकों की साधना भी नियमित बन सके, इसके लिए कुछ उपाय इस लघुलेख में बताए जा रहे हैं। इन्हें पढ़कर श्राप श्रपनी समस्याश्रों के बारे में लिखेंगे, तो यहाँ से उनके समाधान भेजने का प्रयास किया जायेगा।

नियमितता किसी भी कार्य की सफलता की बुनियाद है। साधना में भी नियमितता से तेजस्विता श्रौर श्रानन्द की उपलब्धि हो सकती है। बीज बोकर पौधे के श्रंकुरित होने पर कुछ दिनों तक उसकी देख-रेख की जाय श्रौर फिर उसे भुला दिया जाय तो क्या पौधा बड़ा होकर यथेष्ट फल प्रदान कर सकता है? नहीं। यही बात साधना के लिए भी समझें। ज्ञान, दर्शन श्रौर चारित्र की साधना के लिए भी नियमितता परम श्रावश्यक है।

श्रब साधना में नियमितता लाने के उपायों पर बात करें। साधना जीवन में श्रन्य श्रादतों की तरह एक श्रादत बन जानी चाहिए। श्रादत बनाने के लिए किसी क्रिया या प्रवृत्ति को बार-बार करना पड़ता है। साधना की प्रवृत्ति को भी कुछ दिनों तक लगातार बार-बार करने का प्रयास किया जाय तो वह हमारी एक श्रादत बन जायेगी श्रौर उसमें स्वत: नियमितता श्रा जायेगी। इसके साथ ही साधना के महत्त्व पर विचार करते रहने से वह जीवन का एक श्रंग बन सकेगी।

कई साधक यह कहते हैं कि उनकी कोई साधना कुछ समय तक नियमित चली श्रौर फिर बन्द हो गई। यह एक तथ्य है। यदि हम साधक साधना में श्रनियमितता श्राने पर उस पर चिंतन करें कि इस श्रनियमितता का कारण

क्या है ? हमने इसके लिए क्या प्रयास किया आदि। कारणों का निराकरण करते हुए साधना को दृढ़ संकल्प के साथ पुनः शुरू करें तो साधना पुनः नियमित बन सकेगी।

नियमित साधना से संवर-निर्जरा करके हम आत्मा को शुद्ध बनाते हैं। जैसे निश्चित समय पर भोजन-पान करने से शरीर में शक्ति का संचार होता है और शरीर स्वस्थ रहता है। यदि भोजन न भाए और भूख न लगे तथा शरीर अस्वस्थ हो जाय तो हम चिकित्सक से संपर्क करते हैं, उन्हें अपनी तकलीफ बताते हैं। इसी प्रकार साधना भी आत्मा की खुराक है। हमें चाहिए कि साधना में कमी आने पर हम साधनाशील संत मुनिराजों की सेवा में पहुँचे। उनसे साधना में आई कमियों की चर्चा करें तथा उनसे साधना पथ पर गतिशील बनने के लिए उपायों की जानकारी भी प्राप्त करें।

साधना में शिथिलता जब शारीरिक अस्वस्थता के कारण होने लगे, शरीर रोगग्रस्त हो जाय, तब भी मनोबल और आत्मबल से साधना की जा सकती है। यदि रोगग्रस्त अवस्था में साधना संभव न हो, तब भी हम मन से तो साधना की घड़ियों की प्रतीक्षा करें ही और वाणी से साधना की महिमा की व्याख्या करें। शारीरिक स्थिति की विवशता का विचार कर साधना न हो सकने का खेद रहे। मन में यह विचार बना रहे कि कब मेरा शरीर स्वस्थ बने और कब मैं पुनः साधना को नियमित बनाऊँ। उसी अवसर को पाकर जीवन की सफलता की कामना करें।

अलग-अलग साधकों की दृष्टि से साधना के अलग-अलग बाधक कारण हो सकते हैं। परन्तु कुछ कारण सर्वसामान्य भी हैं। जैसे परिवार में अस्वस्थता, मेहमानों का आगमन, परिवार के प्रमुख सदस्यों का बाहर जाना, प्रमाद की स्थिति, धंधे-व्यवसाय में अधिक समय लग जाय आदि। इन कारणों के निवारणार्थ कोई-न-कोई विकल्प या व्यवस्था बिठाने का प्रयास होना चाहिए, जिससे इन कारणों का निवारण किया जा सके। साधना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, यह विचार भी हम साधकों के मन-मस्तिष्क में सदा बना रहे, जिससे उसकी नियमितता निभाने के लिए छोटा बड़ा त्याग किया जा सके।

तन-धन और परिवार का मोह भी साधना का बाधक कारण है। इस मोह पर विजय पाने हेतु तन, धनादि की नश्वरता का चिंतन करना आवश्यक है। इससे जब भी जीवन में मोहगत दुर्बलता आयेगी, संसारी पदार्थों और व्यक्तियों की अनित्यता के चिंतन से वह दूर हो सकेगी और हम पुनः साधना में आरूढ़ हो सकेंगे। कषायादि सभी मोह कर्म की ही प्रकृतियाँ हैं, क्रोध आदि

कषाय जितनी हमारी हानि करते हैं, उतनी और कोई नहीं करता, यह हमें अच्छी तरह जान लेना चाहिए।

तन-धन-परिवार आदि की अनित्यता या क्षणभंगुरता का चिन्तन और विचार भी साधना में नियमितता लाने का एक साधन है। जब हम यह विचार करेंगे कि हमारे जीवन का क्षण मात्र का भी भरोसा नहीं है तो हम इस श्रेष्ठ मानव जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ नहीं जाने देंगे। उसका अधिकतम उपयोग धर्म साधना या ज्ञान, दर्शन, चारित्रादि की साधना में करेंगे। इस प्रकार जीवन और जगत की अनित्यता और क्षणभंगुरता का चिंतन भी हमें अपनी आत्म-साधना में दृढ़ता प्रदान करेगा।

यह तो साधना में नियमितता लाने हेतु सामान्य विचार रखे गए हैं। साधक अपनी-अपनी स्थिति के सन्दर्भ में इस विषय में चिंतन कर सकते हैं और नियमितता लाने का प्रयास कर सकते हैं।

साधक-डायरी आपके पास होगी ही। आप इसे प्रतिदिन भरते रहें तो इससे भी आपको साधना प्रवृत्ति की स्मृति बनी रहेगी। हम स्वाध्याय, साधना और समाज-सेवा तीनों लक्ष्यों की ओर बढ़ते रहेंगे।

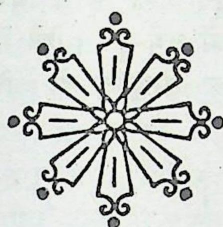
आप प्रतिदिन सामायिक तो करते ही होंगे। सामायिक में ही १२ वन्दन अरिहंत भगवान् को, चार लोगस्स का काउस्सग्ग, १५ मिनिट तक ध्यान, तीन मनोरथ, १४ नियम का चिंतन और स्वाध्याय आदि कर सकते हैं। कुछ दिनों तक सप्रयास इसे जारी रखेंगे तो ये आपकी हमारी आदत में आ जाएँगे और हम इन्हें करना नहीं भूलेंगे। ध्यान, मौन, वंदन, तप, स्वाध्याय आदि क्रियाएँ हमारे इहलौकिक जीवन में शांति प्रदान करेंगी और पारलौकिक जीवन को शांतिमय बनाएँगी।

आशा है, इस लघुवार्त्ता में वर्णित विचारों से हमें दैनिक साधना में नियमितता लाने में अवश्य सहायता मिलेगी। इस विषय में पुनः आप मुझे पत्र द्वारा लिखेंगे तो आगामी अंक में मैं फिर कुछ लिखने का प्रयास करुँगा।

साधक-भावना के साथ—

३५, अहिंसापुरी,
उदयपुर–३१३ ००१

आपका शुभचिंतक
चाँदमल कर्णावट
(संचालक, साधना विभाग)



सुसाहुणो गुरुणो

□ श्री माणकमल भण्डारी

अरिहन्तो मह देवो, जावज्जीवाए, सुसाहुणो गुरुणो।
जिण पण्णत्तं तत्तं इअ सम्मत्तं मए गहियं ।।

देव, गुरु और धर्म की व्याख्या करते हुए जैन दर्शन में कहा गया है कि कर्म-शत्रुओं को नष्ट कर जिन्होंने केवलज्ञान प्राप्त कर लिया हो, वे मेरे देव हैं। अठारह दोषों का त्याग कर जो पाँच महाव्रतों का पालन करते हों, वे मेरे गुरु हैं। वीतराग-वाणी ही मेरा धर्म है। ऐसी दृढ़ श्रद्धा को सम्यक्त्व कहते हैं। यह व्यवहार सम्यक्त्व है। निश्चय में सम्यक्त्वी वह है जो सभी प्रकार की मान्यताओं और अहंभाव से मुक्त होकर अपने स्वभाव में लीन रहता है।

भारतवर्ष के सभी दर्शनों में गुरु के महत्त्व को स्वीकारा गया है। गुरु की परिभाषा करते हुए विद्वजन कहते हैं—गुरु वह होता है जो अन्तर में अकेला बन चुका हो तथा शिष्य वह होता है जो अकेला बनने के लिये प्रयत्नशील है। गुरु में आध्यात्म का विशुद्ध पथ-दर्शन उपलब्ध होता है। अपने अन्तर्भावों के गुर (रहस्य) को बताने वाला गुरु होता है।

'सुसाहुणो गुरुणो' में संसार के सभी सुसाधु गुरु हैं, ऐसा व्यापक विवेचन है। इस विवेचन को लेकर एक विचारधारा अलग से कोई गुरु करने की आवश्यकता नहीं समझते। मैं समझता हूँ यह एकपक्षीय विचार है। इसका एक दूसरा पक्ष भी है और वह है हमें सुसाधुओं को ही अपना गुरु बनाना है, अन्य को नहीं। गुरु के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता। ज्ञान प्राप्त करने हेतु गुरु की आवश्यकता होती है। गुरु वह होता है जो मानव के जीवन को ऊँचा उठाता है। उसे भगवान से भी ऊँचा माना गया है—

गुरु गोविन्द दोनों खड़े, किसके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरुदेव की, गोविन्द दियो बताय ।।

आत्मा से परमात्मा की ओर ले जाने वाला, नर से नारायण बनाने वाला गुरु ही होता है। जीवन में शिक्षा, दीक्षा प्रदान करने वाला गुरु ही

होता है । हम देखते हैं अलग-अलग स्तर पर अलग-अलग गुरु होते हैं । घर में जहाँ माता गुरु है, वहाँ स्कूल में अध्यापक तथा धर्म में धर्म-गुरु । ऐसे में गुरु की महत्ता को कम करके नहीं आंका जा सकता । वैदिक संस्कृति में भी कहा है—

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरु साक्षात पर ब्रह्म, तस्मे श्री गुरुवे नमः ।।

गुरु को साक्षात् परमब्रह्मा मानते हुये उन्हें नमस्कार किया गया है । वहाँ गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और महेश की उपमा दी गयी है । एकलव्य ने द्रोणाचार्य की प्रतिमा को ही अपना गुरु मानकर धनुर्विद्या में प्रवीणता प्राप्त की । अन्य दर्शनों में भी गुरु की आवश्यकता पर बल दिया है । जैन दर्शन में तो भगवान महावीर और गौतम गुरु-शिष्य का नाता हमारे लिये प्रेरणास्पद है । गौतम द्वारा भगवान महावीर को समय-समय पर पूछे गये प्रश्न एवं महावीर के प्रति गौतम की भक्ति व श्रद्धा ने तो महावीर के जीवन-काल में गौतम को केवलज्ञान प्राप्ति से दूर रखा ।

विडम्बना है कि 'सुसाहुणो गुरुणो' के व्यापक अर्थ को लेकर आज गुरु की आवश्यकता को कम किया जा रहा है । यह सही है कि समस्त सुसाधु हमारे गुरु हैं, परन्तु जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है इसका दूसरा पक्ष यह है कि हमें सुसाधु को ही अपना गुरु करना है । हमें वस्तु के केवल एक स्वरूप को ही नहीं देखना चाहिए, वरन् उसके अन्य पक्ष को भी देखना आवश्यक है । जैन धर्म एकान्तवादी नहीं, अनेकान्तवादी है ।

कुछ लोगों की एक गलत धारणा है कि एक गुरु कर लेने से सम्प्रदायवाद को बढ़ावा मिलेगा और इसलिये ऐसी विचारधारा वाले लोग अपने आपको असाम्प्रदायिक कहते हैं । यह एक भ्रमजाल है । वस्तुतः असाम्प्रदायिक नाम की कोई चीज नहीं है । असाम्प्रदायिक विचारधारा स्वयं अपने आप में एक सम्प्रदाय है । आज धर्मनिरपेक्षता शब्द को लेकर देश में एक मंथन चल रहा है और 'धर्मनिरपेक्षता' की पुनः व्याख्या करना अनिवार्य माना जा रहा है। मैं समझता हूँ कि धर्म में भी 'असम्प्रदाय' शब्द की पुनः व्याख्या करने की आवश्यकता है । यदि 'असम्प्रदाय' शब्द का भ्रमजाल चलता रहा तो समाज में विघटन होने की सम्भावना है, जिसे समय रहते रोकना आवश्यक है । एक विचारधारा वाले व्यक्तियों के समूह, गुट या संगठन की सुव्यवस्था हेतु सम्प्रदाय का होना आवश्यक है । सम्प्रदाय अपने आप में बुरी नहीं है बुरा है 'सम्प्रदायवाद' । हमें सम्प्रदाय और सम्प्रदायवाद के भेद को समझना होगा । जहां सम्प्रदाय एक सुव्यवस्था का रूप है, वहाँ एक संगठन यदि अपने आपको

ऊंचा समझे और दूसरे संगठन को नीचा समझे, वह है सम्प्रदायवाद । दूसरों की व्यवस्था में व्यवधान डालना, छीना-झपटी करना सम्प्रदायवाद है। हमें सम्प्रदाय को नहीं, सम्प्रदायवाद को मिटाना होगा। यदि हम अन्य सम्प्रदायों के साथ प्रेम और सौहार्दपूर्ण वातावरण में रहें तो साम्प्रदायिक सद्भावना को बल मिलेगा, जिसकी आज देश को अत्यन्त आवश्यकता है । अतः हमें 'सम्प्रदाय' शब्द से घृणा नहीं होनी चाहिये।

'सुसाहुणो गुरुणो' शब्द की एक पक्षीय व्याख्या कर हम एकान्तवाद के सिद्धान्त को प्रश्रय दे रहे हैं, अनेकान्तवाद को नहीं । हम इस उक्ति को क्यों भूल जाते हैं कि 'गुरु एक, सेवा अनेक' । व्यक्ति के जीवन में गुरु तो मात्र एक ही होता है, दूसरों की हम गुरु के समान सेवा-भक्ति अवश्य कर सकते हैं । जिस प्रकार एक पुत्र का पिता एक ही होता है ठीक उसी प्रकार एक व्यक्ति का गुरु एक होगा । क्या कोई पुत्र एक से अधिक को अपना पिता स्वीकार करेगा ? कदापि नहीं । फिर एक गुरु न करने की भ्रांति क्यों फैलाई जा रही है । किसी भी व्यक्ति के लिये गुरु से बढ़कर कोई हितैषी नहीं होता ।

—रावतों का बास, जोधपुर

मृत्यु निश्चित—फिर क्यों डरें ?

□ श्री बलवन्तसिंह हाड़ा

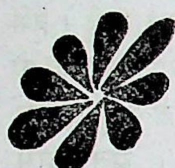
राजा जनक ने मुनि पंचशिख से वृद्धावस्था और मृत्यु से छुटकारे का उपाय पूछा । मुनि ने स्पष्ट उत्तर दिया कि कोई भी मनुष्य जरा और मृत्यु से नहीं बच सकता । काल रूपी सागर में कायर मूर्ख मनुष्य ही बिना नाव के डुबकियाँ खाते रहते हैं । उन्हें कोई कैसे बचा सकता है ? अपने-अपने कर्मों के आधीन सब सुख-दुःख भोग रहे हैं । यह संसार तो एक नाट्यशाला है उसमें जिसको जो खेल करना है उसे पूरा करना है । राह में मिले यात्रियों की तरह भाई-बन्धु सम्वन्धियों को समझना चाहिये । जरा और मृत्यु एक भेड़िये की भाँति दुर्बल, बलवान, छोटे तथा बड़े सबको खा जाती है । इसलिये शरीर के वियोग का शोक नहीं करना चाहिये ।

'गीता' में भी कहा गया है—

अन्तवन्त इमे देहा, नित्यस्योक्ताः शरीरिणः ।
अनाशिनो अप्रेमस्य, तस्माद्युस्व भारत ।।

अर्थात् इस नाश रहित अप्रमेय नित्य स्वरूप जीवात्मा के सब शरीर नाशवान् कहे गये हैं ।

—खाल की हवेली, झालावाड़-३२६००१ (राज.)



सामायिक से ४२ लाभ

□ सं० भंडारी सरदारचन्द जैन

१. सामायिक से राग समाप्त होता है।
२. सामायिक से द्वेष समाप्त होता है।
३. सामायिक से शांति प्राप्त होती है।
४. सामायिक से व्यसन-मुक्ति होती है।
५. सामायिक से चिंता चली जाती है।
६. सामायिक से वैर समाप्त होता है।
७. सामायिक से घर नन्दन वन बनता है।
८. सामायिक से स्नेह प्रकट होता है।
९. सामायिक से साधुता आती है।
१०. सामायिक से सच्चा बल मिलता है।
११. सामायिक से आत्मिक बल बढ़ता है।
१२. सामायिक से आत्मा स्थिर होती है।
१३. सामायिक से आत्मा दृढ़ होती है।
१४. सामायिक से साधना में सफलता मिलती है।
१५. सामायिक से आत्म-शुद्धि होती है।
१६. सामायिक से पारिवारिक शांति मिलती है।
१७. सामायिक से बुद्धि में वृद्धि होती है।
१८. सामायिक से सौभाग्य की प्राप्ति होती है।
१९. सामायिक से दुश्मन भी मित्र हो जाता है।
२०. सामायिक से हर सुकार्य में सफलता मिलती है।
२१. सामायिक से सर्वत्र सन्मान मिलता है।
२२. सामायिक से रोग का नाश हो जाता है।
२३. सामायिक से जीवन उन्नत बनता है।
२४. सामायिक से निराकुलता मिलती है।
२५. सामायिक से आकुलता नष्ट होती है।
२६. सामायिक से अविनाशी सद्गुण प्राप्त होते हैं।
२७. सामायिक से निजघर प्राप्त होता है।
२८. सामायिक से शाश्वत घर प्राप्त होता है।
२९. सामायिक से आत्मा का असली घर प्राप्त होता है।
३०. सामायिक से सद् चिद् आनन्द प्राप्त होता है।

३१. सामायिक से आध्यात्मिक बल प्राप्त होता है।
३२. सामायिक से बंधु भाव प्राप्त होता है।
३३. सामायिक से पूजनीय बनता है।
३४. सामायिक से तृष्णा शांत हो जाती है।
३५. सामायिक से समता प्राप्त होती है।
३६. सामायिक से क्रोध समाप्त होता है।
३७. सामायिक से मान समाप्त होता है।
३८. सामायिक से माया समाप्त होती है।
३९. सामायिक से लोभ समाप्त होता है।
४०. सामायिक से अविनाशी सुख की प्राप्ति होती है।
४१. सामायिक से शाश्वत सुख की प्राप्ति होती है।
४२. सामायिक से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

—त्रिपोलिया बाजार, जोधपुर–३४२ ००२ (राज.)

दो कविताएँ

□ अनीता मेहता 'नेकी'

[१]

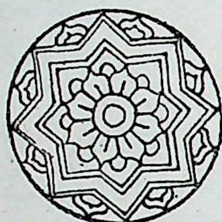
बन गई,
दीप माला !
जहाँ हर दीप के,
अंत:करण में थी—
आत्मीयता की आँच !
जिसके आलोक में,
होती थी हकीकत की जाँच !
और दिख रही थी—
आत्मोत्थान की राहें !
जहाँ करुणा से—
मानवता को गले लगाने,
अनायास ही फैल रही थी बाँहें !!

[२]

तय नहीं कर पाई थी मैं,
शनिवार की रात !
करूँ किसके नाम,
रविवार की प्रभात !
सगाई, शादी, जन्म औ' मुंडन,
नकार निमंत्रणों की जमात !
पहुँची मैं अध्यात्म केन्द्र,
जानने को तथ्य की बात !
और इस शुभ मुहूर्त में,
पा गई सारे सुख साथ-साथ—
सगाई के सपने !
शादी की प्रीत !!
जन्म के बन्धन !
मुंडन की रीत !!
मेरे मायनों में,
मायाओं को देकर मात !
जान गई थी मैं,
तीर्थंकरों की जात !!

—रूप इलेक्ट्रोनिक्स, ए-२२, जमना नगर, सोडाला, जयपुर–६

पुरुस्कृत निबन्ध



भगवान महावीर के सिद्धान्तों की आज के युग में उपयोगिता

☐ बीना सिंघवी

भगवान महावीर का युग कर्मकाण्ड, मिथ्या आडम्बर तथा पापाचार से भरपूर था। भगवान महावीर ने समाज के उत्थान के लिए आचार संहिता स्थापित की ताकि क्षमा, सत्य, शौच, करुणा, मैत्री इत्यादि गुणों के विकास से व्यक्ति और समाज की उन्नति सम्भव हो।

भगवान महावीर के सिद्धान्तों में अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह एवं स्याद्वाद मुख्य है। आज के युग में भी इनकी उपयोगिता है।

अहिंसा—महावीर द्वारा प्ररूपित अहिंसा में किसी जीव की हत्या का तो पूर्ण निषेध है ही, साथ ही विचारों द्वारा भी किसी के अहित का चिन्तन निषिद्ध है। महावीर के सिद्धान्त कितने व्यापक, समर्थ व उपयोगी हैं इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि संसार, जो विनाश के कगार पर खड़ा है, उसको बचाने का एक ही रास्ता रह गया है कि प्राणीमात्र हिंसा का पथ त्याग कर अहिंसा का पथ अपनाये। यह तो सब जानते हैं कि अणुशक्ति का प्रयोग अगर हिंसा के लिये किया गया तो प्राणीमात्र नष्ट हो जायेंगे। भगवान महावीर का सर्वोपरि उपदेश यही था कि प्राणी हिंसा का मार्ग छोड़ कर अहिंसा मार्ग को अपनाये। इसी दर्शन को अपनाते हुए महात्मा गांधी के रास्ते पर चल कर भारत ने स्वतन्त्रता प्राप्त की। आज जब संसार की बड़ी शक्तियाँ एक दूसरे के मुकाबले लड़ाई की तैयारियाँ कर रही हैं, सिवाय महावीर के बताये हुए रास्ते पर चलने के और कोई विकल्प नहीं रहता कि संसार नाश होने से बच सके। 'जीओ और जीने दो' अहिंसा का स्वर्णिम सूत्र है। अहिंसा कानून से नहीं आ सकती, दबाव से नहीं आ सकती क्योंकि यह आत्मा की शक्ति है शरीर की नहीं, आत्मा का गुण है। आज वैचारिक हिंसा का भी दौर चल रहा है। अपने से भिन्न विचार रखने वालों पर प्रहार करना, उनके विचारों को

• श्री जैन श्वेताम्बर संघ, जवाहर नगर द्वारा आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में पुरस्कृत निबन्ध।

असत्य प्रमाणित करना आम हो गया है। अतः आवश्यकता है महावीर के सिद्धान्तों का उपयोग करने की जिससे उदार विचार, सर्वग्राही दृष्टिकोण और समन्वय की स्थापना हो सके।

सत्य—सत्य जीवन का मूलभूत तत्त्व है। आज जातिभेद है, वर्णभेद है, ऊँच-नीच है, सत्य को स्थान कैसे मिले ? पंथ और सम्प्रदायों ने सत्य को डुबो दिया है। पंथ का विचार सत्य नहीं क्योंकि वह रूढ़िवादिता और दुराग्रह की स्थिति है। आज धर्म या सत्य गुफा में चला गया है। सत्य को मन्दिरों में रखने से वह साकार नहीं होता। मूर्ति सत्य नहीं, मूर्तिमान सत्य है—आत्मा। सत्य की भी आत्मा होती है। उसका भी आस्वाद होता है। आज लोग सत्य को चाहते हैं, सत्य की उपासना करते हैं, सत्य को अर्घ्य देते हैं, किन्तु क्या इस तरह से सत्य मिलेगा ? नहीं। सत्य तो सुन्दरता में है। मन्दिर में मूर्ति रखी जाती है, उसका शान्त और वैराग्य भाव सत्य है। पत्थर नहीं है, पत्थर तो जगह-जगह विभिन्न आकार-प्रकार के हैं। सत्य समन्वित है, एकता है। भगवान महावीर ने कहा—"आचार-विचार और उच्चारण में भी सत्य हो।" आचार-विचार में सत्य पालन से अविश्वास का अन्त हो जायेगा, जिसकी अत्यन्त आवश्यकता है।

अचौर्य—भगवान महावीर ने चोरी का त्याग बताया है। चारी एक सामाजिक अपराध है। जहाँ मूलभूत आवश्यकता पूर्ण नहीं होती वहाँ ईमानदारी नहीं रहती। चोरी समाज की अव्यवस्था की प्रतीक है। सरकारी कार्यालयों से फाइलें गायब होना, झूठे अभियोग लगा कर गरीबों को फंसाना व अभियुक्त की रक्षा करना, वस्तु में मिलावट करना, देश के गुप्त रहस्यों को प्रकट करना, अपने कर्तव्य में आलस्य करना ये सभी चौर्य कर्म हैं। आज तो जहाँ सुन्दर वस्तु दिखी, मन का संयम ढिलमुल हो जाता है और चोरी का भूत सवार हो जाता है अतः उपयोगी है महावीर का सिद्धान्त जिसमें सन्देश है मन की शुचिता का।

ब्रह्मचर्य—ब्रह्मचर्य का अर्थ है आत्मा में सुस्थिरता। विवाह बाधा नहीं है। इन्द्रियाधीन न होना ब्रह्मचर्य है। समाज में भाईचारा रहे, नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन न हो, इसलिए भगवान महावीर ने ब्रह्मचर्य के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। आत्मकल्याण की योजना इसमें सन्निहित है। नदी का जल स्वच्छ होता है, किन्तु यदि उसके पक्के किनारे न हों तो तट की मिट्टी नदी की धारा में गिर जायेगी और मिल जायेगी। इसी प्रकार संयम और निग्रह मनुष्य जीवन रूपी नदी के किनारे हैं। समाज का मुख स्वच्छ रखना हो तो अब्रह्म से बचना चाहिये ताकि सही-सच्चा प्रतिबिम्ब दिखाई दे सके। पश्चिम की भौतिकता की लहर

जो भारत में चल पड़ी है, विषय-वासना की नदी बह रही है, वहाँ महावीर के सिद्धान्त उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

अपरिग्रह—अपरिग्रह का अर्थ यह नहीं कि कोई दिगम्बर हो, या घर छोड़ दे। परिग्रह से जीवन चलता है अपरिग्रह से नहीं, फिर महावीर ने अपरिग्रह की कल्पना क्यों की ? 'अ' का अर्थ किञ्चित होता है, निषेधार्थक नहीं। जहां सीमित साधनों से काम चल सकता हो वहाँ असीमित साधनों को जुटाना मूर्खता है। आज स्वार्थी व्यक्तियों से समाज ऐसे कगार पर आ गया है जहाँ दूसरे के दुःख-दर्द की किसी को परवाह नहीं। इस परिग्रह की वृत्ति से दहेज जैसी सात्विक परम्परा विषम बन गई है। जिसके परिणामस्वरूप आज कई लड़कियों को जीवन भर कुंवारी रहने को मजबूर होना पड़ रहा है तथा दूसरी ओर पैसे के बल पर हजारों लड़कियों का कौमार्य नष्ट किया जा रहा है। यदि भोग-उपभोग की वस्तुओं को संयमित कर लिया जाये तो यह अनाचार, अत्याचार व सामाजिक जीवन को तहस-नहस करने वाली कुप्रथाएँ नष्ट हो जायेंगी।

आज की आवश्यकता है नव-निर्माण की। अपरिग्रह के आधार पर समाज का निर्माण हो। आज जो होड़ लगी है संग्रह और मौज मस्ती की, उसे समाप्त कर धन-संग्रह की प्रवृत्ति और आवश्यकताओं को सीमित करने पर बल देना होगा। तभी यह समाज सुखी बन सकेगा, अन्यथा पश्चिमी देशों के दुःख और बीमारियाँ हम अपने यहाँ आयात कर लेंगे, तब तक भारतीय संस्कृति का नाश हो ही चुका होगा और हम अपने विनाश की तैयारी कर चुके होंगे। भारतीय संस्कृति की रक्षा में ही हम सब की रक्षा निहित है। इस सच का एकमात्र आधार है—महावीर का अपरिग्रह का सिद्धान्त। हम सब धन के संग्रह का रोना बन्द कर दें और जो है उसका सदुपयोग कर, अपने साथी और समाज के अन्य व्यक्तियों पर ध्यान दें, सब समानता व सरसता का जीवन जीवें तो सुखी समाज का निर्माण कर सकते हैं।

अनेकान्त—अनेकान्त को न केवल एक दर्शन के रूप में अपितु सर्वमान्य जीवन धर्म के रूप में प्रस्तुत करने का श्रेय महावीर को ही है। अहिंसा और अपरिग्रह के चिन्तन में भी उन्होंने अनेकान्त दृष्टि का प्रयोग किया। प्रयोग ही क्यों, यहाँ तक कहा जा सकता है कि अनेकान्त रहित अहिंसा और अपरिग्रह भी महावीर को मान्य नहीं थे। चूँकि प्रत्येक सत्ता, प्रत्येक स्थिति और प्रत्येक विचार अनन्त धर्मात्मक हैं। उसके विभिन्न पहलू, विभिन्न पक्ष हैं। उन पहलुओं और पक्षों पर विचार किये बिना यदि कुछ निर्णय करते हैं जैसा कि आजकल कर रहे हैं, तो यह वस्तु रूप प्रतिघात होगा और स्वयं अपनी ज्ञान-चेतना के साथ भी धोखा होगा। यह सिद्धान्त आज भी उतना ही उपयोगी है जितना महावीर के

समय में था। किसी भी वस्तु के तत्त्वस्वरूप पर चिन्तन करने से पहले हमें अपनी दृष्टि को पूर्वाग्रहों से मुक्त, स्वतन्त्र और व्यापक बनाना होगा, उसके प्रत्येक पहलू को अस्ति, नास्ति आदि विभिन्न विकल्पों द्वारा परखना होगा, तभी हम उसके यथार्थ स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

अहिंसा और अपरिग्रह के विषय में भी यही बात है। इसी कारण कहा— महावीर के अहिंसा और अपरिग्रह भी अनेकात्मक थे।

अहिंसात्मक अनेकवाद का एक उदाहरण लीजिये। भगवान महावीर ने साधक के लिए सर्वथा हिंसा का निषेध किया, किन्तु जन-कल्याण की भावना से, किसी ध्येय की प्राप्ति के लिए तथा वीतराग जीवनचर्या में भी कहीं-कहीं परिस्थितिवश अनचाहे भी जो सूक्ष्म या स्थूल प्रतिघात हो जाता है, इस विषय में उन्होंने कभी एकान्त वृत्ति का आग्रह नहीं किया, अपितु व्यवहार में उस प्राणी हिंसा को हिंसा स्वीकार करके भी हिंसा की परिधि से मुक्त माना। महावीर ने हिंसा हृदयमान प्राणीवध को ही नहीं, राग द्वेषात्मक अन्तर्वृत्ति को भी हिंसा बताया, कर्मबन्धन का हेतु कहा। यही उनका अहिंसा के क्षेत्र में अनेकान्तवादी चिन्तन था।

परिग्रह और अपरिग्रह के विषय में महावीर बहुत उदार और स्पष्ट थे। यद्यपि जहाँ परिग्रह की गणना की गई वहाँ वस्त्र, पात्र, भोजन, भवन आदि बाह्य वस्तुओं को यहाँ तक कि शरीर को भी परिग्रह की गणना में ले लिया, किन्तु जहाँ परिग्रह का तात्त्विक प्रश्न आया वहाँ उन्होंने मूर्च्छा भाव के रूप में परिग्रह की एक स्वतन्त्र एवं व्यापक स्थापना की। महावीर वस्तुवादी नहीं, भाववादी थे। अतः उनका अपरिग्रह का सिद्धान्त बाह्य जड़वाद, वस्तुवाद में कैसे उलझ जाता? उन्होंने स्पष्ट घोषणा की—वस्तु परिग्रह नहीं, भाव (ममता) ही परिग्रह है। मन की मूर्च्छा, आसक्ति और रागात्मक विकल्प-यही परिग्रह है, बन्धन है।

इस प्रकार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, चिन्तन के हर मोड़ पर महावीर 'हाँ' और 'ना' के साथ चले। महावीर ने कहा—सत्य अनन्त है, विराट है। कोई भी अल्पज्ञानी सत्य को सम्पूर्ण रूप से नहीं जान सकता। जो जानता है वह उसका एक अंश होता है। सर्वज्ञ सर्वदर्शी, जो सत्य का सम्पूर्ण साक्षात्कार कर लेता है, वह भी उस ज्ञात सत्य को वाणी द्वारा पूर्ण रूप से अविकल व्यक्त नहीं कर सकता।

यही बात विश्व के सभी सत्यों के सम्बन्ध में है। कोई भी सत्य हो, उसके एकपक्षीय दृष्टिकोण को लेकर अन्य दृष्टिकोणों का विराध निषेध नहीं करना

चाहिये, किन्तु उन परस्पर विरुद्ध प्रतीत होने वाले दृष्टिकोणों के यथार्थ समन्वय का प्रयत्न करना चाहिये। यह आज के युग की आवश्यकता है।

दूसरों को असत्य घोषित कर स्वयं को ही सत्य का एकमात्र ठेकेदार बताना, एक प्रकार का अज्ञान भरा अन्ध अहं है, दम्भ है, छलना है। महावीर ने कहा है—"सम्पूर्ण सत्य को समझने के लिए सत्य के समस्त अंगों का अनाग्रह पूर्वक अवलोकन करो और फिर अपेक्षापूर्वक कथन करो।"

अनेकान्तवाद वस्तु में अनन्त धर्म की तत्त्वदृष्टि रखता है, अतः वह वस्तुपरक होता है, और स्याद्वाद अनन्त धर्मात्मक वस्तु के स्वरूप का अपेक्षा प्रधान वर्णन है, अतः वह शब्दपरक होता है। कुछ व्यक्ति स्याद्वाद सिद्धान्त के सम्बन्ध में कहते हैं कि वह एक दूसरे के विरोधी धर्मों को एक ही वस्तु में स्थापित करता है, किन्तु वे सभी परस्पर विरोधी धर्म एक ही स्थान पर कैसे रह सकते हैं!

ऐसा मानने और कहने वालों की अज्ञानता पर खेद होता है। उन्हें समझना चाहिये कि एक ही व्यक्ति किसी का पुत्र, पिता, भाई होता है और पितृत्व, पुत्रत्व तथा भ्रातृत्व परस्पर विरोधी होने पर भी क्या एक ही व्यक्ति में नहीं रहते? रहते हैं, और निर्विरोध रहते हैं। एक ही व्यक्ति एक साथ ही अपने तीनों उत्तरदायित्वों का सरलता और समीचीन रूप से पालन करता हुआ देखा जाता है।

स्याद्वाद के इस अनुपम सत्य को न समझने के कारण आज विश्व में विविध धर्मों, दर्शनों, पन्थों, सम्प्रदायों, समुदायों में व्यर्थ के विवाद खड़े हो जाते हैं। एक धर्म के अनुयायी दूसरे धर्म को असत्य और मिथ्या बतलाते हैं। वे केवल अपने धर्म को ही सत्य मानकर अन्य धर्मों का विरोध करते हैं। संसार में धर्म के नाम पर अनेक बार घोर विवाद और हत्याकाण्ड हो जाते हैं। अगर प्रत्येक मनुष्य अन्य धर्मों की उन बातों को ध्यान में लावे जिनसे वह सहमत हो तो विरोध और विषमताएँ बहुत कम हो सकती हैं।

भगवान महावीर का यह दार्शनिक चिन्तन, सिर्फ दर्शन और धर्म के क्षेत्र में ही नहीं किन्तु सम्पूर्ण जीवन को स्पर्श करने वाला चिन्तन है। इसी अनेकान्त दर्शन के आधार पर हम गरीबों, दुर्बलों, असहायों, अल्पसंख्यकों को न्याय दे सकते हैं, उनके अस्तित्व को स्वीकार कर उन्हें भी विकसित होने का अवसर दे सकते हैं। अनेकान्त संकुचित एवं अनुदार दृष्टि को विशाल बनाता है और यह विशालता, उदारता ही परस्पर सौहार्द, सहयोग, सद्भावना एवं समन्वय का मूल प्राण है।

आज के युग में इसकी और भी उपयोगिता है। समानता और सह-अस्तित्व के बिना जीवन चल नहीं सकता। उदारता और सहयोग की भावना तभी बलवती होगी, जब हमारा चिन्तन अनेकान्तवादी होगा। भगवान महावीर के व्यापक चिन्तन की यह समन्वयात्मक देन धार्मिक और सामाजिक जगत् में, बाह्य और अन्तर्जीवन में सदा के लिए अद्भुत देन मानी जा सकती है। इसे हम समग्र मानवता के सहज विकास की, विश्व जन-मंगल की धुरी कह सकते हैं।

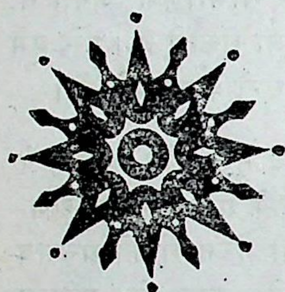
आज संसार की स्थिति विचित्र हो गई है। मनुष्य सुख और शान्ति के बदले भयंकर ज्वालामुखी के मुहाने पर पहुँच गया है। उसके एक हाथ में अणु-बम है और दूसरे हाथ में उद्जन बम। विज्ञान अपनी रिक्तता को अनुभव करने लगा है और धर्म लम्बे समय से उपेक्षित रह कर देश-काल के अनुरूप स्वयं का परिष्कार करने के लिए तत्पर है। सब बातों का उत्तर देने का हठ न विज्ञान में रहा है न धर्म में। धार्मिक सन्देश को ग्रहण करने के लिए आज की दुनिया तैयार नहीं है। वर्तमान में तो सारे मूल्य उलट चुके हैं। सन्त कहलाने वाले लोग मन्दिर में बैठकर हिंसा और रक्तपात का उपदेश दे रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप आज दैनिक अखबार ही खून से लथपथ होकर छप रहे हैं। अपनी स्वार्थान्धता के वशीभूत हो कर व्यक्ति कुछ भी अनुचित करने में हिचकिचाता नहीं हैं। पंजाब जल रहा है, आतंक के साये में पल रहा है। असम, गुजरात, मिजोरम सर्वत्र अशान्ति ने अपना साम्राज्य स्थापित कर रखा है। ऐसी विचित्र स्थिति में आज हम एकबार फिर भगवान महावीर के सन्देश को प्रासंगिक बनाना चाहते हैं।

आज जब संसार अनेक दृष्टियों से व्याकुल हो उठा है तब इस व्यापक जीवन की मुख्य उलझन का हल ढूंढ़ना जरूरी हो गया है। इसके लिए महावीरों की आवश्यकता है, प्रयोगवीरों की आवश्यकता है। ऐसे लोग अपनी श्रद्धा को दृढ़ बनाने के लिए महावीर के जीवन को समझें और स्वयं ही ऊँचे उठने का प्रयत्न करें, अपने व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन का उद्धार करें, यह आज की महत्ती आवश्यकता है। आज हम अनुभव कर रहे हैं कि महावीर-वाणी के वे सारे स्फुलिंग आज महाशिखा बन कर न केवल भारतीय समाज को अपितु सम्पूर्ण मानव समाज को प्रेरणा दें।

—१ न ६, जवाहर नगर, जयपुर-४

□ □ □

प्रश्नमंच कार्यक्रम [५२]



परोपकार*

□ श्री पी० एम० चौरड़िया

[१]

(१) **प्रश्न**—परोपकार का सीधा सा अर्थ क्या है ?

उत्तर—दूसरों की सहायता करना।

(२) **प्रश्न**—परोपकारी मनुष्य मरकर भी अमर किस प्रकार रहता है?

उत्तर—परोपकारी पुरुष यद्यपि शारीरिक रूप से अमर नहीं रहता लेकिन उसका यश और ख्याति चारों ओर फैली होने से वह मरकर भी अमर रहता है।

(३) **प्रश्न**—परोपकार की भावना का विकास किस गति में हो सकता है ?

उत्तर—मनुष्य गति में। परोपकार की भावना का विकास वहीं सम्भव है, जहाँ सामूहिक चेतना का विकास हो—यह केवल मनुष्य गति में ही सम्भव है।

[२]

(१) **प्रश्न**—'परोपकाराय सतां विभूतयः' इसका अर्थ क्या है ?

उत्तर—सज्जनों की सम्पत्तियाँ परोपकार के ही लिये होती हैं।

*श्री एस. एस. जैन युवक संघ, मद्रास द्वारा आयोजित कार्यक्रम जिसमें स्वाध्याय संघ, युवक संघ एवं बालिका मण्डल ने भाग लिया।

—सम्पादक

(२) **प्रश्न**—'परोपकारेण भवेत् स्वर्गेऽक्षयोवासः कीर्तिश्च धरणीतले ।' इसका अर्थ क्या है ?

उत्तर—परोपकार से स्वर्ग में दीर्घ आयु प्राप्त होती है और पृथ्वी पर विस्तृत यश-कीर्ति फैलती है ।

(३) **प्रश्न**—'परोपकारः कर्त्तव्यः प्राणैरपि धनैरपि ।' इसका अर्थ बताइये ?

उत्तर—परोपकार प्राणों एवं धन से करना चाहिए ।

[३]

(१) **प्रश्न**—'नेकी कर कुए में डाल' इस उक्ति का अर्थ क्या है ?

उत्तर—किसी का उपकार कर उसे भूल जाओ ।

(२) **प्रश्न**—परहित बसै जिनके मन माहीं,
तिनको जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

उपर्युक्त छन्द का अर्थ बताइये ?

उत्तर—जिनके मन में दूसरों की भलाई का खयाल घर कर चुका है, उनके लिए, इस संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है ।

(३) **प्रश्न**—'अपनी लगी, लगी सूझती है किन्तु दूसरों की लगी दिल्लगी लगती है ।'

इस उक्ति का अर्थ क्या है ?

उत्तर—केवल अपने स्वार्थ में ही लगे रहना । दूसरों को बिना प्रयोजन से ही निरर्थक संताप एवं कष्ट देना । दूसरों के घावों पर व्यर्थ ही नमक छिड़क-कर उन्हें रोते देखकर तमाशा एवं दिल्लगी करना ।

[४]

(१) **प्रश्न**—धनी लोगों के लिए सबसे सरल सेवा क्या है ?

उत्तर—धन से सेवा करना ।

(२) **प्रश्न**—परोपकार गुण कब खिलने लगता है ?

उत्तर—जीवन में कृतज्ञता गुण प्रकट होने पर परोपकार गुण भी खिलने

लगता है। इस गुण वाले को सभी जीवात्माएँ उपकारी प्रतीत होती हैं, सब जीवों पर किए जाने वाले उपकार से अहंकार वृत्ति पैदा नहीं होती है।

(३) **प्रश्न**—परोपकार गुण से क्या होता है ?

उत्तर—करुणा भाव का रक्षण होता है।

[५]

(१) **प्रश्न**—परहित सरिस धरम नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।

उपर्युक्त छन्द के रचयिता कौन हैं ?

उत्तर—गोस्वामी तुलसीदास।

(२) **प्रश्न**—देनहार कोई और है, निस दिन भेजत रैन।
लोग भरम हम पर धरें, यातै नीचे नैन।।

उपर्युक्त दोहे के रचनाकार कौन हैं ?

उत्तर—कवि रहीम।

(३) **प्रश्न**—निज परिताप द्रवहु नवनीता।
पर दुःख द्रवहिं संत पुनीता।।

उपर्युक्त छन्द का आशय क्या है ?

उत्तर—नवनीत स्वयं के आँच लगते ही पिघलने लगता है, किन्तु पुनीत संत का हृदय तो दूसरे प्राणियों को दुःख की आँच लगते हुए देखकर ही द्रवित या दुःखी होने लगता है।

[६]

(१) **प्रश्न**—बड़े और छोटे में क्या अन्तर होता है ?

उत्तर—बड़े और छोटे में यही अन्तर है कि बड़ा आदमी किसी दुखियारे के दुःख का निवारण करने के लिए जी-जान से प्रयत्न करता है। इसी में उसका बड़प्पन है। जो ऐसा नहीं करता, वह बड़ा नहीं कहला सकता।

(२) **प्रश्न**—'श्री अरिहंत परोपकारी हैं' ऐसा विश्वास करना क्यों आवश्यक है ?

उत्तर—ऐसा करने से सद्‌बुद्धि जाग्रत रहती है।

(३) **प्रश्न**—परोपकार करने का सर्वश्रेष्ठ तरीका क्या है?

उत्तर--दूसरों को धर्म मार्ग में लगा देना ही परोपकार करने का सर्वश्रेष्ठ तरीका है।

[७]

(१) **प्रश्न**—श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन,
दाननं पाणिर्नतु कंकणेन।
विभाति कायः करुणामयानां,
परोपकारै र्नतुचन्दनेन ॥

अर्थ—कान की शाभा शास्त्र-श्रवण से बढ़ती है, कुंडलों से नहीं, हाथ की शोभा दान से बढ़ती है, कंकण से नहीं। करुणाशील मनुष्यों का शरीर परोपकार करने से सार्थक होता है, केवल चन्दन के तिलक-छापे लगाने मात्र से नहीं।

उपर्युक्त उत्तम विचार किसने कहे?

उत्तर—श्री भर्तृहरि ने नीति शतक में।

(२) **प्रश्न**—'परोपकृति कर्मठ।'

अर्थ—गृहस्थ को परोपकार में तत्पर रहना चाहिए।

उपर्युक्त शब्द किसने कहे?

उत्तर—आचार्य हेमचन्द्र ने।

(३) **प्रश्न**—'परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम्'

अर्थ—परोपकार से पुण्य और पर पीड़ा से पाप होता है।

उपर्युक्त उत्तम विचार किसने कहे?

उत्तर—श्री वेदव्यास ने।

[८]

(१) **प्रश्न**—परोपकार करना दूसरों पर अहसान की बात क्यों नहीं है?

उत्तर—प्राणी मात्र का जीवन-निर्वाह एक दूसरे के संयोग के कारण होता है। अगर हम दूसरों पर थोड़ा उपकार करते हैं, तो चढ़े हुए ऋण को चुकाते हैं। स्वयं की आत्मा में आनन्द का अनुभव होता है। ऐसा होने से दूसरों पर अहसान की बात ही कहाँ है।

(२) **प्रश्न**—निःस्वार्थ भाव से परोपकार करने से कौन-कौन से गुणों का विकास होता है ?

उत्तर—मैत्री, प्रमोद, करुणा, क्षमा, दया, सन्तोष, सदाचार, शान्ति, विनय आदि गुण निःस्वार्थ भाव से परोपकार करने से विकसित हो जाते हैं।

(३) **प्रश्न**—परोपकार कर जब हम उसका प्रचार करते हैं, तो क्या होता है ?

उत्तर—परोपकार कर जब उसका प्रचार व विज्ञापन करते हैं, तो न केवल अपना अहंकार मजबूत करते हैं, अपितु जिसकी सेवा की है, उसे भी छोटा बना देते हैं।

[६]

(१) **प्रश्न**—परोपकारी बनना तुम्हें तो, अमूल्य शिक्षा कुछ ओस से लो।
करो सभी सत्कृत गुप्त से, प्रसिद्धि का नाम न ओठ से लो ॥

समस्त संसार प्रसुप्त होता, यदा तदा भू पर ओस आती।
निशा-निशा में कर आर्द्र खेती, प्रभात होते न कहीं दिखाती ॥

उपर्युक्त छन्द के रचयिता कौन हैं ?

उत्तर—उपाध्याय श्री अमर मुनिजी।

(२) **प्रश्न**—अगर अगन पर धरत सुगंध होत,
तपावत बार-बार हेम द्यु ति दरसे।
दूध को तपावे स्वाद, काटत चंदन वास,
तिल तेल इक्षु को पीलत रस लरसे ॥

देवे पय सुरभि चरण को बन्धन किए,
देत फल अंब जो ये मारत पत्थर से।
........कहै तैसे संत कुलवंत मित,
गिणे नहीं पीड़ उपकार तस करसे ॥

उपर्युक्त गीतिका के लेखक कौन हैं ?

उत्तर—अमी रिख (अमी ऋषिजी)।

(३) **प्रश्न**— **क्या भूल सकेगा**

(तर्ज : क्या मार सकेगी मौत उसे....)
क्या भूल सकेगा विश्व उसे,
दुनिया के लिये जो जीता है।
जो औरों के लिये तड़पता है,
जो जग-हित आँसू पीता है।।

जीवन जिसका जग-हित के लिये,
पर-हित के लिये जवानी है,
इन्सान नहीं वह देवता है,
उसकी ही सफल जिन्दगानी है।
है सेवा धर्म ही धर्म बड़ा,
यही आगम, वेद या गीता है।।

जग-हित विष पिया बना शंकर,
प्रभु-हित विष पिया बनी मीरा।
जो जग-हित मिटा बना मोती,
जिन शीश कटाया बना हीरा।।

उपर्युक्त स्तवन के रचनाकार कौन हैं ?

उत्तर—श्री कीर्ति मुनि।

[१०]

(१) **प्रश्न**—वृक्ष पत्थर खाकर भी बदले में मीठे फल देते हैं। फिर भला मैं एक मानव और मानवों में भी महाराजा बनकर क्या एक मासूम बच्चे को फाँसी पर लटका दूं, मुझे भी वृक्षों से शिक्षा लेकर परोपकार करना चाहिए।

उपर्युक्त विचार किसने व्यक्त किए ?

उत्तर—पंजाब केसरी महाराजा रणजीतसिंह ने।

(२) **प्रश्न**—'जिन्दगी तो कुल एक पीढ़ी भर की होती है, पर नेक काम पीढ़ी-दर पीढ़ी चलता रहता है।'

उपर्युक्त कहावत किस देश की है ?

उत्तर—जापान की।

(३) **प्रश्न**—संत दधीचि ने अंतिम समय क्या परोपकार का कार्य किया ?

उत्तर—अपना शरीर इन्द्र को दान कर दिया। उनकी हड्डियों से इन्द्र ने शस्त्र तैयार किया और वृत्रासुर राक्षस का काम तमाम किया।

[११]

(१) **प्रश्न**—परोपकार और परमार्थ में क्या अन्तर है ?

उत्तर—परोपकार अर्थात् दूसरों का उपकार। इसमें एक को अन्य दूसरा (पर) समझने की भेद-बुद्धि है। परमार्थ में यह भेद बुद्धि नहीं है। परम का अर्थ है आत्मा या मोक्ष। जो है वह है सर्वश्रेष्ठ—'परम'। 'परमार्थ' आत्म-कल्याण का श्रेष्ठ पथ है।

(२) **प्रश्न**—'परोपकार से अपना उपकार होता है' यह कथन किस प्रकार सही है ?

उत्तर—परोपकार जब ही हो सकता है, जब हम अपने स्वार्थों से दूर रहकर कार्य करते हैं। इससे मैत्री और करुणा की भावना का विकास होता है। अतः स्पष्ट है परोपकार से अपना उपकार होता है।

(३) **प्रश्न**—निःस्वार्थ सेवा एवं परोपकार के विभिन्न माध्यम क्या हो सकते हैं ?

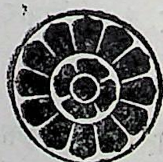
उत्तर—सार्वजनिक और सामाजिक संस्थाओं को दान देना, गरीबों को भोजन और सहायता प्रदान करना, रोगियों की सेवा करना, पतितों को सहारा देना, पीड़ितों की सहायता करना, शिक्षा का प्रचार करना आदि-आदि।

—89, Audiappa Naicken Street, Madras-600 079

बाल कथामृत* (८६)

□ १८ वर्ष तक के बच्चे इस कहानी को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर १५ दिन में "जिनवाणी" कार्यालय को भेजें। उत्तरदाताओं के नाम पत्रिका में छापे जायेंगे। प्रथम, द्वितीय व तृतीय आने वालों को क्रमशः २५, २० व १५ रुपयों की उपहार राशि मण्डल द्वारा प्रदान की जायेगी। इसके अलावा वर्ष भर के लिए निम्न १२ प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्रदान किये जायेंगे। १. श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन एडवोकेट, भवानीमंडी की ओर से उनकी माताजी श्रीमती बसन्तीबाई की पुण्य स्मृति में ११ रुपये का एक पुरस्कार। २. श्री रिखबराज जी कर्णावट, जोधपुर की ओर से उनके पिता श्री पनराजजी कर्णावट की पुण्य स्मृति में १० रुपये का एक पुरस्कार। ३. श्री कैलाशजी बोहरा, भवानीमण्डी की ओर से उनके पिता श्री शांतिलालजी की स्मृति में ११ रुपये का एक पुरस्कार। ४. जे० एल० जैन ट्रस्ट, इन्दौर द्वारा ११ रुपये का एक पुरस्कार। ५. ६. ७. ८. श्री रिखबचन्दजी कांकरिया, मद्रास की ओर से उनके पिता श्री मोहनलालजी कांकरिया, माता श्रीमती झणकारबाई कांकरिया की पुण्य स्मृति में तथा पूज्य महासती श्री सरलाजी एवं विमलाजी की दीक्षा स्मृति एवं धर्मपत्नी श्रीमती पिस्तादेवी के दो वर्षीतप करने के उपलक्ष्य में १०-१० रुपये के चार पुरस्कार। ९. श्री रघुदासजी जैन, सवाई माधोपुर की ओर से उनके पिता श्री रामजसजी जैन एवं माता श्रीमती मोत्यादेवी जैन की पुण्य स्मृति में १० रुपये का एक पुरस्कार। १०. ११. श्री विनयचन्द जी जैन, दिल्ली की ओर से ११-११ रुपये के दो पुरस्कार उनके पिता श्री प्रेमचन्दजी जैन एवं माता श्रीमती इन्द्राकुमारी जैन की पुण्य स्मृति में। १२. श्री सुरेश राजेन्द्रकुमारजी मेहता, बम्बई की ओर से ११ रुपये का एक पुरस्कार अपने दादाजी श्री घेवरचन्द जी मेहता की पुण्य स्मृति में।

—सम्पादक



जायदाद का बटवारा

□ श्री नरेन्द्र सिंघवी

काफी समय पहले की बात है। किसी गांव में एक किसान रहता था। उसके दो पुत्र थे। थोड़ी सी जमीन थी उसके पास, जिसके बलबूतें पर उसने अपने परिवार का पेट पाला था। और इसके अतिरिक्त कुछ थोड़ा बहुत धन भी बचा लिया था।

वह किसान बहुत ही मेहनती था। यह उसकी मेहनत का ही फल था कि उसने इतनी थोड़ी सी जमीन की खेती से ही अपने परिवार का पेट सुख-

*श्री राजीव भानावत द्वारा सम्पादित—परीक्षित स्तम्भ।

पूर्वक पाल लिया था। भगवान भी उसकी मेहनत से बहुत प्रसन्न थे तथा उसको उसकी मेहनत का उचित फल दिया था।

धीरे-धीरे वह किसान काफी वृद्ध हो चला था। दोनों लड़के काफी बड़े हो चुके थे। उस किसान ने अपने अथक प्रयासों से उस छोटी सी खेती की जमीन को काफी उपजाऊ व फलदायक बना दिया था।

जब उसका अंत समय निकट आने को हुआ, तो वह यह समझ गया कि अब मैं इस संसार में ज्यादा देर तक नहीं रह सकूँगा। उसने अपने दोनों पुत्रों को अपने निकट बुलाया, और बोला, "बच्चो, मैं अब जल्दी ही इस संसार से विदा लेने वाला हूँ। यह तुम लोग अच्छी तरह जानते हो कि किस तरह से मैंने मेहनत करके अपना और तुम लोगों का पेट पाला है। इसके अतिरिक्त थोड़ा बहुत जो कुछ हो सका धन बचाया भी है। उसने एक ओर इशारा करके अपने पुत्रों से कहा—"वह देखो, उस तरफ एक ओर मेरी खेती के औजार रखे हैं और उसके पास ही एक थैली में बचाया हुआ थोड़ा बहुत धन है। तुम दोनों जाओ और अपनी इच्छानुसार दोनों में से किसी एक को चुन लो। यही हमारी तुम्हारे लिए जायदाद है।"

वह किसान अपने दोनों पुत्रों के स्वभाव से भलीभांति अवगत था। उसे विश्वास था कि जो वह सोचता है वही होगा। और वास्तव में हुआ भी वैसा ही। बड़े पुत्र ने धन की भरी थैली को तथा छोटे ने अपने पिता के औजारों को बड़ी श्रद्धापूर्वक चूमकर उठाया।

किसान के चेहरे पर हल्की सी मुस्कराहट आई फिर आँखें नम हो गई। उसने दोनों पुत्रों को बुलाकर पास बिठाया। बड़े पुत्र के सिर पर हाथ फेरकर पूछा—"बेटा तुमने औजार छोड़कर धन की थैली क्यों उठायी?"

लड़का बोला—"पिताजी, धन में सबसे ज्यादा ताकत होती है। इसके बल पर मैं सुख आराम की हर चीज जुटा सकता हूँ और मजे से रह सकता हूँ।"

किसान कुछ न बोला, वह छोटे बेटे की ओर मुड़ा और उसके कंधे थपथपाकर बोला—"बेटा, तुमने यह धन छोड़कर कुदाल आदि क्यों लिया?

छोटा लड़का मुस्कराया और बोला—"पिताजी, मैं समझता हूँ इनसे बड़ी चीज और दुनिया में कोई नहीं है। भैया ने जो धन की थैली ली है, जरा सोचें, आखिर वह आई कहाँ से है? इसी हल-कुदाल के बलबूते पर ही तो आई है।"

धन बड़ा होता है यह ठीक है लेकिन उससे भी बड़ा होता है वह साधन जो कि उसको जन्म देता है। जरा बताइये, अगर भैया ने इस धन का सही उपयोग न किया तो क्या होगा, पैसा भी हाथ से निकल जायेगा, और हाथ में कुछ नहीं रह जाएगा।

और यह हल, कुदाल। इसकी मदद से तो मैं मेहनत करके इससे भी बड़ी थैली का धन कमा सकता हूँ। आखिर हमारे पास अन्न से भरी उपजाऊ जमीन जो है। इस धन की थैली का क्या भरोसा, कब तक चले, और किस रास्ते पर ले जाए ?"

हल-कुदाल ने मेरा मेहनत भरा भविष्य तो लिख दिया है, थैली लेकर अनजान भविष्य ही सामने पाता।

अब आप ही बताइए, मैंने ठीक किया या गलत।

किसान पिता की आँखों में आँसू छलछला आए। उसने झट से अपने छोटे बेटे को गले लगा लिया। बोला, "तुमने मेरा कलेजा ठंडा कर दिया, अब मैं चैन से मर सकूँगा। अब मुझे इस बात की चिंता नहीं रहेगी कि पता नहीं हमारी उपजाऊ भूमि का क्या हाल हो रहा होगा। आखिर वह कितनों का पेट भरती है यह तुम जानते ही हो। अच्छा बच्चो, हमारा तुमको आखिरी आशीर्वाद यह ही है कि तुम लोग खूब फलो फूलो। यह कहकर उसने एक ठंडी सांस ली। सहसा ही उसकी आँखें मुंद चुकी थीं। दोनों पुत्र हतप्रभ से अपने पिता की ओर देख रहे थे।

—मगन भाई मार्केट, भवानीमंडी—३२६ ५०२

अभ्यास के लिए प्रश्न

उपर्युक्त कहानी को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

१. किसान में ऐसा क्या गुण था जिसके कारण उसका परिवार सुखी था ?

२. अंत समय निकट आने पर किसान ने अपने पुत्रों से क्या कहा ?

३. 'बड़े पुत्र ने धन की थैली उठाई।' इससे उसके चारित्र की किस विशेषता का पता चलता है ?

४. छोटे पुत्र ने हल, कुदाल आदि औजार उठाये। इससे उसके व्यक्तित्व की कौनसी विशेषता स्पष्ट होती है ?

५. 'पिताजी ! मैं समझता हूँ, इससे बड़ी चीज और दुनिया में कोई नहीं ?' इस कथन में किस चीज की ओर संकेत किया गया है और क्यों ?

६. इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है ?

७. आप कोई ऐसा उदाहरण प्रस्तुत कीजिए जिसमें स्वयं की मेहनत से कोई ऊँचा उठा हो ?

'जिनवाणी' के दिसम्बर, १९९० के अंक में प्रकाशित **श्री उमाशंकर यादव** की कहानी **'जब तैमूर की कीमत लगी'** (८७) के उत्तर जिन बाल पाठकों से प्राप्त हुए हैं, उन सभी को बधाई ।

पुरस्कृत उत्तरदाताओं के नाम

प्रथम—कु० रेखा जैन द्वारा श्री शान्ताप्रसाद जी जैन, १२१, इन्द्रा कॉलोनी, **सवाई माधोपुर**–३२२ ००१ ।

द्वितीय—श्री राजकुमार बोहरा द्वारा प्रदीपकुमार जी जैन, ३० शान्ति अपार्टमेन्ट्स, ६/२, आ० के० रोड, **मद्रास**–६०० ०३३ ।

तृतीय—कु० मनीषा श्रीश्रीमाल, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, **भवानीमंडी** (झालावाड़) ।

प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त उत्तरदाता

१. श्री सुनीलकुमार भाटी द्वारा श्री लक्ष्मीनारायण जी भाटी, रेलवे फाटक बाहर, पुलिस चौकी के पास, **चौमहल्ला**–३२६ ५१५ ।

२. कुमारी गीता शांडिल्य, १८६, रोड नं० १ सी, सरदारपुरा, **जोधपुर**–३४२ ००३ ।

३. कुमारी शर्मिला बोथरा द्वारा नवीनचन्द जी बोथरा, बोथरा मेन्शन, **नागौर**–३४१ ००१ ।

४. कु० ब्रजेशकुमारी भाटी द्वारा श्री लक्ष्मीनारायण जी भाटी, पुलिस चौकी के पास, **चौमहल्ला**–३२६ ५१५ ।

५. श्री विमलकुमार जैन द्वारा जैन स्टडी सर्किल, बोथरा हाउसेज, **नागौर**–३४१ ००१ ।

६. श्री मधुप नवलखा द्वारा श्री एल० सी० नवलखा, ३७०६, के० जी० बी० का रास्ता, जौहरी बाजार, **जयपुर**–३०२ ००३।

७. श्री नवरत्नमल बोथरा द्वारा श्री मुकनमल जी बस्तीमल जी बोथरा, बोथरा मेन्शन, पो० **नागौर**–३४१ ००१।

८. श्री प्रकाशचन्द जैन द्वारा जैन पेपर ट्रेडर्स एण्ड स्टेशनर्स, ई० एस० टी० अस्पताल के सामने, **सवाई माधोपुर**–३२२ ००१।

९. श्री चन्द्रशेखर जैन द्वारा श्री कपूरचन्द जी जैन, ग्राम पोस्ट **पचाला** (जिला टोंक) पिन–३०४ ०२३।

१०. श्री श्रीपाल देशलहरा 'स्वयंसेवक' द्वारा श्री जैन शिक्षण संस्थान, साधना भवन, ए-९, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, **जयपुर**–३०२ ०१५।

११. श्री सुरेशकुमार राठौर द्वारा श्री लक्ष्मीनारायण जी राठौर, पुलिस चौकी के पास, **चौमहल्ला**–३२६ ५१५।

१२. कु० पिंकी शर्मा द्वारा श्री मोतीलाल जी शर्मा, रमेश पेंटर के ऊपर, ई० एस० आई० डिस्पेंसरी के सामने, बज़रिया, **सवाई माधोपुर**–३२२ ००१।

अन्य उत्तरदाता

भवानीमंडी से श्री दिनेश जैन, विपिन जैन, **श्री जैन रत्न छात्रालय, भोपालगढ़** से रत्नसिंह भाटी, संजू बाफना, सुनील जैन, **नागौर** से सुरेशकुमार जैन, **सवाई माधोपुर** से मधुबाला जैन, **कुण्डेरा** से वर्धमान जैन, धर्मेन्द्र जैन, **अरिहंत मण्डल, रायपुर** से पुष्पा बडोला, प्रतिभा चोरड़िया, सीमा चोरडिया।

पुरस्कृत उत्तरदाताओं के वे घटना-प्रसंग जिसमें बाहरी तड़क-भड़क की अपेक्षा आन्तरिक गुण को महत्त्व दिया गया हो

[१]

घटना प्राचीन काल की है। मगध देश में सम्राट् अशोक छोटे एवं आसपास के राज्यों को जीतकर उनका खजाना अपने भण्डार में जमा करते थे। एक बार उनके राज्य में एक प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षु पाटलीपुत्र आये। अशोक ने

उन्हें भोजन पर आमंत्रित किया। भोजन करने के बाद अपना विशाल रत्न भण्डार भिक्षु को दिखाते हुए अशोक ने एक बड़ा रत्न हाथ में लेकर कहा—भिक्षुराज ! ऐसा विशाल रत्न भारत वर्ष में मिलना दुर्लभ है। भिक्षु बोले—रत्न तो बहुमूल्य पत्थर ही है और मैंने तुम्हारे ही राज्य में इससे भी कीमती रत्न पत्थर देखे हैं। विश्वास न हो तो मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें दिखा सकता हूँ। अशोक भिक्षु के साथ चल पड़ा। नगर के छोर पर एक कुटिया के पास भिक्षु रुके और उसमें रखी पत्थर की चक्की की ओर संकेत करके बोले—'यह रहा वह कीमती पत्थर।' 'यह तो चक्की है !' राजा अशोक बोले, 'हाँ इसमें जो बुढ़िया रहती है वह रोज सबको भोजन देती है।' भिक्षु ने कहा। 'क्या तुम्हारा वह रत्न पत्थर किसी को रोजी-रोटी देता है ? उल्टे उसकी रक्षा के लिए तुम पहरेदारों पर बहुत धन खर्च करते हो। रत्नों के पाने के लिए न जाने तुमने कितनों का रक्त बहाया है। कौन कह सकता है कि भविष्य में कितनों का रक्त और बहेगा। यह पत्थर जीवन देता है, तुम्हारा रत्न पत्थर मृत्यु देता है।' उसी दिन से सम्राट् अशोक का मन बदल गया और उसने जीवन में तब से सम्पूर्ण रत्न राशि दीन-दु:खियों-गरीबों के लिए दान कर दी। उसी दिन से सम्राट् अशोक ने अपना सम्पूर्ण जीवन राज्य की विलासिता से निकाल कर साधारण जीवन धर्म को अपना लिया।

—कु० रेखा जैन, सवाई माधोपुर

[२]

७ दिसम्बर '९० की घटना है। उसी दिन मद्रास के सी० यू० शाह भवन में विदुषी महासती श्री रमणीककुंवर जी की सुशिष्या बाल-ब्रह्मचारी साध्वी सन्मतिसुधाजी म० सा० ने एक वर्षीय दीर्घ अखण्ड मौन साधना का समापन समारोह मनाया जा रहा था। पूज्य उपाध्याय श्री केवल मुनिजी म० सा० की पावन निश्रा में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया था। सब तरफ उल्लास और धार्मिक भावना का वातावरण छाया हुआ था। प्रमुख व्यक्तियों व विशेष आगन्तुक मेहमानों के लिये पाटे के समीप गद्दियाँ बिछाकर मंच बनाया गया था। वहीं समीप ही द्वार था—जिस पर स्वयंसेवक मुस्तैदी से खड़े थे। किसी को भी उस द्वार से अन्दर आने नहीं दे रहे थे। उसी समय एक ६५–७० वर्ष का व्यक्ति जो बिल्कुल नंगे पाँव था, दाढ़ी बढ़ी हुई थी, खद्दर की मामूली सी धोती, कुर्ता और सिर पर केसरिया साफा पहने वहाँ आया और मेहमानों व प्रमुख अतिथियों के लिये बने मंच की तरफ बढ़ने लगा। स्वयंसेवकों ने उसका रास्ता रोक लिया और बोले—बाबा, आप इधर से व्याख्यान हाल में नहीं जा सकते, उस मुख्य प्रवेश द्वार से जाइये। उन सज्जन ने कहा—भाई, मैं सिकन्दराबाद

से आया हूँ—मेरा नाम हस्तीमल मुणोत है। स्वयंसेवक जरा अकड़ गया, बोला—आप तो सिकन्दराबाद से आये हैं—यहाँ कई लोग राजस्थान से भी आये हैं—वे भी वहाँ दर्शकों में बैठे हैं—आप भी वहीं चले जाइये। वे सज्जन लौट ही रहे थे कि संघ के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रभाई एम० मेहता की दृष्टि उन पर पड़ी तो वे लपककर आये और उनका हार्दिक अभिवादन किया। उन्होंने स्वयं-सेवकों को बताया कि ये सिकन्दराबाद के प्रतिष्ठित व्यापारी एवं महान् समाज-सेवी हस्तीमलजी मुणोत हैं और आज के समारोह के विशेष प्रमुख अतिथि हैं। स्वयंसेवक कुछ लज्जित हुआ। बाहरी तड़क-भड़क न होने से वह उनसे इस तरह पेश आया था। श्री हस्तीमलजी मुणोत काफी धनाढ्य व सम्पन्न होते हुए भी बहुत ही सादा व सरल जीवन बिताते हैं। यहाँ तक कि वे करीब २० वर्षों से पाँव में जूते-चप्पल भी नहीं पहनते। साधुओं की तरह नंगे पाँव ही चलते हैं। लगातार एकान्तर तप व पौषध आदि कठिन तपस्यायें करते हैं। वे भारत की कई बड़ी संस्थाओं के संचालक, अध्यक्ष एवं प्रमुख कार्यकर्ता हैं फिर भी अभिमान तो उन्हें बिलकुल छू तक नहीं पाया।

—श्री राजकुमार बोहरा, मद्रास

[३]

एक बार एक बड़ा भोज हुआ। उसमें बड़े-बड़े लोगों को बुलाया गया। विद्वान् शेख सादी को भी निमन्त्रण मिला। सादगी उनके जीवन का अंग थी। पोशाक का वे कभी ध्यान नहीं रखते थे। मैले-कुचैले कपड़ों में ही वे भोज में पहुँच गये। ऐसे कपड़ों में द्वारपाल ने उन्हें मामूली आदमी समझ दरवाजे पर रोक दिया। वे लौटे और जर्क-वर्क वाले कपड़े पहनकर पहुँचे। द्वारपाल ने उन्हें झुक कर सलाम किया। वे अन्दर गये, भोजन के लिए बैठे। उन्होंने परोसी मिठाइयाँ अपने कपड़ों पर रखना शुरू कर दिया। इस अचम्भे को देख कई लोग इकट्ठे हो गये। इस नजारे को देखकर द्वारपाल भी वहाँ आ गया। जब शेख सादी से सबने पूछा—"आप यह क्या कर रहे हैं?" तो उन्होंने जवाब दिया कि इन कपड़ों के कारण ही भोजन मिला है। पहले मैले-कुचैले कपड़े पहिन कर आया तो मुझे प्रवेश ही नहीं करने दिया। इसलिये कपड़ों को भोजन खिला रहा हूँ। द्वारपाल ने सुना तो उनके पैरों में पड़ गया तथा क्षमा मांगी व प्रतिज्ञा की कि अब किसी आदमी की कीमत उसके कपड़ों से नहीं आंकूगा।

—मनीषा श्रीश्रीमाल, भवानीमंडी

[४]

घटना सन् १९३७ की है। उन दिनों कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। पटना जंक्शन पर जब गाड़ी आकर रुकी तो जूने-पुराने कपड़े पहने व मोटा

एक कम्बल ओढ़े बेतरतीब मूछों वाला एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति तीसरे दर्जे के डिब्बे में सवार हुआ। अपने अस्त-व्यस्त बालों और खिचड़ी-सी घनी मूछों की वजह से देखने में वह आदमी एक अनपढ़ किसान लगता था। उसी डिब्बे में कुछ मनचले लड़के भी थे। वे किसी कॉलेज के छात्र थे। जब गाड़ी चल पड़ी तो वे लड़के वक्त गुजारने के इरादे से उस अधेड़ व्यक्ति का मजाक बनाने लगे। लेकिन उस व्यक्ति पर छात्रों की फब्तियों और मजाक का कोई असर होता नहीं दिखाई दे रहा था। वह खामोश सा एक कोने में दुबका बैठा था।

कुछ ही देर में उस डिब्बे में टिकट-चैकर चढ़ आया और सभी यात्रियों के टिकट चैक करने लगा। धीरे-धीरे चैकर छात्रों के पास पहुँचा और उनसे टिकट माँगने लगा।

लेकिन उनमें से किसी के पास टिकट नहीं था। बिना टिकट यात्रा करने पर चैकर छात्रों को डाँटने-फटकारने लगा तथा उन्हें जेल भेजने की धमकी देने लगा। यह देखकर उस अधेड़ आदमी से नहीं रहा गया, उसने सभी छात्रों का किराया और जुर्माना अपने पास से दे चैकर से उनका पीछा छुड़ाया। अब तो सभी छात्र हैरत में आ गए। वे समझ गए कि ऊपर से साधारण दिखने वाला यह आदमी अन्दर से जरूर कोई महान् व्यक्ति है।

जब गाड़ी अगले स्टेशन पर रुकी तो सारा प्लेटफार्म "राजेन्द्र बाबू की जय" के गगन भेदी नारों से गूँज उठा। और जब प्लेटफार्म पर राजेन्द्र बाबू के स्वागत में आए लोगों ने उस अधेड़ व्यक्ति को मालाएँ पहनानी शुरू कीं, तब कहीं छात्रों को सही बात का पता चला। मारे शर्म के उनकी आँखें झुक गईं। राजेन्द्र बाबू फौरन सारी बात भाँप गए। छात्रों को गले लगाकर बोले—"भाई, इसमें परेशानी की क्या बात है? आप लोगों की उम्र ही ऐसी है। जाइए, अब कभी बिना टिकट यात्रा न करना और खूब मन लगाकर पढ़ाई करना ताकि देश की सेवा कर सको?"

—सुनीलकुमार भाटी, चौमहल्ला

छपते-छपते

पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म. सा. का अपने शिष्य समुदाय सहित ४ मार्च को सोजतसिटी से विहार हो गया। सोजतरोड, बगड़ी, सांडिया, चण्डावल, पीपल्याकलां, कुशालपुरा होते हुए शीघ्र ही नीमाज पधारेंगे। नीमाज में कुछ समय तक विराजने की संभावना है।



The Salient Features of Jain Saints

☐ Sadhvi Vijayashreeji

NAMO ARIHANTANAM
NAMO SIDDHANAM
NAMO AYARIYANAM
NAMO UVAJJHAYANAM
NAMO LOESAVVASAHUNAM
ESO PANCHA-NAMOKKARAO
SAVVAPAVAPRANASANO
MANGALANAMCHASAVVESIM
PADHMAM HAVAI MANGALAM

Being blessed by the births of Holy men since ages, India always had been a hallowed land. From time to time these great saints, were able to mould the masses and divert them from evil to virtue; violence to non-violence and immoral to moral, physical to spiritual way of lilfe by their exquisite endeavours. Even today these great souls of various sects, various religions, various communities are dedicated in propagating the noble values of spiritual life.

In this regard, the contribution of Jain monks had always its own special impact. Today, nearly 10,000 Jain saints are involved in spreading spiritual ideals, all over the country. The salient features of these Jain preachers are :

(1) Basically these Jain saints follow the path of Shraman Bhagwan Mahavir, the 24th Teerthankar of the Jain Order.

(2) They propagate the essence of the before said introductory 'NAVKAAR MANTRA', Arihant, and Siddh are their ideals, and

Acharya, Upadhyay, and Saadhu are the three Gurus. Transcedental worship of this configuration of five holy figures – 'Panchaparameshthi' leads on to the path of salvation.

(3) These Jain saints follow five principles.

(a) Non-violence, (b) Truth, (c) Non-Theft,

(d) Brahmacharya, (e) Aparigraha.

(4) 'Live and let live' is the basic motto of these Jain saints.

(5) The gospel of Mahavira is in 32 Agams which is popular and is in Ardh-Magadhi dialect. Each one is full of wisdom like those of in the 'Geeta', 'The Ramayan'—'The Quaran', 'the Bible' and such holy books etc., the 'Uttaradhyayan Sutra'—is the last preaching of Mahavira–and the Jain saints preach on these lines.

(6) Jain saints to release the soul from the Eight Karmas–worship the triad of virtues.

(7) For the purification of the soul they fast, taking only boiled water.

(8) Another salient feature of these saints is that they travel only on foot to propagate their preachings. They keep away from all other modes of transport.

(9) They wear only white clothes and even tie a cloth across their mouth (to prevent injury to organisms by their hot breath). Even for sweeping they use only the softest "Rajoharan" so that no insect is harmed.

(10) They avoid the use of all metallic utensils, only wooden vessels are used.

(11) Being initiated in Jainism, these saints work with a mission of "Vasudeva-Kutumbakam". (World is my family), and survive on the 'Bhiksha' from vegetarian people only.

(12) They even avoid water from all sources, consuming only boiled water given by devotees.

(13) They do not even touch cold water, raw vegetables, fire, and if any body touches them, they do not take any "Bhiksha" from such people.

(14) These Jain saints do not own an inch of property and take shelter only in houses built by devotees.

(15) They do not move anywhere during the 'Chaturmas'. During the rest of eight months, they keep on travelling everywhere.

(16) They do not believe in any caste, creed, or community. Only importance is given to personal capabilities. That is why anyone who feels 'Mumukshu' can adopt Jainism.

(17) They maintain perfect celibacy, dedicating to the service of the society.

(18) Twice a year these saints tweeze i.e., 'Lunchan' their hair.

(19) They do not have any foot wear.

(20) They do not have any personal belongings and do not touch any money.

(21) All their food consumption is done before sunset and after sunrise. They neither use any medicines nor even apply any balm in the night.

(22) These Jain saints are powerful enough to master astrology, astronomy and the Zodiac signs, yet they keep away from giving amlets or talismans or such charms. Just by their blessings they satisfy the devotees.

(23) There are many strotras which have dramatic effects— and all these strotras are in 'prakrit' and 'sanskrit'.

(24) These Jain saints bless their devotees with 'Dayapalo' (have Mercy) and 'Dharmalaabh' (Be religious).

Arihante Saranam Pavajjaami.
Siddhe Saranam Pavajjaami.
Saadhu Saranam Pavajjaami.
Kevali Pannatham Dhammam Saranam Pavajjaami.

Sarve Bhavantu Sukhinaha :—

प्रेरक प्रसंग :

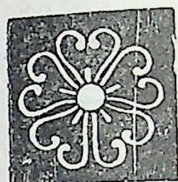
अनूठी देश भक्ति व धीरता

□ श्री गदाधर भट्ट

१८वीं सदी के अन्त में जगत् प्रसिद्ध देश भक्त सुरेन्द्रनाथ बनर्जी सरकारी नौकरी त्याग कर कलकत्ते में रहने लगे। उन्होंने अब देश सेवा का व्रत लेकर, सरकार को देशवासियों की वास्तविक दीनदशा का अनुभव कराने के लिए 'भारत सभा' नाम की एक सभा की स्थापना की। यह सभा राष्ट्रीय कांग्रेस से पूर्व सन् १८७६ में स्थापित हुई थी। जिस दिन इस सभा का उद्घाटन हो रहा था, उसी समय सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के एक मात्र पुत्र का आकस्मिक निधन हो गया था। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के लिए ये अग्नि परीक्षा के क्षण थे। सभा में उपस्थित सभी लोग शोकग्रस्त थे। वे निराश थे, क्योंकि बनर्जी का ओजस्वी भाषण वे आज नहीं सुन सकेंगे।

सभा में एकत्र लोगों की यह निराशा एकाएक आश्चर्य में बदल गई। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी जिनकी उपस्थिति की आशा न थी, वे सभा में उपस्थित थे। उनके मुखमण्डल पर पुत्र-वियोग जैसी मार्मिक पीड़ा की एक क्षीण रेखा भी नहीं थी, बल्कि देश भक्ति का अपूर्व उत्साह प्रकट हो रहा था। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के अद्भुत धैर्य को देखकर श्रोता दाँतों तले अंगुली दबाने लगे। बनर्जी का आज का भाषण अभूतपूर्व था। लोगों के दुःख के मार्मिक चित्रण में तीव्र पीड़ा के साथ आक्रोश व क्षोभ प्रकट हो रहे थे। हृदय को छूने वाले ऐसे भाषण को सुनकर उपस्थित जनसमूह चकित था। धन्य हैं—देश भक्त सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, जिन्होंने देश भक्ति के लिए पुत्र के चिर वियोग के वज्राघात को भी हँसते हुए सहन किया व धैर्य के साथ अपनी अनूठी देश भक्ति का परिचय दिया।

—पूर्व प्रधानाचार्य, भट्ट सदन, झालावाड़—३२६ ००१



समता ही सामायिक है :

□ डॉ० प्रेमचन्द रांवका

समता सर्वभूतेषु, संयमः शुभ भावना।
आर्तरौद्र परित्यागस्तद्धि, सामायिकं व्रतम् ॥

समस्त प्राणियों में समता भाव—जैसे मैं हूँ वैसे ही सब जीव हैं, संयम-इन्द्रिय-विषय का परिहार, प्राणी पीड़ा का परिहार, परोपकार की शुभ भावना, आत्मलीनता तथा आर्त्त और रौद्र इन अशुभ ध्यानों का परित्याग ही सामायिक है।

सम्यक् पूर्वक मोह-राग-द्वेष का परित्याग ही समता है। प्राणि-मात्र में साम्य भाव ही समता है और यह समता भाव सामायिक की रीढ़ है। आत्मा के साथ संलग्नता सामायिक है। जीवन-मरण, लाभ-अलाभ, संयोग-वियोग, इष्ट-अनिष्ट, सुख-दुःख, शत्रु-मित्र आदि में राग-द्वेष रहित होना सम और इसी रूप होने को सामायिक कहते हैं।

सम्पूर्ण आरम्भ-परिग्रह का त्याग करने पर ही मनुष्य साम्य भाव को प्राप्त होता है। तब गृहस्थ भी यति के समान बन जाता है। प्रख्यात दार्शनिक आचार्य समन्तभद्र ने लिखा है—

"सामायिके सारम्भाः परिग्रहा, नैव सन्ति सर्वेऽपि।
चेलोप सृष्ट मुनिरिव गृही, तदा याति यति भावं ॥
१०२ ॥ रत्नकरण्ड श्रावकाचार ॥

सामायिक के समय गृहस्थ भी मुनि के तुल्य बन जाता है; क्योंकि दोनों ही के उस समय सम्पूर्ण आरम्भ-परिग्रह का त्याग होता है। अन्तरंग में कोई भेद नहीं होता।

शरीर और मन को रोक कर आत्मा में लीन होने की क्रिया ही सामायिक है। समता रूप परिणामों के साथ सामायिक चाहे दो घड़ी ही क्यों न हो, उससे महान् कर्मों की निर्जरा होती है। सामायिक की और कोई विशेष विधि समझ में न आवे तो एकाग्रता के साथ मन, वचन, काय को निश्चल कर स्वानुभव में मग्न हुआ प्रतिदिन थोड़े समय इतना विचार तो अवश्य करे कि "देह भिन्न, मैं भिन्न, देह विनाशी, मैं अविनाशी।" अन्यथा—

"कोऽहं की दृग्गुणः क्वत्यः, किं प्राप्यः किं निमित्तकः ।
इत्यूह, प्रत्यहं नो चेदस्थाने, हि मतिर्भवेत् ।।"

—आ. वादीभसिंहः क्षत्र चूड़ामणि

मैं कौन हूँ, मुझमें क्या गुण हैं, कहाँ से आया हूँ, क्या प्राप्त करना है, उसका क्या निमित्त है, इत्यादि का विचार न करने पर बुद्धि उन्मार्ग में प्रवृत्त हो जाती है।

सामायिक हृदय की वस्तु है। बाह्य क्रिया की अपेक्षा उसका हृदय से अधिक सम्बन्ध है। जब तक हृदय में साम्य-भाव की स्थापना नहीं होती, मन राग, द्वेष के वशीभूत हुआ इधर-उधर डोला करता है, तब तक सामायिक संभव नहीं है।

—१९१०, खेजड़े का रास्ता, जयपुर–१ (राज.)

लगन

☐ श्री श्रीपाल देशलहरा 'स्वयंसेवक'

संसार के महान् वैज्ञानिक अलबर्ट आइन्स्टीन से एक बालक ने पूछा—"महान् बनने का मंत्र क्या है?"

आइन्स्टीन ने एक शब्द में उत्तर दिया—'लगन'। बालक की कुछ समझ में न आया। उसने कहा—"मैं समझा नहीं। कृपया इसे स्पष्ट करें।"

आइन्स्टीन ने अपना ही उदाहरण देकर समझाया—"मैं जब बच्चा था, गणित मेरी समझ में नहीं आता था। मेरे सहपाठी गणित में उत्तीर्ण होते थे, और मैं अनुत्तीर्ण। लड़के मुझे 'बुद्धू' कहते थे। मुझे चिढ़ाने के लिए मेरी पीठ पर 'बुद्धू' लिख दिया करते थे। कक्षा में मुझे बेंच पर खड़ा रहना पड़ता था। सब मुझे धिक्कारते थे। गणित के शिक्षक तो कहा करते थे—"सात जन्म में भी तू गणित में पास न होगा।"

"मुझे लज्जा लगती थी, आत्मग्लानि होती थी, पर मैं क्या करता? विवश था। तब एक दिन मैंने निश्चय किया कि मैं अपनी सारी शक्ति लगाऊँगा, कैसे गणित नहीं आयेगी? प्रयत्न किया, असफल हुआ, फिर प्रयत्न किया, फिर असफल। यह क्रम चलता रहा, पर मैं लगन से चिपटा रहा। फल सामने आया। जो कुछ भी आज हूँ, वह मेरी उस लगन का ही परिणाम है।"

यह कोई आवश्यक नहीं कि महान् वे ही बनते हैं जो जन्मजात प्रतिभाशाली होते हैं। महापुरुषों की जीवनियाँ इस बात की गवाह हैं कि बचपन में मन्द बुद्धि वाले बालक लगन के बल पर आगे चल कर महान् व्यक्ति बने और समाज को उन्होंने अपना अमूल्य योगदान दिया।

—श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान
ए-९, साधना भवन, बजाज नगर, जयपुर–३०२ ०१५ (राज.)

पर्युषण पर्वाराधना विवरण :

कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ

६१, नगरथ पेट, बैंगलोर-५६० ००२

इस वर्ष निम्न १४ क्षेत्रों में ३७ सदस्यों ने अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान कीं एवं अपना एवं स्थानीय संघ सदस्यों का ज्ञान, ध्यान एवं धर्म क्रिया बढ़ाने का प्रयास किया। उनके सहयोग के लिए सभी को धन्यवाद।

(१) बेलगाम :—	श्री चम्पालाल जी कांकलिया	बैंगलोर
	,, चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल	,,
	,, प्रकाशचन्द जी पटवा	,,
(२) इलकल :—	श्री सोहनलाल जी सिसोदिया	,,
	,, मनोहरकुमार जी श्रीश्रीमाल	,,
	,, नवीनकुमार जी सिसोदिया	,,
(३) भद्रावती :—	श्री अमरचन्द जी डागा	,,
	,, नवरत्नमल जी भंसाली	,,
	,, जवेरीमल जी पालगोता	,,
(४) शिमोगा :—	श्री विमलचन्द जी धारीवाल	,,
	,, महावीरचन्द जी भीलवाड़िया	,,
	,, सुरेशकुमार जी बागरेचा	,,
(५) गुण्डलपेट :—	श्री प्रेमचन्द जी भण्डारी	,,
	,, लोकेशचन्द जी बांठिया	,,
(६) मुलबागल :—	श्री उत्तमचन्द जी छाजेड़	,,
	,, महावीरचन्द जी लूणिया	,,
(७) होसपेट :—	श्री शान्तिलाल जी बोहरा	,,
	,, सज्जनराज जी बोहरा	,,
(८) गजेन्द्रगढ़ :—	श्री नेमीचन्द जी बोहरा	,,
	,, मोहनलाल जी श्रीश्रीमाल	,,
	,, दीपचन्द जी मुणोत	हैदराबाद
(९) नंजनगुड :—	श्री मोतीलाल जी दलाल	बैंगलोर
	,, बाबूलाल जी भुरट	होसपेट
	,, उत्तमचन्द जी कटारिया	बैंगलोर

(१०) **यादगीरी :—**	श्री जवरीलाल जी भंसाली	बैंगलोर
	" हरकचन्द जी विनायकिया	शिमोगा
	" अशोककुमार जी कोठारी	भद्रावती
(११) **शोरापुर :—**	श्री मिलापचन्द जी बोहरा	मण्ड्या
	" शान्तिलाल जी गुन्देचा	हैदराबाद
(१२) **सेलम :—**	श्री मदनलाल जी धोका	रायचूर
	" माणकचन्द जी कांकलिया	बैंगलोर
(१३) **तिरुपति :—**	श्री ज्ञानराज जी मेहता	बैंगलोर
	" कानमल जी विनायकिया	भद्रावती
	" मनीषकुमार जी जैन	बैंगलोर
(१४) **बाणावार :—**	श्रीमती शान्ताबाई कोचेटा	"
	सुश्री इन्दिरा कोचेटा	"
	" सन्ध्या चण्डालिया	"

दैनिक कार्यक्रमों के साथ-साथ कुछ स्थानों पर विशेष आकर्षण के रूप में प्रश्न मंच, प्रश्न चर्चा, अन्त्याक्षरी, योग साधना, शान्ति-जाप, सामायिक पंचरंगी, संगीत, भाषण आदि आयोजन हुए। जिनमें स्थानीय सदस्यों ने खुलकर भाग लिया।

सामायिक, पौषध एवं दया व्रत की आराधना के साथ-साथ उपवास, बेले, तेले, पचोले, सात अट्ठाइयां एवं ग्यारह, सोलह तथा बाईस, तीस व पैंतीस आदि दीर्घ तपस्याओं के प्रत्याख्यान भी हुए।

कई संघों से धार्मिक अध्ययन कराने हेतु शिक्षकों की मांग भी आई है। इस बात का विशेष ध्यान देवें एवं जहां भी विद्वान् शिक्षक तैयार होते हैं, ऐसी संस्थाएँ एवं शिक्षक वर्ग संघ से पत्र व्यवहार द्वारा सम्पर्क स्थापित करें।

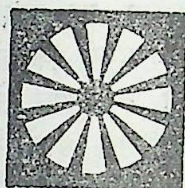
—**शान्तिलाल बोहरा**
संयोजक

फूलचन्द लूणिया
अध्यक्ष

प्रेमचन्द भण्डारी
मन्त्री

□ □ □

स्वस्थ जीवन लेखमाला [८]



स्वाभाविक आहार-शाकाहार

☐ श्री जशकरण डागा

मांस-भक्षण से हड्डियां कमजोर होती हैं :

हावर्ड मेडिकल कॉलेज अमेरिका के डॉ. ए. वाचमैन और डॉ. डी. एस. बर्नस्टीन लैसैंट १९६८, वॉल्यूम १ पृष्ठ ९५८ में अपनी महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक खोजों का परिणाम लिखते हैं—"मांसाहारी लोगों का पेशाब प्रायः तेजाब युक्त होता है, इस कारण शरीर के रक्त का तेजाब और क्षार का अनुपात ठीक रखने के लिए हड्डियों में से क्षार के नमक खून में मिलते हैं और इसके विपरीत शाकाहारियों का पेशाब क्षार वाला होता है, इसलिए उनकी हड्डियों का क्षार खून में नहीं जाता और हड्डियां मजबूत रहती हैं। उनकी राय में जिन व्यक्तियों की हड्डियां कमजोर हों उनको विशेष तौर पर अधिक फल, सब्जियों के प्रोटीन व दूध का सेवन करना चाहिए और मांस-भक्षण एकदम छोड़ देना चाहिए। [साइन्स न्यूज, दिल्ली विज्ञान संघ से उद्धृत]

प्रायः मांस खाने से टेप वर्म नामक कीड़ा सत्तर फीट लम्बा मांसाहारियों की आंतों में पाया गया है। (डी. के. डान आस्ट्रेलिया) देखें हिंसा विरोध, ८/८१ पृष्ठ २३ पर।

पशु की जीवातावस्था में उसके तन्तु अति कोमल होते हैं, परन्तु मृत्यु होते ही वे सख्त हो जाते हैं। जब मांस सड़ने लगता है, तभी ये पुनः कोमल होते हैं। अतः मांस को कुछ समय के लिए टांगा जाता है अर्थात् उसे सड़ाने के लिए कुछ समय दिया जाता है। इससे सड़े मांस में अनेक विष पैदा हो जाते हैं, जो रक्त चाप को बढ़ा देते हैं। साथ ही अनेक कीटाणु पैदा हो जाते हैं, जो मांस के साथ उदर में पहुँच आंतों से चिपट जाते हैं तथा अनेक रोग पैदा कर देते हैं। मांस के अन्दर त्याज्य पदार्थ मनुष्य की आंतड़ियों में सड़ते हैं जिसमें खतरनाक

कीटाणुओं की उत्पत्ति होकर आंतों में कैंसर पैदा करते हैं। देखें 'हिंसा विरोध' पत्र दि. ८/८/८१। गोमांस, शूकर मांस और भेड़ मांस में अक्सर कोढ़ और क्षय रोग के कीटाणु रहा करते हैं।

बकरियों एवं भेड़ों के लीवर व फेंफड़े प्राय: पानी के समान एक पदार्थ (Cysts) के भराव से ग्रसित होते हैं। ये साइस्ट पानी के बड़े गुब्बारों के रूप में लीवर से चिपके रहते हैं एवं जानवर के मरने तक या मारने तक कष्ट देते रहते हैं। यह साइस्ट जानवर को काटते समय फट सकता है एवं उस पानी में जो अण्डे होते हैं मांस पर फैल जाते हैं। इस प्रकार से अण्डे मांस के साथ में खाए जा सकते हैं, या मांस को इधर-उधर करते समय लग सकते हैं। इस प्रकार मनुष्य साइस्ट से ग्रसित हो सकता है, जो फुटबाल के आकार तक बढ़ सकता है। यद्यपि यह मौत का कारण नहीं हो सकता होगा, परन्तु दूसरे अवयवों के कार्य में बाधा पहुँचाकर उन्हें कमजोर अवश्य कर देता है।

मांसाहार के विषय में सिलवेस्टर—ग्रेहाम—ओ.एस. फोलर, जे.एफ. न्यूटन, जे. स्मिथ, डॉ. ओ.ए. आलकट-हिलक लैंड-चीन-लैम्ब बकान-ट्रेजिओलास इत्यादि अनेक प्राणी विशेषज्ञों एवं अनुभवी चिकित्सकों ने प्रकाश डालते हुए उद्घोषणाएँ की हैं और अनेक दृढ़तर प्रमाणों से सिद्ध किया है कि मांसाहार से मानव शरीर व्याधि-मन्दिर हो जाता है। मांसाहार से प्राय: नासूर (Cancer) व संधिवा (Rheumatism) रोग होते देखे गये हैं। मांस पूरा व भली-भाँति न चबाये जाने के फलस्वरूप दांतों के भिन्न-भिन्न रोग भी हो सकते हैं और गले तथा नाक में दर्द, नाक रोग पैदा हो जाते हैं। एपेन्डीसाइटिस (Appendicitis) नाम की बीमारी का प्रमुख कारण भी मांसाहार ही बताया गया है। यकृत-यक्ष्मा-राजयक्ष्मा-पाद-शोथ-गठिया-बात-एपोलेक्सी (एक प्रकार का लकवा) मृगी-कारबंकल उन्माद-अनिद्रा-पथरी-गुर्दे की बीमारी डिस्पेपसिया रक्त दबाव का अधिक होना, मूत्राशय का कमजोर होना, टाइफाइड-जलंधर आदि अनेक भयंकर बीमारियां अधिकतर मांसाहार के कारण ही होती हैं जो अन्त में प्राण लेकर ही पीछा छोड़ती हैं। इस कथन की पुष्टि आधुनिक प्रसिद्ध डॉक्टरों द्वारा की जा चुकी है। डॉ. सत्यनारायण (A.M.S.) ने लिखा है कि मांसाहार का सेवन गुर्दे के कार्य भार को बढ़ा उसे रोग क्रान्त करने में सहायक होता है। जानवरों के शरीर के जोड़ और हड्डियों में जो कीटाणु होते हैं वे तो पकाने पर भी बने रहते हैं। भगंदर रोग के प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. वेल ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि प्रतिवर्ष संसार में दो करोड़ पच्चीस लाख और इंग्लैण्ड तथा वेल्स में तीस हजार आदमी इस दुष्ट रोग से मरते हैं। जिसका मुख्य कारण मांसाहार के प्रचार का आधिक्य है। उक्त डॉक्टर ने बड़े परिश्रम और अनुसंधान

से यह भी स्थिर किया है कि मांसाहार के त्याग और वनस्पति आहार के सेवन से यह रोग शीघ्र अच्छा हो जाता है। आयुर्वेदिक ग्रन्थ 'सुश्रुत' (८) में लिखा है कि मांस से कोढ़ उत्पन्न होता है, जो रक्त को दूषित करता है। सफदरजंग अस्पताल दिल्ली के न्यूरोलाजी विभाग के अध्यक्ष व प्रख्यात न्यूरोलोजिस्ट डॉ. डी. सी. जैन का कथन है कि वैज्ञानिक शोध कार्यों से स्पष्ट हो चुका है कि मांस भक्षरण से १६० तरह के रोग हो सकते हैं। (हिंसा विरोध ५/८६ देखें)

इन रोगों के नाम विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपने समाचार पत्रों में प्रकाशित किये हैं। इन रोगों में मिर्गी की बीमारी प्रमुख है। यह बीमारी मस्तिष्क में टीनिया सोलिइन नाम के कीड़े से हो जाती है जो सूअर का मांस खाने से होती है।

छूत आदि के जो अनेक रोग होते हैं उनका प्रभाव जितना मांसाहारियों पर पड़ता है, उतना शाकाहारियों पर नहीं। मुझे याद है कि एक बार जब हमारे शहर में हैजा फैला था तो मांसाहारी ५ व शाकाहारी १ मर रहा था। नवाब साहब के पास शिकायत भी पेश हुई थी—"हुजूर! मुसलमान हिन्दुओं से पाँच गुना मर रहे हैं।" नवाब साहब ने कहा था—"यह तो खुदा की मर्जी है। मैं कुछ नहीं कर सकता हूँ।" इससे मांसाहारियों को आश्चर्य व भय दोनों हो रहे थे। इसका कारण उन दिनों शायद अच्छा मांस न मिलना भी रहा हो अथवा बीमार जानवरों का मांस खाने से उन्हें अधिक हैजा हुआ हो परन्तु यह सत्य है कि मांसाहारियों ने पाँच गुनी संख्या में अधिक प्राण त्यागे थे।

मांस जैसे ही शरीर से काट कर रखा जाता है, वैसे ही वह कीटाणुओं को आमन्त्रित करता है। क्या आपको पता है कि एक औंस मांस में १½ करोड़ से १० करोड़ तक कीटाणु होते हैं। इन सबसे यह तो स्पष्ट ही है कि मांसाहार रोग वृद्धि का कारण है, जबकि इसके विपरीत वनस्पति आहार में कई प्रकार के रोगों को ठीक कर देने का प्रत्यक्ष चमत्कार देखने को मिलता है। आयुर्वेदिक क्या है? उसका सर्वस्व और सम्पूर्ण खजाना वनस्पति जगत् ही तो है। कई प्रकार की जड़ी-बूटियाँ पाई जाती हैं, कि जिनका करण भर खा लेना मरण भर खा लेने से किसी प्रकार कम नहीं होता है। प्राचीन युग में बहुत से योगी संन्यासी इन्हीं जड़ी-बूटियों के आधार पर वर्षों की समाधि भोजन पानी से छुट्टी लेकर लगा जाया करते थे। कई वनस्पतियों को खाकर प्यास को भी बुझाया जा सकता है। अरब और सहारा जैसे विशाल रेगिस्तानों में भी जहाँ मीलों पानी के दर्शन नहीं होते, पानी के अभाव में अनार, अंगूर जैसे वनस्पति-आहार मनुष्यों को जीवन दान देते हैं।

ऐसी मान्यता है कि जिगर का रोगी यदि प्रतिदिन खाली पेट लेट कर दांतों से काट-काट कर एक सेव नित्य खावे तो उसे अत्यधिक लाभ होता है। आँवला तो विटामिन 'सी' की खान है। चर्म रोगियों तथा स्नायु रोगियों के लिए तो शाकाहार अत्यधिक लाभप्रद है। इसका अधिक उपयोग चर्म रोगों को मिटाता है तथा शरीर से विजातीय पदार्थों को निकाल फेंकने की शक्ति रखता है। कुछ विशेषज्ञों का तो यहाँ तक कहना है कि नासूर तथा कैंसर जैसे भयानक रोगों में भी यदि केवल फलों का सेवन किया जावे और अन्न-जल आदि सब बन्द कर दिये जावें तो रोगी को अत्यधिक लाभ होगा। फलों में जल की मात्रा अधिक होती है अतः फलाहार करने वाले को प्यास तो यों भी नहीं लगेगी। अतः फल और शाक पेट के रोगों के लिए तो रामबाण हैं। फलाहार से मूत्र सम्बन्धी रोगों में भी बड़ा लाभ होता है। साधारणतया टाईफाइड आदि रोगों में डॉक्टर प्रायः फल या फलों के रस को ही मरीजों को देते हैं। फल अत्यन्त सुपाच्य भोजन है और फलों का रस तो और भी अधिक। अंगूर अजीर्ण के लिए, नींबू हृदय के लिए, सन्तरा गठिया और जिगर आदि के लिए अत्यन्त लाभप्रद है। मोटापा कम करने के लिए फल तथा शाक का आहार सर्वोत्तम है। अल्प पित्त में भी फल विशेष लाभकारी हैं, विशेष कर कमल गट्टे के छत्ते का प्रयोग। कसेरु फालसा आदि गर्मी नाशक हैं।

प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध के अन्त में डॉक्टरों ने वैज्ञानिक रीति से सिद्ध किया कि मांसाहारी सैनिकों के घाव बहुत लम्बे समय में भरते हैं जबकि शाकाहारी सैनिकों के घाव कम समय में ही भर जाते हैं। युद्ध में भी शाकाहारी सैनिक बहुत ही तेज, बल सम्पन्न व अचूक निशाना लगाने वाले थे। (देखें हिंसा विरोध, ८/८/८१) डॉ. लक्ष्मीनारायण टंडन "प्रेमी" लिखते हैं कि "यदि हम फल व शाक का दैनिक प्रयोग उचित मात्रा में करें तो हम स्वस्थ रहेंगे और डॉक्टरों की दवाओं के बिल चुकाने से बच सकते हैं। शाक व फलों में आरोग्य-दायिनी शक्ति होती है।"

"आहार जीवन के लिए है न कि आहार के लिए जीवन" के अनुसार जो आहार जीवन को आदर्श जीवन बनाने में सहायक हो, जो आहार सर्व प्रकार से अधिक जीवन पोषक तत्त्व प्रदान करने में सहायक हो, वही आहार श्रेष्ठ है। वनस्पत्याहार सात्विक तत्त्वों का तो (जीवन विकास के लिए परमावश्यक है) खजाना है। इस दृष्टि से तो मांसाहार से श्रेष्ठ है ही, साथ ही मांसाहार में शाकाहार की तुलना में पोषक तत्त्वों का अनुपात भी अत्यल्प है। उदाहरणार्थ दालों में ८३ प्रतिशत और गेहूँ व अन्य भोज्य पदार्थों में ८८ प्रतिशत पोषक अंश होता है जबकि मांस में २८ प्रतिशत ही वह अंश पाया जाता है, फिर उस

क्रूरतापूर्ण भोजन को ग्रहण करने से लाभ नहीं वरन् अनेक हानियाँ हैं। यहाँ वनस्पत्याहार एवं मांसाहार में रहे हुए तत्त्वों का दिग्दर्शन कराने हेतु मुख्य भोज्य पदार्थों का एक मानचित्र [१] आगे दिया जा रहा है, जिससे पाठकगण स्वयं ही इसका ठीक निर्णय सरलता से कर सकते हैं। इसके साथ ही दूसरा मानचित्र [२] पौष्टिक खाद्य पदार्थों की विगत का भी दिया जा रहा है।

इन नक्शों से यह भली भाँति स्पष्ट है कि शाकाहार मांसाहार से आर्थिक दृष्टि से भी श्रेष्ठतम है ही, साथ ही उसमें अधिक पोषक तत्त्व पाये जाने की दृष्टि से भी श्रेष्ठतम है। मांसाहार में जहाँ जीवन पोषक तत्त्व अल्पतम होते हैं, वहाँ कार्बोहाइड्रेट्स नामक शर्करादि द्रव्य तो बिलकुल नहीं होता है। इस द्रव्य के बिना शरीर टिक नहीं सकता और यही कारण है कि मांसाहारी मनुष्य ऐसे नहीं हैं, जो शाकाहार नहीं करते हों, जबकि शाकाहारी भोजन में मनुष्य को सुखी व स्वस्थ रखने के लिए सभी पौष्टिक पदार्थ मिलते हैं, इससे बिना किसी पक्षपात के सिद्ध होता है कि शाकाहार मानव के लिए अनिवार्य है। मांसाहार की हमारी भोजन प्रणाली पर अम्लीय प्रतिक्रिया होती है। अधिकांश प्राणी जिनका क्रूर हिंसकों द्वारा निर्ममता पूर्वक वध किया जाता है, एक अत्यन्त घृणित भय की अवस्था में मरते हैं। यह भय की भावना उनके शरीर में अति तीव्र रासायनिक परिवर्तन कर उसे अत्यधिक अम्लोत्पादक बना देती है, जो स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक होती है। [समाप्त]

१०१ रुपये में १०८ पुस्तकें प्राप्त करें

अ. भा. जैन विद्वत् परिषद् द्वारा प्रारम्भ की गई "ज्ञान प्रसार पुस्तकमाला" के अन्तर्गत अब तक ७४ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। कुल १०८ पुस्तकें प्रकाशित करने की योजना है। प्रत्येक पुस्तक का फुटकर मूल्य दो रुपया है पर जो व्यक्ति या संस्था १०१ रुपये भेजकर ट्रैक्ट साहित्य सदस्य बन जायेंगे, उन्हें १०८ पुस्तकें निःशुल्क प्रदान की जायेंगी। कुछ पुस्तकें अप्राप्त हैं, वे दुबारा प्रकाशित होने पर सदस्यों को भेजी जायेंगी।

तपस्या, विवाह, जयन्ती, पुण्यतिथि पर प्रभावना के रूप में वितरित करने के लिए १०० या अधिक पुस्तकें खरीदने पर २५ प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा।

कृपया १०१ रुपये मनीआर्डर या ड्राफ्ट द्वारा "अखिल भारतीय जैन विद्वत् परिषद्" के नाम सी-२३५ ए, तिलक नगर, जयपुर-३०२००४ के पते पर भेजें।

—डॉ० नरेन्द्र भानावत
सम्पादक-संयोजक

मानचित्र [१]

शाकाहार और मांसाहार में रहे हुए तत्त्वों का पृथक्करण बताने वाला

नोट— × से विटामिन की उपस्थिति, ×× से विशेष मात्रा में उपस्थिति व ××× से विटामिन की भरपूर स्थिति समझें—

आहार का नाम	नाम भोज्य पदार्थ	विटामिन्स				प्रोटीन प्रतिशत	शरीर को प्रति १०० ग्राम से मिलने वाली गर्मी (कैलोरीज में)	कार्बोहाइड्रेट्स प्रतिशत	क्षार (लवण) प्रतिशत	पानी प्रतिशत	चरबी प्रतिशत	कैल्शियम	लोहा	फासफोरस	फेटस	मूल्य प्रति किलो (जून ६० के)
		ए	बी	सी	डी											
शाकाहार	अनाज गेहूँ आदि)	×	××	×	×	१६.१	३७५	७२.२	१.६	७.३	७.२	.०७	८.६	.३२	१.७	२ ७० रु.
	दालें	××	××	×		२५.७	३५०	५६.७	५.७	८.४	१.०	.२०	६.०	.२५	०.७	६.५० रु.
	विभिन्न फल	×××	××	×××	×	१६.०	४५०	६५.०	२.०	१०.०	५२.०	.०३	५.०	.७०	२.०	७.० रु.
	दूधमय मलाई	×××	×	थ	×	३.३	३६०	५१.०	०.७	८७.०	४.०	१.३७	१.४	१.०	१.०	६.० रु.
मांसाहार	मुर्गे का मांस	××	×	—	—	१६.०	१४०	—	१.०	६३.७	१६.३	.०२	२.५	.२०	१३.३	६०. ० रु.
	बकरे का मांस	×	××	××	×	१८.२	१८५	—	१.०	६२.८	१८.०	.१५	२.५	.१५	१३.३	३२. ० रु.
	मछली का मांस	—	×	—	—	१८.६	६०	—	२.५	६८.०	१०.०	.०२	—	.१६	०.६	२६. ० रु.
	अंडातला हुआ	×××	×	—	×	१४.०	१५०	.७	०.८	७३.२	१२.०	.०६	२.१	.२२	१३.३	०.८० रु. (प्रति नग)

नोट :—विस्तृत सूची देखें, हिंसा विरोध पत्र, वर्ष १८, अंक ६ दिनांक ८-१-६८ में तथा वक्तृत्व कला के बीज भा० ५, पृ० ६७-६८ पर।

मानचित्र [२]

पौष्टिक खाद्य पदार्थ

नाम	कहाँ मिलता है ?	कब जरूरत होती है ?	क्यों जरूरत होती है ?
1. कार्बोज	मांडी में—अनाजों, रोटी, मैदा, आटा, आलू, सब्जी, चावल, सूखो छीमियों में, शक्कर, शीरा, फल, शहद, शर्बत आदि में । मांस व अण्डे में नहीं होता है ।	सारी उम्र, जब तक देह क्रियाशील रहती है, कार्बोज की आवश्यकता होती है ।	बल के लिए, देह के तापक्रम की कायम रखने व गर्मी देने के लिए आवश्यक है और देह के प्रोटीनों की रक्षा के लिए भी आवश्यक है ।
2. प्रोटीन	पनीर, दूध, मेवों, मूंगफली, खमीर, छीमियों, मटर, दाल, सोयाबीन, मांस, अण्डे आदि में ।	जीवन भर बढ़ने वाले शिशुओं, गर्भवती व दूध पिलाने वाली माताओं को अधिक चाहिए । शक्ति नष्ट करने वाली बीमारियों के बाद ऊतकों की मरम्मत के लिए ।	नई ऊतकों के निर्माण तथा प्रौढ़ ऊतकों की मरम्मत व रक्षा पेशियों के निर्माण व मरम्मत, शक्ति देने, खनिज पदार्थों तथा विटामिनों को ले जाने के लिए जरूरी है ।
3. वसा (चर्बी)	मक्खन, मार्जरीन, तेल, मलाई, पनीर, मेवे, चाकलेट, तथा छीमियों में, मांस, आदि में ।	जीवन भर, जब देह अति क्रियाशील होती है तो अत्यधिक आवश्यक है ।	जरूरी चर्बीदार अम्ल. शक्ति पानी, देह की प्रोटीन की रक्षा, देह में गर्मी पहुँचाने व विटामिन ए, डी को पहुँचाने के लिए ।
4. कैल्शियम	दूध, पनीर, हरी पत्ती वाली सब्जी, बादाम, मेवों, सोयाबीन, तथा सूखी छिमियों में, मांस अण्डे आदि में अत्यल्प ।	जीवन भर शैशव काल या विकास के दिनों में, गर्भवती स्त्रियों तथा दूध पिलाती स्त्रियों के लिए अत्यावश्यक ।	हड्डी और दांतों को मजबूत बनाने, रक्त जमाने, स्वाभाविक पेशी क्रियाशीलता हृदय गति को विधिवत रखने व अन्य खनिजों को काम में लाने के लिए ।

नाम	कहाँ मिलता है ?	कब जरूरत होती है ?	क्यों जरूरत होती है ?
5. फासफोरस	पनीर, छीमियों, मटर, दाल, साबूत अनाज, सोयाबीन आदि में, मांस, अण्डे आदि में भी।	जीवन भर, विकास के दिनों में, गर्भवती तथा दूध पिलाती माताओं क लिए अत्यावश्यक।	हड्डी, दांतों के निर्माण तथा उनको मजबूत बनाने, दैहिक कोषों की बनावट, विशेषकर मस्तिष्क के कोषों, स्नायु पैशियों के लिए प्रत्येक जीवित कोष में उपस्थित रहता है।
6. लोहा	हरी सब्जी, दाल, दूध, सूखे मेवों, समूचे अनाजों में, शीरे, सोयाबीन के बने पदार्थों में, खमीरे में मांस व अण्डे में अत्यल्प।	जीवन भर, शैवाल काल, प्रौढ़ावस्था में, गर्भावस्था तथा दूध पिलाने वाली स्त्रियों के लिए अत्यन्त आवश्यक।	रक्त निर्माण तथा कायम रखने व समस्त दैहिक कोषों को क्रियाशील बनाये रखने के लिए आवश्यक।
7. ताम्बा	पत्तीदार सब्जी, छिमियों, जड़वाली सब्जियों, शीरे, चाकलेट, कोको, समूचे अनाजों, फलों, मेवों आदि में।	जीवन भर, गर्भवती स्त्रियों व दूध पिलाने वाली माताओं के लिए अत्यधिक आवश्यक।	लोहे को काम में लाने के लिए तथा हेमोग्लोबिन की बनावट के लिए जरूरी है।
8. नायोसीन	सूखे मटर तथा छिमियों, गेहूँ अंकुर समूचे अनाज, लाल-पीली व हरी पत्ती-दार सब्जियों, सूखी खुर्बानी, बेरों, मूंगफली, दूध तथा पनीर आदि में।	जीवन भर, पर खास कर गर्भवती स्त्रियों तथा दूध पिलाती माताओं व अधिक शारीरिक परिश्रम करने वालों के लिए अत्यन्त आवश्यक है।	स्वस्थ स्नायु मंडल के लिए, पाचन क्रिया की स्वाभाविक गतिशीलता के लिए, पेलाग्रा रोग की रोकथाम में सहायक तथा त्वचा को स्वस्थ बनाये रखने के लिए आवश्यक।
9. विटामिन ए	दूध, मक्खन, मार्जरीन मलाई, हरी तथा पीली सब्जियों लाल टमाटर तथा पीले फलों में पाया जाता है। मांस, अण्डे आदि में भी।	जीवन भर, ज्वर के समय, वृद्धि के समय, संक्रामण के समय, गर्भवती तथा दूध पिलाने वाली माताओं के लिए आवश्यक है।	वृद्धि के लिए, यथार्थ दृष्टि के लिए, विशेष कर मध्यम प्रकाश में, मजबूत हड्डी, त्वचा, स्नायु के निर्माण के लिए, स्वस्थ श्लेष्मिक झिल्ली के लिए व रोग फैलने से रोकने के लिए आवश्यक।

नाम	कहाँ मिलता है ?	कब जरूरत होती है ?	क्यों जरूरत होती है ?
10. विटामिन बी (थाइमिन)	दूध, आलू, हरी सब्जी, सेव, मटर, दाल, मूंगफली, साबूत अनाज, आटे, सोयाबीन से बने पयार्थों, खमीरे तथा गेहूं के अंकुर आदि में भी। मांस, अण्डे आदि में भी अत्यल्प पाया जाता है।	जीवन भर, शैशवावस्था में, गर्भवती व दूध पिलाने वाली माताओं के लिए, बचपन में तथा आहार में कार्बोज पदार्थ की अधिक मात्रा में आवश्यकता होती है।	कार्बोज पदार्थों के यथोचित प्रयोग के लिए, भूख पाचन क्रिया, स्नायुओं तथा आंतों की स्वाभाविक गतिशीलता के लिए तथा बेरीबेरी की रोकथाम तथा चिकित्सा के लिए आवश्यक
11. रिवो लेविन विटामिन बी$_2$ या जी	दूध, पनीर, साबूत अनाज, पीली-लाल तथा हरी सब्जियों, विशेषकर सूखी खुर्बानियों, बेरों, सूखी छिमियों तथा सोयाबीन के पदार्थों में। मांस व अण्डे में भी अत्यल्प होते हैं।	जीवन भर, विकास के समय आवश्यकता होती है। गर्भवती व दूध पिलाती माताओं को, दैहिक परिश्रम तथा अधिक कैलोरी लेनी के समय आवश्यकता होती है।	वृद्धि, आम स्वास्थ्य और शक्ति, आंखों की दृष्टि, त्वचा, पाचन तथा स्नायु पद्धति तथा सारे शरीर के कोषों की रासायनिक कार्यवाही के लिए जरूरी है।
12. विटामिन सी	अम्लमय फलों, बेर, तरबूज, खरबूजे, टमाटर, सब्जियों विशेषकर कच्ची तथा आलू में जो छिलके सहित पकाया गया है। बकरे के मांस में भी।	जीवन भर इसकी जरूरत बहुत होती है। बचपन, गर्भकाल तथा दूध पिलाते समय तथा ऐसे रोगों में जब तापक्रम बहुत चढ़ जाता है आवश्यकता होती है।	वृद्धि के लिए, दांतों, हड्डियों, मसूड़ों को मजबूत तथा स्वास्थ्य रखने, संक्रामणों का मुकाबला करने, रक्त वाहिनियों तथा कोषों को मजबूत बनाने तथा स्कर्वी नाम के रोग को रोकने और चिकित्सा करने के लिए आवश्यक है।
13. विडामिन डी	दूध तथा सूर्य प्रकाश में। बकरे के मांस व अण्डे में भी।	जीवन भर, शैशव काल में, विकास के समय, गर्भवती व दूध पिलाने वाली स्त्रियों के लिए आवश्यक।	मजबूत हड्डी तथा दांतों के लिए, बच्चों को सूखे की बीमारी रोकने, प्रौढ़ों की हड्डी मुलायम होने से रोकने के लिए, कैलशियम तथा फासफोरस के उपयोग के लिए आवश्यक।
14. विटामिन के	पालक, बन्द गोभी, फूल गोभी, गाजर के सिरों, सोयाबीन के तेल तथा टमाटर आदि में।	बाल्यकाल में तथा गर्भवती स्त्रियों को अधिक जरूरत होती है।	यकृत की साधारण गतिशीलता, रक्त के उचित रीति से जमने के लिए आवश्यक है।

समीक्षार्थ पुस्तक की दो प्रतियां भेजना आवश्यक है—



साहित्य-समीक्षा

□ डॉ० नरेन्द्र भानावत

१. **कर्म विज्ञान**—उपाचार्य देवेन्द्र मुनि, प्र. श्री तारक गुरु जैन ग्रंथालय, शास्त्री सर्किल, उदयपुर–३१३००१, पृ. ६४०, मू. ५०.०० ।

उपाचार्य श्री देवेन्द्र मुनि प्रबुद्ध, सजग, सतत लेखनशील साहित्यकार हैं । साहित्य की विविध विधाओं में आपने विपुल साहित्य की सृष्टि की है। गूढ़ और जटिल विषयों पर भी आपने लिखा है तथा सरल-सरस कथा-साहित्य की सृष्टि भी आपने की है। प्रस्तुत पुस्तक कर्म सिद्धान्त जैसे गम्भीर, जटिल विषय पर होकर भी सहज, सरल, स्पष्ट और बोधगम्य बन पड़ी है । जैन दर्शन में 'कर्म' का अपना विशिष्ट अर्थ है। ईश्वर के कर्तृत्व को नकार कर इस सिद्धान्त द्वारा व्यक्ति के स्वातम और पुरुषार्थ को महत्त्व दिया गया है। कर्म के शुभाशुभ परिणाम के फलस्वरूप ही जीव जन्म-मरण के चक्र में आबद्ध हो संसार में परिभ्रमण करता रहता है। कर्म जैन दृष्टि में पौद्गलिक पदार्थ है जो मन, वचन, काया की प्रवृत्ति द्वारा राग-द्वेष युक्त होकर आत्म-चेतन को प्रभावित, आच्छादित करता है। संयम और तप द्वारा कर्मक्षय कर शुद्ध, बुद्ध, मुक्त हुआ जा सकता है। उपाचार्य श्री ने इस ग्रन्थ में कर्म के अस्तित्व के सन्दर्भ में पूर्वजन्म, पुनर्जन्म, जगत्-वैचित्र्य, कर्मबन्ध पर शास्त्रीय, लौकिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से प्रकाश डालते हुए कर्मवाद की ऐतिहासिकता पर समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। कर्मवाद पर किये गये प्रहारों का प्रमाणपुरस्सर उत्तर दिया है । कर्म के विराट स्वरूप की विवेचना करते हुये द्रव्य-भाव, शुभ-अशुभ, सकाम-निष्काम, घाति-अघाति आदि कर्म के रूपों पर भी विज्ञान-मनोविज्ञान सम्मत प्रकाश डाला है । कर्म-सिद्धान्त को तात्त्विक एवं व्यावहारिक दोनों रूपों में समझने में यह ग्रंथ बड़ा उपयोगी और सहायक है।

२. **अमृताशीति**—ले. आचार्य योगीन्द्रदेव, सम्पादन सुदीप जैन, प्र. श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, भामाशाह मार्ग, नया सर्राफा, उदयपुर-३१३००१, पृ. २१०, मू. १८.०० ।

आचार्य योगीन्द्र आठवीं-नवमी शती के साहित्यकार आचार्य हैं। अपभ्रंश भाषा में रचित आपकी 'परमात्म प्रकाश' एवं 'योगसार' कृतियाँ समादृत हैं। प्रस्तुत कृति ८० छन्दों (अमृत + अशीति = अस्सी) की संस्कृत रचना है। जैन मठ मूडबिद्री के सरस्वती भण्डार में इसकी एकमात्र कन्नड़ लिपि में निबद्ध ताड़पत्रीय प्रति उपलब्ध है। ग्रंथ के सम्पादक श्री सुदीप जैन ने बड़े श्रम एवं अध्यवसाय से इसे प्राप्त कर इसका गहराई से अध्ययन कर इसे प्रकाशित किया है। मूल पाठ के साथ आचार्य बालचन्द्र अध्यात्मी की कन्नड़ टीका दी गई है। श्री जैन ने पाठ का हिन्दी खण्डान्वय तथा टीका का हिन्दी अनुवाद, भावार्थ एवं टिप्पणी के साथ दिया है जिससे यह कृति सर्व साधारण के लिए उपयोगी बन गई है। इस कृति में आचार्य योगीन्द्र ने पुण्य की उपयोगिता, समता की महत्ता, योग और अध्यात्म तथा व्यवहार व निश्चय धर्मध्यान का स्वरूप समझाया है। इस अज्ञात ग्रंथ के प्रकाशन से माँ भारती के भण्डार में निश्चय ही श्रीवृद्धि हुई है।

३. **शत्रुंजय वैभव**—मुनि कान्तिसागर, प्र. कुशल संस्थान, ३९६६, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर–३, पृ. ४००, मू. १००.०० ।

भारतीय अध्यात्म-परम्परा में तीर्थों का बड़ा महत्त्व रहा है। अध्यात्म-साधकों की तपोभूमि एवं साधना-स्थली के रूप में जन-साधारण के लिए ये बड़े प्रेरणादायी हैं। शत्रुंजय (पालीताणा–गुजरात) तीर्थराज के रूप में अत्यन्त प्राचीनकाल से विख्यात रहा है। अनेक कवियों एवं श्रद्धालुओं ने इस तीर्थ की स्तवना में विविध काव्य रचे हैं। कई बार इस तीर्थ का जीर्णोद्धार हुआ है। विविध धातु प्रतिमा व अन्य शिलालेखों से इस तीर्थ की महिमा व ऐतिहासिकता पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। शत्रुंजय पर रचित रचनाओं के संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं पर प्रस्तुत ग्रंथ अपने ढंग का महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। मुनि श्री कान्तिसागरजी भाषा, साहित्य, इतिहास, पुरातत्त्व, कला एवं अध्यात्म के प्रखर विद्वान एवं गवेषक साधक थे। बड़ी लगन, निष्ठा और श्रम से उन्होंने विक्रम की १३वीं शती से १९वीं शती तक के ३२५ प्रतिमा-लेखों को संकलित कर उनके आधार पर अकारादि क्रम से १६३ जैन आचार्यों, मुनियों का परिचय दिया है। इनमें कई ऐसे हैं जो अब तक अज्ञात रहे हैं। मध्यकालीन इतिहास-लेखन के स्रोत के रूप में यह ग्रन्थ बड़ा उपयोगी है। प्रारम्भ में श्री रामवल्लभ सोमानी ने शत्रुंजय के त्रिविध पक्षों का अच्छा परिचय दिया है। इस शोधग्रन्थ के प्रकाशन के लिए कुशल संस्थान को बधाई।

□ □

समाज - दर्शन

हार्दिक अभिनन्दन और बधाई

दिल्ली—अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त न्यायविद् एवं विधिवेत्ता डॉ. लक्ष्मीमलजी सिंघवी को भारत सरकार ने ब्रिटेन में उच्चायुक्त (हाई कमिश्नर) नियुक्त किया है। डॉ. सिंघवी बहुआयामी प्रतिभा के धनी हैं, धर्म, दर्शन, साहित्य, शिक्षा, विधि आदि विविध क्षेत्रों में आपकी विशिष्ट पहचान और रचनात्मक सक्रिय भूमिका रही है। आप राष्ट्रीय एकता, विश्व बन्धुत्व, सामाजिक समता, मानव न्याय एवं भाषायी अस्मिता के लिए समर्पित रहे हैं। आपका अनेक राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं एवं संगठनों से सक्रिय जुड़ाव है। आप प्रबुद्ध चिन्तक, कुशल लेखक एवं संवेदनशील कवि हैं। हार्दिक अभिनन्दन एवं बधाई।

धनबाद—हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने अपने ४६वें वार्षिक अधिवेशन में वयोवृद्ध साहित्य-शोधक श्री भंवरलालजी नाहटा को अपनी सर्वोच्च उपाधि **'साहित्य वाचस्पति'** से विभूषित कर धर्म, दर्शन, साहित्य, संस्कृति, इतिहास, पुरातत्त्व, कला आदि क्षेत्रों में आपकी सतत साहित्य-सेवा के प्रति सम्मान प्रकट किया है। नाहटाजी प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, बंगला आदि भाषाओं के विद्वान्, कवि और अध्येता शोधकर्मी हैं। आपकी कई मौलिक एवं सम्पादित कृतियां हैं। हार्दिक अभिनन्दन एवं बधाई।

श्री अगरचन्द नाहटा स्मृति व्याख्यानमाला एवं युवा शोधकर्मी सम्मान समारोह

जयपुर—मनसा, वाचा, कर्मणा, किसी को कष्ट न देने की भावना, आचरण की पवित्रता व आत्मा के स्तर पर अभेद स्थिति का अनुभव राष्ट्रीय एकता को पुष्ट करने के मूल तत्त्व हैं। जैन आचार्य और मुनि इसी भावना का आचार और विचार के स्तर पर पूरे देश में पद-यात्रा कर प्रचार-प्रसार करते रहे हैं।

यह विचार अखिल भारतीय जैन विद्वत् परिषद एवं जैन श्वेताम्बर संघ, जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में विचक्षण भवन में आयोजित "अगरचन्द नाहटा

स्मृति व्याख्यानमाला" में इन्दौर विश्वविद्यालय के हिन्दी प्रोफेसर डॉ. गणेशदत्त त्रिपाठी ने "राष्ट्रीय एकता में जैन धर्म की भूमिका" विषय पर बोलते हुए १७ फरवरी को व्यक्त किये।

मुख्य अतिथि प्रसिद्ध साहित्यकार एवं कवि पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह शशि, निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने कहा कि महात्मा गांधी ने जैन धर्म में प्रतिपादित सत्य और अहिंसा को समाज-धर्म और राष्ट्र-धर्म के रूप में प्रतिष्ठित किया। श्रव्य और दृश्य माध्यमों से जैन-तत्त्व का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिये।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. दयाकृष्ण "विजय" ने कहा कि मन असीम ऊर्जा का क्षेत्र है। राष्ट्रीय एकता के लिए इसे अन्तःप्रकृति से जोड़ना आवश्यक है। इस दिशा में जैन धर्म के अहिंसा, अनेकान्त, अपरिग्रह और क्षमा के सिद्धान्त महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

प्रारम्भ में परिषद् के महामन्त्री डॉ. नरेन्द्र भानावत ने अगरचन्द नाहटा को साहित्य-साधक एवं शोध पुरुष के रूप में श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर जैन साहित्य, जैन दर्शन और जैन संस्कृति पर पी-एच. डी. करने वाले निम्न युवा शोधकर्मियों को सम्मान पत्र व शाल अर्पित कर सम्मानित किया गया—

नाम	विषय
१. **डॉ. श्रीमती मंजुला बम्ब**	: जैन संत कवि त्रिलोक ऋषि और उनका युग
२. **डॉ. श्रीमती पूर्णिमा कोठारी**	: उमास्वाति कृत 'प्रशम रति' का तुलनात्मक अध्ययन
३. **डॉ. संजीव भानावत**	: सांस्कृतिक चेतना के विकास में जैन पत्रकारिता का योगदान
४. **डॉ. धर्मचन्द जैन**	: बौद्ध प्रमाणवाद का जैन दृष्टि से परीक्षण
५. **डॉ. श्रीमती कुसुम जैन**	: जैन दिवाकर मुनि श्री चौथमलजी : व्यक्तित्व एवं साहित्यिक कृतित्व—एक अनुशीलन
६. **डॉ. राजकुमार जैन**	: जैन दर्शन में द्रव्य की अवधारणा और कारण—कार्य सम्बन्ध

७. **श्रीमती इन्द्रा जैन**	: श्रीमद् जवाहराचार्य जीवन और साहित्य
८. **डॉ. शारदा गोस्वामी**	: अगरचन्द नाहटा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

कार्यक्रम के अन्त में जैन श्वेताम्बर संघ के संयोजक उमरावमल चौरड़िया ने धन्यवाद दिया । डॉ. शशि ने विद्वत् परिषद् द्वारा प्रकाशित पाँच ट्रैक्ट पुस्तकों १. शान्ति, समता और एकता में जैन दर्शन का योगदान (चन्दनमल चाँद) २. मुक्ति : एक अनुशीलन (युवाचार्य डॉ. शिव मुनि) ३. विश्व शांति एवं अहिंसा (डॉ. महावीरसरन जैन) ४. Jainism : An Introduction (Dr. P. S. Jain) ५. मूल्य आधारित शिक्षा (डॉ. नरेन्द्र भानावत) का विमोचन किया । इस अवसर पर नाहटाजी के सुपुत्र श्री विजयचन्दजी नाहटा सपत्नीक उपस्थित थे । नाहटा साहित्य की प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। यह व्याख्यानमाला प्रतिवर्ष आयोजित की जायेगी ।

जैन पुस्तक मेला : क्यों, कहाँ, कैसे ?

प्राचीनकाल से आज तक अनेक जैन एवं जैनेतर विद्वान् महानुभावों एवं मुनि भगवन्तों द्वारा विविध भाषाओं में जैन दर्शन का गरिमामय साहित्य सर्जन होता रहा है एवं आधुनिक तकनीक के विकास से वह अमूल्य खजाना अब ऑडियो/विडियो केसेट्स में भी उपलब्ध है । जितना प्रचार साहित्य जगत् में अन्य प्रकाशनों का हुआ है उतना अध्यात्म साहित्य का नहीं हो पाया । उसमें भी अमूल्य/विपुल/विरल जैन साहित्य का प्रचार अतिअल्प प्रमाण में हुआ है, परिणामस्वरूप गहन एवं कलात्मक साहित्य आम जनता के पास सरलता से नहीं पहुँच पाया । मुख्य रूप से जैन साहित्य का अमूल्य खजाना पुस्तकालयों एवं ग्रन्थ भंडारों में ही सुरक्षित रहा । जैन साहित्य की जानकारी एवं उसे प्राप्त करने हेतु देश-विदेश के जिज्ञासुओं, मुमुक्षुओं, संशोधकों, ज्ञानपिपासुओं, इतिहासज्ञों को कठिनाइयाँ होती है, परिणामस्वरूप इन ग्रन्थों के आस्वाद एवं ज्ञान-प्रेरणा से वे वंचित रह जाते हैं । जैन शास्त्रों में वर्णित सात क्षेत्रों को प्रोत्साहन देना प्रत्येक श्रावक का कर्तव्य है । सात क्षेत्र के अन्तर्गत ज्ञान प्रचार/प्रसार की महिमा भी शास्त्रकारों ने अंकित की है । जिन मन्दिरों का निर्माण, साहित्य सर्जन, पाठशालाओं की स्थापना आदि कार्य जितने महत्त्वपूर्ण हैं, उतनी ही आवश्यकता ज्ञान प्रचार/प्रसार की है । इसी ध्येय को ध्यान में लेकर आप सभी से पूर्ण सहयोग की आशा के साथ **'जैन पुस्तक मेला'** का आयोजन करने का कार्यक्रम बनाया है । जिसमें जैन दर्शन विषयक साहित्य, प्रकाशन, पत्रिकायें,

ऑडियो/विडियो केसेट्स आदि अन्य सामग्री के प्रकाशकों, वितरकों, विक्रेताओं, प्रचारकों को प्रदर्शन एवं बिक्री हेतु सहर्ष आमंत्रित कर रहे हैं।

जैन पुस्तक मेला क्यों ?

१. जैन दर्शन विषयक प्रकाशित साहित्य प्रकाश में आये। २. दूर-सुदूर क्षेत्रों से विविध भाषाओं में प्रकाशित साहित्य आम जनता को सुगमता से उपलब्ध हो सके। ३. जैन-जैनेतर विद्वानों, संशोधकों, जिज्ञासुओं को प्रकाशन जानकारी प्राप्त हो सके। ४. प्रकाशकों, लेखकों, संस्थाओं, विक्रेताओं का रूबरू/प्रत्यक्ष परिचय, सम्पर्क व विचारों का आदान-प्रदान हो सके।

जैन पुस्तक मेला—कहाँ ? क्या ? कैसे ?

१. मेले का आयोजन सर्व प्रथम भारत के प्रमुख महानगर बम्बई के मध्य में एवं पूर्व-पश्चिम उपनगरों में (प्रत्येक जगह द्वि-दिवसीय) कुल ६ दिवसीय सन् १९९१ में पर्युषण के पश्चात् निम्नांकित स्थलों पर होगा--

A) दि. १४-१५ सितम्बर १९९१ (शनिवार-रविवार) बालचन्द हीराचंद कॉन्फ्रेंस हॉल (वातानुकूलित), दी इन्डियन मर्चेन्ट चैम्बर/चर्चगेट

B) दि. १८-१९ सितम्बर १९९१ (बुधवार-गुरुवार) हिन्दू महासभा हॉल/घाटकोपर (पश्चिम)

C) दि. २१-२२ सितम्बर १९९१ (शनिवार-रविवार) अशोक हॉल (वातानुकूलित)/विलेपार्ला (पश्चिम)

२. विस्तृत प्रचार हेतु इस विषयक जानकारी जैन पत्रों, दैनिक वर्तमान पत्रों, जैन मन्दिरों, उपाश्रयों, स्थानकों एवं सार्वजनिक स्थानों पर पोस्टरों द्वारा अधिकाधिक लोगों तक पहुँचायी जायेगी।

३. विविध भाषाओं में जैन दर्शन विषयक साहित्य एवं जैन धर्म, दर्शन, संत, कवि, कथा आदि का अन्य धर्मों/दर्शनों के साथ तुलनात्मक अध्ययन विषयक ग्रन्थों/पुस्तकों का प्रदर्शन एवं बिक्री हो सकेगी।

४. जैन धर्म/दर्शन पर आधारित प्रवचनों, स्तवनों, कथागीतों, कथानकों ऑडियो/विडियो केसेट्स का प्रदर्शन एवं बिक्री हो सकेगी।

५. जैन दर्शन साहित्य के प्रदर्शन एवं बिक्री इच्छुक कोई भी जैन-अजैन भाई-बहन, प्रकाशक संस्था, विक्रेता, मुद्रक आदि भाग ले सकेंगे।

६. तीन स्थानों पर आयोजित इस पुस्तक मेले में एक टेबल के साथ एक कुर्सी अथवा स्टूल दिया जायेगा।

७. यदि एक प्रदर्शक एक से ज्यादा टेबल आरक्षित करना चाहेंगे तो उन्हें वे एक साथ दिये जा सकेंगे।

८. एक टेबल (अनुमानित ६'×२' या ७'×१.१/२') एवं कुर्सी की देयक राशि प्रतिदिन की ३५० रुपये रहेगी। प्रदर्शकों को पूरे छः दिन के आयोजन में भाग लेना अनिवार्य होगा एवं बिक्री पर दस प्रतिशत कमीशन आयोजकों को देय होगा।

९. जैन पत्रिकाओं के प्रकाशक/मालिक टेबल आरक्षित नहीं करवा कर भी भाग लेना चाहें तो उनकी ओर से पत्रिका का ग्राहक शुल्क प्राप्त करने की सुविधा हमारे प्रतिनिधि द्वारा हो सकेगी। जिसमें आपके प्रतिनिधि की उपस्थिति आवश्यक नहीं रहेगी। इस हेतु (A) प्रवेश राशि सम्पूर्ण छः दिन की २५० रु. (दो सौ पचास रुपये) होगी। (B) प्राप्त शुल्क पर १० प्रतिशत कमीशन देय होगा। (C) अधिक से अधिक १० अंक प्रदर्शन हेतु भेजने होंगे (D) रसीद बुकें त्रिप्लीकेट भेजनी होंगी (E) रसीद बुकें व अंक अगस्त के प्रथम सप्ताह में भिजवायें।

१०. प्रवेश-पत्र मंगवाकर भरकर आप अपना आरक्षण मार्च १९९१ के प्रथम सप्ताह तक रजिस्टर्ड A/D से भेजकर शीघ्रतया करवा लेवें। आयोजन में स्थानानुसार सीमित संख्या में टेबल होने से अग्रिम आरक्षण के क्रम से स्थान दिये जायेंगे। स्थानाभाव होने पर प्रदर्शकों को रकम वापस लौटायी जायेगी। उसी प्रकार यदि टेबल पर्याप्त संख्या में आरक्षित नहीं हुए तो आयोजक द्वारा प्रदर्शक को पूरी रकम वापस लौटायी जायेगी।

११. अपरिहार्य कारणों से किसी भी प्रकार का परिवर्तन आयोजक के अधीन रहेगा।

१२. अपेक्षित सहयोग की प्राप्ति के आधार पर भारतवर्ष के अन्य शहरों में इसी प्रकार के आयोजन पर विचार किया जायेगा।

आशा ही नहीं मुझे सम्पूर्ण विश्वास है कि समयानुकूल ज्ञान प्रचार/प्रसार की मेरी भावना की आप हृदयपूर्वक अनुमोदना करते हुए यथोचित सहयोग देकर प्रोत्साहित करेंगे। साथ ही इस आयोजन को विशेष सुन्दर/सक्षम/व्यवस्थित व उपयोगी बनाने हेतु आपके अमूल्य सुझावों का भी इन्तजार रहेगा।

सम्पर्क सूत्र—**गीता जैन**
न्यू पब्लिकेशन्स, १२, हीरा भुवन
वी. पी. रोड, मुलुंड (पश्चिम) बम्बई-४०० ०८०
फोन : ५६०५४८३

महाराष्ट्र क्षेत्र में प्रचार-प्रसार का कार्यक्रम सम्पन्न

जयपुर—श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ जोधपुर के तत्त्वावधान एवं महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ जलगाँव के अन्तर्गत महाराष्ट्र क्षेत्र के धरणगाँव, अमलनेर, मांडल, शिरपुर, सिन्ध खेड़ा, खलणा, बाकोद, तोन्डापुर, फतेपुर, राजणी, जामठी, ऐदलाबाद, भुसावल, शाहपुर, पहुर, शेन्दूर्णी, जामनेर, वरखेड़ी, पाचोरा, भड़गाँव, कजगाँव, बाघली, चालीसगाँव, नागद, हीरापुर, न्यायडोगरी आदि स्थानों पर दिनांक १०-१-९१ से १८-१-९१ तक प्रचार-प्रसार का कार्यक्रम रखा गया। प्रचार-प्रसार कार्यक्रम में भाग लेने वाले श्री फूलचन्दजी मेहता उदयपुर, श्री प्रकाशचन्दजी जैन जलगाँव, श्री हीरालालजी मडलेचा जलगाँव, श्री प्रकाशचन्दजी सालेचा जोधपुर वाले थे।

उपर्युक्त सभी क्षेत्रों में धार्मिक जागृति लाने हेतु सामायिक-स्वाध्याय की प्रेरणा की गयी तथा सभी स्वाध्यायियों से सम्पर्क कर उनकी ज्ञानवृद्धि के बारे में आवश्यक जानकारी ली गयी। विनय, विवेक, सेवा, परोपकार, सत्य, अहिंसा, आदि सद्गुणों का विकास हो तथा सात्विक खानपान एवं व्यसन मुक्ति की विशेष प्रेरणा की गयी। जलगाँव क्षेत्र में ६-७ स्थानों पर स्थानीय शिविर निश्चित किये गये जो कि मई के अन्तिम व जून के प्रथम सप्ताह में आयोजित किये जावेंगे। इस प्रवास की मुख्य उपलब्धि दस नये स्वाध्यायी बनना रही है। जिन्होंने आगामी वर्ष पर्युषण में सेवा देने की भावना व्यक्त की है।

संक्षिप्त – समाचार

आबू पर्वत—अनुयोग प्रवर्तक पं. र. श्री कन्हैयालालजी म. 'कमल' के सान्निध्य में २२ मार्च से ३० मार्च तक आयम्बिल ओलीतप का आयोजन किया गया है। सभी भाई-बहिन आमंत्रित हैं। सम्पर्क सूत्र—श्री वर्धमान महावीर केन्द्र, सब्जी मण्डी के सामने, आबूपर्वत-३०७५०१, फोन : ४६६।

पाली—उपाध्याय श्री पुष्कर मुनिजी एवं उपाचार्य श्री देवेन्द्र मुनिजी आदि ठाणा का १६ जनवरी को नगर में पदार्पण हुआ। सभी वर्ग में धर्म-जागृति की लहर प्रवाहित है। उपाध्यायश्री के सुशिष्य श्री गणेश मुनिजी के सान्निध्य में २१ जनवरी को दीकली (उदयपुर) में बैरागी भगवतीलालजी की तथा विदुषी साध्वी श्री शीलकंवरजी के सान्निध्य में कुमारी ललिता लुंकड़ की भागवती दीक्षाएँ सानन्द सम्पन्न हुई। नव दीक्षितों का नाम क्रमशः गीतेश मुनि एवं साध्वी विकास ज्योति रखा गया है।

अहमदनगर—प्रवर्तक श्री रूपचन्दजी म. 'रजत' की ४९वीं दीक्षा जयन्ती २८ जनवरी को आचार्य श्री आनंद ऋषिजी म. सा. के सान्निध्य में 'अहिंसा दिवस' के रूप में मनाई गई। लिम्बड़ी सम्प्रदाय के शासन प्रभावक पं. र. श्री भावचन्द्रजी म. को 'जिन शासन चन्द्रमा' पद से विभूषित कर उनकी सेवाओं के प्रति सम्मान प्रकट किया गया।

मद्रास—उपाध्याय श्री केवल मुनिजी, महासती श्री पुष्पावतीजी एवं कानकंवरजी आदि सन्त-सतियों के सान्निध्य में २७ जनवरी को मैसूर निवासी सुश्री कान्ता ललवाणी की जैन-भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। नवदीक्षित साध्वी का नाम महासती कलाश्री जी रखा गया।

नई दिल्ली—अ० भा० श्वे० स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस के महामन्त्री श्री शांतिलालजी छाजेड़ ने 'जैन प्रकाश' के सम्पादक का पद ग्रहण किया है।

बारनी—विदुषी साध्वी श्री मैनासुन्दरजी के सान्निध्य में भोपालगढ़ में आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. की ८१वीं जयन्ती व नाडसर में आचार्यश्री की ७१वीं दीक्षा जयन्ती, तप-त्यागपूर्वक मनाई गई। जैन-जैनेतर लोगों ने ७१ दिन सामायिक करने, रात्रि भोजन न करने व ब्रह्मचर्य पालन के नियम लिये। बारनी में प्रवर्तनी महासती श्री बदनकंवरजी म. सा. की ५७वीं दीक्षा जयन्ती तप-त्यागपूर्वक मनाई गई। भाई-बहिनों में अच्छी धर्म-जागृति रही।

दिल्ली—श्री एस. एस. जैन सभा त्रिनगर, दिल्ली के तत्त्वावधान में उपप्रवर्तिनी महासती श्री शशिकान्ताजी एवं विदुषी साध्वी श्री सरलाजी की प्रेरणा से ३० जनवरी को ग्यारह दीक्षाएँ सानन्द सम्पन्न हुईं।

इन्दौर—अ. भा. गजेन्द्र जैन स्वाध्याय ध्यानपीठ, म. प्र. जैन स्वाध्याय संघ एवं श्री महावीर जैन स्वाध्याय शाला का संयुक्त स्नेह-सम्मेलन एवं स्वाध्यायी सम्मान समारोह जलगाँव के श्री रतनलालजी बाफना के मुख्य आतिथ्य एवं श्री नगीन भाई कोठारी की अध्यक्षता में मनाया गया। विशिष्ट अतिथि थे भारत जैन महामंडल के अध्यक्ष श्री संचयलालजी डागा। वर्ष ८९-९० का सर्वश्रेष्ठ स्वाध्यायी पुरस्कार कुमारी दक्षा कपासी को प्रदान किया गया। पर्युषण पर्व पर स्वाध्यायी के रूप में सेवा देने वालों का सम्मान किया गया। श्री फकीरचन्दजी मेहता, अशोक मंडलीक, गजेन्द्र नाहर, विमल ताँतेड़, नेमनाथजी जैन, चन्दनमलजी चौरड़िया आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

भोपालगढ़—श्री सरलाकुमारी कांकरिया सम्यग्ज्ञान पाठशाला में नियमित रूप से धार्मिक अध्ययन चालू है। १० फरवरी को वादविवाद प्रतियोगिता का आयोजन श्री सुगनचन्दजी कांकरिया की अध्यक्षता में किया गया।

बांसवाड़ा—श्री व. स्था. जैन श्रावक संघ ने केन्द्रीय व राज्य सरकारों से मांग की है कि नये यांत्रिक बूचड़खानों का निर्माण बन्द किया जाय, गोवंश (गाय-बैल) को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाय, कानूनन गोवंश वध बन्द किया जाय तथा किसी भी पशु की चमड़ी या उसके मांस के निर्यात पर स्थायी प्रतिबन्ध किया जाय। गर्भ-निर्धारण प्रक्रिया एवं कन्या भ्रूण हत्या पर पूर्णतः कानूनन बंदिश लगाकर इसे दंडनीय अपराध घोषित करने की भी माँग की गई।

अन्ना नगर (मद्रास)—श्री जैन संघ द्वारा आयोजित नेत्र चिकित्सा शिविर में ३०० मरीजों की जाँच कर ४२ आपरेशन किये गये व १२५ को चश्मे दिये गये।

इन्दौर—सुप्रसिद्ध बोध कथा लेखक श्री मोतीलालजी सुराणा को उनकी साहित्य-सेवाओं के उपलक्ष्य में 'साहित्यकार रामविलास शर्मा स्मृति अवार्ड' प्रदान किया गया। हार्दिक बधाई।

अजमेर—श्री जिनदत्त सूरि मंडल द्वारा वर्ष १९९०–९१ के लिए १५०००) की ऋण-छात्रवृत्ति व ५०००) की निराश्रित सहायता स्वीकार की गई।

बजरिया–सवाई माधोपुर—१३ जनवरी को समाजसेवी सुश्रावक श्री नथमलजी हीरावत, जयपुर ने श्री जैनरत्न युवक संघ के सदस्यों एवं स्वाध्यायियों को निरन्तर ज्ञानवृद्धि करते हुए सेवा-कार्यों में अग्रणी रहने की प्रेरणा दी।

भवानीमंडी—धर्मनिष्ठ उत्साही युवा श्री कैलाशचन्द बोहरा सराफा एसोसियेशन के अध्यक्ष एवं श्री अभयकुमार कड़ावत सचिव चुने गये।

नगरी—महावीर मंडल द्वारा आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में श्रीमती अनीता नाहटा प्रथम, पुण्या नाहटा द्वितीय, अजयकुमार छाजेड़ एवं संगीता छाजेड़ तृतीय रहे।

बजरिया–सवाई माधोपुर—अ० भा० जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, क्षेत्रिय कार्यालय, बजरिया, सवाईमाधोपुर के लिए सर्वसमिति से कार्यकारिणी समिति में निम्न नाम सम्मिलित किये गये—संरक्षक–श्री तेजराजजी भण्डारी, निवाई, उपाध्यक्ष–श्री केवलकुमारजी ललवाणी, बून्दी, श्री भैरूलालजी जैन, चौथ का बरवाड़ा, श्री भंवरलालजी सिंघवी, मालपुरा, संगठन मंत्री श्री जितेन्द्र जी कोठारी, देवली छावनी, श्री ओमप्रकाशजी कोठारी, बून्दी, श्री जम्बूकुमार जी जैन, अलीगढ़, श्री गिरधारलालजी जैन, सवाईमाधोपुर, श्री चौथमलजी जैन,

बजरिया-सवाईमाधोपुर, स्थानीय प्रतिनिधिगण—ककोड़ (टोंक), श्री प्रेमचन्द जी जैन, उनियारा (टोंक), श्री रामनिवासजी जैन, टोडारायसिंह, श्री भंवरलाल जी चपलोत, सुमेरगंज मंडी, श्री घनश्यामजी जैन, मोहम्मदपुरा वाले।

मद्रास—श्री राजस्थान एस. एस. जैन सेवा संघ के वर्ष १९९१-९२ के चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये—श्री रतनचन्दजी बोहरा, अध्यक्ष, श्री एस. बादलचन्दजी चोरड़िया, उपाध्यक्ष, श्री जे. दुलीचन्दजी चोरड़िया, मंत्री, श्री आर. प्रसन्नचन्दजी चोरड़िया, सहमंत्री, श्री एस. सायरचंद जी चोरड़िया, कोषाध्यक्ष। श्री एम. पारसमलजी चोरड़िया, श्री भंवरलालजी गोठी, श्री आर. भीकमचन्दजी बाफणा, श्री एस. मोतीचन्दजी चोरड़िया, श्री पी. किशनलालजी बेताला, श्री टी. पन्नालालजी सुराणा, श्री उमरावमलजी सुराणा, श्री जुमरमलजी बागमार, श्री दीपचन्दजी बोकड़िया, श्री कनकमलजी चोरड़िया, श्री जबरचन्दजी बोकड़िया सदस्य।

यह संस्था गत १५ वर्षों से स्वधर्मी भाइयों के लिए शिक्षा, चिकित्सा तथा जीवन-निर्वाह में सहयोग प्रदान करती आ रही है। उन बन्धुओं की जिन्हें सहायता की अत्यन्त आवश्यकता है, अपना विवरण पूरी प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करायें। सम्पर्क सूत्र—मंत्री, श्री राजस्थानी एस. एस. जैन सेवा संघ, ३४८, मिन्ट स्ट्रीट, मद्रास-६०० ०७९।

दिल्ली—'णाणसायर' (जैन शोध पत्रिका) का जून १९९१ अंक—'नवें दशक का जैन साहित्य' अंक के रूप में प्रकाशित होगा। लेखकों/प्रकाशकों से निवेदन है कि १९८१ से १९९० के मध्य प्रकाशित पुस्तकों की सूची अपेक्षित सूचनाओं के साथ (पुस्तक का नाम, विषय, लेखक-सम्पादक का नाम-पता, प्रकाशक का नाम-पता, प्रकाशन वर्ष, पृष्ठ संख्या, आकार, सजिल्द/अजिल्द-मूल्य, उपलब्ध/अनुपलब्ध) ३० अप्रैल '९१ तक अवश्य भिजवा दें। समीक्षार्थ दो प्रतियों का आना आवश्यक होगा।

—**कुसुम जैन**, प्रबन्ध सम्पादिका—'णाणसायर'
बी-५/२६३, यमुना विहार, दिल्ली-११० ०५३

जयपुर—अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर द्वारा जनवरी-९१ में आयोजित अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम परीक्षा का परिणाम निम्न प्रकार रहा :—

प्रथम श्रेणी-१७, १८, २१

द्वितीय श्रेणी-१९, २०

शोक - श्रद्धांजलि

बागलकोट—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री नेमीचन्दजी बेताला का ७८ वर्ष की आयु में २६ जनवरी को निधन हो गया। आप सरल प्रकृति के मिलनसार व्यक्ति थे। आप नियमित सामायिक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय आदि करते थे। सोमणा गाँव (राजस्थान) में स्कूल बनवाने में आपने सहयोग प्रदान किया था। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं।

पीपाड़सिटी—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री जवरीलालजी गुन्देचा का फागुन वद १२ को हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया। आप नियमित स्थानक में जाते व संत-सतियों की सेवा में आगे रहते थे। आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के आप मुख्य श्रद्धावान श्रावक थे।

दुर्ग—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री सूरजमलजी मेहता का १७ जनवरी को ८० वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपके कई व्रत, नियम एवं प्रत्याख्यान थे। गत १८ वर्षों से आपने शीलव्रत अंगीकार कर रखा था। आप आचार्य श्री नानेश के अनन्य भक्त थे।

इन्दौर—श्री नरेन्द्रसिंहजी सुपुत्र श्री रमेशचन्दजी बुलिया का २०–२–९१ को ५२ वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। आप परदेशीपुरा इन्दौर जैन संघ के अध्यक्ष थे। ९–२–९१ को आप श्री प्रेमकुँवरजी म. साहब की सेवा में दर्शन हेतु जैन स्थानक पहुँचे। वहाँ आप नया जैन स्थानक भवन बनाने हेतु वार्त्तालाप व चर्चा कर रहे थे। तत्पश्चात् मांगलिक लेकर नवकार मन्त्र बोलते-बोलते महाराज साहब के समक्ष ही बेहोश हो गये। तत्काल डॉक्टर बुलाकर अस्पताल में भर्ती किये गये। जाँच-पड़ताल से मालूम हुआ कि पेरेलाइज व ब्रेन हेमरेज हो गया। आप धर्म प्रेमी, स्नेही व मिलनसार स्वभाव के विशिष्ट सामाजिक कार्यकर्ता थे।

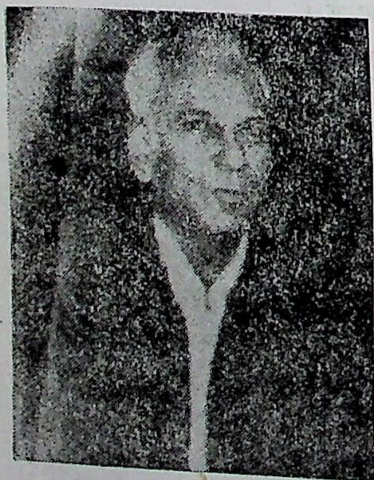
जोधपुर—श्री धनरूपचन्दजी चौपड़ा, महामन्दिर, जोधपुर की धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला चौपड़ा का ४८ वर्ष की आयु में २ मार्च को निधन हो गया। आप धर्मनिष्ठ, कर्तव्यपरायण, कर्मठ सेवाभावी महिला थीं। आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी। आप श्री नरपतमल जी लोढ़ा, एडवोकेट (जोधपुर) की छोटी बहन थीं।

जोधपुर—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक धर्मपरायण श्री बलवंतराजजी चामड़ मेहता का ५ मार्च को आकस्मिक निधन हो गया। आपकी आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के प्रति अटूट आस्था थी। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं। आप वरिष्ठ स्वाध्यायी भंडारी श्री सरदारचन्दज़ी जैन के बहनोई थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति हम सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल, 'जिनवाणी' एवं अ. भा. जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोकविह्वल परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

—सम्पादक

स्वर्गीय श्री हीराचंदजी मेहता, ग्वालियर का जीवन परिचय जिनकी पुण्य तिथि २६ दिसम्बर, १९९० को थी



श्रीमान् हीराचन्दजी मेहता का जन्म उच्च जैन परिवार में हुआ। वे बड़े ही धर्मनिष्ठ, कर्तव्य-परायण, कर्मठ सेवाभावी और स्वधर्मी वात्सल्य के प्रति समर्पित जीवन आदर्श थे। इनके ज्येष्ठ पुत्र श्री प्रकाशचन्द्र जी मेहता और उनसे छोटे अन्य पुत्र श्री रमेशचन्दजी, अशोककुमारजी, राजकुमारजी हेमकुमारजी और खेमराजजी मेहता हैं।

प्रेषक :—
मैसर्स **प्रकाश साड़ी** कार्नर
जीवाजी चौक, बाड़ा,
लश्कर, ग्वालियर

साभार प्राप्ति स्वीकार

२५१) रु० 'जिनवाणी' की आजीवन सदस्यता हेतु प्रत्येक

२७४७. श्री वर्धमान जैन पुस्तकालय, दिल्ली

२७४८. श्री राजेशजी कटारिया, बैंगलौर

२७४९. श्री प्रकाशचन्दजी करनावट, जयपुर

२७५०. श्री महावीरप्रसादजी मुकेशकुमारजी जैन, बजरिया (सवाईमाधोपुर)

२७५१. श्री चम्पालालजी मिश्रीमलजी गांधी, इचलकरंजी (महाराष्ट्र)

'जिनवाणी' को सहायतार्थ भेंट

२५१) रु० श्री उगमचन्दजी कल्याणचन्दजी मुणोत, मद्रास
आचार्य श्री के दर्शन बागवास में करने के उपलक्ष्य में भेंट।

१०१) रु० श्री मांगीलालजी रांका, जोधपुर
स्वर्गीय श्रीमती बिदाम बाई धर्मपत्नी श्री मांगीलालजी रांका की तृतीय पुण्य स्मृति में भेंट।

१०१) रु० श्री रणजीतसिंहजी पीपाड़ा, विजयनगर, अजमेर
चि. राजेन्द्रजी पीपाड़ा का शुभ विवाह श्री कन्हैयालालजी लोढा की सुपौत्री एवं श्री लालचन्दजी लोढा की सुपुत्री सौ. कां. पद्मिनी के साथ सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

१०१) रु० श्री चन्दनमलजी दौलतराजजी बांठिया, अहमदाबाद
श्री चन्दनमलजी बांठिया की पुण्य स्मृति में भेंट।

१०१) रु० श्री अशोककुमारजी भंसाली
आचार्य श्री की ७१वीं दीक्षा जयन्ती पाली में मनाने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

१०१) रु० श्री दुलीचन्दजी प्रबोधकुमारजी पींचा, मद्रास
चि. प्रणव (सुपुत्र) श्री दुलीचन्दजी पींचा नागौर निवासी हॉल मुकाम अलवर पेठ मद्रास का शुभ विवाह सौ. कां. संध्या

(सुपुत्री श्री बाबूलालजी हरण) के साथ होने के उपलक्ष्य में भेंट।

१०१) रु० श्री प्रेमचन्दजी किशनलालजी रांका, मद्रास

सौ. कां. दमयंतिदेवी (सुपुत्री स्व. श्री चम्पालालजी रांका) जैतारण निवासी हाल मुकाम पुटुपेठ मद्रास का शुभ विवाह चि. मंगलचन्दजी भण्डारी (सुपुत्र श्री इन्द्रचन्दजी भण्डारी) कुचेरा राजस्थान निवासी हाल मुकाम टी. नगर, मद्रास के साथ होने के उपलक्ष्य में भेंट।

१००) रु० श्री बी. गजराजजी बोकड़िया, सेलम

अपनी सुपुत्री सौ. कां. मंजुकुमारी का शुभ विवाह दिनांक ६-२-१९९१ को शा. लक्ष्मीचन्दजी सोकला ऊटी वालों के सुपुत्र श्री महेन्द्रकुमारजी के साथ सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

५१) रु० श्री मगनलालजी रूनवाल, रतलाम

पूज्य पिताजी श्रीमान् हीरालालजी रूनवाल झाबुआ वाले का दिनांक १५-१-१९९१ को दिवंगत होने से उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

५१) रु० श्री रमेशचन्दजी जैन, अलीगढ़ रामपुरा, हाल मुकाम नवसारी गुजरात

नवीन गृह प्रवेश एवं कुम्भ-कलश रखने तथा दिनांक २९-१-१९९१ को महामंत्र नवकार के २४ घन्टे अखण्ड जाप किये जाने के उपलक्ष्य में भेंट।

५१) रु० श्री एच. रिकबचन्दजी संचेती, कांचीपुरम्

अपने सुपुत्र चि. विमलकुमार संग निर्मलाकुमारी सुपुत्री श्री दुलराजजी पगारिया, पैरनामल्लर के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में भेंट।

५१) रु० श्री चन्दनबाला महिला मंडल, विजापुर

श्री लक्ष्मीचन्दजी म. सा. की पुण्य स्मृति में भेंट।

५१) रु० श्री पुखराजजी केशरीमलजी पितलीया, पाथरकवड़ा

चि. मंगला (सुपुत्री पुखराजजी पितलीया) एवं चि. राजे

कुमार (सुपुत्र बाबूलालजी मुणोत भंड़ारा निवासी) का विवाह दिनांक १६-२-१९९१ को होने के उपलक्ष्य में भेंट।

५१) रु० श्री कैलाशचन्दजी अशोककुमारजी बोहरा, भवानीमंडी

परासली तीर्थ ध्वजारोहण महोत्सव २३ फरवरी, १९९१ के अवसर पर भवानीमण्डी से आयोजित पद-यात्रा के सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

५०) रु० श्री प्रेमचन्दजी धूपीया एवं डॉ. मोहनचन्दजी जैन, रायपुर (झालावाड़)

पू. श्री पूनमचन्दजी साहब धूपीया के ९६वें जन्म दिवस ३-२-१९९१ को होने के उपलक्ष्य में भेंट।

३५) रु० श्री पुखराजजी बेताला, बागलकोट

श्रीमान् नेमीचन्दजी बेताला का ७८ वर्ष की आयु में दिनांक २६ जनवरी, १९९१ को सुबह १०.४० मिनिट पर निधन हो गया, उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

३१) रु० श्री छीतरमलजी महावीरप्रसादजी जैन, बजरिया, सवाईमाधोपुर

श्री मुकेशकुमारजी सुपुत्र श्री महावीरप्रसादजी जैन (पान वाले) का तिलक का दस्तूर दिनांक ३-१२-१९९० को हुआ, इस खुशी में भेंट।

२३) रु० श्रीमान् ठाकुर सीतारामसिंहजी दरबार, भवानीमण्डी

श्री कैलाशचन्दजी अशोककुमारजी बोहरा द्वारा भवानीमण्डी से परासली तीर्थ को आयोजित पद-यात्रा समारोह सानन्द सम्पन्न होने की प्रसन्नता में भेंट।

२१) रु० श्री मदनलालजी धींग "व्याख्याता", बोहेड़ा, चित्तौड़गढ़

अपनी सुपुत्री सरोज के विवाहोत्सव के उपलक्ष्य में भेंट।

२१) रु० श्री रमेशचन्दजी शर्मा, एडवोकेट, भवानीमण्डी

पद-यात्रा आयोजक भाई कैलाशचन्दजी अशोकजी बोहरा भवानीमण्डी एवं उनके परिवार जन की परासली तीर्थ में आयोजित भव्य समारोह में श्री संघ द्वारा सम्मानित करने एवं माल्यापर्ण करने की प्रसन्नता में भेंट।

२१) रु० श्री माणकचन्दजी बोहरा, अध्यक्ष अहिंसा प्रचार समिति पंचपहाड़, भवानीमण्डी

भवानीमण्डी से परासली तीर्थ पद-यात्रा आयोजक बन्धु श्री कैलाशचन्दजी अशोककुमारजी बोहरा एवं उनके परिवार जन को परासली ध्वजारोहण समारोह में समाज द्वारा माल्यापर्ण सम्मानित किये जाने की प्रसन्नता में भेंट।

११) रु० श्री राजेश मेहता, दुर्ग

श्री सूरजमलजी मेहता की पुण्य स्मृति में भेंट।

११) रु० श्री राजकुमारजी आत्मज श्री बागमलजी कुण्डल बोहरा, भवानीमण्डी

भाई कैलाशचन्दजी अशोककुमारजी बोहरा भवानीमण्डी द्वारा आयोजित अनुपम पद-यात्रा समारोह सम्पन्न होने की प्रसन्नता में भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को भेंट

१५०१) रु० श्री चन्दनबाला महिला मण्डल, विजापुर

श्री लक्ष्मीचन्दजी म. सा. की पुण्य स्मृति में जीव दया के लिये भेंट।

स्वाध्याय संघ को भेंट

५१) रु० श्री चन्दनबाला महिला मण्डल, विजापुर

श्री लक्ष्मीचन्दजी म. सा. की पुण्य स्मृति में भेंट।

साहित्य प्रकाशन हेतु सहायतार्थ

५०१) रु० श्रीमान् उगमचन्दजी कल्याणचन्दजी मुणोत, मद्रास

साहित्य प्रकाशन हेतु भेंट।

५०१) रु० साहित्य प्रकाशन की आजीवन सदस्यता हेतु

३६१. श्री पदमचन्दजी ललवानी, पाली

यह शरीर नौका रूप है, जीवात्मा उसका नाविक है और संसार समुद्र है। महर्षि इस देह रूपी नौका के द्वारा संसार-सागर को तैर जाते हैं। उत्तराध्ययन २३/७३

"जिनवाणी" का विवरण

[नियम संख्या ८]

१. प्रकाशन स्थल	:	जयपुर
२. प्रकाशन की अवधि	:	मासिक
३. मुद्रक का नाम	:	फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	जौहरी बाजार, जयपुर-३
४. प्रकाशक का नाम	:	सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	बापू बाजार, जयपुर-३
५. सम्पादक का नाम	:	डॉ० नरेन्द्र भानावत, डॉ० शांता भानावत
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	सी-२३५-ए, दयानन्द मार्ग, तिलक नगर जयपुर
६. स्वामित्व	:	सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, [पारमार्थिक संस्था] बापू बाजार, जयपुर-३

मैं चैतन्य मल ढढ्ढा, मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया विवरण सही है।

[चैतन्य ढढ्ढा]
प्रकाशक
मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,
जयपुर

दिनांक १-३-९१

जिनवाणी

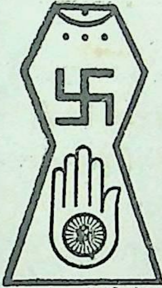


ास्त
991

श्रावण
२०४८

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा, कल्याणी।
द्रोह, मोह, छल, मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ।।



नगर–रह–चक्क–पउमे,
चंदे सुरे समुद्द-मेरुम्मि।
जो उवमिज्जइ सययं,
तं संघगुणायरं वंदे ।।

—नन्दीसूत्र

नगर, रथ, चक्र, पद्म, चन्द्र, सूर्य, समुद्र और मेरु की जिसे उपमा दी जाती है, ऐसे गुणाकर संघ की मैं सतत स्तुति करता हूँ।

आचार्य पद चादर महोत्सव अंक

अगस्त, १९९१
वीर निर्वाण सं० २५१७
श्रावण, २०४८

वर्ष : ४८ अंक : ८

मानद सम्पादक :
डॉ० नरेन्द्र भानावत, एम.ए.,पी-एच.डी.

सम्पादन :
डॉ० (श्रीमती) शान्ता भानावत
एम.ए., पी-एच.डी.

संस्थापक :
श्री जैनरत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक :
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
बापू बाजार दुकान नं० १८२-१८३ के ऊपर
जयपुर–३०२००३ (राजस्थान)
फोन : ५६५९९७

सम्पादकीय सम्पर्क सूत्र :
सी-२३५ ए, दयानन्द मार्ग, तिलक नगर
जयपुर–३०२००४ (राजस्थान)
फोन : ४७४४४

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं० ३६५३/५७

स्तम्भ सदस्यता : १००१ रु०
संरक्षक सदस्यता : ५०१ रु०
आजीवन सदस्यता : देश में २५१ रु०
आजीवन सदस्यता : विदेश में ७५१ रु०
त्रिवर्षीय सदस्यता : ५५ रु०
वार्षिक सदस्यता : २० रु०

मुद्रक :
फ्रैण्ड्स प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
जयपुर–३०२००३

अनुक्रमणिका

☐ प्रवचन/निबन्ध ☐

आचार्य भगवन की सद्शिक्षाओं का पालन करें	: आचार्य श्री हीराचंदजी म. सा.	१
रत्नवंश के मूलपुरुष एवं पूर्व आचार्य	: भंडारी श्री सरदारचंद जैन	५
आचार्य श्री हीराचंदजी म. सा. का परिचय	: संकलित	६
उपाध्याय श्री मानचन्दजी म. सा. का परिचय	: संकलित	१३
संघ-सेवा में सक्रिय रहें	: श्री जगदीशमल कुम्भट	१५
वर्षावास—सन्देश	: आचार्य श्री आनंद ऋषिजी म.सा.	१७
दीक्षा का सत्यं, शिवं, सुन्दरम्	: पं. र. मुनि श्री नेमिचन्द्रजी	१६
द्रव्य का स्वरूप	: प्रतिभा चौरड़िया	३१
उपनिषद् में प्रयुक्त परमेष्ठि पद	: डॉ. साध्वी सुरेखा श्री	३४
सन्त-दर्शन-यात्रा उद्देश्य, स्वरूप और आचार-संहिता	: जयदीप	३७
क्या सार्थकता है चातुर्मास की ?	: अनीता मेहता 'नेकी'	४२
पशुओं का उत्पीड़न : हमारा मनोरंजन	: श्री पन्नालाल मुन्धड़ा	४४

☐ प्रसंग/कथा/सूक्ति ☐

प्रेम व करुणा में सबसे अधिक शक्ति है	: श्री देवीचन्द भंडारी	११
सामायिक की खुराक	: श्री अवकाश मूणत	३६
बेटे, यह सब बदला जा सकता है	: मेरिड कोरीगन मेग्वायर	४०
स्वाध्याय का लाभ	: श्री लक्ष्मीचन्द जैन	४३

☐ आचार्य पद चादर महोत्सव ☐

समारोह-विवरण व शुभ कामनाएँ	: संकलित	४७

☐ अंकेक्षण रिपोर्ट ☐

श्री भूधर कुशल धर्मबन्धु कल्याण कोष वर्ष १९८९ व १९९०	: संकलित	११६

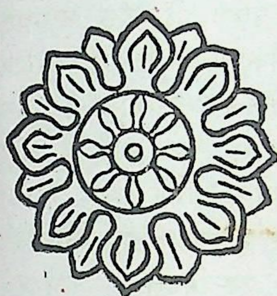
☐ कविता ☐

मुनि 'हीरा' अनमोल हमारा	: श्री गौतम मुनि	१२
चातुर्मास में	: अनीता मेहता 'नेकी'	३०
पशु-पक्षी हैं मित्र हमारे	: डॉ. नरेन्द्र भानावत	४५
दो गीत	: वर्षा सिंह	४६

☐ स्तम्भ ☐

अपनी बात : संघ की सदा जय हो	: डॉ. नरेन्द्र भानावत	iii
समाज-दर्शन	: संकलित	७३
साभार प्राप्ति स्वीकार	: मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल	१०३

अपनी बात



संघ की सदा जय हो !

□ डॉ. नरेन्द्र भानावत

श्रमण-परम्परा में धर्म संघ का बड़ा महत्त्व है। तीर्थंकर लोक-कल्याण की भावना से धर्मसंघ की स्थापना करते हैं। संघ को 'तीर्थ' कहा गया है। तीर्थ वह है, जो भव-सागर से तिरने में—तारने में तीर का काम करे। इस धर्म-तीर्थ के ४ अंग हैं—साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका। भगवान् महावीर ने जिस धर्म की स्थापना की, उसकी परम्परा आज भी अविच्छिन्न रूप से चली आ रही है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि महावीर के बाद जैन संघ कई गण, गच्छ, सम्प्रदायों में विभक्त हो गया, पर यह तथ्य है कि इन सबकी परम्परा मोटे तौर से आज भी अस्तित्व में है और अपना प्रभाव बनाये हुए है।

स्थानकवासी परम्परा में आचार्य कुशलो जी एक प्रभावशाली आचार्य हुए हैं। वे रत्नवंश के मूल पुरुष माने जाते हैं। इन्हीं के शिष्य श्री गुमानचन्दजी म० रत्नवंश के प्रथम आचार्य हुए, पर इन्होंने अपने नाम पर नहीं, अपने प्रतापी शिष्य श्री रतनचन्द्रजी म. सा. के नाम पर अपनी परम्परा चलाने का संकेत दिया। यह परम्परा आचार्य—रतनचन्द्र म. सा. की सम्प्रदाय के नाम से विख्यात है। इसी परम्परा में सप्तम आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. हुए, जिनका २१ अप्रेल १९९१ को निमाज में संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। उन्होंने रत्नवंश के अष्टम पट्टधर के रूप में आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. को मनोनीत किया, जिसका आचार्य पद चादर महोत्सव समारोह चतुर्विध संघ की साक्षी में २ जून, १९९१ को जोधपुर में उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

संघ मात्र समूह का नाम नहीं है। संघ एक शक्ति है, प्रेरणा है जिसके माध्यम से संगठित रूप में आत्म-कल्याण और लोक-कल्याण की विविध प्रवृत्तियां सम्पन्न होती हैं। इस संघ का शास्ता, नायक 'आचार्य' कहा गया है, जिसे पंचपरमेष्ठि में तीसरा स्थान दिया गया है। आचार्य पृथ्वी पर चलता-फिरता कल्पवृक्ष है, जिसकी शीतल, मधुर छाया में—मार्गदर्शन में समाज फलता-फूलता है।

बौद्ध धर्म में 'संघ शरणं गच्छामि' कह कर संघ की शरण में जाने की भावना व्यक्त की गई है। जैन आगम 'नन्दीसूत्र' में संघ की स्तुति करते हुए उसे नगर, रथ, चक्र, कमल, चन्द्र, सूर्य, समुद्र और मेरु पर्वत की आठ उपमाएँ दी गई हैं। संघ ऐसा नगर है, जिसमें उत्तम गुणों के अनेक भवन हैं, शास्त्र-रत्न भरे पड़े हैं, सम्यक् दर्शन रूप सड़कें हैं और अखण्ड चारित्र रूप परकोटा है। संघ ऐसा चक्र है, जिसमें संयम रूप मध्य बिन्दु (तुम्ब) है, तप रूप आरें हैं और सुदृढ़ सम्यक्त्व रूप परिधि है। संघ ऐसा रथ है, जिसमें शील रूप पताका फहराती है, तप-नियम रूप घोड़े जुतते हैं और स्वाध्याय रूप मंगल वाद्य निनादित होते हैं। संघ ऐसा कमल है, जो श्रुत रूपी दीर्घ मृणाल पर स्थित हो कर्म रज रूपी कीचड़ और जल से ऊपर उठा हुआ है, पंच महाव्रत रूप जिसकी पंखुड़ियाँ हैं, सदाचार रूप केशर (पुष्प पराग) है, जो श्रावक रूप मधुकरों द्वारा परिवेष्टित है, जिनेन्द्ररूप सूर्य किरणों के स्पर्श से जो प्रस्फुटित है, श्रमण रूपी जिसके सहस्र पत्ते हैं। संघ ऐसा चन्द्र है, जिसमें तप-संयम रूप मृग लांछन है, निर्मल सम्यक्त्व रूप जिसकी ज्योत्स्ना है, संघ ऐसा सूर्य है, जो ज्ञान रूप उद्योत से दीप्तमान है। संघ ऐसा समुद्र है, जिसमें धैर्य की लहरें उठती रहती हैं, जो अक्षुब्ध और मर्यादाशील है, विस्तृत और गहरा है। संघ ऐसा मेरु पर्वत है, जिसकी सम्यक् दर्शन वज्र पीठिका है, अहिंसादि गुणों की स्वर्ण-मेखला है, इन्द्रिय-दमन आदि नियम रूप स्वर्ण शिलाएँ हैं, संतोष रूप नन्दन वन है, जिसमें जीव दया रूप सुन्दर कन्दराएँ हैं, शुभ प्रवृत्ति रूप सतत प्रवाही झरने हैं, गुणधारी मुनि रूप कल्पवृक्ष हैं, जो धर्म रूप फल से युक्त हैं, श्रेष्ठ ज्ञान रूप जिसकी चूलिका है।

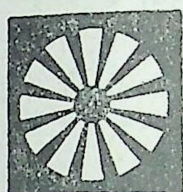
संघ को दी गई उपर्युक्त उपमाएँ गुण-निष्पन्न हैं। ये गुण आचार्य श्री के नेतृत्व में संघ में निरन्तर वृद्धिमान हों, इन्हीं भावनाओं के साथ अष्टम आचार्य श्री हीराचन्दजी म. सा. एवं उपाध्याय श्री मानचन्दजी म. सा. का हार्दिक अभिनन्दन और संघ के कल्याण की मंगल कामना।

धर्म-व्यवस्था

धर्म-व्यवस्था से मनुष्य का मन मजबूत होता है। राज्य-व्यवस्था डंडे के जोर पर चलती है, उसमें मन बदला नहीं जाता। लेकिन धर्म-व्यवस्था आदमी के दिल और दिमाग को बदलती है। वह प्रेम से चलती है। इसके नियम स्वेच्छा से पालन किये जाते हैं।

—आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा.

उद्‌बोधन :



आचार्य भगवन् की सद्‌शिक्षाओं का पालन करें !*

□ आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म० सा०

अनन्त ज्ञान के धारक अरिहन्त भगवन्तों एवं मोक्ष पद के साधक संत भगवन्तों के श्री चरणों में वन्दन !

धर्मप्रेमी बन्धुओ ! शीलव्रती माताओ-बहिनो ! !

तीर्थंकर भगवान महावीर प्रभु ने किसी वस्तु को समझने के लिये चार निक्षेपों का कथन किया है। वस्तु क्या है ? कैसी है ? उसका आकार-प्रकार क्या है ? उस वस्तु की उपादेयता कितनी है ? वह वस्तु किन गुणों से युक्त है ? इस परिज्ञान के लिये प्रभु ने 'अनुयोग द्वार' सूत्र में चार प्रकार के निक्षेप बताये हैं। वे हैं—नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव।

नाम निक्षेप—वस्तु किस नाम से पुकारी जाती है ? किस नाम से समझी जाती है ? वस्तु जिस नाम से पुकारी या समझी जाय, उसे नाम निक्षेप कहा गया। मानव, पशु, नरकवासी, देवगतिवासी अथवा वस्तु के रूप में यह मकान है, यह दुकान है, इस तरह अलग-अलग नामों से व्यक्ति या वस्तु का कथन किया जाता है, उसे नाम निक्षेप कहते हैं।

स्थापना निक्षेप—वस्तु की पहचान उसके आकार से होती है। आकार से वस्तु की पहचान हो, उसे स्थापना निक्षेप कहा गया। स्थापना दो प्रकार की होती है—एक सद्‌भाव स्थापना और दूसरी असद्‌भाव स्थापना। गाय है तो उसके दो सींग, दो आँखें, एक मुँह, एक गर्दन, चार पैर, एक पूँछ आदि का चित्रण सद्‌भाव स्थापना है। दूसरी तरफ बच्चे जैसे लकीर खींचकर कहते हैं—यह जमीन मेरी है। बहिनें जैसे शीतला माता बनाती हैं, तो क्या करती हैं ? चार-पाँच पत्थरों पर सिन्दूर-टीकी लगाकर अथवा मालीपना लगाकर शीतला माता की स्थापना कर लेती हैं, यह असद्‌भावना स्थापना का रूप है।

---

*जैन भवन, रातानाडा, जोधपुर में ९ जुलाई, १९९१ को दिये गये आचार्य श्री के प्रवचन से संकलित। —सम्पादक

द्रव्य निक्षेप—तीसरा निक्षेप है – द्रव्य। द्रव्य के कई रूप कहे गये हैं। जिनमें गुणों का समावेश होता है, गुण टिकते हैं उसे द्रव्य कहते हैं। जिसमें गुण थे, हैं और रहेंगे उसे भी द्रव्य कहते हैं। जैसे—यह घी की पारी है। पारी है तो मिट्टी की, लेकिन कहने में आप क्या कहते हैं? घी की पारी। भले ही आज इसमें घी नहीं रखा जाता, आज उसमें आटा रखा हुआ है लेकिन कभी उसमें घी रखा जाता था, इसलिये आप उसे घी की पारी कहते हैं।

पहले अमुक अध्यापक था, अमुक डॉक्टर था, अमुक वकील था। जहाँ था का प्रयोग होता है वह भूतकाल की परिस्थितियों को लेकर कहा जा रहा है। कुछ भविष्य के सम्बन्ध को लेकर कहे जाते हैं। जैसे—अमुक राजा बनने वाला है, अमुक अधिकारी बनने वाला है। आप कभी भावी विरक्त आत्माओं को हाथ जोड़ लेते हैं। वह भले ही आज महाव्रती नहीं है, दीक्षा लेने की भावना वाला है, उसके सत्कार-सम्मान में कुछ लोग ऐसे भी हो सकते हैं जो पैर पड़ जांय। लेकिन शास्त्रकारों ने भावशून्य द्रव्य को वन्दनीय नहीं बताया।

भाव निक्षेप– चौथा निक्षेप है—भाव। भाव को वस्तु का मूलाधार कहते हैं। इसे प्राण भी कह सकते हैं। आज हमें इसी बात पर चिन्तन करना है। स्थानकवासी परम्परा किसको ग्राह्य, आदरणीय और वन्दनीय मानती है? हमारी परम्परा साधना के किस लक्ष्य को लेकर चलती है, इस पर विचार करने की जरूरत है।

परम्परा में वन्दनीय—हमारी परम्परा में न नाम वन्दनीय है, न स्थापना वन्दनीय है और न ही बिना गुण वाला द्रव्य ही वन्दनीय है। यहाँ तक कि बिना गुणों वाला प्राण युक्त शरीर भी वन्दनीय नहीं। आप पूछेंगे—फिर, वन्दनीय क्या?

अगर नाम वन्दनीय है तो महावीर नाम वाले आज सैंकड़ों हो सकते हैं। शांतिनाथ, पार्श्वनाथ, आदिनाथ और नेमिनाथ नाम वाले भी आज हैं। आप प्रभु महावीर की माला फेरते हैं, शांतिनाथ प्रभु की माला जपते हैं, उसमें आप तीर्थंकर भगवन्तों के गुणों का स्मरण करते हैं या केवल नाम का? शास्त्र और नीति स्पष्ट कहती है—

गुणा सर्वत्र पूज्यन्ते, पितृवंशो निरर्थकः।
वासुदेवं नमस्यंति, वसुदेवं न वैजनाः॥

पिता कितना ही श्रेष्ठ है, श्रीमन्त है, सहृदयी है लेकिन वन्दन योग्य गुण नहीं तो वह वन्दनीय नहीं है। और पुत्र में यदि गुण हैं तो वह वन्दनीय है।

न नाम पूजनीय है और न ही स्थान पूजनीय है। अगर स्थान पूजनीय होता तो फिर कोई भी स्थान ऐसा नहीं जहाँ से किसी न किसी ने सिद्धि प्राप्त न की हो। क्या आप सारे स्थान को पूज्य मानकर चलते हैं? आप यदि स्थान को पूजनीय मानकर चलेंगे तो पैर रखने तक का स्थान आपको नहीं मिलेगा। अगर स्वर्गधाम या निर्वाणस्थली वन्दनीय होती तो शायद कोई भी स्थान ऐसा शेष नहीं रहता जहाँ बैठने की जगह मिल सके। आपके या हमारे बैठने के स्थान की बात मैं क्या कहूँ, सुई के नोक के अग्र भाग पर अनन्त जीव रहते हैं उतना स्थान भी मिलना कठिन हो जायेगा क्योंकि आर्य क्षेत्र में ऐसा कोई कण नहीं बचा जहाँ से कोई न कोई सिद्ध न हुआ हो।

तीर्थंकर भगवन्तों के जन्म स्थान, दीक्षा स्थान और निर्वाण स्थान वन्दनीय या पूजनीय नहीं रहे। आज तो वहाँ सामान्य जन निवास करते हैं फिर संत-मुनिराजों की तो बात ही क्या? जिस जगह आप बैठे हैं, यहाँ से भी सिद्ध हुए हैं, आप यहाँ कैसे बैठे हुए हैं?

मैं आपसे कह रहा हूँ कि प्रभु महावीर ने स्थल-स्थान या जड़ वस्तु की पूजा नहीं बताई, उन्होंने जीव एवं गुण को ही महत्त्व दिया। जैसा कि कहा है—"अरिहन्ताणं आसायणाए····सिद्धाणं आसायणाए····साहूणं आसायणाए····। अरिहन्त, सिद्ध, साधु इन सबका वर्णन करने के बाद पृथ्वीकाय, अपकाय, अग्निकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय जिसमें भी जीव हैं उसकी आसातना भी कर्मबन्ध का कारण है क्योंकि ये सब सचित्त हैं। शास्त्र में सचित्त वस्तु की आसातना का वर्णन आता है, अचित्त का नही।

हमारी गुणपूजक स्थानकवासी परम्परा नाम को भी महत्त्व देती है—कब? जबकि नाम के साथ गुण जुड़े हों। इक्कीस अप्रेल तक आचार्य भगवन् (श्री हस्तीमल जी म० सा०) चाहे वे बोलते या नहीं बोलते, उनको तीन बार नहीं, कई ऐसे भी भक्त थे जो १०८ बार वन्दन करते थे। वह वन्दन कब तक····? जब तक कि वे महापुरुष जीवित थे। अगर आकृति वन्दनीय होती तो आप पार्थिव देह को अग्नि समर्पित करते? आपने उस तन को आग के समर्पित किया तो फिर वह तन वन्दनीय कैसे? घर-घर में आकृति लगा लेना स्थानकवासी परम्परा नहीं है।

तीर्थंकर भगवन्तों ने जिन्होंने भरत क्षेत्र में धर्म की आदि की, उनकी आकृति का नहीं गुणों का स्मरण है तो फिर आचार्यदेव ने तो तीर्थंकरों के धर्म को चलाया। उनका गुणों से तो स्मरण है, होना चाहिये किन्तु आकृति अथवा स्थान न पूजनीय है, न वन्दनीय। प्रभु महावीर का यह धर्म शासन इक्कीस हजार वर्ष तक कायम रहेगा। हम धर्माराधन करके उनके गुणों को कायम रख सकते हैं, स्थान विशेष के पूजन मात्र से गुण कायम नहीं रख सकते।

गुणानुरागी बनें—हमें अपने लक्ष्य को समझ कर चलना होगा। देखा देखी साधे जोग से आप भटक सकते हैं। आप आचार्य देव के भक्त हैं इसलिये आपका कर्तव्य है कि आप उनके जीवन से गुण लें, गुणों के अनुरागी बनें। आप एक भी गुण लेंगे तो आपका कल्याण होगा।

आपने देखा है—असीम वेदना में उस महापुरुष ने किस तरह शान्त-सहज रहकर समाधिमरण का आदर्श प्रस्तुत किया। मरण जैसी वेदना के समय कितनी अपूर्व शांति। सेवा करने वालों में श्रावक भी थे। सबकी भावना दर्शन-वन्दन की बनी रहती। कोई जज है वह भी लाइन में, सेठ है वह भी लाइन में। छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा हर कोई दर्शन-वन्दन को उत्सुक था।

हमारा कर्तव्य—हम आचार्य भगवान् के सच्चे भक्त हैं, इसलिये हमारा सबका कर्तव्य है कि हम उनके गुणों को स्वीकार करें, हम उनकी परम्परा का पालन करें। आचार्य भगवन् ने जीवनपर्यन्त गुणपूजा को सर्वोपरि महत्त्व दिया, हमें उनका अनुसरण करना है। आपने देखा है—जिस दिन से आचार्य देव ने संथारा ग्रहण किया, उसी दिन से हर रोज शीलव्रत के प्रत्याख्यान बिना किसी प्रेरणा के होते रहे। आप त्याग-तप का, ज्ञान-ध्यान का, सामायिक-स्वाध्याय का, निर्व्यसनता का, क्षमा का, सरलता का, सादगी का, समत्व भाव का चिन्तन एवं आचरण करेंगे तो उस महापुरुष के गुणों के प्रति आपका सहज आकर्षण बना रहेगा।

शरीर तो किसी का न रहा है, न रहेगा। तीर्थंकर भगवन्तों का भी शरीर नहीं रहा लेकिन "तिन्नाणं-तारियाणं" तिरने और तारने का मार्ग आज भी चल रहा है। आचार्यदेव का शरीर नहीं रहा, पर उनका सन्देश, उनकी वाणी, उनके सद्‌गुण आज हैं, सदा रहेंगे। आप आचार्यदेव के वचनों पर, सिद्धान्तों पर और उनकी सद्‌शिक्षाओं पर चलेंगे तो सच्चे अर्थों में आप गुण-ग्राही बन सकेंगे। आप आचार्य भगवन् के अनन्य भक्त हैं इसलिये आपको उनकी रीति-नीति, परम्परा और सिद्धान्तों पर चलकर आदर्श उपस्थित करना चाहिये।

[नोट—श्रद्धेय पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म० सा० ने अपने प्रवचन में हमारे कर्तव्य बोध को जागृत करने की दृष्टि से सैद्धान्तिक आधार पर हमें हमारी परम्परा का बोध कराया है। प्रवचन-आलेखन में सावधानी रखते हुए भी श्रवण-दोष के कारण लेखन में त्रुटि रह सकना स्वाभाविक है। आलेखन में कोई शब्द, वाक्य या अंश छूट गया हो अथवा संकेत लिपि से अनुवाद करने में कोई भूल रह गई हो तो उसके लिये मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

—नौरतन मेहता
आशुलेखक]

रत्नवंश के मूलपुरुष श्री कुशलोजी म. सा. एवं पूर्व आचार्यों की संक्षिप्त जीवन-झांकी

☐ संकलन : भण्डारी श्री सरदारचन्द जैन

मूलपुरुष श्री कुशलोजी म. सा. :

नाम—श्री कुशलचन्दजी म. सा.

जन्म स्थान—सेठों की रीयां (मारवाड़ प्रान्त में पीपाड़ के पास)

जन्म तिथि—विक्रम संवत् १७६७, चैत्र कृष्णा तृतीया

माता का नाम—सुश्राविका कानूदेवीजी

पिता का नाम– सुश्रावक लादूरामजी चंगेरिया 'ओसवंश'

दीक्षा स्थान—सेठों की रीयां

दीक्षा-तिथि—वि. सं. १७९४, फाल्गुन शुक्ला सप्तमी

दीक्षा गुरु—पूज्य श्री भूधरजी म. सा.

स्वर्गवास स्थान—नागौर

स्वर्गवास तिथि—वि. सं. १८४०, जेठ कृष्णा छट्ठ, तीन दिन के संथारे के साथ

व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ—गुरुभ्राता पूज्य रघुनाथजी म. सा., गुरुभ्राता पूज्य श्री जयमलजी म. सा. आदि के साथ विशेष प्रेमभाव रहा और इनके मौजूद रहते आपने पूज्य पदवी स्वीकार नहीं की। प्रमाद वर्जन, आदर्श विनय आदि प्रमुख विशेषताए थीं।

१. **प्रथम पट्टधर बाल ब्रह्मचारी क्रिया उद्धारक पूज्य आचार्य श्री गुमानचन्दजी म. सा.—**

जन्म स्थान—जोधपुर

माता का नाम—श्रीमती चैनादेवीजी

पिता का नाम—श्री अखेराजजी लोहिया 'मेसरी'

दीक्षा स्थान—मेड़ता सिटी

दीक्षा तिथि—विक्रम संवत् १८१८, मिगसर सुदी ग्यारस
दीक्षा गुरु—मूलपुरुष श्री कुशलोजी म. सा.
आचार्य पद—वि. सं. १८४०
स्वर्गवास स्थान—मेड़ता सिटी
स्वर्गवास तिथि—वि. सं. १८५८, कार्तिक वदी अष्टमी
प्रमुख विशेषताएँ—सुतीक्ष्ण प्रज्ञ, अद्भुत पारखी, क्रिया उद्धारक।

२. **द्वितीय पट्टधर बाल ब्रह्मचारी मुख्य आचार्य प्रवर पू. श्री रतनचंदजी म. सा.**

जन्म स्थान—कुड़गाँव (मारवाड़ प्रान्त में)
जन्म तिथि—विक्रम संवत् १८३४, वैशाख सुदी पंचमी
माता का नाम—सुश्राविका हीरादेवीजी
पिता का नाम—सुश्रावक लालचन्दजी सा. बड़जात्या सरावगी
गोद माता का नाम—सुश्राविका गुलाबदेवीजी
गोद पिता का नाम—नागौर निवासी सुश्रावक गंगारामजी सेठ 'ओसवंश'
दीक्षा स्थान—मंडोर (जोधपुर में)
दीक्षा तिथि—विक्रम संवत् १८४८, वैसाख सुदी पंचमी
दीक्षा गुरु—मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म. सा.
आचार्य पद स्थान—जोधपुर में आहुवा ठाकुर साहब की हवेली
आचार्य पद तिथि—वि. सं. १८८२, मिगसर सुदी तेरस
स्वर्गवास स्थान—जोधपुर सिंहपोल में
स्वर्गवास तिथि—वि. सं. १९०२, जेठ सुदी चौदस
प्रमुख विशेषताएँ—क्रिया-उद्धारक, परम तेजस्वी, निष्पृहता, गम्भीरता, शासन रसिक

३. **तृतीय पट्टधर बाल ब्रह्मचारी पूज्य आचार्य श्री हमीरमलजी म. सा.**

जन्म—वि. सं. १८५२ में नागौर
माता का नाम—सुश्राविका ज्ञानदेवीजी
पिता का नाम—सुश्रावक नगराजजी गांधी 'ओसवंश'
दीक्षा तिथि—वि. सं. १८६२, फागण सुदी सातम, मेला का बराँटिया गाँव (वर के पास में)

दीक्षा गुरु—आचार्य श्री रतनचन्दजी म. सा.
आचार्य पद—वि. सं. १९०२, आषाढ़ वदी तेरस, जोधपुर
स्वर्गवास—वि. सं. १९१०, काती वदी एकम, नागौर
प्रमुख विशेषताएँ—परम गुरु भक्त, विनय मूर्ति, तपस्वी

४. **चतुर्थ पट्टधर बाल ब्रह्मचारी पूज्य आचार्य श्री कजोड़ीमलजी म. सा.**

जन्म—किशनगढ़
माता का नाम—सुश्राविका बदनकँवरजी
पिता का नाम—सुश्रावक शम्भूमलजी सोनी 'ओसवंश'
दीक्षा तिथि—वि. सं. १८८७ माघ सुदी सातम, अजमेर
दीक्षा गुरु—आचार्य श्री रतनचन्दजी म. सा.
आचार्य पद—वि. सं. १९१०, माघ सुदी पंचमी, अजमेर
स्वर्गवास—वि. सं. १९३६ वैशाख सुदी तीज 'अक्षय तृतीया', अजमेर
प्रमुख विशेषताएँ—आकर्षक व्यक्तित्व, बुद्धि की कुशाग्रता

५. **पंचम पट्टधर बाल ब्रह्मचारी पूज्य आचार्य श्री विनयचन्दजी म. सा.**

जन्म—वि. सं. १८९७, आसोज सुदी चौदस, फलौदी (जोधपुर)
माता का नाम—सुश्राविका रम्भाबाईजी
पिता का नाम—सुश्रावक प्रतापमलजी पुंगलिया 'ओसवंश'
दीक्षा गुरु—आचार्य श्री कजोड़ीमलजी म. सा.
आचार्य पद—वि. सं. १९३७, जेठ वदी पांचम, अजमेर
स्वर्गवास—वि. सं. १९७२, मिगसर वदी बारस, जयपुर
प्रमुख विशेषताएँ—इस युग के श्रुत केवली, ज्ञान क्रिया सम्पन्न, उदारता, वात्सल्यता

६. **छठे पट्टधर बालब्रह्मचारी पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्दजी म. सा.**

जन्म—वि. सं. १९१४, काती सुदी पंचमी, 'ज्ञान पंचमी', जोधपुर
माता का नाम—सुश्राविका पार्वतीदेवीजी
पिता का नाम—सुश्रावक भगवानदासजी छाजेड़ 'ओसवंश'
दीक्षा तिथि—वि. सं. १९२७, माघ सुदी पंचमी 'बसन्त पंचमी, जयपुर

दीक्षा गुरु—आचार्य श्री कजोड़ीमलजी म. सा.

आचार्य पद—वि. सं. १६७२, फागण वदी आठम, अजमेर

स्वर्गवास—वि. सं. १६८३, सावण वदी अमावस 'हरियाली अमावस्या' जोधपुर

प्रमुख विशेषताएँ—सेवाव्रती, सरल स्वभावी, क्षमाशील, विनयशील

७. **सातवें पट्टधर बाल ब्रह्मचारी पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा.**

जन्म—वि. सं. १६६७, पौष सुदी चौदस, पीपाड़ सिटी

माता का नाम—सुश्राविका रूपादेवीजी

पिता का नाम—सुश्रावक श्री केवलचन्दजी बोहरा 'ओसवंश'

दीक्षा तिथि—वि. सं. १६७७, माघ सुदी दूज, अजमेर

दीक्षा गुरु—आचार्य श्री शोभाचन्दजी म. सा.

आचार्य पद—वि. सं. १६८७ वैशाख सुदी तीज 'अक्षय तृतीया' जोधपुर, सिंहपोल

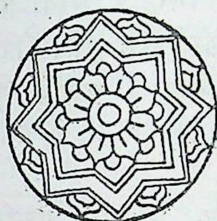
स्वर्गवास—वि. सं. २०४८ के प्रथम वैशाख सुदी आठम, दस दिन के संथारे से, निमाज

प्रमुख विशेषताएँ—ध्यान मौन के साधक, अप्रमत्त जीवन, आकर्षक व्यक्तित्व, असीम आत्म-शक्ति के धनी, युगद्रष्टा, सामायिक-स्वाध्याय के प्रेरक, सफल अनुशासक, इतिहास-निर्माता

समाज एवं सम्प्रदाय के विवाद में लड़-झगड़ कर, कलह-कोलाहल कर यदि कोई द्वेष बढ़ावे, तो यह धर्म को लजाने की बात है, आत्मा को नीचा दिखाने की बात है।

—आचार्य हस्ती

रत्नवंश के अष्टम पट्टधर



श्रद्धेय पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्दजी म. सा. का संक्षिप्त परिचय

इस पृथ्वी पर प्रतिक्षण अनेक प्राणी जन्म लेते हैं, पर उनमें से कुछ ऐसे प्राणी होते हैं जो अन्यान्य प्राणियों की अपेक्षा अपने गुण-सौरभ से जगत्-वन्दनीय बन जाते हैं। ऐसी ही बिरल विभूतियों में आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म. सा. सचमुच एक सचेतन हीरे के समान महापुरुष हैं।

आपका जन्म आज से ५३ वर्ष पूर्व मरुधरा के अन्तर्गत वीर प्रसविनी पीपाड़ शहर की धरा पर विक्रम सम्वत् १९९५ की चैत्र कृष्णा अष्टमी को आदि पुरुष भगवान् आदिनाथ के जन्म दिवस की पावन कल्याणक वेला में हुआ। गौर वर्ण, दीर्घ नेत्र, प्रशस्त ललाट, सौम्य कांति युक्त भाव और मन-मोहक आकृति से आकृष्ट होकर पिताश्री मोतीलालजी गांधी तथा मातुश्री मोहिनी बाई ने प्यार से आपका नाम हीरालाल रखा। यथा नाम तथा गुण धीरे-धीरे स्वतः प्रकट होने लगे क्योंकि बालक का जन्म ऐसी ही शुभ घड़ियों में हुआ था।

आपके पिताश्री स्वयं भी धर्मप्रेमी, धुन के धनी, अत्यन्त गुरुभक्त तथा कर्तव्यपरायण व्यक्ति थे। उनकी कर्तव्यपरायणता के कारण ही जयपुर के लाल भवन स्थित आचार्य श्री विनयचन्द ज्ञान भण्डार आज सुव्यवस्थित रूप से सुशोभित हो रहा है। संस्कारी पिता के संस्कार आपको सहज रूप से मिले तो सरलमना सदा हंसमुख तथा द्वन्द्व रहित स्वभाव वाली मातुश्री मोहिनी बाई की सरलता आपको सहज रूप से प्रारम्भिक संस्कारों में ही मिली। किन्हीं कारणों से आपका बाल्यकाल नागौर में बीता। बचपन में आपकी एक अत्यन्त प्रिय लघु भगिनी के वियोग का आपके मानस पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि आप संसार से उदासीन हो गये।

संयोगवश इस युग के महान् वैरागी, गहन संयमी, श्रमणशिरोमणि आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा. का सान्निध्य आपको समय-समय पर

मिला। उनकी शान्त, सरल, वैराग्य रस में मीठी वाणी से आपका वैराग्य-बीज अंकुरित हो गया। सम्वत् २०१३ में आचार्य प्रवर के बीकानेर चातुर्मास से आप आचार्य प्रवर की सेवा में ज्ञान-ध्यान में लीन हो गये। आचार्य श्री ने आपको खूब तराशा। हीरा आखिर हीरा था, तराशने से निखार आया और विक्रम सम्वत् २०२० की कार्तिक शुक्ला षष्ठी को आपकी जन्म-भूमि पीपाड़ शहर में आपने अपने को आचार्य प्रवर के चरणों में पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया अर्थात् आपकी दीक्षा हो गई।

आचार्य प्रवर के कठोर अनुशासन एवं प्रगाढ़ देख-रेख में आप अध्ययन की ओर बढ़ने लगे। जैनागमों के विशिष्ट अध्येता पण्डित दु:खमोचनजी झा से आपने जैनागमों, न्याय, दर्शन, काव्य एवं व्याकरण का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त किया। निरन्तर अध्ययन, विहार-चर्या और गुरुजनों की सेवा ही आपकी जीवन-चर्या हो गई। कभी थकावट, सुस्ती, ग्लानि एवं उपेक्षा आप में नहीं देखी गई। आपकी लगन, सेवा, सौम्यता से गुरुदेव मन-ही-मन प्रमुदित होते रहे। आखिर स्व. आचार्य प्रवर ने एक दिन आपको—अपने ही हाथों से लिखे एक पत्र में संघ के भावी आचार्य के रूप में मनोनीत कर दिया। उसी मनोनयन के कारण चतुर्विध संघ ने आपको आचार्य पद प्रदान किया।

आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्रजी म. सा. व्याख्यान वाचस्पति, ओजस्वी वक्ता और बुलन्द आवाज से हजारों श्रोताओं के मन को आन्दोलित करने वाले हैं। आप हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत एवं अर्धमागधी के विद्वान् हैं। निर्मल संयम-पालन में भी आप स्वर्गीय आचार्य प्रवर के समान ही कठोर अनुशासनप्रिय हैं। ऐसे आचार्य प्रवर संघ में अनुशासन बनाये रखने में समर्थ होंगे ऐसी चतुर्विध संघ को आशा है। विक्रम सम्वत् २०४८ को प्रथम वैशाख शुक्ला नौवीं दिनांक २२ अप्रैल, १९९१ को आपको आचार्य पद से विभूषित किया गया।

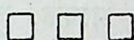
पण्डित रतन श्री हीराचन्द्रजी म. सा. का अपने गुरु स्वर्गीय आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा. के साथ राजस्थान, दिल्ली, गुजरात, मध्यप्रदेश, महा-राष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु आदि प्रदेशों में पदविहार हुआ और अपने गुरुदेव के सामायिक-स्वाध्याय के प्रचार में आपने तन-मन से सहयोग दिया। युवकों को स्वाध्याय के लिये तैयार करने और मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक में स्वाध्याय संघ की स्थापना में आपका पूर्ण सहयोग रहा।

आपकी दीक्षा के बाद मात्र एक चातुर्मास को छोड़कर प्राय: आचार्य प्रवर के सान्निध्य में ही आपका विचरण हुआ। आपके चातुर्मास पीपाड़ शहर, भोपालगढ़, बालोतरा, अहमदाबाद, जयपुर, पाली, नागौर, मेड़ता शहर,

जोधपुर, कोसाणा, जयपुर, सवाईमाधोपुर, ब्यावर, अजमेर, इन्दौर, जलगाँव, मद्रास, रायचूर आदि-आदि स्थानों पर हुए। आपका सम्वत् २०४७ का चातुर्मास पाली में पूज्य गुरुदेव की सेवा में हुआ।

आचार्य प्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. मात्र आगमज्ञ और पण्डित ही नहीं हैं, बल्कि सन्तों की सेवा-वैयावृत्य करने में भी अग्रणी हैं। आशा है आपके नेतृत्व में जैन शासन प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होगा।

ऐसे शास्त्रज्ञ, ओजस्वी वक्ता, अध्यात्म योगी आचार्य प्रवर को शतशः वन्दन !



प्रेम व करुणा में सबसे अधिक शक्ति है

□ श्री देवीचन्द भंडारी

कौशल देश के राजा प्रसेनजित अपनी शक्तिशाली सेना के सहयोग से भी डाकू अंगुलिमाल को नहीं पकड़ सके। भगवान् बुद्ध के पास जाकर अर्ज करने लगे कि प्रजा मेरे राज्य में अंगुलिमाल डाकू से तबाह होकर दुःखी है।

भगवान् बुद्ध ने कहा—"मैंने प्रेम व करुणा के बल से उसे पकड़ लिया है। चिन्ता मत करो। तुम उस पर प्रेम और करुणा करो तो तुम्हारे अधीन हो सकता है। प्रेम व करुणा के आगे वह झुक गया है। अपनी खूंखार वृत्तियाँ छोड़कर मेरे पास बैठा है।"

राजा प्रसेनजित की आँखें खुल गईं। एक शासक के नाते वह माने बैठा था कि सैन्य और शस्त्र बल से बढ़कर और कोई बल नहीं है। आज उसे मालूम हुआ कि प्रेम व करुणा का मुकाबला दुनिया में कोई ताकत नहीं कर सकती।

राजा ने अंगुलिमाल का बड़े प्रेम से अभिवादन किया और उससे कहा—"मैं तुम्हारे भोजन, आवास आदि की व्यवस्था किये देता हूँ।"

अत्यन्त विनम्र भाव से अंगुलिमाल बोला—"राजन् ! आप चिन्ता न करें, मुझे प्रेम व करुणा से वही नहीं, और भी सब कुछ मिल गया है।"

—डी-४७, देवनगर, टोंक रोड, जयपुर-१८

आचार्य श्री के प्रति

मुनि 'हीरा' अनमोल हमारा

□ श्री गौतम मुनि

शास्त्रज्ञ श्री हीरामुनिजी, सन्त तेजस्वी हैं अभिराम ।
हस्ती गुरु के अंतेवासी, रत्न वंश के तिलक ललाम ।।

हँसमुख शान्त भव्य है चेहरा, वाणी अति प्रियकारी है ।
आया जो सम्पर्क आपके, हुआ प्रभावित भारी है ।।

जड़ हीरा का मोल करें सब, बिकता है बाजारों में ।
मुनि 'हीरा' अनमोल हमारा, मिलता नहीं हजारों में ।।

भाग्य अनूठा रत्न वंश का हीरा मिला है शुभकारी ।
श्रुत आगम का ज्ञान खजाना, जिनके घट में है भारी ।।

वाणी में ऐसा जादू है, जब वचन सुधा वर्षाते हैं ।
श्रोता को आतम के हित, इंगित कर भान कराते हैं ।।

प्रवचन की मधु धारा से, जब तत्त्व बोध देते भारी ।
कहते सब मिट जाता संशय, जो शंका मन में धारी ।।

आगम चर्चा और प्रश्नोत्तर, क्या खूबी से समझाते हैं ।
खिल जाती फिर दिल की कलियाँ, जब शास्त्र का मर्म बताते हैं ।।

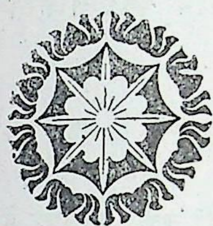
ज्ञान सिन्धु गुरुवर हस्ती से, पाया आपने गहरा ज्ञान ।
अमित अगाध ज्ञान राशि को, घट गागर में दिया स्थान ।।

आगम ज्ञाता बने मुनिश्वर, करते चिन्तन अनुसंधान ।
गूढ़ ज्ञान की ग्रन्थि खोलकर, देते फिर जनता को ज्ञान ।।

तत्त्वस्पर्शी सूक्ष्म विश्लेषक, करते शास्त्र ज्ञान अवधान ।
प्रवचन की कला निराली, महिमा जिनकी बड़ी महान् ।।

संघ हितैषी संयमी साधक, शान्त सौम्य समता धारी ।
ज्ञान क्रिया का अद्‌भुत संगम, वाणी जिनकी प्रियकारी ।।

जिन शासन के सन्त यशस्वी, श्रमण रत्न हो आप महान् ।
नाज करें हम सब जनता, "मुनि गौतम" का यह संगान ।। □



परम श्रद्धेय उपाध्याय पंडित रत्न श्री मानचन्द्रजी म. सा. का संक्षिप्त परिचय

मरुधरा की वीर प्रसविनी भूमि में अनेक नररत्नों ने जन्म लेकर इस भूमि को महानता प्रदान की है। इसी मरुधरा की राजधानी सूर्य नगरी जोधपुर में आज से ५७ वर्ष पूर्व एक तेजस्वी बालक का जन्म हुआ, जिन्हें आज हम उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म. सा. के नाम से संबोधित करते हैं।

मूल रूप में भावी के रहने वाले धर्मप्रेमी सुश्रावक श्री अचलचन्दजी सा. सेठिया जोधपुर में व्यवसाय करते थे। उन्हीं के घर सुश्राविका श्रीमती छोटा बाई की कुक्षि से विक्रम सम्वत् १९९१ में माघ कृष्णा चतुर्दशी को एक बालक ने जन्म लिया। बालक के प्रारम्भिक लक्षण ही कुछ बता रहे थे। जैसी कि कहावत है 'होनहार विरवान के होत चीकने पात।' बचपन से ही यह बालक सौम्य, शांत तथा धर्माभिमुख था। **बालक का नाम मानचन्द्र रखा गया।** धीरे-धीरे बालक धार्मिक संस्कारों की ओर उन्मुख होता गया। माता-पिता के धार्मिक संस्कारों का योग तो सहज मिला ही था, इसी बीच वि. सं. २०१८ में आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा. का चातुर्मास जोधपुर में हुआ। इस चातुर्मास में आपके संस्कारों को और अधिक बल मिला। माता-पिता तो एक बार सकते में आ गये कि इनकी रुचि निरन्तर संसार से उदासीन हो रही है। कहीं घर से चले न जायें।

माता-पिता ने समझाने का बहुत प्रयत्न किया किन्तु धुन के धनी जो ठान लेते हैं, वे भला कब उससे पीछे हटते हैं। यही हुआ। श्री मानचन्द्रजी की धुन, लगन, गुरु-भक्ति, संसार के प्रति उदासीन वृत्ति से आपके परिजनों ने आपको दीक्षा की अनुमति प्रदान कर दी।

विक्रम संवत् २०२० की वैशाख शुक्ला त्रयोदशी को आपकी एवं स्व. श्री मगनमुनिजी म. सा. की भागवती दीक्षा एक साथ जोधपुर में आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा. के सान्निध्य में हुई। दीक्षा के बाद आप पूर्ण निष्ठा से अध्ययन की ओर अभिमुख हुए। स्वर्गीय बड़े श्री लक्ष्मीचन्दजी म. सा. की नेश्राय में आप रहे। उनके सान्निध्य तथा आचार्य प्रवर के कठोर अनुशासन में

आपने गहन अध्ययन किया। अध्ययन के साथ-साथ सेवा, तप, जप तथा मौन में आपकी प्रारम्भ से ही रुचि रही। महीने में पाँच उपवास आप वर्षों से करते आ रहे हैं।

जब-जब भी प्रसंग आया, आप सेवा में अग्रणी रहे। स्व. बड़े लक्ष्मीचन्दजी म. सा. एवं स्व. बाबाजी जयन्तमुनिजी म. सा. की आपने अग्लान भाव से खूब सेवा की तथा इस कारण से आपको वर्षों तक जोधपुर में विराजना पड़ा।

उपाध्याय श्री की वाणी में मधुरता तथा स्वाभाविक गम्भीर वाणी से श्रोता मंत्र मुग्ध हो जाते हैं। हजारों की जनमेदिनी में भी आपकी वाणी सहजता से सुनाई दे जाती है। अप्रमत्त साधना, सादगी पूर्ण जीवन, कष्ट सहिष्णुता आदि आपकी सहजवृत्तियाँ हैं।

आपने स्व. प्रवर्तक पंडित श्री बड़े लक्ष्मीचन्दजी म. सा. के शिष्यत्व में जैन आगमों का गहन अध्ययन किया। आप संस्कृत, प्राकृत और अर्धमागधी के विद्वान् बने। व्याख्यान-कला में भी आपने पूर्ण निपुणता प्राप्त की। आपका व्याख्यान आध्यात्मिकता से ओतप्रोत होता है। आपके उपदेशों का प्रभाव लंबे अर्से तक रहता है।

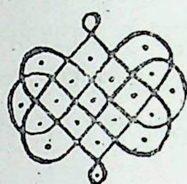
आपका अधिकांश भ्रमण राजस्थान में ही हुआ। राजस्थान के बाहर आपके चातुर्मास दिल्ली और अहमदाबाद हुए। आपको भी उपाध्याय पद पर दिनांक २२-४-१९९१ को विभूषित किया गया।

आपके पीपाड़ शहर, मेड़ता शहर, कोसाणा, अहमदाबाद, जयपुर, भोपालगढ़, थांवला, जोधपुर, पाली, विजयनगर, हरसोलाव, गोटण, दिल्ली और ब्यावर में चातुर्मास हुए।

ऐसे शांतमना अध्यात्मयोगी पूज्य उपाध्याय प्रवर को शतशः नमन।



ज्ञान का बल होने से मनुष्य दुःख में धीरज से समय काट सकता है।



संघ-सेवा में सक्रिय रहें

□ **श्री जगदीशमल कुम्भट**
महामंत्री, अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

हमारी गौरवशाली परम्परा मूल पुरुष पूज्य श्री कुशलचन्दजी म. सा. से प्रारम्भ हुई। पूज्य आचार्य श्री गुमानचन्दजी म. सा. ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया। महाप्रतापी-महायशस्वी पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म. सा. ने विक्रम सम्वत् १८५४ की आषाढ़ कृष्णा द्वितीया को भोपालगढ़ (बड़लू) में २१ बोलों की मर्यादा कर क्रियोद्धार किया तब से हमारी परम्परा पूज्य श्री रत्नचन्द्रजी म. सा. की सम्प्रदाय के नाम से विख्यात हुई। पूज्य आचार्य श्री हमीरमलजी म. सा., पूज्य आचार्य श्री कजोड़ीमलजी म. सा., पूज्य आचार्य श्री विनयचन्दजी म. सा,, पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म. सा. की विमल-निर्मल साधना से रत्नवंश की गौरव-गरिमा में निरन्तर अभिवृद्धि हुई। युग-द्रष्टा, युगमनीषी महामहिम आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा. ने सामायिक-स्वाध्याय, ध्यान-मौन एवं व्रत-नियम के प्रति जन-जन के मन में आस्था का संचार किया। महान् उपकारी, दिव्य-दिवाकर आचार्य देव का उपकार हम हजारों-हजार वर्ष तक नहीं भूला सकते। जन-जन के आराध्य आचार्य देव २१ अप्रेल को निमाज नगर में संथारा-संलेखना के साथ समाधि मरण प्राप्त कर देवलोक गमन कर गये, पर आचार्य देव ने संघ-व्यवस्था हेतु संघ नायक का पूर्व निर्धारण कर लिया था।

ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी, रविवार २ जून, १९९१ को सूर्य नगरी जोधपुर की पावन धरा पर परम श्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म. सा., साध्वी प्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकंवरजी म. सा. एवं चतुर्विध संघ के पावन सान्निध्य में आगम मर्मज्ञ पं. रत्न श्रद्धेय श्री हीराचन्द्रजी म. सा. को रत्नवंश के अष्टम पट्टधर पर विधिवत् प्रतिष्ठित किया गया। चादर महोत्सव के मंगल प्रसंग पर आचार्यकल्प श्री शुभचन्द्रजी म. सा., ज्ञानगच्छ के तपस्वी-राज श्री चम्पालालजी म. सा. के आज्ञानुवर्ती बहुश्रुत पं. रत्न श्री घेवरचन्दजी म. सा. "वीर पुत्र" आदि सन्त-सती मण्डल का पावन सान्निध्य भी प्राप्त हुआ। चादर महोत्सव कार्यक्रम अत्यन्त उमंग-उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

चतुर्विध संघ द्वारा आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने के तुरन्त पश्चात् रत्नवंश के अष्टम पट्टधर श्रद्धेय पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्रजी म. सा. ने

अपने मांगलिक उद्‌बोधन में संघ की गौरव गरिमा और महिमा का विस्तृत विवेचन करते हुए चतुर्विध संघ से अपेक्षा रखी कि हमें हमारे गौरवशाली अतीत पर सन्तोष करके ही नहीं बैठना है अपितु संघ-व्यवस्था और अनुशासन को और अधिक पुष्ट बनाने हेतु पूर्ण समर्पण भाव, सच्ची निष्ठा एवं प्रगाढ़ रुचि से शासन-सेवा में सक्रियता से जुड़ना है, आगे बढ़ना है ।

श्रद्धेय पूज्य आचार्य प्रवर ने अपनी मर्यादानुसार सामयिक चिन्तन प्रस्तुत किया । श्रद्धेय पूज्य आचार्य प्रवर, परम श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर एवं सन्त-सतीगण अपनी संयम-साधना के साथ स्व-पर कल्याण कामना रखते हैं, लेकिन संघ व्यवस्था और अनुशासन के सन्दर्भ में जितनी भूमिका हम श्रावक और श्राविकाओं की रहनी चाहिये, इस परिपेक्ष्य में मैं विनम्र निवेदन करता हूँ कि हमारे सुज्ञ भाई-बहिन संघ-सेवा-सोपान में श्रद्धा-भक्ति एवं समर्पण भाव से जुड़ें, संघ के संगठन को व्यापक रूप देने में आगे आयें, संघ के कार्यक्रमों प्रवृत्तियों और गतिविधियों को संचालित करने में समय का भोग देकर अपना दायित्व निर्वहन करें साथ ही हम प्रेम, मैत्री, सहयोग का आदर्श बनाए रखकर एक टीम भावना से एक दूसरे के पूरक बनकर काम करें, यह समय की पुकार है । हम संघ-सेवा में सक्रिय रहेंगे तो साधु-साध्वीगण भी निर्दोष संयम-साधना में सहज गति बढ़ा सकेंगे ।

पूज्य आचार्य देव के महाप्रयाण के पश्चात् चतुर्विध संघ का उत्तरदायित्व और बढ़ा है । हमारे संघ में साधु-साध्वी संख्या की दृष्टि से कम हैं, अभी ७ जून की रात्रि को तरुण तपस्वी श्री कैलाशमुनिजी का असमय आकस्मिक देवलोक हो गया । हम संकल्प पूर्वक संघ-सेवा सोपान में अपने आपको जोड़ें तो निश्चित रूप से हमारा संघ अपने गौरवशाली अतीत के अध्याय में नए आयाम जोड़ने में सफल होगा ।

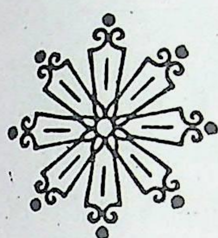
संघहित में आप-हम-सबकी गति निरन्तर बढ़े, इस शुभ भावना के साथ।

—घोड़ों का चौक, जोधपुर

लेखकों से निवेदन

- 'जिनवाणी' में जैन धर्म, दर्शन, अध्यात्म, साहित्य एवं संस्कृति तथा नैतिक उन्नयन व सामाजिक जागरण सम्बन्धी रचनाएँ प्रकाशित की जाती हैं। रचनाएँ मौलिक, अप्रकाशित, प्रेरणादायक एवं संक्षिप्त हों ।
- रचना भेजते समय उसकी प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रख लेवें । अस्वीकृत रचना वापस करना सम्भव नहीं ।
- रचना कागज के एक ओर स्पष्ट अक्षरों में लिखी हुई अथवा टाइप की हुई हो ।

—सम्पादक



वर्षावास-सन्देश

☐ आचार्य श्री आनन्द ऋषिजी म. सा.

आषाढ़ पूर्णिमा से श्रमण-श्रमणियों का वर्षावास प्रारम्भ हो रहा है। यह ऐसा अवसर है जब चतुर्विध संघ एकत्रित होकर आत्म-कल्याण की साधना करता है। शेष काल में विचरण के पश्चात् संयमी आत्माओं को जो अनुभव प्राप्त होते हैं, मुमुक्षु आत्माओं को उनका अवदान वर्षावास काल में प्राप्त होता है। आध्यात्मिक-विनिमय, आत्म-निरीक्षण, आत्म-लोचन और आत्म-शुद्धि का यह चातुर्मास्य दान, शील, तप, भाव रूप पुरुषार्थ चतुष्टय के साधन का सर्वोत्तम प्रसंग है। यह अवसर चतुर्विध संघ में मैत्री, प्रमोद, करुणा और मध्यस्थ-वृत्ति का विस्तार करे, यही मेरा मंगल सन्देश है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि विश्व में हिंसा बढ़ रही है—बलवान द्वारा निर्बल पर आक्रमण, समर्थ द्वारा असमर्थ का शोषण, बुद्धिमान द्वारा निर्बुद्धि का कवन, कूटनीतिज्ञ द्वारा निरीह का अवमूलन एवं दलन आदि ऐसी विषमतायें हैं जिनके कारण बर्बर शक्तियों की अधिकाधिक विप्लवी होते जाने की सम्भावना है। ऐसी दु:स्थिति में जैन धर्म शासन का दायित्व बढ़ जाता है कि वह अहिंसा, संयम और तप का मार्ग प्रशस्त करे।

केवल वर्जना और पलायन धर्म-शासन के नीति-निर्देशक सिद्धान्त नहीं वन सकते। विधि और निषेध के पारस्परिक द्वैत से ऊपर उठकर धर्म के विधायी स्वरूप को अधिक प्रभावी बनाना होगा ताकि हिंसा और आतंक के सामने विमूढ़ अथवा निहत्था होकर व्यक्ति न खड़ा रह जाये बल्कि तेजस्विनी अहिंसा के ओज से उसका मुखमण्डल दीपित रहे।

विश्व संस्कृति का संक्रमणकाल किसी बहुत बड़ी आध्यात्मिक क्रान्ति की प्रतीक्षा कर रहा है, किन्तु उसका अवसान क्रूरतापूर्ण युद्ध किंवा महाविनाश से नहीं होना चाहिये, विश्व के सभी धर्माचार्यों, राष्ट्रनायकों, प्रबुद्ध चिन्तकों, समाजशास्त्रियों और सचेतन नागरिकों का परम कर्तव्य है और यह धार्मिक सहिष्णुता, सद्भाव या जैन धर्म दर्शन की भाषा में, आचार में अहिंसा और विचार में अनेकान्त के बिना सम्भव नहीं। अतएव हमें इस तथ्य पर गहराई से विचार करना है कि अपनी धार्मिक सम्पदा और आचार संहिता को क्षति पहुँचाये बिना किस प्रकार हम समतावादी अहिंसक समाज की रचना को अधिक सशक्त, उत्प्रेरक, स्वीकार्य और व्यावहारिक बना सकते हैं।

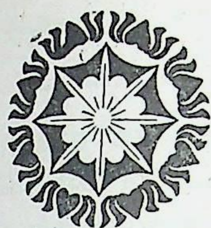
अनेकान्त संकल्पित चित्त पूर्वाग्रह और अहिंसा समर्पित हृदयपरिग्रह का अधिष्ठान न बन जाय, इसके लिए सतर्कता यह रखनी है कि हमारी कथनी और करनी में किसी प्रकार का द्वैत न आने पाये अथवा हमारे आदर्श और व्यवहार प्रतिगामी न होकर अनुगामी हों। आदर्श और व्यवहार का विपर्यय ही आध्यात्मिक आचरण को सन्देहास्पद बनाता है।

हमें यह कदापि नहीं सोचना है कि हम केवल एक सम्प्रदाय या आम्नाय हैं बल्कि यह चरितार्थ करके दिखाना है कि हम विश्व-मानवता के पुरोधा हैं और मानवमात्र को मुक्ति के मुक्ताकाश में विचरण कराना ही हमारे धर्माचरण की फलश्रुति है।

यदि हम अतीत के इंतिवृत्त का अवलोकन करें तो पायेंगे कि 'आया अर्थात् आत्मा एक है' का उद्घोष करने वाला विशुद्धि-मार्गी जैन-धर्म दर्शन सम्प्रदायगत अभिनिवेश में उलझकर अपने संघीय चरित्र से ही नहीं, शरण-चरित्र से भी विचलित हो गया और हिंसा और दुर्व्यसन के महापंक में फँसी मानव जाति को हम अहिंसक एवं निर्व्यसन बनाने में असफल रहे। अब मूल्यगत पुर्ननिरीक्षण की आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता। समय रहते यदि हमने आत्म-निवेदन की प्रक्रिया की उपेक्षा करके केवल परोपदेश को ही अपना कार्यक्रम बनाये रखा तो इतिहास हमें हाशिये पर छोड़कर आगे बढ़ जायेगा। मैं चाहता हूं कि इस वर्ष का चातुर्मास आत्म-निरीक्षण का चातुर्मास बने, आत्मशलाघा या तुष्टीकरण का नहीं। प्रकाशनों, सम्मेलनों संगोष्ठियों एवं समारम्भों को अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेना समय की सार्थकता की अपेक्षा मूल्यक्षरण का द्योतक होगा।

विज्ञान और तकनीकी विकास की दुहाई देकर शाश्वत धार्मिक मूल्यों एवं आध्यात्मिक मान्यताओं को नकारने वालों के चरित्र-हनन एवं प्रलोभन के भ्रमजाल से बचा कर युवा पीढ़ी को निष्ठा, धृति और सत्य की ओर ले जाना है ताकि यह महावीर के मार्ग का अनुसरण करे, पलायनवादी, सुविधाभोगी, नियतिवादी, भौतिकवादी का नहीं। जैन-धर्म दर्शन की गुणात्मकता को क्षति पहुँचाये बिना जो जैनत्व का प्रचार/प्रसार कर सकता है, वही सच्चा वीरपुत्र है और वीरभाव की आराधना ही हमारे धर्म-शासन का सर्वोच्च गौरव है।

संख्या के लोभ में हमें गुण को नहीं खोना है क्योंकि संख्या की अपेक्षा गुण का महत्त्व अधिक है और यही कारण है कि अनादिकाल से अब तक जैन-धर्म दर्शन ने कभी गुणात्मकता के नाम पर समझौता नहीं किया। चतुर्विध संघ की मर्यादा बनी रहे, जैनत्व का सर्वतोमुखी विकास हो और देश-विदेश का प्रत्येक जैन धर्मावलम्बी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना और अहिंसा तथा अनेकान्त-सम्मत आचार-विचार से पहचाना जाय, यही मंगल भावना है।



दीक्षा का सत्यं, शिवं, सुन्दरम्

□ पं. र. मुनि श्री नेमिचन्द्रजी म. सा.

दीक्षा क्या है, क्या नहीं ? :

समस्त आध्यात्मिक जगत् में दीक्षा का बहुत बड़ा महत्त्व है । भौतिक अथवा भोगमय जीवन से ऊपर उठकर त्याग, तप, संयम एवं वैराग्य के आग्नेय पथ पर आरोहण करना भागवती या आर्हती दीक्षा मानी जाती है । इस कारण दीक्षा केवल वेष बदलना नहीं, अपितु जीवन बदलना है। वेष तो एक बहुरूपिया भी बदल सकता है । वह भी साधु का-सा स्वांग रच कर लोगों को आश्चर्य में डाल सकता है । परन्तु उसके पीछे न तो दीक्षा की आत्मा है, और न ही दीक्षा का प्राण । बहुरूपिये के द्वारा दीक्षित व्यक्ति की-सी वेशभूषा में सुसज्जित होने का उद्देश्य लोगों को आश्चर्य-चकित करके पैसे बटोरना है । आध्यात्मिक जागृति अथवा आत्मिक उत्क्रान्ति जो दीक्षा की आत्मा है, वह बहुरूपिये में नहीं होती । भोगमय जीवन को त्यागमय जीवन में परिवर्तित करना, इस दीक्षा का प्राण है, जो बहुरूपिये में नहीं होता ।

गृहस्थ जीवन में बहुधा कमनीय, प्रिय, मनोज्ञ वस्त्र, सुगन्ध, अलंकार तथा भोग-विलास के रमणीय साधन आदि का उपभोग, संग्रह एवं ममत्व-पूर्वक रखने की ललक-लालसा होती है, किन्तु साधु-जीवन की दीक्षा लेने पर इन सबको अन्तःकरण से—मन, बुद्धि, चित्त और हृदय से छोड़ना पड़ता है, इन सब भौतिक एवं भोगमय जीवन की कामना, वासना, अहंता और ममता को पीठ दिखानी होती है । जो व्यक्ति श्रमण-दीक्षा या मुनि-धर्म की दीक्षा लेने पर भी मन ही मन इन वस्तुओं को पाने के स्वप्न संजोता रहता है, किन्तु उन वस्तुओं को प्राप्त नहीं कर पाता अथवा इनकी प्राप्ति शक्य होने पर भी मन से इन्हें त्यागता नहीं, उसका वह त्याग अथवा उसकी दीक्षा केवल वेष बदलना है ।[1]

---

१. "जे य कंते पिए भोए लद्धे विपिट्ठी कुव्वइ ।
साहीणे चयइ भोए, से हु चाइत्ति वुच्चइ ।।"
"वत्थ-गंधमलंकारं इत्थीओ सयणाणि य ।
अच्छंदा जे न भुंजंति, न से चाइत्ति वुच्चइ ।।"
—दशवैकालिक सूत्र अ. गा. ३, २

जीवन को आध्यात्मिक विकास की तलहटी से शिखर तक पहुँचाना ही दीक्षा का लक्ष्य है। इसलिए शरीर और शरीर से सम्बन्धित वस्तुओं--परपदार्थों पर ममत्व करना; शरीर, इन्द्रियाँ, मन आदि को सांसारिक विषय-भोगों में तथा कामिनियों की काम कथाओं में, सरस, स्वादिष्ट आहार-कथाओं में, भ्रष्ट राजनीति की निरर्थक चर्चाओं में, व्यर्थ की अलक-मलक की गप्पों में तथा निन्दा, चुगली, सप्त दुर्व्यसन आदि की रसिक विकथाओं में लगाना,[1] दीक्षा नहीं दीक्षा का स्वांग है। इसीलिए 'दशवैकालिक सूत्र' में कहा गया है—'साधक निद्रा को बहुत अधिक महत्त्व न दे साथ ही हास-प्रहास का भी त्याग करे, परस्पर विकथाओं में रत न रहे, अपितु सदैव (स्वाध्याय, ध्यान, आत्मसम्प्रेक्षण आदि) में रत रहे।'[2]

"जो साधक आलस्य एवं प्रमाद से रहित होकर एकमात्र क्षमा आदि दशविध श्रमण-धर्म में मन-वचन-काय-योग को नियुक्त (लगाये) रखता है, तथा श्रमण-धर्म में ही अहर्निश जुटा रहता है, वही दीक्षा (संयम) के अनुत्तर (उत्कृष्ट) अर्थ (परमार्थ) को प्राप्त करता है।"[3]

दीक्षा केवल मस्तक मुंडाना नहीं, समग्र जीवन को मुंडाना है :

इसलिए दीक्षा केवल मस्तक मुंडा लेना नहीं। मस्तक तो भेड़ें भी मुंडाती हैं। पर उन्हें मस्तक मुंडाने के अर्थ और उद्देश्य का कोई बोध नहीं होता। मस्तक सारे शरीर का उत्तमांग कहलाता है। उसका मुण्डन हो जाना, समग्र शरीर का, शरीर के समस्त अवयवों का, इन्द्रियों, मन और वचन का मुण्डित हो जाना है। अर्थात्—तन, मन, वचन, इन्द्रियों एवं अंगोपांगों को आत्मा और परमात्मा की सेवा में, आत्मा के चिन्तन-मनन तथा आत्महित एवं विश्वात्महित में समर्पित करना, समता को समग्र पहलुओं से जीवन में

१. "पडिक्कमामि चउहिं विगहाहिं-इत्थीकहाए, भत्तकहाए, देसकहाए।"

—आवश्यक सूत्र में श्रमण सूत्र पाठ

२. 'निद्दं च न बहुमन्निज्जा, सप्पहासं विवज्जए।
मिहो कहाहिं न रमे, सज्झायम्मि रओ सया॥"

—दशवैकालिक अ. ८/४२

३. 'जोगं च समणधम्मम्मि, जुंजे अनलसो धुवं।
जुत्तो अ समणधम्मम्मि, अट्ठं लहइ अणुत्तरं॥"

—दशवैकालिक अ. ८ गा. ४३

प्रतिष्ठित करना ही उत्तमांग—मस्तक का वास्तविक मुण्डन है। केशलोच (शिरोमुण्डन) को ही मुण्डन मानने वालों को चेतावनी देते हुए भगवान् महावीर ने कहा—**'नविमुंडिएण समणो'**[1]—केवल मस्तक मुंडा लेने से कोई श्रमण (सम, शम और श्रम का साधक) नहीं हो जाता। मस्तक मुंडा लेने वाले को कोई मुण्डित-दीक्षित न समझ ले, इसलिए 'स्थानांग सूत्र' में दस प्रकार के मुण्डित का प्ररूपण किया गया है—(१) श्रोत्रेन्द्रिय-विषय का मुण्डन करने वाला, (२) नेत्रेन्द्रिय-विषय का मुण्डन करने वाला, (३) घ्राणेन्द्रिय-विषय का मुण्डन करने वाला, (४) रसनेन्द्रिय-विषय का मुण्डन करने वाला, (५) स्पर्शनेन्द्रिय-विषय का मुण्डन करने वाला, (६) क्रोध-कषाय का मुण्डन करने वाला, (७) मान-कषाय का मुण्डन करने वाला, (८) माया-कषाय का मुण्डन करने वाला, (९) लोभ-कषाय का मुण्डन करने वाला और (१०) मस्तक के केशों का मुण्डन करने-कराने वाला।[2] इन दस प्रकार के मुण्डनों का विधिवत् आचरण करने वाला ही मुण्डित और दीक्षित कहलाता है।

समता को जीवन में रमाने पर ही श्रमण कहलाता है :

पूर्वोक्त दस प्रकार के मुण्डनों को अपनाने वाला ही पूर्णरूप से समता का आराधक बनता है। पांचों इन्द्रियों के विषयों के प्रति अनासक्ति और कषायों पर विजय प्राप्त करना ही तन-मन-इन्द्रियों का—आत्मा का समत्व है। इसीलिए भगवान् महावीर ने कहा—**'समयाए समणो होइ'**[3] 'समता (श्रमता और शमता) से श्रमण होता है।

समता की आजीवन आराधना ही सच्ची दीक्षा :

फलितार्थ यह हुआ कि संसार की मोह-ममता और आसक्ति का त्याग करके समता (सम, शम, श्रम) की सतत आराधना करना ही सच्ची दीक्षा है। यही कारण है कि दीक्षा ग्रहण करते समय जीवनभर के लिए यह प्रतिज्ञा की जाती है—**'करेमि भंते ! सामाइयं'**[4]—भगवन् ! मैं सामायिक (समता-

---

१. उत्तराध्ययन सूत्र अ. २५ गा. ३१

२. "दस मुंडा पण्णत्ता, तंजहा-सोइंदिय मुंडे जाव फासिंदिय मुंडे,
कोहमुंडे जाव लोहमुंडे, दसमे सिरमुंडे।"

—स्थानांग सूत्र, स्थान १० सूत्र ७४६

३. उत्तराध्ययन सूत्र अ. २५ गा. ३२

४. आवश्यक सूत्र में श्रमण सूत्र पाठ।

योग) को स्वीकार करता हूं।' समभाव की सतत साधना के लिए दीक्षित साधक को इन्द्रिय, मन, वचन और शरीर के साथ निरन्तर भावयुद्ध करना पड़ता है। उसे मन में उठने वाले क्रोध, अहंकार (मद, अभिमान), माया, द्वेष, मोह, मत्सर, काम, लोभ, आसक्ति, ममत्व, अहंत्व आदि विषयभावों से सतत संघर्ष (युद्ध) करना और उन्हें रोकना होता है। इन्द्रियाँ उसे बलात् विषय-वासनाओं की ओर ले जाने के लिए उद्यत हों, उस समय उसे सावधान रहकर संवर (निरोध) करने में डटकर जुटना होता है। वाणी से निकलने वाले वचनों पर भी अनवरत चौकसी रखनी होती है; कहीं राग-द्वेष मोहवश, क्रोधादि कषाय से प्रेरित, मद, मत्सर और स्वार्थ से सने, अहंत्व-ममत्व से भरे वचन न बोले जायें; कर्कश, कठोर, निश्चयात्मक, हिंसाजनक, छेदन-भेदन-जनक, सावद्य (पापयुक्त), मिश्र एवं दम्भवर्द्धक उद्‌गार न निकल जायें, इसका अहर्निश सतत ध्यान रखना पड़ता है। शरीर से होने वाली चेष्टाओं, प्रवृत्तियों, क्रियाओं एवं कार्यकलापों पर भी पूरी चौकीदारी रखनी होती है। इन्हें ही शास्त्रीय भाषा में मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति कहा गया है। इसी प्रकार मन-वचन-काय से सम्यक् प्रवृत्ति करने के लिए ईर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति, आदान निक्षेप-समिति, परिष्ठापनिका समिति, ये पाँच समितियाँ बताई गई हैं।[1]

इसीलिए पाँच समिति और तीन गुप्ति को शास्त्र में 'अष्टप्रवचनमाता' कहा गया है। माता जिस प्रकार अपने शिशु की संकट, दुःख, खतरे आदि से रक्षा करती है, उसी प्रकार ये अष्टप्रवचन-मातायें दीक्षित साधु-साध्वीगण की मन-वचन-काय की दुष्प्रवृत्तियों से, दुश्चिन्तन से, दुर्ध्यान से, दुश्चेष्टाओं से, अनाचार से, अनिच्छनीय व्यवहार एवं आचार-विचार से रक्षा करती है। इसके लिए 'उत्तराध्ययन सूत्र' में स्पष्ट संकेत किया गया है—साधक पंच महाव्रतों से युक्त हो, पंच समितियों से समित तथा तीन गुप्तियों से गुप्त हो एवं बाह्य-आभ्यन्तर तपश्चरण में उद्यत रहे। इसके लिए आचारांग सूत्र में स्पष्ट कहा गया—इस तन, मन, मन, वचन, इन्द्रिय आदि के साथ (भाव) युद्ध करो, बाह्य (पर) पदार्थों या व्यक्तियों के साथ युद्ध करने से तुझे क्या लाभ है?

---

१. पडिक्कमामि तिहिं गुत्तिहिं-मणगुत्तीए, वयगुत्तीए, कायगुत्तीए। पाडिक्कमामि, पंचहिं समिएहिं इरियासमिए भासासमिए, एसणासमिए, आदाणभंडमत्तनिक्खेवणा समिए, उच्चार-पासवण-खेल चल्ल सिंघाण परिहाणिया समिइए।

—आवश्यक सूत्र में श्रमण सूत्र पाठ

सचमुच, दीक्षा इस प्रकार की मंगलमयी समत्व-भावना को मंगलमयी क्रिया में परिणत करने की सद्वीथी है। समत्व-भावना (आजीवन सामायिक) की भावना को आचरित-क्रियान्वित करने के लिए दीक्षा प्राप्त साधक को क्या करना चाहिए ?, किस प्रकार का जीवन जीना चाहिए ? इस सम्बन्ध में 'उत्तराध्ययन सूत्र' में सुन्दर मार्ग-दर्शन दिया गया है—वह (सामायिक चारित्र की आराधना-साधना में तत्पर साधक) ममता से निवृत्त हो, निरहंकार हो, निःसंग (अनासक्त) तथा गौरव (ऋद्धि-रस—साता रूप गर्वत्रय) का त्यागी एवं त्रस-स्थावर सभी प्राणियों पर समभावी हो। वह लाभ और अलाभ में, सुख और दुःख में, जीवन और मरण में, निन्दा और प्रशंसा में तथा मान और अपमान में सम रहे। विशेषतः गौरव (पूर्वोक्त गर्वत्रय), कषाय, दण्ड (मन-वचन-काया से किसी जीव को सताना) शल्य (माया-निदान-मिथ्या-दर्शन रूप शल्य) एवं सप्तविध भय से निवृत्त हो तथा हास्य और शोक (चिन्ता, विलाप दैन्य एवं उदासी) से दूर रहे तथा निदान (नियाणा=भोगावाच्छारूप फल प्राप्ति का संकल्प) से रहित होने का पुरुषार्थ करे। वह इहलौकिक आकांक्षाओं से अनिश्रित (अप्रतिबद्ध) रहे तथा वसूले से काटने या चन्दन का लेप लगाये जाने पर भी अर्थात् दुःख और सुख में समभावी रहे एवं आहार मिलने, न मिलने पर या तुच्छ आहार मिलने या न मिलने पर भी समभाव में स्थित रहे। अप्रशस्त द्वारों (कर्मागमन हेतु रूप हिंसा आदि) से होने वाले आस्रवों का सर्वतोभावेन निरोध करे एवं अध्यात्म सम्बन्धी ध्यान-योगों से प्रशस्त उपशम (दम) रूप सर्वज्ञ-शासन में लीन रहे। इस प्रकार ज्ञान से, दर्शन से, चारित्र से, तप और शुद्ध भावनाओं से आत्मा को भावित करे।[1]

---

१. निम्ममो निरहंकारो, निस्संगो चत्तगारवो।
समो य सव्वभूएसु, तसेसु थावरेसु य ॥९०॥
लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा।
समो निंदा-पसंसासु, तहा माणावमाणओ ॥९१॥
गारवेसु कसाएसु, दंड-सल्ल-भएसु य।
नियत्तो हास-सोगाओ, अनियाणो अबंधओ ॥९२॥
अणिस्सिओ इहे लोए, परलोए अणिस्सिओ।
वासी-चंदण-कप्पो य, असणे अणसणे तहा ॥९३॥
अप्पसत्येहिं दारेहिं, सव्वओ पिहिआसवे।
अज्झप्पज्झाणजोगेहिं, पसत्थ-दम-सासणे ॥९४॥
एवं नाणेण चरणेण दंसणेण, तवेण य।
भावणाहि य सुद्धाहि, सम्मं भावेत्तु अप्पयं ॥९५॥
—उत्तराध्ययन अ. १९/९० से ९५

यह है आर्हती दीक्षा जो आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा बनने का राजमार्ग है। यही दीक्षा का **सत्यम्** है।

दीक्षा का मार्ग आन्तरिक शत्रुओं से जूझने वाले वीरों का मार्ग है :

दीक्षा का यह मार्ग है तो वीरों का, परन्तु ऐसे वीरों का नहीं जो अपने से प्रतिकूल विचार, आचार या व्यवहार रखता हो, उसे मारने, सताने, लड़ने-भिड़ने और द्वेषपूर्वक संघर्ष एवं युद्ध करने को उतारू हो जाते हैं, अपितु उन वीरों का यह मार्ग है, जो अपने अज्ञात मन में जन्म-जन्मान्तर से पड़े हुए काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर आदि आन्तरिक शत्रुओं से लड़ते, जूझते और उन्हें पराजित करते हैं। अपने कर्मरिपुओं को संवर द्वारा रोकने और निर्जरा द्वारा क्षय करके सतत साधना करने वाले महावीरों का मार्ग है। उनके लिए भगवान महावीर ने कहा था—"वीर पुरुष ही इस महाविधि के प्रति प्रणत-समर्पित होते हैं।"[1]

दीक्षा की सार्थकता : कुसंस्कारों का त्याग कर, सुसंस्कारों को अपनाने में :

साधु जीवन की साधना-यात्रा में आज सबसे बड़ा बाधक तत्त्व है—कुसंस्कार एवं मिथ्या मान्यता तथा साम्प्रदायिक कट्टरता के कुसंस्कार। दीक्षा का सर्वप्रथम प्रयोजन है—इन परम्परागत अथवा सम्प्रदायादि कट्टरता से प्राप्त तथा जन्म-जन्मान्तर से अथवा वातावरण से प्राप्त कुसंस्कारों को बदलना, सुसंस्कारों को अपनाना। एक परिवार, एक कुटुम्ब, एक जाति, एक प्रान्त, एक ग्राम-नगर या एक राष्ट्र तथा एक कट्टर धर्मान्ध सम्प्रदाय का न होकर सारे विश्व का कुटुम्बी, समग्र वसुधा का बन्धु, समस्त प्राणियों का मित्र, सभी परिवार, कुटुम्ब, जाति, सम्प्रदाय, प्रान्त एवं राष्ट्र वाले लोगों का आत्मीय बनने का सुसंस्कार अपनाना ही दीक्षा का **सत्यम्** के साथ **शिवम्** है।[2]

---

१. (क) तुलना करें—एगप्पा अजिए सत्तू, कसाया इंदियाणि य।
ते जिणित्तु जहानायं, विहरामि अहं मुणी ॥—उत्तरा., २३/३८

(ख) "पणया वीरा महाविहिं।"—आचारांग श्रु. १, अ. १ उ. ३ सू. ३७

२. भगवान् ने कहा—'मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरंमज्झ न केणइ। —आवश्यक सूत्र
अप्पणा सच्चमेसेज्जा, मित्ति भूएहिं कप्पए। —उत्त. अ. ६ गा. २
अप्पसमं मन्निज्जा छप्पिकाए।

जन्मता हुआ बच्चा न हिन्दू होता है न मुसलमान, न ईसाई और न ही ओसवाल, पोरवाल, अग्रवाल आदि, न ब्राह्मणादि किसी वर्ण या जाति का। वह इन कृत्रिमताओं से मुक्त, स्वच्छ मस्तिष्क वाला एवं शुद्ध निश्छल-हृदय होता है, किन्तु पारिवारिक, साम्प्रदायिक, प्रान्तीय, जातीय एवं राष्ट्रीय लोग कट्टरता, अन्धविश्वास तथा मिथ्या मान्यता के ऐसे कुसंस्कार भर देते हैं, जिनका निकालना अत्यन्त कठिन होता है। जो व्यक्ति प्राणियों के साथ, विशेषत: मनुष्यों के साथ उपर्युक्त कुसंस्कारों से प्रेरित होकर भेदभाव, अलगाव, द्वेषभाव, वैर-विरोध या क्रोधादि-कषायभाव रखता है, वह पापकर्म का बन्ध करता है। दीक्षा लेने वाले साधक या साधिका को पापकर्म बन्ध के कारणभूत कुसंस्कारों से मुक्त होना अत्यावश्यक है। अगर उसमें तेरे-मेरे के, तथा अहंत्व-ममत्व के कुसंस्कार नहीं बदले तो वह शुभकर्मों का क्षय करना तो दूर रहा, इन पूर्वबद्ध अशुभकर्मों का क्षय भी नहीं कर सकेगा, न ही वह इन अन्ध मान्यताओं, संकीर्णताओं, कट्टरताओं तथा बाड़ेबंदियों के कुसंस्कारों से बंधने वाले पापकर्मों के आस्रव (आगमन) का निरोध (संवर) कर सकेगा।

द्विजन्म की सफलता : कुसंस्कारों के त्याग एवं सुसंस्कारों के ग्रहण में

वस्तुत: दीक्षा एक प्रकार से द्विजन्म-दूसरी बार जन्म है। इसलिए इसमें पहले के (गृहस्थवास के) जन्म के कुसंस्कारों का त्याग करना तथा पुरातन और नूतन सुसंस्कारों का अपनाना अनिवार्य है। तभी दीक्षा की सार्थकता होगी, तभी यह द्विजन्म सफल होगा।

सर्वभूतात्मभूत एवं समदृष्टि पापकर्म का अबंधक,
इससे विपरीत पापकर्म का बन्धक

'दशवैकालिक सूत्र' में स्पष्ट कहा गया है—"जो सर्वभूतात्मभूत (समस्त प्राणियों के साथ आत्मौपम्य का व्यवहार करने वाला) है, सभी जीवों पर समदृष्टि रखता है, जिसने आस्रवद्वारों को बन्द कर दिया है, जो शान्त-दान्त है, वह पापकर्म का बन्ध नहीं करता।"[1]

इसका फलितार्थ यह है कि दीक्षा लेकर जो साधक प्राणियों या मनुष्यों

१. "सव्वभूयप्प भूयस्स, सम्मं भूयाइं पासओ।
पिहि आसवस्स दंतस्स, पावकम्मं न बंधइ॥"
—दशवैकालिक अ-४ गा. ९

के प्रति किसी भी मुद्दे को लेकर आत्मवत् सर्वभूतेषु के बदले भेदभाव, अलगाव-वाद, कट्टरता, धर्मान्धता, राष्ट्रान्धता, जातीयता, प्रान्तीयता आदि रख कर, तथा अपने से भिन्न आचार-विचार वाले के प्रति असहिष्णु बन कर मन-वचन-काया से घृणा, द्वेष, वैमनस्य, वैरभाव, शत्रुभाव आदि रखते या फैलाते हैं, वे जानबूझ कर पापकर्म का बन्ध करते हैं।

मदालसा की तरह दीक्षार्थी के कुसंस्कारों का त्याग करा कर सुसंस्कार भरें

ये कुसंस्कार तभी दूर हो सकते हैं, जब दीक्षा लेने वाले दीक्षार्थी या दीक्षार्थिनी को उसके गुरु या गुरुणी दीक्षा देते समय पूर्वगत कुसंस्कारों-सावद्य-योगों का व्युत्सर्ग (वोसिरे-वोसिरे) करवा दें तभी दीक्षा का **शिवं** रूप विकसित हो सकता है।

मदालसा रानी ने अपने सात पुत्रों को द्विजन्मा (विरक्त संन्यासी) बनने से पूर्व पूर्वजन्म के कुसंस्कारों को निकाल कर शुद्ध आत्मा के संस्कार देने का पुरुषार्थ किया। उसने पालने में झुलाते-झुलाते प्रत्येक पुत्र को उद्बोधन किया—

"शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरंजनोऽसि, संसार-माया-परिवर्जितोऽसि।
संसार-स्वप्नं त्यज मोह-निद्रां, मदालसा वाक्यमुवाच पुत्रम्॥"

मदालसा ने अपने पुत्र से कहा—"हे पुत्र! तू शुद्ध है, बुद्ध है, निरंजन है और संसार की मोहमाया से रहित (अलिप्त) है। यह संसार स्वप्न है। तू मोह-निद्रा का त्याग कर।"

मदालसा रानी के इस उद्बोधन से उसके सातों पुत्र एक-एक करके संसार से विरक्त होकर विश्व कुटुम्बी संन्यासी बन गये। इसे दूसरे शब्दों में यों कह सकते हैं—'मदालसा ने अपने पुत्रों के विरक्त संन्यासी बनने से पूर्व पहले के कुसंस्कारों (मोहमाया के तथा सांसारिक भोगवासना के क्षणिक सुखों के संस्कारों) को निकाल कर ज्ञान, वैराग्य और त्याग के सुसंस्कार भर दिये। अगर मदालसा अपने बच्चों में ज्ञान, वैराग्य और त्याग के संस्कार न भरती तो बहुत सम्भव है, वे सभी पुत्र संसार, राज्य और विषयभोगों के क्षणिक सुखों में लिप्त एवं आसक्त होकर मोहमायामय संसार में ही उलझ जाते। इसी प्रकार आज दीक्षा लेने से पूर्व दीक्षार्थी विरक्त या विरक्ता के पूर्वोक्त कुसंस्कारों का त्याग (वमन) करा कर सुसंस्कारों का भरना अत्यावश्यक है। अन्यथा वे भी परिवारादिमय एक संसार को छोड़कर सम्प्रदाय, जाति, प्रान्त आदि के कट्टर एवं संकीर्ण दायरे के स्वत्व मोहमय संसार में फंस कर रह जायेंगे। 'दशवैकालिक

सूत्र' में यही कहा है—'जो साधक आत्महित चाहता है, उसे क्रोधादिकषायरूप चार दोषों का वमन कर देना चाहिए ।[1]

दीक्षार्थी की योग्यता और दीक्षा का क्रम

दीक्षा का अर्थ यह नहीं है कि जो भी, जैसा भी, जिस प्रकार के संस्कारों या विचारों वाला आया, उसे मूँड लिया । यदि उसमें सुसंस्कार या सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान परिपक्व नहीं है, तो उसका वैराग्य, त्याग एवं धर्मक्रियाएँ केवल दिखावे की वस्तु बन जायेंगी । उसका साधु-जीवन टी. बी. के रोगी की तरह बाहर से दबदबा भरा, भड़कीला, आडम्बरपूर्ण एवं प्रचारबहुल होगा, किन्तु अन्दर से खोखला होकर 'ऊँची दूकान, फीके पकवान' वाली कहावत चरितार्थ करेगा ।

यही कारण है कि 'दशवैकालिक सूत्र' में दीक्षा ग्रहण करने से पूर्व दीक्षार्थी की क्या योग्यता होनी चाहिए ? उसके जीवन में कौन-कौन से प्रमुख गुण होने चाहिए ? इसका सुन्दर क्रम बताया है— "दीक्षा के उम्मीदवार को सर्वप्रथम जीव-अजीव का, यानी चेतन और जड़ का, आत्मा, अनात्मा का ज्ञान होना अनिवार्य है, क्योंकि जिस साधक को जीव-अजीव का ज्ञान नहीं होगा, वह जीव-संयम और अजीव, पदार्थों (मद्य, मांस, हिरण्यादि) का संयम कैसे करेगा ? जब उसे जीव-अजीव का सम्यक्ज्ञान होगा, तब वह सभी जीवों की बहुविध गति, जाति आदि को जान सकेगा । जब जीवों की गति-आगति आदि का ज्ञान होगा, तब वह उन-उन सुगति-कुगतियों के कारणभूत पुण्य-पाप को जान पाएगा । पुण्य-पाप के शुभाशुभ बन्ध को जान कर उनसे मुक्त होने का उपाय भी जानने को तत्पर होगा । शुभ-अशुभ सभी कर्मों से मुक्त होने के सन्दर्भ में दिव्य एवं मनुष्य सम्बन्धी (मानुष्य) कामभोगों से विरक्त होगा । संसार के भोगों से विरक्त होते ही वह बाह्य (धन, धान्य, मकान, दूकान, कुटुम्बीजन आदि) तथा आन्तरिक (पंचेन्द्रिय-विषयों कषायादि विभावों एवं परिभावों आदि) संयोगों का त्याग कर सकेगा । बाह्यान्तर संयोगों का त्याग करने के साथ ही उसके अन्तर में गृहस्थवास को तथा गृहस्थ के कार्यों को छोड़ कर अनगार धर्म में प्रव्रजित एवं मुण्डित होने की भावना जगती है और वह अनगार वृत्ति में

१. "कोहं माणं च मायं च, लोभं च पाववड्ढणं,
वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छंतो हियमप्पणो ।"
—दशवैकालिक ८।३७

दीक्षित होकर उत्कृष्ट संवर रूप अनुत्तर धर्म का स्पर्श कर लेता है।[1]

दीक्षा का उद्देश्य : ज्ञान, वैराग्य, त्याग से क्रमशः सर्व कर्म मुक्ति तक पहुँचना

अतः स्पष्ट है कि दीक्षा एक आध्यात्मिक ऊर्ध्वारोहण है, जो ज्ञान, वैराग्य और त्याग के सोपानों पर उत्तरोत्तर कदम बढ़ाते हुए मोक्ष की मंजिल तक पहुँचना है। दूसरे शब्दों में कहें तो, दीक्षा जीव-अजीव, सर्वजीव-गति, पुण्य-पाप, बन्ध और मोक्ष के ज्ञान से लेकर दिव्य और मानवीय भोगों से वैराग्य एवं बाह्य-आभ्यन्तर-संयोगों का त्याग करके संवर-निर्जरायुक्त अनगार धर्म में प्रव्रजित (दीक्षित) होकर सर्व कर्म-युक्ति तक पहुँचने का सर्वश्रेष्ठ श्रेयमार्ग है। सर्वेन्द्रिय समाहित होकर समस्त कर्मों से मुक्ति तक पहुँचने के लक्ष्य का अहर्निश सतत ध्यान रखना तथा अप्रमत्त रहकर प्रत्येक प्रवृत्ति करना ही दीक्षा का उद्देश्य है।[2]

असंयम से निवृत्ति और संयम में प्रवृत्ति ही चारित्र पालन की विधि

इस दृष्टि से दीक्षाग्रहण के पश्चात् दीक्षित साधक-साधिका का एकमात्र निवृत्त होकर बैठ जाना या स्व-पर कल्याणकारी प्रवृत्तियाँ भी बन्द कर देना

---

१. जो जीवे वि न याणेइ, अजीवे वि न याणेइ।
जीवाजीवे अयाणंतो, कहं सो नाहीइ संजमं ॥१२॥
जया जीवमजीवे य, दो वि एए वियाणइ।
तया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणइ ॥१४॥
जया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणइ।
तया पुण्णं च पावं च, बंधं मुक्खं च जाणइ ॥१५॥
जया पुण्णं च पावं च, बंधं मुक्खं च जाणइ।
तया निव्विदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ॥१६॥
जया निव्विदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे।
तया चयइ संयोगं, सब्भितरं-बाहिरं ॥१७॥
जया चयइ संजोगं, सब्भितरं-बाहिरं।
तया मुंडे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारियं ॥१८॥
जया मुंडे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारियं।
तया संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं ॥१९॥

—दशवैकालिक सूत्र अ-४, गा-१२ से १९ तक

२. "एवमे आणि जाणित्ता, सत्वभावेण संजए।
अप्पमत्तो जए निच्चं, सव्विंदिअ-समाहिए ॥"

—दशवैकालिक ८।१६

चारित्र नहीं है, अपितु 'उत्तराध्ययन सूत्र' के अनुसार एक ओर से विरति (निवृत्ति) करना और दूसरी ओर से प्रवृत्ति करना ही साधक के चारित्र (संयम) पालन का सर्वोत्तम उपाय है। अर्थात् असंयम के जितने भी कार्यकलाप, प्रवृत्ति या क्रियाकलाप हैं, उनसे निवृत्ति और संयम के कार्य, प्रवृत्ति या क्रियाकलापों में प्रवृत्ति करना ही चारित्र-पालन की श्रेष्ठ विधि है।[1] यद्यपि जिस प्रवृत्ति के पीछे, राग या द्वेष होगा, वह प्रवृत्ति कर्मबन्धकारी होगी, तथापि जब तक साधक को वीतरागता प्राप्त नहीं हो जाती, तब तक राग पूर्णतया छूट नहीं सकता। मन्दतम कषाय तो दसवें गुणस्थान तक रहता है, बारहवें गुणस्थान में पहुँचने पर साधक का मोह क्षीण होता है। तेरहवें गुणस्थान में वह वीतरागता प्राप्त करता है। इस दृष्टि से सोचें तो छद्मस्थ की प्रत्येक प्रवृत्ति या क्रिया रागयुक्त से तो कर्मबन्धकारक होती है। हाँ, यदि वह चर्या या प्रवृत्ति तपस्या, व्रतपालन आदि निष्काम, निःस्वार्थ या रागरहित हो तो, उससे कर्मक्षय होता है। अन्यथा दीर्घ-तप, दीक्षा एवं सम्यग्ज्ञानादि रत्नत्रय-साधना का कोई अर्थ नहीं रहता। अतएव वीतराग सर्वज्ञ तीर्थंकरों ने साधु-साध्वियों को प्रत्येक चर्या, क्रिया, प्रवृत्ति या अनुष्ठान करते समय यतना, सावधानी और अप्रमाद रखने का विधान किया है। 'दशवैकालिक सूत्र' में कहा गया है—

> "जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।
> जयं भुंजंतो भासंतो, पावकम्मं न बंधइ॥"[2]

साधक यदि यतनापूर्वक चलता (विहार, भिक्षाटन आदि चर्या करता) है, यतनापूर्वक खड़ा होता है, यतना से बैठता है, यतना से सोता है, यतना से भोजन करता (अथवा प्रत्येक कल्पनीय वस्तु का उपभोग करता) है, और यतनापूर्वक बोलता (पढ़ता-पढ़ाता व लिखता) है, तो पापकर्म का बन्ध नहीं होता।

फलितार्थ यह है कि प्रत्येक प्रवृत्ति, चर्या या क्रिया करते समय यदि साधक मनोयोगपूर्वक शुभ भावों से युक्त रहता है तो प्रशस्त योग होने से पापकर्म का बन्ध नहीं होता, पुण्य कर्म का बन्ध हो सकता है। यदि निःस्पृह भाव से रागरहित प्रवृत्ति हो तो कर्मनिर्जरा भी हो सकती है। अतः जब तक साधक वीतराग नहीं हो जाता, तब तक उसे पापकर्मों से बचना बहुत आवश्यक है।

---

१. एगओ विरइं कुज्जा, एगओ य पवत्तणं। असंजये नियत्तिं च, संजाये य पवत्तणं॥
—उत्तराध्ययन ३१।२

२ दशवैकालिक सूत्र, अ-४, गा. ८.

श्रमण-दीक्षा का उद्देश्य : स्व-पर कल्याण की प्रवृत्ति

इस दृष्टि से श्रमण दीक्षा का उद्देश्य न तो केवल आत्मकल्याण है, और न ही एकमात्र परकल्याण है। अपितु पूर्वोक्त गुण सम्पन्न सर्वभूतात्मभूत साधक अपनी साधु-मर्यादा में रहते हुए यतनापूर्वक स्वकल्याण के साथ परकल्याण की, आत्मोद्धार के साथ परोद्धार समाजोद्धार की प्रवृत्ति कर सकता है। 'उत्तराध्ययन सूत्र' में इसी तथ्य की ओर इंगित किया गया है। भगवान् महावीर ने चतुर्विध संघ की स्थापना इसी उद्देश्य से की थी। इसी उद्देश्य से उनके अनुगामी साधु-साध्वियों की प्रेरणा से स्थान-स्थान पर अनेक नैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन बने हैं, आज भी बनते हैं और भविष्य में भी बन सकते हैं। स्थविरकल्पी साधु वर्ग के लिए एकान्त निवृत्ति उपादेय नहीं है। उसकी प्रवृत्ति निवृत्तिलक्षी हो और निवृत्ति प्रवृत्तिलक्षी हो, यही अभीष्ट है। यही साधु दीक्षा का **सत्यम्, शिवम्** के साथ **सुन्दरम्** है।[1]

—द्वारा बसन्तलाल पूनमचन्द भण्डारी,
२५८५, नवा कपड़ा बाजार, महात्मा गांधी रोड, अहमदनगर-४१४००१

चातुर्मास में

□ अनीता मेहता 'नेकी'

अभिनन्दन है संतों का,
तपस्या से तपे तप का!
माया से मुक्त मन का!!

स्वागत है उस निर्णय का,
जिससे जुड़ा है—
कल्याण सब जन का!

अगवानी में आपके,
आतुर हैं हम—
करने को अर्पित तन, मन, धन!

व्याकुल है प्रकृति,
बरसाने को—
काले काले घन!

—रूप इलेक्ट्रॉनिक्स, ए-२२, जमना नगर, सोडाला, जयपुर-३०२००६

---

१. (क) साधु शब्द का व्युत्पत्त्यर्थ :—साधनोति स्व-परकल्याणमिति साधुः।
—उत्तराध्ययन लक्ष्मीवल्लभी टीका

(ख) एवं गुण समाउत्ता, जे भवंति दिउत्तमा। ते समुद्धतुं, परमप्पाणमेव य।।
—उत्तराध्ययन सूत्र २५।३५



द्रव्य का स्वरूप

☐ प्रतिभा चौरड़िया

जैन धर्म विश्व का प्राचीनतम धर्म है। मोक्ष मार्ग पर बढ़ाने वाला धर्म है। व्यक्ति की सत्ता और वस्तु-स्वातन्त्र्य का सर्वांग विकास-जैन धर्म की अमूल्य विशेषताएँ हैं। तात्त्विक दृष्टि से प्रत्येक सत्ता अनादि अनिधन द्रव्य रूप है। द्रव्य-विवेचन जैन धर्म का महत्त्वपूर्ण अंग है। द्रव्य का लक्षण सत् (होना) है और समस्त लोक इन 'सतों' की सृष्टि है। सत् अनादि अनन्त है और लोक भी, ये दोनों अकृत्रिम हैं।

द्रव्य की पहचान उसका सत् (होना) है। 'है' में गुण की सार्थकता है। यह सम्पूर्ण लोक छह द्रव्यों से व्याप्त है। ये छह द्रव्य जीव की गति-स्थिति परिणति में सहायक हैं। द्रव्य-सूत्र में परमदर्शी जिनवरों ने लोक को **धर्म, अधर्म, आकाश, काल, पुद्गल और जीव**—इस प्रकार छह द्रव्यात्मक कहा है। द्रव्य का व्यक्तित्व गुण और पर्याय से रचित है, यानी द्रव्य गुणवान और पर्याय-वान है। 'गुण' द्रव्य में रहकर भी स्वयं निर्गुण है। गुण का लक्षण है **उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य** युक्त होना। इन तीनों शब्दों पर विचार करना जैन धर्म के मर्म को समझना है। जैन-दृष्टि से **'गुण पर्ययवद् द्रव्यम्'** एक सत्य है।

निश्चय दृष्टि से द्रव्य अपरिवर्तित है, पर व्यवहार दृष्टि से परिवर्तन सम्भव है। पर्याय यानी रूप में अन्तर होता है, इस दृष्टि से पर्याय का आगम-लोप सम्भव है। यही उत्पाद-व्यय है।

ध्रौव्य—द्रव्य की अस्मिता या निजता है—ध्रौव्य अप्रभावित बना रहता है। वह अंश मात्र भी नहीं बदलता है, परिवर्तित नहीं होता है।

उत्पाद—यानी उत्तरावस्था का आविर्भाव यानी दूसरी पर्याय या अन्य रूप ग्रहण करना।

व्यय—यानी पूर्वावस्था का तिरोभाव—एक पर्याय को छोड़ना ताकि उत्पाद सम्भव हो।

इस उत्पाद-व्यय, आने-जाने, विगत-आगत, आगम-लोप से यह सृष्टि व्याप्त है। द्रव्य की संख्या में वृद्धि या कमी नहीं हो सकती, आत्मा एक स्वतन्त्र सत् है, अतः था, है और रहेगा।

(१) **जीव द्रव्य**—द्रव्य सूत्र में लिखा है कि जो चार प्राणों से वर्तमान में जीता है, अतीत में जीया है और भविष्य में जीयेगा, वह जीव द्रव्य है। चैतन्य उसका गुण है—आदा-अप्पा—देखना और जानना।

(२) **पुद्गल**—निर्जीव द्रव्य है। जिसमें पूरण-गलन की क्रिया होती है, जो टूटता-जुड़ता रहता है वह पुद्गल है। इस संसार की समस्त क्रियाएँ पौद्-गलिक हैं।

(३) **धर्म**—द्रव्य की गति में सहायक है। यह जीव और पुद्गल के गमन में सहायक या निमित्त बनता है।

(४) **अधर्म**—यह जीव और पुद्गल की स्थिति का निमित्त है।

(५) **आकाश**—यह द्रव्यों को अवगाह (जगह) देता है। जिनेन्द्र देव ने आकाश द्रव्य को अचेतन, अमूर्त, व्यापक और अवगाह लक्षण वाला कहा है।

(६) **काल**—यह सृष्टि की क्रमबद्धता का हेतु है। जीव व पुद्गल में नित्य होने वाले अनेक प्रकार के परिवर्तन या पर्याय मुख्यत: काल-द्रव्य के आधार से होती है। उनके परिणमन में काल द्रव्य निमित्त है। स्पर्श, गंध, रस और रूप से रहित, अगुरु-लघु गुण से युक्त तथा वर्तना लक्षण वाला काल-द्रव्य है।

इन छः द्रव्यों की अपनी विशेषताएँ और भी हैं—

- धर्म, अधर्म, आकाश और काल शुद्ध द्रव्य हैं। जीव व पुद्गल शुद्ध-अशुद्ध दोनों हैं। मुक्तावस्था में जीव शुद्ध और संसारावस्था में अशुद्ध है। इसी तरह जीव सापेक्ष कार्मण पुद्गल अशुद्ध और जीव-निरपेक्ष पुद्गल शुद्ध है।
- जीव व पुद्गल सक्रिय द्रव्य हैं, शेष निष्क्रिय। जीव के सक्रिय होने का बाह्य साधन कर्म पुद्गल है और पुद्गल के सक्रिय होने का बाह्य साधन काल द्रव्य है।
- जीव चैतन्य युक्त है, शेष चैतन्य रहित।
- काल आकारी नहीं है, इसलिए अनस्तिकाय है, शेष द्रव्य अस्तिकाय हैं।
- पुद्गल मूर्तिक हैं, शेष द्रव्य अमूर्तिक हैं। ये सारे पदार्थ परस्पर सापेक्षता के नियम से एक-दूसरे पर उपकार करते हुए सत्ता में हैं। प्रत्येक पदार्थ में उत्पत्ति, विनाश और ध्रुवता का नियम एक साथ वर्तता है और अन्य पदार्थों के साथ सह-अस्तित्व को धारण करता है।

• धर्म, अधर्म और आकाश संख्या में एक-एक हैं। काल, पुद्गल व जीव द्रव्य अनन्तानन्त हैं।

• धर्म और अधर्म ये दोनों लोक प्रमाण हैं। आकाश लोक व अलोक दोनों में व्याप्त है। काल केवल समक्ष क्षेत्र अथवा मनुष्य क्षेत्र में है।

• काल की माप-इकाई समय, पुद्गल की इकाई परमाणु और आकाश की इकाई प्रदेश है।

• जीव के दो भेद हैं—**संसारी** व **मुक्त**—दोनों चेतन स्वभाव वाले हैं और उपयोग लक्षण वाले हैं। संसारी जीव शरीरी और मुक्त जीव अशरीरी हैं।

• आकाश के दो भेद हैं—**लोकाकाश** में छह द्रव्य समग्र अवस्थिति में हैं और **अलोकाकाश** में सिर्फ आकाश द्रव्य व्याप्त है।

• पुद्गल-परमाणु रचित द्रव्य हैं। ये रूप, रस, गंध, व स्पर्श युक्त हैं। पुद्गल में कुल बीस गुण हैं।

पुद्गल द्रव्य दो प्रकार का है—**अणु** व **स्कंध** के रूप में पुद्गल की शुद्धावस्था को परमाणु और अशुद्धावस्था को स्कंध कहते हैं।

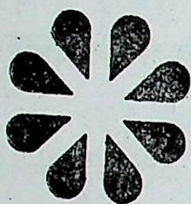
स्कंध पुद्गल छह प्रकार के हैं। उदाहरणों के साथ पृथ्वी अतिस्थूल का, जल स्थूल का, छाया-प्रकाश आदि नेत्र इन्द्रिय विषय स्थूल-सूक्ष्म का, रस-गंध-स्पर्श-शब्द आदि इन्द्रिय विषय सूक्ष्म-स्थूल का, कार्मण-स्कंध सूक्ष्म का तथा परमाणु अतिसूक्ष्म का दृष्टांत है।

• परमाणु—जो आदि, मध्य और अन्त से रहित है, जो केवल एक प्रदेशी है—जिसे इन्द्रियों द्वारा ग्रहण किया नहीं जा सकता, वह विभाग-विहीन द्रव्य परमाणु है। स्कंध की भांति परमाणु के भी स्पर्श, रस, गंध, वर्ण गुणों में सदा पूरण-गमन क्रिया होती है। इसलिए परमाणु भी पुद्गल है।

जैन धर्म में इस प्रकार धर्म द्रष्टाओं द्वारा द्रव्य के स्वरूप का विवेचन हुआ है जो जैन साहित्य की अमूल्य निधि है।

—Jain Industrial Corporation
70, Sambudoss Street, Madras-600001

□ □ □



उपनिषद् में प्रयुक्त परमेष्ठि पद

□ डॉ० साध्वी सुरेखा श्री

नमस्कार मंत्र में स्थित पंच पदों को परमेष्ठि संज्ञा से सम्मानित किया है। अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु ये पंच पद ही परमेष्ठि पद से रूढ़ हैं या अन्यत्र भी यह प्रयुक्त है, इसके समाधान के लिए जैन ग्रंथों के अतिरिक्त जैनेतर वाङ्मय का अध्ययन भी अपेक्षित है।

इस संदर्भ में हम यहाँ उपनिषदों की चर्चा करेंगे कि उपनिषद् में इसका उल्लेख कहाँ-कहाँ किया है तथा किस अर्थ-संकुल में इसे निबद्ध किया है। वैदिक साहित्य में उपनिषदों को वेदान्त कहा जाता है। अध्यात्म की पराकाष्ठा की तुला पर इसे तोला गया है। वस्तुत: भारतीय तत्त्वज्ञान और धर्म सिद्धान्तों के मूल स्रोत का गौरव इन्हीं उपनिषदों को प्राप्त है। यद्यपि उपनिषदों की संख्या बहुत है, तथापि यहाँ पर अपेक्षित उपनिषदों मात्र का कथन किया है। जहाँ-जहाँ पर 'परमेष्ठि' पद का निर्देश किया है, उस पर हम दृष्टिपात करेंगे।

प्राचीनता की दृष्टि से 'बृहदारण्यकोपनिषद्' विशाल एवं प्राचीन है। इसमें 'परमेष्ठि' पद का निर्देश दो स्थलों पर एक समान किया है, "परमेष्ठिन: परमेष्ठी ब्रह्मणों ब्रह्म स्वयंभु ब्रह्मणे नम:"[1] यहाँ ब्रह्म को परमेष्ठी पद से अलंकृत करके नमस्कार किया है।

'नारद परिव्राजकोपनिषद्' में नारद शंका समाधान हेतु पितामह ब्रह्मा के पास जाते हैं। पितामह ब्रह्मा समाधान करते हुए परिव्राज्य स्वरूप क्रम को नारद से कहते हैं, ऐसा उल्लेख किया गया है। यहाँ इस उपनिषद् में ब्रह्मा को परमेष्ठी-पद पर अध्यारूढ़ किया है।[2]

---

१. बृहदारण्यक उ. ४.६.३., २.६.३.

२. नारद परि. उ. २.८.१.

(अ) नारदेन प्रार्थित परमेष्ठी सर्वत: सर्वानवलोक्य····।

(ब) विधिवद्ब्रह्म निष्ठापरं परमेष्ठिनं नत्वा स्तुत्वा यथोचितं····।

'कैवल्योपनिषद्' में भी ब्रह्मा को परमेष्ठि अर्थ परक लेते हुए कथन किया है कि 'अश्वह्लायन ऋषि भगवान् परमेष्ठि ब्रह्मा के पास आकर कहने लगे।'[1]

जहाँ इन उपनिषदों में परमेष्ठि संज्ञा से ब्रह्मा अर्थ लिया है, वहाँ अन्य स्थल पर विष्णु अर्थ घटन भी किया है। 'महोपनिषद्' में इस विष्णु अर्थ का उल्लेख किया गया है।[2]

ब्रह्मा-विष्णु तथा के साथ-साथ प्रजापति को भी परमेष्ठि-संज्ञा से अभिहित किया है। 'अव्यक्तोपनिषद्' तथा 'जैमिनीय उपनिषद्' में परमेष्ठि-प्रजपति को कहा गया है।[3]

ब्रह्मा, विष्णु प्रजापति इन तीनों को परमेष्ठि पद में घटित करनें का हेतु यही हो सकता है कि ये देव-तत्त्व में अधिष्ठित हैं। देव-तत्त्व में प्रतिष्ठित होने से इनकी परम पद में स्थिति होनी भी आवश्यक है। जो परम पद में स्थित है, परमात्म स्वरूप है, स्वाभाविक है कि परम उच्चावस्था को प्राप्त, परम-पद में स्थित होगा ही।

ब्रह्मा, विष्णु, प्रजापति इन तीनो को ही परमेष्ठि-पद से सुशोभित नहीं किया वरन् व्यापक आत्म स्वरूप को भी परमेष्ठि-पद सिंहासन पर आरूढ़ किया है। परम-आत्म स्थिति का कथन 'बाष्कलमन्त्रोपनिषद्' में किया है। "अहमस्मि जरिता सर्वतोमुखः पर्यारणः परमेष्ठी नृचक्षाः। अहं विष्वङ्ङहमस्मि प्रसत्वानहमेश्रोऽस्मि यदिदं नु किं च।[4]

'वाष्कलमन्त्रोपनिषद्' में सर्वत्र आत्म स्थिति का कथन करते हुए आत्मा की व्यापकता का स्वरूप-निर्देश के संदर्भ में परमेष्ठि कहकर भी संबोधित किया है।

---

१. ॐ अथाश्वलायनो भगवन्तं परमेष्ठिनमुपसमेत्योवाच। कैवल्योपनिषद्—१.१.

२. परमेष्ठ्यपि निष्ठावान्हीयते हरिप्यजः।
भावोऽप्यभावमायाति जीर्यन्ते वै दिगीश्वराः। म. उ. ३.५१.

३. (१) अव्यक्तोपनिषद्—१.
ततः परमेष्डी व्यजायत....।
(२) जैमिनीय उपनिषद्—३.७.३.२., ३.७.३.३.
तदेतद्ब्रह्म प्रजापतयेऽब्रवीत् प्रजापतिः परमेष्ठिने प्राजापत्याय परमेष्ठी प्राजापत्यो देवाय....।

४. वाष्कलमन्त्रोपनिषद्-२५.

हमारे यात्रा आयोजन का मूल उद्देश्य है ज्ञान, दर्शन और चारित्र की अभिवृद्धि ! खेद है कि आजकल इस मूलभूत उद्देश्य से भटककर आयोजक संत-दर्शनयात्रा को पर्यटन का रूप दे रहे हैं ।

संत-दर्शन के साथ-साथ ऐतिहासिक-स्थलों एवं लौकिक तीर्थों को देखने के भी कार्यक्रम बनाये जाते हैं जो हमारी परम्परा, संस्कृति एवं धर्म के विरुद्ध हैं । इस प्रकार के कार्यक्रमों से धर्मवीर लोंकाशाह के बलिदान पर पानी फेरा जा रहा है, जो कतई उचित नहीं है ।

कुछ व्यक्ति तर्क देते हैं कि अगर ऐतिहासिक स्थलों के कार्यक्रम साथ-साथ बनाते हैं तो यात्री अधिक संख्या में भाग लेते हैं । हो सकता है, यह सत्य हो। पर ऐसे पर्यटन प्रेमी अन्यों को भी अपनी ओर आकर्षित करते हैं । इससे धर्म, समाज, संस्कृति एवं परम्परा को नुकसान ही है । पर्यटन के बहाने यात्रियों की भीड़ करने से अन्य वास्तविक धर्म-यात्रियों को जगह-जगह दुविधा भी उठानी पड़ती है । अतः हमारा संत दर्शन यात्रा आयोजकों से निवेदन है कि वे इस कटु सत्य को समझें और धर्मयात्रा के साथ पर्यटन को न जोड़ें ।

अनेक बार ऐसा भी देखने में आया है कि यात्री प्रार्थना, प्रवचन, चौपाई, प्रतिक्रमण इत्यादि कार्यक्रम के समय को ऐतिहासिक स्थल देखने में तथा खरीदी में लगा देते हैं एवं भोजन के समय सीधे भोजनशाला में पहुँच जाते हैं ।

यद्यपि स्थानीय संघ दर्शनार्थियों के भोजन इत्यादि का समुचित प्रबन्ध करता है लेकिन ऐसे दर्शनार्थियों को भोजन करना एवं संघ की अन्य सेवाएं ग्रहण करना अनुचित है ।

धर्म-यात्रा को सफल बनाने के लिए सामान्यतया दर्शनार्थियों की आचार संहिता भी होनी चाहिये । दर्शनार्थी यात्रा-अवधि में निम्न नियमों का पालन अवश्य करें ।

(१) यात्री यात्राकाल में आसन, पूंजनी, मुँहपत्ति, माला, स्वाध्यायोपयोगी साहित्य अवश्य साथ रखें । उपन्यास इत्यादि अश्लील साहित्य का त्याग करें ।

(२) औसतन प्रतिदिन एक से तीन सामायिक अनिवार्यतः करें ।

(३) जिस गाँव में प्रार्थना के कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं हुए हों तो वहाँ प्रातः संघ का नाश्ता नहीं करें ।

(४) प्रवचन में सम्मिलित नहीं हो सकें तो प्रातः एवं चौपाई में सम्मिलित नहीं हो सकें तो शाम को संघ का भोजन नहीं करें ।

(५) रात्रि भोजन न करें, होटल में न खायें तथा जूठन न डालें ।

(६) नाटक, टी. वी., पिक्चर, चिड़ियाघर, अजायबघर तथा अन्य स्थल देखने के लिए न जायें।

(७) जहाँ तक हो, स्नान एवं वस्त्र प्रक्षालन (धोने) की मर्यादा करें।

(८) तड़कीले-भड़कीले, देहदर्शक वस्त्र न पहनें तथा लिपस्टिक, पाउडर, स्नो, क्रीम, शेंपू, इत्र इत्यादि का उपयोग न करें।

(९) बहुमूल्य वस्तुएँ एवं जोखम साथ में न लें। कदाचित् ले ली हो तो खोने पर किसी के पास शिकायत न करें। समभाव से नुकसान को सहन करें।

(१०) रात्रि को दर्शन-मांगलिक के लिए साधु-साध्वियों की निद्रा-भंग न करें। (यात्रा-आयोजकों को भी चाहिए कि साधु-साध्वियों के दर्शनों के कार्यक्रम रात्रि को न रखें। सूर्यास्त के बाद दर्शनों का कार्यक्रम रखने से संतों को प्रतिक्रमण में बाधा पड़ती है तथा संतों को बहनों से एवं सतियों को भाइयों से इच्छा एवं मर्यादा न होते हुए भी संक्षिप्त बात ही सही, करनी पड़ती है।)

(११) प्रस्थान के समय सामूहिक मंगल पाठ सुनें। पृथक्-२ मांगलिक न मांगें। संतों के प्रतिक्रमण, प्रतिलेखन, आहार आदि आवश्यक कार्य के समय मांगलिक न मांगें।

(१२) इलेक्ट्रोनिक (बिजली) की घड़ी साथ में हो तो साधु-साध्वियों के चरण स्पर्श न करें।

(१३) ब्रह्मचर्य का पालन करें। जहाँ तक हो, सचित का त्याग रखें।

(१३) स्थानीय कार्यक्रमानुसार प्रवचन इत्यादि हो जाने के बाद असमय में प्रवचन देने हेतु संतों से आग्रह न करें।

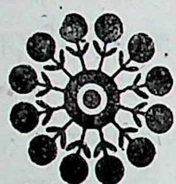
यात्रा-आयोजकों से हमारा पुनः अनुरोध है कि वे संत दर्शन यात्रा को संत दर्शन तक ही सीमित रखें। साथ-साथ यह भी सुझाव है कि कार्यक्रम इस प्रकार बनाएँ कि संत-सान्निध्य का पूरा-पूरा लाभ मिले। अधिक जगहों पर जाने की अपेक्षा कम जगह जायें, लेकिन संतों के सान्निध्य में बैठने का, धर्म को समझने का तथा त्याग-ग्रहण करने का पूरा मौका मिले।

रात अधिक बीत जाने पर किसी गाँव में पहुँचने का कार्यक्रम न रखें, और समय की पूरी पाबन्दी रखें, ताकि मेजबान को व्यर्थ के कष्ट न उठाना पड़े। अपने कार्यक्रमों की सूचना तत्रस्थ संघों को कम से कम ३ दिन पहले मिल जानी चाहिए तथा यह भी उल्लेख कर देना चाहिए कि आप वहाँ भोजन, नाश्ता इत्यादि करेंगे या नहीं।

इस प्रकार से उपर्युक्त आचार संहिता का यथासंभव पालन करना चाहिये।

—द्वारा देवीलाल चपलोत,
१७५, सैक्टर नं. ४, हिरणमगरी, उदयपुर (राजस्थान)

मैत्री-पत्र



बेटे, यह सब बदला जा सकता है!

—संकलनकर्ता एवं प्रेषक : श्री ऋषभराज बाफना

[शान्ति-के-लिए नोबल पुरस्कार-विजेता आयरलैंड-वासी बहिन मेरिड कोरीगन मेग्वायर ने अपने बेटे ल्यूक को जो पत्र लिखा था वह अखिल मानवता का एक बहुमूल्य दस्तावेज है। यहाँ हम अपने प्रिय पाठकों के लिए गुजराती मासिक 'अखण्ड आनन्द' के दिसम्बर, १९८७ के अंक में प्रकाशित उसी खत का सारांश दे रहे हैं। हिन्दी में इसे तैयार किया है श्री जादवजी मारू ने।]

प्रिय ल्यूक,

बेटा, तू अपने जीवन में न्यायी बनने के लिए प्रयत्नशील रहना। तेरा जीवन अमूल्य और पवित्र भी है। मानवीयता का तेरा जीवन, यह तेरा पहला अधिकार है, इसलिए अपने वालों से जीवन की सुरक्षा मांगने का अधिकार जितना तुझे है, उतना अन्यों को भी है। प्रत्येक जीवधारी को न्याय और आदर मिलना ही चाहिये।

इसका अर्थ, मेरे बच्चे, यही होता है कि तू कभी किसी के प्राण नहीं ले सकता है, परन्तु दूसरों को मारने से इन्कार करना यह भी सरल बात नहीं है। अफसोस की बात है कि हम ऐसे जगत् में रह रहे हैं, जिसमें ऐसा करना कायरता माना जाता है। हाँ, बेटे, मैं सच कह रही हूँ। किसी को मारने या धिक्कारने से इनकार करने के बाद बिना शस्त्र के चलते रहने के लिए तुझे बहुत हिम्मत रखनी होगी। वत्स, मैं तुझे कहती हूँ कि तू किसी को दुश्मन मानने या धिक्कारने से इनकार कर देना। तेरे हाथ में तू केवल प्रेम का शस्त्र लेकर चट्टान की तरह अटल और अडिग खड़े रहना।

मेरे अंतर की यह उत्कण्ठा न्याय-संगत तब मानी जाएगी, जब तेरे समान मेरे मन में भी इथोपिया के उन भूखे-मरते बच्चों और न्यूयार्क और मास्को के बच्चों के लिए भी करुणा का भाव जागे। ल्यूक, याद रहे तेरा कोई देश नहीं। यह विश्व तेरा राष्ट्र है और तेरे केवल दो बहिनें और दो भाई नहीं हैं बल्कि पृथ्वी के समस्त बालक तेरे बान्धव हैं।

ईश्वर से तू विवेक-शक्ति की याचना करना। विवेकशील व्यक्ति इशारे में समझ जाता है कि मानव के सच्चे दुश्मन तो अन्याय, शोषण, युद्ध, भुखमरी और गरीबी हैं। मानव-की-मानव-के-प्रति मानसिकता में परिवर्तन होता है तो ये सारे विकट दिखने वाले प्रश्न सरल बन जाते हैं। न्याय का अर्थ क्या है? यही न कि जब किसी के पास खाने को भोजन न हो तब मेरी तिजोरी भरी न जाए। लोभ और स्वार्थ को छोड़ेंगे तब पृथ्वी पर कोई कमी नहीं रहेगी। फिर तो गरीबी भी नहीं रहेगी और रोग भी भाग जाएँगे।

यह जो कुछ मैंने कहा है उसमें क्या कुछ भी नहीं है? पृथ्वी पर युद्ध होते हैं और भूख से पीड़ित मानव भी। बेटे, यह सब बदला जा सकता है। पुरानी परम्पराओं को तोड़ने की बात ही है। मानव के अंतर में भलाई का, संवेदना का झरना बहता है। उसके साथ संवाद स्थापित करके जीवन जीने की ही बात है। आज सब इस बात को समझते हैं, पर ये जैसे किसी की राह देखते बैठे हैं।

पर तू किसी की राह देखते मत बैठे रहना। कोई भी मानव चाहे वह किसी भी रंग, भाषा या देश का हो, तू उसके जीवन का आदर करना। उसकी बगल में तू भाई बन कर खड़े रहना। हर एक से न्याय युक्त एवं नम्र बर्ताव करना।

और अब अन्त में लाड़ले बेटे, माता के अंतर की एक प्रार्थना की बात सुन। तू खूब सुखी हो और प्रसन्न रह। जीवन की इस अमूल्य भेंट को तू प्रतिक्षण मन भर कर जी। जीवन में जब कोई विपदा आये [मेरी तो आकांक्षा है कि वह कभी न आये पर अफसोस है, बेटा, क्योंकि जीवन-मात्र का वह एक भाग होता है] तब धैर्य रखना। स्मरण रहे कि निशा का अन्त होने को है और प्रभात की प्रथम किरण फूटने को ही है, जो तेरे जीवन की राह में फूल बिखेर देगी।

प्रभु के आशीर्वाद तुझ पर बरसें, मेरे ल्यूक।

प्रेमपूर्वक,

माँ

—सुदर्शन पलसेज, H-2, M.I.D.C., जलगाँव–३



क्या सार्थकता है चातुर्मास की ?

☐ अनीता मेहता 'नेकी'

आध्यात्मिकता की ऊँचाइयों को छूने के बाद भारत ने प्रकृति की लय से लय मिलाकर बहुत महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल कर ली हैं और बहुत-सी सम्भावनाएँ भविष्य के आंचल में मचल रही हैं।

जैन धर्म में वर्षा ऋतु के चार महीने चातुर्मास के नाम से महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इन दिनों आवागमन में अवरोध उपस्थित हो जाने के कारण जैन सन्तों के स्थायी आवास का भव्य प्रबन्ध किया जाता है, यह देखकर जहां जैनियों की शक्ति व सामर्थ्य का आभास होता है, वहीं धर्म लाभ की इच्छुक जनता की श्रद्धा देख यकायक नत मस्तक हो उठना स्वाभाविक है।

प्रकृति जब अपने निर्मल जल से भौतिक जगत् की धुलाई में लीन होती है, ठीक उन्हीं क्षणों में सन्तों की विमल वाणी श्रद्धालुओं की आत्मिक सफाई में व्यस्त हो जाती है।

सन्तों द्वारा निश्चित समय पर नियमित रूप से दिया जाने वाला प्रवचन ठीक उसी प्रकार मानव के मन व मस्तिष्क में अंकित हो जाता है, जैसे गीली मिट्टी पर पहियों के निशान !

गीली मिट्टी में डाले गये बीज से जिस प्रकार शीघ्र ही अंकुर फूट पड़ते हैं, वैसे ही सन्तों की विमल वाणी से मनुष्य में नैतिकता के भाव प्रस्फुटित होने लगते हैं। इन्हीं भावों का विकास मनुष्य को लक्ष्योन्मुखी बना भविष्य के लिए सम्भावनाओं के द्वार खोल देता है। आवश्यकता है इस विमल वाणी के श्रवण, मनन और चिन्तन की।

चातुर्मास में मनुष्य के तन, मन व धन की शुद्धि का विधान भी वर्णित है, जिससे जीवन के हर क्षेत्र में समानता व संतुलन की स्थापना हो सके।

तन की शुद्धि हेतु इस दौर में अधिक से अधिक व्रत, उपवास व आयम्बिल रखे जाते हैं ! भोजन सूर्यास्त पूर्व कर लिया जाता है, ताकि वह सूर्य की अस्त होती किरणों से शीघ्र पच जाये, इसी सन्दर्भ में वैज्ञानिकों ने निष्कर्ष दिया है कि "....सबसे पहली बात तो यह कि मच्छर भोज्य सामग्री बनकर उत्पात नहीं मचा पाते, दूसरी यह कि देर रात में खाना खाने से बार-बार पानी पीने उठना

पड़ता है, पानी न पीने पर अजीर्ण व अपच जैसे रोग हो जाते हैं, वहीं बार-बार उठकर पानी पीने से बार-बार शौच जाना पड़ता है और नींद उचट जाती है जिससे अनिद्रा, तनाव, सिरदर्द व चक्कर आने जैसी बीमारियाँ घेर लेती हैं...."

मन की शुद्धि हेतु 'संवत्सरी' जैसे पवित्र पर्व को मान्यता प्रदान की गई है जिसमें एक-दूसरे से परस्पर 'खमत-खामणा' कर अपने समस्त अपराधों के लिए क्षमायाचना की जाती है! होली, दिवाली व नववर्ष की तरह क्षमायाचना के कार्ड भी दूरदराज के बंधु-बांधवों को भेजे जाते हैं! इस प्रकार अपराध-बोध का बोझ हट जाने पर सचमुच मन को एक ताजगी भरी अनुभूति होती है और वही कहलाती है मन की शुद्धि!

धन की शुद्धि का विधान जहाँ लोगों को स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के लिए प्रेरित करता है, वहीं समाज में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाने में भी सहयोग करता है। ज्ञानदान, औषधदान, आहारदान, अभयदान के रूप में विविध सेवा-कार्यों के लिए अर्जन का विसर्जन किया जाता है। छात्रवृत्तियाँ, धर्मशालाओं व अध्यात्म केन्द्रों का प्रबन्ध किया जाता है, जिससे सामुदायिक एकता बनी रहती है और यह सामुदायिक एकता ही विश्व प्रेम की पहली सीढ़ी है।

—रूप इलेक्ट्रॉनिक्स ए-२२, जमना नगर, सोडाला, जयपुर-६

स्वाध्याय का लाभ | श्री लक्ष्मीचन्द जैन

एक धार्मिक जैन शिक्षण शिविर के समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए पूज्य महाराज सा. ने कहा—प्रिय विद्यार्थियों! यहाँ से लौटने के बाद प्रतिदिन अच्छे साहित्य का स्वाध्याय करते रहना।

एक शिष्य इस नियम का पालन करते हुए प्रतिदिन कुछ धार्मिक साहित्य पढ़ता, बहुत दिन हो गये, उसने विचार किया मैं स्वाध्याय तो करता हूँ परन्तु कुछ समझ में तो आता नहीं।

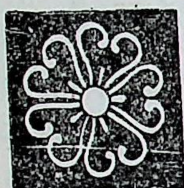
एक दिन उन्हीं महाराज सा. के दर्शन करने का सुयोग उसे प्राप्त हुआ।

उस विद्यार्थी ने पुनः प्रश्न किया—गुरुदेव आपने स्वाध्याय करते रहने की प्रेरणा दी थी, मैं स्वाध्याय तो करता हूँ परन्तु कुछ समझ में नहीं आता।

गुरुदेव ने कहा—तुममें यह जो प्रश्न पूछने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई है, यह निरन्तर स्वाध्याय करने का ही चमत्कार है। स्वाध्याय बन्द मत करना, धीरे-धीरे अर्थ समझ में आने लगेगा।

—छोटी कसरावद (जिला खरगोन) म. प्र.

पशुओं का उत्पीड़न :



हमारा मनोरंजन

□ श्री पन्नालाल मुन्धड़ा

अध्यक्ष, भारतीय जीवजन्तु कल्याण बोर्ड

गाँवों के स्वच्छन्द वातावरण में हरे-भरे लहलहाते खेतों के बीच से निकलती पगडंडी पर कभी आपने किसी बैल या सांड को विचरण करते देखा है, उसकी आँखों में उन्मुक्त आनन्द की अनुभूति को कभी निहारा है आपने, आपने देखा है किस तरह से लाल कलंगी वाले मुर्गे शाही अन्दाज में मुर्गियों के झुण्ड में घूमते हैं, बांग लगाते हैं और चुगते हैं दाना। कितने मनमोहक लगते हैं ये पशु और पक्षी अपने स्वाभाविक वातावरण में।

बड़े दुर्भाग्य की बात है कि मनुष्य अपने मनोरंजन के लिये इन मासूम पशुओं को तरह-तरह के वीभत्स और घिनौने "खेल" खेलने के लिये मजबूर करता है। कॉकफ़ाइट-मुर्गबाजी यानी मुर्गों को आपस में लड़ाना, तीतर और बटेर की लड़ाई, सांप और नेवले की लड़ाई, बुलफ़ाइट–बैल और सांड का मल्लयुद्ध आदि कुछ ऐसे उदाहरण हैं जो कि मनुष्य की विकृत मनोदशा को परिलक्षित करते हैं।

पशुओं को इस प्रकार के खेल खेलने के लिये अनेक प्रकार की यंत्रणाएँ दी जाती हैं। खेल के मैदान में धकेलने के पूर्व उन्हें मादक द्रव्य पिलाए जाते हैं ताकि वे अपने होश-हवास खोकर पागलों की तरह एक दूसरे पर झपटें। परिणामतः इस प्रकार के "मनोरंजक" खेल में जो पशु या पक्षी भाग लेते हैं, वे भीषण रूप से घायल हो जाते हैं। कॉकफ़ाइट (मुर्गबाजी) के "खेल" में तो प्रायः मुर्गी के पैरों में तेज धारवाली छुरियाँ बाँध दी जाती हैं जिससे कि अन्ततः ये पक्षी लहूलुहान होकर धराशायी हो जाते हैं।

बुलफ़ाइट–अर्थात् बैल और सांड की लड़ाई के दौरान इन पशुओं को उत्तेजित करने के लिए इनके गुप्त अंगों पर प्रहार किया जाता है। कभी इनकी पूंछ को मरोड़ा जाता है तो कभी इनकी पूंछ के नीचे वाले क्षेत्र में छड़ियाँ डाली जाती हैं। और कभी-कभी तो इनकी आँखों में मिर्च का पाउडर तक

डाल दिया जाता है। यह सब मात्र इसलिए किया जाता है कि पशु अधिक-से-अधिक एक दूसरे पर आक्रमण करें और इसका फल बेचारा पशु घायल होकर भुगतता है।

बंदर का और भालू का नाच दिखाने वाले मदारियों को तो डमरू बजाते गली मोहल्लों में घूमते आपने अक्सर देखा होगा। साधारण व्यक्ति की यही धारणा है कि इस प्रकार के तमाशों में पशुओं पर किसी प्रकार का अत्याचार नहीं होता। लोग यही समझते हैं कि बंदर या भालू स्वेच्छा से उल्लसित होकर मदारी के इशारों पर नाचता है जबकि वास्तविकता कुछ और ही है। ये असहाय पशु तरह-तरह के कर्तव्य दिखाने के लिये इसलिये मजबूर हैं क्योंकि इन्हें अपने मालिक की चाबुक का डर है। डमरू की ताल पर यदि वे नहीं नाचें तो उन्हें भूखा-प्यासा रखा जायेगा।

अत्यन्त खेद का विषय है कि हम इस प्रकार के तथाकथित मनोरंजन में निहित क्रूरता की ओर तनिक मात्र भी ध्यान नहीं देते और तालियाँ बजा-बजा कर मजा लूटते हैं। प्रश्न केवल क्रूरता का ही नहीं है। प्रश्न पशु-प्राणियों की गरिमा का भी है। हम "कण-कण में भगवान्" का रट्टा लगाते हैं और भूल जाते हैं कि पशु-पक्षियों में भी वही प्राण है जो हमारे शरीर में है। पशु-पक्षियों को भी अपनी जान उतनी ही प्यारी है जितनी हमें। फिर भला हमें क्या अधिकार है कि हम उनके साथ अभद्र व्यवहार करें।

समय की पुकार है कि प्रबुद्ध और संवेदनशील व्यक्ति जनमानस में व्याप्त नैतिक पथभ्रष्टता को समाप्त करने हेतु सामने आयें। आवश्यकता है एक ऐसे नवजागरण की जो मनुष्य की सुप्तावस्था को झकझोर डाले और उसमें ऐसे प्राणों का संचार करे जिससे मनुष्य अपनी मनुष्यता को पहचाने और अन्य पशु-पक्षियों के साथ हो रहे अमानवीय व्यवहार को तुरन्त बन्द करे।

—60, 4th Street, Abhiramapuram, Madras-600 018

पशु-पक्षी हैं मित्र हमारे

□ डॉ० नरेन्द्र भानावत

[१]

ये हैं सुख-दुःख के चिर साथी,
चाहे कीड़ी, चाहे हाथी,
सबको प्यारी अपनी थाती,
निर्दय वह जो इनको मारे।
पशु-पक्षी हैं मित्र हमारे ।।

[२]

इनकी रक्षा अपनी रक्षा,
इनकी सेवा आत्म-समीक्षा,
इनकी सन्निधि धैर्य-तितिक्षा,
निखिल सृष्टि सौन्दर्य-सितारे।
पशू-पक्षी हैं मित्र हमारे ।।

दो गीत

☐ वर्षा सिंह

[१]

महावीर के चरणों में

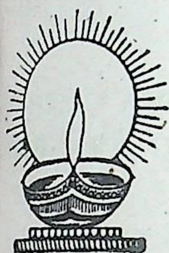
'जिन-वाणी' तू गाता चल,
धर्म-ध्वजा फहराता चल ।
आत्म-सिद्धि कर ले प्राणी,
सद्गुरु को अपनाता चल ।
क्षमा-सुधा की सरिता में,
तन-मन को नहलाता चल ।
विषय-वासना को तज कर,
तप को गले लगाता चल ।
दया, अहिंसा, करुणा से,
हिंसा-भाव मिटाता चल ।
पंच-महाव्रत धारण कर,
जीवन सफल बनाता चल ।
अनेकान्त के दीपक से,
सम्यक्-ज्योति जलाता चल ।
स्वाध्याय के चन्दन से,
सारा जग महकाता चल ।
भक्ति-मार्ग पर चल सबको,
दिशा नई दिखलाता चल ।
सद्भावों की वसुधा पर,
सुख की धार बहाता चल ।
महावीर के चरणों में,
"वर्षा" शीश झुकाता चल ।

[२]

'जिन' की जय-जयकार करें

'जिन' की जय-जयकार करें,
अखिल विश्व से प्यार करें ।
त्याग शत्रुता के विष को,
द्वेषरहित व्यवहार करें ।
अस्त्र अहिंसा का ले कर,
हिंसा का प्रतिकार करें ।
कलह-क्लेष की धारा में,
संयम को पतवार करें ।
कर्म-वचन हों मर्यादित,
"जिनादेश" साकार करें ।
उच्चारित हो सत्य-सुधा,
वाणी पर अधिकार करें ।
भूल-बिसर सारी कटुता,
प्रेम-प्रीति शृंगार करें ।
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह,
तज कर निज उद्धार करें ।
दु:ख-विपदा के क्षण में भी,
जिन का हम आभार करें ।
नश्वरता है सत्य, अरे !
इस सच को स्वीकार करें ।
"वर्षा" जिन का नाम जपें,
हर दिन को त्यौहार करें ।

—एफ़-३६, एम. पी. ई. बी. कॉलोनी,
मकरोनिया, सागर-४७० ००४ (म.प्र.)



आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. का चादर महोत्सव सानन्द सम्पन्न

सूर्य नगरी जोधपुर की जहाँ औद्योगिक एवं व्यावसायिक क्षेत्र में ख्याति है वहीं इस नगरी की सांस्कृतिक एवं धार्मिक क्षेत्र में भी अपार यश-कीर्ति रही है। जोधपुर में समय-समय पर अनेक मंगल प्रसंग आयोजित होते रहे हैं। इसी कड़ी में ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी, रविवार दिनांक २ जून, ९१ को परमाराध्य, प्रातःस्मरणीय, अखण्ड बाल ब्रह्मचारी, चारित्र-चूड़ामणि, इतिहासमार्तण्ड, युगद्रष्टा, युग मनीषी, महामहिम आचार्य प्रवर श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म० सा० के सुशिष्य आगम मर्मज्ञ पं० रत्न श्री हीराचन्द्र जी म० सा० का हजारों भाई-बहिनों की विशाल उपस्थिति में परम श्रद्धेय उपाध्याय पं० रत्न श्री मानचन्द्र जी म० सा० एवं रत्नवंश के समस्त श्रद्धेय मुनिराजों के साथ सेवा-भावी साध्वी प्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकँवर जी म० सा०, उप प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकँवर जी म० सा० आदि ठाणा २२ एवं चतुर्विध संघ के पावन सान्निध्य में श्री सरदार सीनियर हायर सैकेण्डरी स्कूल के प्रांगण में रत्नवंश के अष्टम पट्टधर के रूप में चादर महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ। इस मंगल प्रसंग पर श्री जयमल्ल जैन गच्छ के आचार्य कल्प श्री शुभचन्द्र जी म० सा०, पं० रत्न श्री पार्श्वचन्द्र जी म० सा० आदि ठाणा ५, तपस्वीराज पूज्य श्री चम्पालाल जी म० सा० के आज्ञानुवर्ती पं० र० श्री घेवरचन्द जी म० सा० 'वीरपुत्र', वयोवृद्ध श्री जौहरी मुनि जी म० सा० आदि ठाणा ४ तथा महासती श्री भीकमकँवर जी म० सा० आदि ठाणा ८ का पावन सान्निध्य भी प्राप्त हुआ।

चादर महोत्सव के मंगल प्रसंग पर राजस्थान के विभिन्न ग्राम-नगरों के श्री संघ जिनमें जयपुर, अजमेर, ब्यावर, किशनगढ़-मदनगंज, नागौर, मेड़ता, पीपाड़, भोपालगढ़, बालोतरा, बाड़मेर, सवाईमाधोपुर, हिण्डौन, गंगापुर सिटी, बजरिया, भरतपुर, अलवर, कोटा, उदयपुर, भीलवाड़ा, नसीराबाद, निमाज, बिलाड़ा, जैतारन, गोटन, बारनी, श्यामपुरा आदि आदि स्थानों के सैंकड़ों ग्राम नगरों के भाई-बहिन पधारे व वहीं सुदूर प्रदेशों के सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं

ने भी इस मंगल महोत्सव में भाग लिया जिनमें मद्रास, बैंगलोर, बम्बई, जलगांव, नागपुर, कानपुर, दिल्ली, रायचूर, इन्दौर, भोपाल, रतलाम, उज्जैन, बीजापुर, कोयम्बतूर, मैसूर, कलकत्ता आदि आदि क्षेत्र के भाई-बहिन मुख्य रूप से थे।

चादर महोत्सव श्री सरदार सीनियर हायर सैकेण्डरी स्कूल के विशाल प्रांगण में आयोजित किया गया। प्रातः ८ बजे से सरदारपुरा क्षेत्र में लोगों का आवागमन शुरू हो गया था। स्टेशन रोड, ओलम्पिक रोड, जालोरी गेट, नेहरू पार्क, सरदारपुरा की ए. बी. सी. डी. चारों मुख्य सड़क मार्गों पर भाई-बहिनों के झुण्ड नजर आ रहे थे। आगत भाई-बहिन एवं सूर्यनगरी के बन्धुगण महावीर भवन में आचार्य प्रवर, उपाध्याय प्रवर एवं मुनि मण्डल के दर्शन-वन्दन कर सरदार स्कूल पहुँच रहे थे।

प्रातः ८.४५ के आसपास संत सतीगणों का सरदार स्कूल में पधारना हुआ। तदनन्तर आचार्य प्रवर, उपाध्याय प्रवर आदि संत पधारे। उस समय जयजयकारों का घोष भाई-बहिनों के उत्साह को उजागर कर रहा था।

ठीक ९ बजे चादर महोत्सव की कार्यवाही प्रारम्भ करने की उद्घोषणा मंच की ओर से की गई। रोचक व्याख्याता **श्री ज्ञान मुनिजी म० सा०** ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। मंगलाचरण के पश्चात् मंच की ओर से स्वाध्यायी बन्धु **श्री नेमीचन्द जी कर्नावट**, भोपालगढ़ को आमंत्रित किया गया। श्री कर्नावट जी ने संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित एवं प्रभावशाली भाषाशैली में युगद्रष्टा-युगमनीषी आचार्यदेव के गुणों का स्मरण करते हुए कहा कि महामहिम आचार्यदेव के रग-रग में साधना और संयम रमा हुआ था। उन्होंने संयम-साधना की ऐसी ही ज्योति जगाने की मंगल कामना आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म० सा० से की। वन्दन-अभिनन्दन कर श्री कर्नावट जी ने आचार्य प्रवर एवं उपाध्याय प्रवर के श्रीचरणों में क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ की भाव भरी विनती प्रस्तुत कर निवेदन किया कि आचार्य प्रवर, उपाध्याय प्रवर एवं संतगण भोपालगढ़ पधार कर आचार्य प्रवर श्री रत्नचन्द्र जी म० सा० की पुण्य तिथि एवं क्रियोद्धारक दिवस भोपालगढ़ मनाने की स्वीकृति प्रदान करें।

उत्साही बन्धु **श्री ओमप्रकाश जी बांठिया**, बालोतरा ने अपने नगर, बाड़मेर एवं सिवांची पट्टी की ओर से आचार्य प्रवर के प्रति श्रद्धा-भक्ति व्यक्त करते हुए विनती की कि उस क्षेत्र को पावन करने की महती कृपा करें। श्री बांठिया जी ने श्रमणसंघीय उपाचार्य श्री देवेन्द्र मुनिजी म० सा० की ओर से मंगलकामना व्यक्त की।

अ० भा० जैन विद्वत् परिषद् के महामंत्री एवं 'जिनवाणी' के सम्पादक **डॉ० नरेन्द्र भानावत** ने चादर महोत्सव जैसे महत्त्वपूर्ण अवसर पर स्व० आचार्य देव के मैत्री, करुणा व प्रेम के सन्देश का स्मरण कर अपनी मंगल भावना राजस्थानी दोहों में इस प्रकार व्यक्त की—

[१]

रतनवंश रो आठमो, पट्ट महोत्सव आज ।
हीरा मुनि चादर लहे, धर्म संघ रे काज ।।

[२]

दर्शन ज्ञान चरित रो, चादर शुभ्र सफेद ।
इण री सुख छाया तले, समता वधै अभेद ।।

[३]

सामायिक-स्वाध्याय री, जन-मन जागे जोत ।
विषय-वासना सब धुले, हस्ती-गंध रे स्रोत ।।

[४]

हीरा मोती सोवणो, चमके घोर अंधार ।
मन री काळख सब मिटे, वाणी उज्ज्वल धार ।।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पाली के मंत्री एवं पश्चिमी राजस्थान प्रथम के प्रधान **श्री ताराचन्द जी सिंघवी** ने अपनी हार्दिक शुभकामना व्यक्त करते हुए आचार्य प्रवर से पाली पधारने की विनती की ।

संघ-सेवी **श्री मोहनलाल जी कटारिया**, पीपाड़ निवासी ने चादर महोत्सव के शुभ प्रसंग पर अपनी एवं पीपाड़ संघ की मंगल कामना करते हुए सेखेकाल पुण्य भूमि पीपाड़ को पावन करने की पुरजोर प्रार्थना की ।

रत्नवंशीय शासन सेवा समिति के सदस्य **श्री गणेशमल जी भण्डारी**, बैंगलोर ने पूर्वाचार्यों के समाचारी पालन के आदर्श का स्मरण करते हुए आचार्य प्रवर से उसी गौरवशाली परम्परा को बढ़ाने के आग्रह के साथ अभिवादन किया ।

संघ के प्रमुख संरक्षक एवं वयोवृद्ध दृढ़ धर्मी सुश्रावक **श्री उमरावमल जी ढढ्ढा**, अजमेर ने अपने प्रभावशाली वक्तव्य में स्व० आचार्य देव के व्यक्तित्व

एवं कृतित्व का स्मरण करते हुए आशा व्यक्त की उस महामहिम आचार्य प्रवर की चादर की गरिमा आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द जी म० सा० दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ायेंगे।

महाराष्ट्र विधानसभा के पूर्व विधायक एवं संघहितैषी सुश्रावक **श्री ईश्वर बाबू ललवाणी**, जलगाँव ने अपनी श्रद्धायुक्त शुभकामना व्यक्त करते हुए कहा कि रत्नवंश के नायक आचार्य श्री हीराचन्द जी म० सा० चतुर्विध संघ को विश्वास में लेकर संघ को नई दिशा, नए आयाम देंगे। रत्नवंश की गौरवशाली परम्परा आगे बढ़े, इस शुभकामना के साथ उन्होंने आचार्य प्रवर का अभिवादन किया।

स्वाध्यायी बन्धु एवं चिन्तक **श्री जतनराज जी मेहता**, मेड़तासिटी ने स्व० आचार्यदेव के अनन्त उपकारों का स्मरण कर उन्हीं के पाट पर विराजने वाले आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म० सा० के प्रति श्रद्धा-भक्ति और समर्पण की भावना व्यक्त की।

ज्योतिष-मार्तण्ड **श्री बालचन्द जी मेहता**, ब्यावर ने आज के महोत्सव को स्व० आचार्यदेव के आदेश की पालना के रूप में स्वागत करते हुए आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द जी म० सा० के लिये 'तुम जीओ हजारों साल' उक्ति के साथ शुभ भावना प्रदर्शित की।

अखिल भारतीय सामायिक संघ के संयोजक **श्री राजेन्द्र जी पटवा** ने अपनी मंगल कामना व्यक्त करते हुए घोषणा की कि स्व० आचार्यदेव सामायिक साधना पर विशेष बल देते थे। अतः स्व० आचार्यदेव के सामायिक मिशन के अधिकाधिक सदस्य बनें, इसके लिये फार्म पूछताछ कार्यालय में उपलब्ध हैं। जीवन में सामायिक साधना आए, इसकी प्रेरणा कर श्री पटवाजी ने अपना वक्तव्य समाप्त किया।

सकल श्री संघ, निमाज के अध्यक्ष एवं पूर्वी राजस्थान के प्रधान **श्री तेजराज जी भण्डारी** ने रत्नवंश के अष्टम आचार्य श्री हीराचन्द जी म० सा० के पाट-महोत्सव पर अपनी हार्दिक शुभ कामना व्यक्त की और आशा रखी कि आचार्य प्रवर रत्न वंश की मान-मर्यादा बढ़ायेंगे।

भारत जैन महामण्डल के अध्यक्ष **श्री संचयलाल जी डागा** ने उपस्थित चारित्र-आत्माओं को वन्दन करते हुए कहा कि मुझे स्व० आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म० सा० के तीन बार दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्हीं महापुरुष के पट्टधर आचार्य श्री के चादर महोत्सव पर उपस्थित होकर मैं गौरव

का अनुभव करता हूँ। स्व० आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा० ने सामायिक-स्वाध्याय की परम्परा डाली है। आशा है, उनके पट्टधर आचार्य इस प्रवृत्ति को आगे बढ़ायेंगे। श्री डागाजी ने अपनी मंगलकामना व्यक्त की।

आत्मार्थी साधक सुश्रावक **श्री जवरीलाल जी पारख** ने राजस्थानी भाषा में अपने अन्तर्मन के उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि मोटा आदमी छोटी-छोटी बातां ने भूल जाया करे। आचार्य पद कांटां रो ताज है। आप सीख में रुपया देवो, पईसा देवो, साफो बंधाओ पण मैं आपने दो शब्द देऊं। आचार्य श्री हस्ती-मल जी म० सा० बहुत सोच समझ ने ओ पद दियो है। अब ए (आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म० सा० की ओर हाथ कर) आचार्य बण गया है। मैं ऐने केणो चाऊँ कि ओ काम आसान नहीं है। पेली ए महाराज मुनि हा, आज आचार्य है। ज्यूँ एक चौथी क्लास रो लड़को सीधो छट्ठी क्लास में आ जावे इणी तरह सूँ ए मुनि सूँ आचार्य बणीया है। आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज तो मोटी हस्ती हा, वे तो एकला संघ री गाड़ी खींचण में सक्षम हा। वे दूरदर्शी हा इण वास्ते वे आचार्य और उपाध्याय दोनों बणाय ने गया। आचार्य श्री रो आधो काम उपाध्याय श्री करेला। उपाध्याय श्री अबे ज्यादा मदद करेला।

पारख साहब ने मुख्य रूप से तीन बातों की सीख देते कहा कि आचार्य रो पद सत्ता रो नहीं, सेवा रो साधन है। इण वास्ते आप अहंकार ने पूरी तरह गलाय दीजो। दूजी बात—थां होडाहोड गोडा मत फोड़जो। दूसरां रे देखादेखी करोला तो सन्मार्ग रो रास्तो भूल जाओला। तीसरी बात आप खाली रत्नवंश रा आचार्य नहीं हो, आप सारा हिन्दुस्तान रा हो, आ मानने काम करजो।

पारख सा० के हृदयोद्गार प्रेरणादायी और प्रभावी थे। अपनी हित-शिक्षा के साथ पारख सा० ने आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने पर मंगल कामना व्यक्त की।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष **डॉ० सम्पतसिंह जी भाण्डावत** ने स्व० आचार्यदेव के सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन और सम्यग्चारित्र के सूत्र को महत्त्व-पूर्ण मानते हुए कहा कि स्व० आचार्यदेव की सद्प्रेरणा से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के माध्यम से कार्य किया जाता है। हम मण्डल के कार्य को आगे बढ़ायें। डॉ० भाण्डावत साहब ने आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म० सा० के प्रति मंगल कामना व्यक्त की।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के अध्यक्ष एवं अ० भा० श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संरक्षक न्यायमूर्ति **श्री श्रीकृष्णमल जी लोढ़ा** ने आगत श्रीसंघों का, उपस्थित जन समुदाय का चादर महोत्सव की मंगल बेला में

हार्दिक स्वागत करते हुए रत्नवंश के अष्टम पट्टधर आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द जी म० सा० के प्रति मंगल कामना व्यक्त की।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष **श्री मोफतराजजी मुणोत** ने अपने वक्तव्य में कहा कि स्व० महामहिम आचार्यदेव ने अपने ज्ञान, दर्शन, चारित्र से सींच-सींचकर रत्नवंश के आचार्य पद की महिमा को जैन व जैनेतर समाज में बेजोड़ शिखर पर पहुँचाया। आचार्य देव के तप से तपी हुई, उनके ज्ञान से प्रज्वलित, उनके दर्शन से महकती हुई, उनके चारित्र से रंगी हुई, उनके करुणा रस में भीगी हुई आचार्य देव की चादर आज उन्हीं गुरुदेव के आदेशानुसार आगम मर्मज्ञ पं० र० श्री हीराचन्द्र जी म० सा० को ओढ़ाई जा रही है। आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द जी म० सा० के प्रति रत्नवंश ही नहीं सम्पूर्ण जैन-जैनेतर समाज अपेक्षाएँ रखकर चल रहा है। मैं आशा करता हूँ कि हमारी अपेक्षाएँ साकार होंगी एवं आपके आचार्य शासन काल में ज्ञान-दर्शन-चारित्र की महक सारे चमन में फैलेगी।

संघाध्यक्ष महोदय ने श्रद्धेय उपाध्याय पं० रत्न श्री मानचन्द्र जी म० सा० से अपेक्षा रखते हुए निवेदन किया कि आप समय-समय पर संघहित में खुला मार्ग दर्शन करेंगे। श्रद्धेय उपाध्याय श्री की गंभीरता से सारा समाज परिचित है। मार्गदर्शक बनना अपने आपमें सर्वोच्च सम्मान है। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म० सा० उपाध्याय प्रवर के मार्गदर्शन को ध्यान में रखते हुए संघ का सुदृढ़ संचालन कर संघ की कीर्ति को बढ़ायेंगे। संघ के समस्त संत-सती वृन्द प्रेम व श्रद्धा से आचार्य प्रवर एवं उपाध्याय प्रवर के आदेशों का पालन कर ज्ञान-दर्शन-चारित्र की निर्दोष साधना से संघ की यश-कीर्ति बढ़ायेंगे। पूज्य गुरुदेव का सभी साधु-साध्वियों के लिए यही आदेश था।

पूज्य गुरुदेव ने अपने लम्बे शासन काल में रत्नवंश को ही नहीं अपितु हजारों भाई-बहिनों को ज्ञान-दर्शन-चारित्र का रस पिला-पिलाकर, अपनी कृपा एवं करुणा से नहला-नहलाकर उन्हें इतना योग्य बना दिया है कि जिस पर गर्व किया जा सकता है। संघ के साधु-साध्वियों एवं श्रावक-श्राविकाओं की प्रतिभा के सन्दर्भ में विचार व्यक्त करते हुए संघाध्यक्ष जी ने कहा कि कई ज्ञान के सागर में डूबे हुए हैं तो कई दर्शन गुण से प्रकाशित हैं। चारित्र साधना के शिखर पर कई साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाएँ हैं। धर्म प्रचार, साहित्य-साधना एवं सेवा-धर्म में भी हमारे संघ का उच्च स्तर है। स्वधर्मी वात्सल्यता गुण हमारे श्रावक समाज का विशेष गुण है। अनेक बन्धु विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रामाणिकता के लिए प्रसिद्धि प्राप्त हैं। रत्न बन्धुओं की सघ-सेवा में समर्पण भावना की आज विशेष ख्याति है।

हमारे आराध्य आचार्य देव पूज्य श्री हस्तीमल जी म० सा० ने रत्नवंश को एक परिवार की संज्ञा दी, इस परिवार को आगे बढ़ाने का हमारा दायित्व है। हम अपने परिवार की उन्नति करें साथ ही दूसरे परिवारों से प्रेम रखें। हमारी सम्प्रदाय में कट्टरता का जहर नहीं है। श्रावक-श्राविकाओं से अपेक्षा रखते संघाध्यक्ष महोदय ने कहा कि हम अपनी उन्नति किसी की अवनति पर, अपना सुख किसी के दुःख पर, अपनी प्रशंसा किसी की निंदा के आधार पर न करें। हमें हमारी यशस्वी गौरवगाथा को अक्षुण्ण बनाए रखना है।

संघाध्यक्ष महोदय ने अपने भाषण समाप्ति के साथ मंगल कामना करते हुए कहा कि परमाराध्य आचार्यदेव पूज्य गुरुदेव की सद्शिक्षाओं से, परम श्रद्धेय उपाध्याय पं० रत्न श्री मानचन्द्र जी म० सा० के मार्गदर्शन से पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म० सा० की कुशल शासन संचालन व्यवस्था से, संत-सतीगणों के ज्ञान-दर्शन-चारित्र की निर्दोष साधना से, श्रावक-श्राविकाओं की संघ के प्रति निष्ठा एवं समर्पण भावना से हमारा संघ, दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करेगा और जैन समाज में ही नहीं, सम्पूर्ण मानव समाज में अपना प्रतिष्ठित स्थान बनाए रखेगा।

संघाध्यक्ष महोदय ने आचार्य कल्प श्री शुभचन्द्र जी म० सा०, पं० रत्न श्री घेवरचन्द जी म० सा० 'वीरपुत्र' आदि समस्त संत-सतीगणों के प्रति अ० भा० श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से आभार व्यक्त करते चादर महोत्सव जैसे मंगल प्रसंग पर उनकी उपस्थिति के लिए हार्दिक अभिन्दन करते हुए आभार प्रदर्शित किया। संघाध्यक्ष महोदय ने श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के सभी भाई-बहिनों के साथ अ० भा० श्री जैन रत्न युवक संघ के सदस्यों का विशेष उल्लेख करते हुए उनके मनोयोगपूर्वक कार्य पद्धति के लिए हर्ष प्रकट किया।

आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म० सा० के यशस्वी जीवन की शुभ कामना के साथ संघाध्यक्ष महोदय ने वक्तव्य समाप्त किया।

स्थानीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के मंत्री **श्री अनराज जी बोथरा** ने आगन्तुक श्रीसंघों का, उपस्थित भाई-बहिनों का, कार्यकर्ताओं का एवं युवा-रत्न बन्धुओं का आभार व्यक्त किया।

निर्धारित समयानुसार ठीक ९.४५ बजे श्रावक समाज का कार्यक्रम सम्पन्न कर मंच संयोजक **श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफणा** ने महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ प्रसारित कीं। चादर महोत्सव के मंगलमय प्रसंग पर विशेष उपलब्धि के रूप में श्रावक-श्राविकाओं का क्षमारूप तप धर्म का आदर्श सामने आया जिसके अन्तर्गत १०

भाई-बहिनों ने जीवन-पर्यन्त, ३५ भाई-बहिनों ने एक वर्ष के लिए तथा ८८ भाई-बहिनों ने एक मास के लिए क्रोध न करने का संकल्प लिया।

आजीवन क्रोध का त्याग कर क्षमा रूप तप का आदर्श प्रस्तुत करने वाले निम्न भाई बहिन हैं :—

१. श्री सम्पतराज जी डोसी

२. „ सुमेरनाथ जी डोसी

३. „ मोहनराज जी जीरावला

४. „ कुन्दनमल जी भंसाली

५. „ मुन्नालाल जी भण्डारी

६. श्रीमती अकलकँवर जी धर्मपत्नी श्री सोलेश्वरनाथ जी मोदी

७. श्रीमती केसरकँवर जी धर्मपत्नी श्री मूलराज जी घाड़ीवाल

८. श्रीमती सुशीला जी बोहरा

९. श्रीमती अकलकँवर जी धर्मपत्नी श्री अखेराज जी लोढ़ा

१०. श्रीमती कमल बाईसा

एक वर्ष के लिए क्रोध न करने वाले भाई-बहिन निम्न हैं :—

१. श्री सूरजमल जी बोथरा, २. श्री हीरालाल जी बोथरा, ३. श्री रिखबराजजी मेहता, ४. श्री लादूराम जी डोसी, ५. श्री चम्पालाल जी जीरावला, ६. श्री मोहनराज जी चाम्बड़, ७. श्री करोड़ीमल जी लोढ़ा, ८. श्री चंचलमल जी सिंघवी, ९. श्री प्रकाशचन्द जी सालेचा, १०. श्रीमती ज्ञानकँवर जी मेहता, ११. श्रीमती सुशीला जी मूथा, १२. श्रीमती बदनकँवर जी सिंघवी, १३. श्रीमती पारसकँवर जी हुडीवाल, १४. श्रीमती गुमानकंवर जी मेहता, १५. श्रीमती गुमानकँवर जी सिंघवी, १६. श्रीमती भँवरीदेवी जी बाफणा, १७. श्रीमती राजकँवर जी चौधरी (माली), १८. श्रीमती कल्याणकंवर जी सिंघवी, १९. श्रीमती अमृतकँवर जी टाटिया, २०. श्रीमती सायरचन्द जी कांकरिया, २१. श्रीमती सोहनराज जी सिंघवी, २२. श्रीमती मोहनचन्द जी, २३. श्रीमती अचलचन्द जी सेठिया, २४. श्रीमती रतनराज जी बोथरा, २५. श्रीमती माणकचन्द जी मेहता, २६. श्रीमती मांगीनाथ जी मोदी, २७. श्रीमती पूनमचन्द जी मुणोत, २८. श्रीमती सूरजमल जी दुग्गड़, २९. श्रीमती मैनाकँवर जी सिंघवी, ३०. श्रीमती मनोहर कँवर जी जैन, ३१. श्रीमती हुक्मनाथ जी मोदी

३२. श्रीमती सज्जनकँवर जी मोदी, ३३. श्रीमती किशनकँवर जी फोफलिया, ३४. श्री जवरीमल जी चामड़, ३५. श्री इन्द्रचन्द जी कोठारी।

एक मास के क्रोध न करने के ८८ भाई बहिनों ने क्रोध न करने का संकल्प लिया।

इस प्रकार १३३ भाई-बहिनों ने एक करण दो योग से अर्थात् न करेमि वायसा, कायसा से संकल्प लिया। छद्मस्थता के कारण सावधानी रखते हुए भी अगर कभी क्रोध आ जाय तो दूसरे दिन पाँच में से एक प्रायश्चित्त रूप नियम का पालन करेंगे जिसमें उपवास, एकासन, नमक, घी और शक्कर में से एक चीज का त्याग किया जायगा।

श्री जयमल जैन गच्छ के आचार्य कल्प के सान्निध्य में २२ जून को भागवती दीक्षा अंगीकार करने वाले वैरागी **श्री सुनील** जी का स्थानीय संघाध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल जी लोढ़ा ने संघ की ओर से माल्यार्पण कर हार्दिक स्वागत किया।

ठीक ९.४५ बजे श्रावक समाज का कार्यक्रम सम्पन्न करने के साथ मंच संयोजक श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफणा ने उपस्थित जन समुदाय से आचार्य प्रवर, उपाध्याय प्रवर एवं सन्त-सतीगणों के प्रवचन श्रवण एवं चादर महोत्सव का कार्यक्रम शांतिपूर्वक देखने व सुनने की उद्घोषणा के साथ माइक बन्द कर दिया गया।

सन्त-सतीगणों का कार्यक्रम **महासती श्री सौभाग्यवती जी** म० सा० के प्रवचन से प्रारम्भ हुआ। महासती जी ने 'मेरी श्रद्धा के दो फूल कीजे आप कबूल' तथा 'मैं पानी आप चन्दन भाव भरा यह अभिनन्दन' कहकर अपना प्रवचन प्रारम्भ किया। महासती जी ने मंगल दिवस और मंगल महोत्सव पर हर्ष प्रकट करते हुए कहा कि आज का यह दिवस ऐतिहासिक दिवस है। 'नन्दी सूत्र' की उक्ति प्रस्तुत करते हुए महासती जी ने संघ रूपी रथ का संचालन करने के लिए योग्य सारथी चाहिये, जिसे शास्त्र की भाषा में आचार्य कहते हैं। आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने वाले आगम मर्मज्ञ पं० रत्न श्रद्धेय श्री हीराचन्द्र जी म० सा० का परिचय देते महासती जी ने बताया कि आपने आचार्य भगवन्त के श्रीचरणों में दीक्षित होने के पश्चात् २७ वर्ष तक उस युग पुरुष की समर्पण भाव से सेवा की है। अब संघ नायक के रूप में आप संघ का नेतृत्व करेंगे। हमारी सारणा, वारणा, धारणा कर हमें आचार धर्म में आगे बढ़ायेंगे। महासती जी ने साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकँवर जी म० सा०, उप प्रवर्तिनी महासती

श्री लाडकँवर जी म० सा०, सरल हृदया महासती श्री सायरकँवर जी म० सा०, दूरस्थ विहार करने वाले शासन प्रभाविका परम विदुषी महासती श्री मैना सुन्दरी जी म० सा०, सेवाभावी महासती श्री सन्तोष कँवर जी म० सा०, शान्त स्वभावी महासती श्री शांतिकँवर जी म० सा० आदि समस्त सती मण्डल की ओर से आचार्य प्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म० सा के रत्नवंश के अष्टम पट्टधर के मंगल प्रसंग पर हार्दिक शुभ कामना व्यक्त करते हुए विश्वास दिलाया कि हम समर्पण भाव से आपकी आज्ञा एवं अनुशासन में रहेंगे। महासती जी ने साध्वी प्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकँवर जी म० सा० जो इस मंगल प्रसंग पर चलने की सामर्थ्य नहीं होने के बाद भी चलकर पधारे हैं, उनके शब्द प्रस्तुत करते कहा—"अबे आप म्हारा धणी बणग्या हो, म्हारे माथे मेहर राखजो । आप रत्नवंश ने खूब दीपाजो ।" साध्वी प्रमुखा के आशीर्वचन शब्द कह महासती जी ने अपना प्रवचन समाप्त किया ।

परम श्रद्धेय उपाध्याय पं० रत्न श्री मानचन्द्र जी म० सा० की मौन सहमति प्राप्त कर **विदुषी महासती श्री सुशीलाकँवर जी म० सा०** ने फरमाया कि अष्ट सिद्धियाँ होती हैं । आज आपका रत्नवंश के अष्टम पाट पर आरोहण हो रहा है, यह आप श्री के जीवन में नया मोड़ है । समय-सीमा का अतिक्रमण न हो, विदुषी महासती जी ने अपनी मंगल मनीषा व्यक्त कर शुभकामनायें दीं।

पं० रत्न **श्री घेवरचन्द जी म० सा० 'वीर पुत्र'** से श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर ने निवेदन किया कि आप प्रवचन फरमायें । पं० र० श्री वीरपुत्र जी म० सा० ने पंच परमेष्ठि की व्याख्या करते हुए फरमाया कि आज इस भरत क्षेत्र में न तीर्थङ्कर हैं न सामान्य केवली । वर्तमान में आचार्य हैं, उपाध्याय हैं और साधु हैं । पाँच आचार—ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चरिताचार, तपाचार और वीर्याचार की व्याख्या करते पं० मुनिश्री ने पूज्य आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म० सा० के गुणानुवाद करते फरमाया कि आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा० ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कीर्तिमान कायम किये । दस वर्ष की लघुवय में दीक्षा, बीस वर्ष की अल्प आयु में आचार्य पद प्राप्त करना अपने आप में कीर्तिमान था। आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म० सा० की दूरदर्शिता का उल्लेख करते फरमाया कि वे कितने जबर्दस्त पारखी थे, जिन्होंने मात्र १६ वर्ष की आयु वाले संत को आचार्य घोषित किया । पूज्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म० सा० ने ६० वर्षों से कुछ अधिक समय तक संघ का संचालन किया । निरतिचार आचार्य पद इतने लम्बे समय तक पालन करने वाले मेरी दृष्टि में नहीं हैं और पिछले २०० वर्षों के इतिहास में ऐसा उदाहरण पढ़ने में नहीं आया । उस महापुरुष ने तेरह दिन जिनमें तीन दिन तपस्या के और दस दिन का संथारा किया । पिछले २०० वर्षों के इतिहास में आचार्य श्री जयमल्ल जी म० सा० के तीस दिन के संथारे के

उल्लेख आता है अन्यथा इस युग में इतना लम्बा संथारा किसी आचार्य को नहीं आया, यह भी एक कीर्तिमान है।

मुझे पूज्य आचार्य श्री की सेवा का अवसर मिला है। सादड़ी सम्मेलन का उल्लेख करते वीरपुत्र जी म० सा० ने फरमाया कि उस समय सब आचार्यों ने पद का त्याग किया तब एक नाम पूज्य हस्तीमल जी म० सा० ने पूज्य श्री गणेशीलाल जी का रखा। पूज्य गणेशीलाल जी म० सा० ने कहा—आचार्य कौन हो? जो शास्त्रों का पारगामी हो, युवक हो और विचरण-विहार करके क्षेत्रों को सम्भालने वाला हो। ऐसा कोई आचार्य हो सकता है तो वे पूज्य श्री हस्तीमल जी हो सकते हैं।

पं० मुनि श्री ने आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म० सा० की कीर्ति के सन्दर्भ में कुछ उल्लेख करते कहा कि जो त्यागता है, उसे मिलता है। आचार्य प्रवर की दृष्टि के परिप्रेक्ष्य में पं० मुनि श्री ने फरमाया कि उन्होने अपने पीछे सम्प्रदाय का भार दो को सौंपा है। आचार्य प्रवर का एक पत्र क्षमापना के रूप में पू० तपस्वीराजजी के पास आया, उस पत्र में तीन बातें मुख्य रूप से लिखी हुई थीं। एक मेरे जीवन का संध्याकाल चल रहा है। दूसरी बात लिखी कि मैंने अपनी सम्प्रदाय का भार दो मुनियों श्री मान मुनि और श्री हीरा मुनि को सौंपा है। तीसरी बात लिखी—जैसा प्रेम सम्बन्ध अब तक बना रहा है, वह भविष्य में भी बना रहे। आचार्य प्रवर के प्रत्युत्तर में पूज्य तपस्वीराज जी ने निवेदन करवाया कि आपने क्षमायाचना की, यह आपकी महानता है। तपस्वीराज ने अपनी ओर से, अपने सन्त-सतीगणों की ओर से और श्रावक-श्राविकाओं की ओर से हृदय से क्षमायाचना करते हैं, ऐसा लिखवाया। उन्होंने यह भी लिखवाया कि आपने योग्य कंधों पर सम्प्रदाय का भार रखा है। दोनों सम्प्रदायों की मैत्री भावना पर आदर-सत्कार करते तपस्वीराज ने भविष्य में प्रेम सम्बन्ध बने रहने का संकेत किया। तपस्वीराज ने पूज्य आचार्य प्रवर की सुख-शान्ति की पृच्छा की और दर्शन की भावना प्रकट की परन्तु स्वास्थ्य की प्रतिकूलता से जाना सम्भव नहीं हो सका।

पं० रत्न श्री वीरपुत्र जी म० सा० ने आचार्य श्री और उपाध्याय श्री को चन्द्र-सूर्य की तरह चमकते हुए संघ के संचालन करने की मंगल कामना की।

श्री जयमल्ल जैन गच्छ के प्रवक्ता **पं० र० श्री पार्श्वचन्द्र जी म० सा०** ने प्रवचन करते फरमाया कि आज का प्रसंग एक विशिष्ट धार्मिक प्रसंग है।

पं० रत्न श्री पार्श्वचन्द्र जी म० सा० ने आचार्य प्रवर पूज्य श्री हस्तीमल

जी म० सा० के गुणानुवाद करते फरमाया कि वे महापुरुष देह से तो आज हमारे बीच नही हैं पर गुणों से हैं, और सदा रहेंगे ।

अपने जीवन का संस्मरण सुनाते पं० मुनि श्री ने फरमाया कि चार वर्ष पूर्व पूज्य आचार्य श्री लालचन्द्र जी म० सा० पीपाड़ में काबरों की पोल में विराजमान थे, उस समय पूज्य गुरुदेव का स्वास्थ्य प्रतिकूल चल रहा था। आज के आचार्य श्री हीराचन्द जी म० सा० और उस समय के पं० हीरा मुनिजी म० सा० आचार्य श्री के दर्शन एवं सुख-शांति पृच्छा करने पधारे। आचार्य श्री के मुख से सहज में निकला—आओ, रत्नवंश के उत्तराधिकारी। उस समय वहाँ काफी जनसमूह था, मैं भी था। मुझे आश्चर्य हुआ पर महापुरुष की वाणी और सहज निकला भावी संकेत आज साकार हो रहा है। आचार्य कल्प श्री शुभचन्द्र जी म० सा० की ओर से फरमाते पण्डित मुनि श्री ने कहा—इनका पावन आशीर्वाद है। पं० मुनि श्री ने समय-सीमा का ख्याल कर मंगल कामना के साथ अपना प्रवचन समाप्त किया।

अन्य सन्त अपनी भावना व्यक्त करना चाहते थे परन्तु समय नहीं रहने के कारण किसी भी सन्त-मुनिराज को भावना व्यक्त करने देने का अवसर ही नहीं रहा। **परम श्रद्धेय उपाध्याय पं० रत्न श्री मानचन्द्र जी म० सा०** ने श्रमण भगवान् महावीर प्रभु के पाटानुपाट आचार्य परम्परा का उल्लेख करते बताया कि पूज्य धर्मदास जी म० सा० जिनके ९९ शिष्य हुए और उनमें २२ प्रमुख शिष्यों के कारण २२ सम्प्रदाय कहलाये। पूज्य श्री धन्नाजी महाराज, पूज्य श्री भूधर जी महाराज आदि आचार्य परम्परा पर प्रकाश डालते पूज्य श्री भूधर जी महाराज के चार शिष्य पूज्य श्री रुघनाथ जी महाराज, पूज्य श्री जयमल्ल जी महाराज, पूज्य श्री जेतसी जी महाराज और पूज्य श्री कुशलचन्द जी महाराज की परम्परा में पूज्य श्री गुमानचन्द जी, पूज्य श्री रतनचन्द्र जी, पूज्य श्री हमीरमल जी, पूज्य श्री कजोड़ीमल जी, पूज्य श्री विनयचन्द जी, पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी और आचार्य प्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज तक की परम्परा का उल्लेख किया। पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा० का चतुर्विध संघ पर जो उपकार था, आप सबसे छुपा हुआ नहीं है। आज उन्हीं पूज्य आचार्य देव के पट्टधर का चादर महोत्सव हो रहा है। सुयोग्य गुरु ने योग्य शिष्य को भार सौंपा है। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज के प्रति अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते उपाध्याय प्रवर ने फरमाया कि आप पिछले आठ-दस वर्षों से तो आचार्य की ट्रेनिंग ले रहे थे।

परम श्रद्धेय उपाध्याय पं० र० श्री मानचन्द्र जी म० सा० ने समय-सीमा का ध्यान रखते फरमाया कि अभी लम्बा कहने का अवसर नहीं है।

उपाध्याय प्रवर ने अपने प्रवचन को संकुचित कर स्थविरावली के मंगल पाठों का उच्चारण किया और चतुर्विध संघ के प्रेम, उमंग और उल्लास से सराबोर आचार्य प्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म० सा० की शुद्ध खादी की चादर उनके पट्टधर आचार्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज को ओढ़ाकर रत्न वंश के अष्टम पट्टधर को विधिवत् आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। चादर ओढ़ाने के पूर्व चादर पर उपस्थित चारित्र आत्माओं ने स्नेहपूर्वक हाथ का स्पर्श किया जिनमें रत्नवंश के सन्त-मुनिराजों के अलावा साध्वी प्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री बदन-कँवर जी म० सा०, उप प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकँवर जी म० सा० आदि समस्त रत्नवंशीय महासतियाँ जी म० सा० ने, आचार्य कल्प श्री शुभचन्द्र जी म० सा० ने, वीरपुत्र पं० रत्न श्री घेवरचन्द जी म० सा० ने एवं अन्य उपस्थित सन्त-सतीगणों के साथ अ० भा० श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री मोफतराज जी मुणोत, संघ के प्रमुख संरक्षकगणों, विशिष्ट पदाधिकारी-गणों के स्पर्श के बाद परम श्रद्धेय उपाध्याय पं० र० श्री मानचन्द्र जी म० सा०, आचार्य कल्प श्री शुभचन्द्र जी म० सा०, बहुश्रुत पं० रत्न श्री वीरपुत्र जी म० सा०, पं० रत्न श्री शुभेन्द्र मुनिजी म० सा० आदि सन्तों की विशाल उपस्थिति में मौजूद हजारों श्रावक-श्राविकाओं के बीच चादर महोत्सव अत्यन्त उमंग और उल्लास के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। ज्योंही चादर ओढ़ाई गई उपस्थित जन-समुदाय ने प्रमुदित हो जय जयकार कर अपना हर्ष प्रकट किया।

श्रद्धेय पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म० सा० ने अपना जो मांगलिक उद्बोधन फरमाया, वह इस प्रकार है—

जिनके विमल प्रताप से, हुआ हिताहित ज्ञान ।
भक्ति युक्त गुरुदेव का, धरूं हृदय में ध्यान ।।

चरम तीर्थंकर, शासनपति श्रमण भगवान् महावीर प्रभु एवं परम मंगल, उत्तम शाश्वत शरणभूत पंच परमेष्ठि को कोटिशः वन्दन के पश्चात्....

श्रद्धेय आचार्य कल्प, श्रद्धेय बहुश्रुत वीरपुत्रजी महाराज, परम श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर, साध्वी प्रमुखा स्थविर वयोवृद्ध प्रवर्तिनी महासती जी, सहधर्मी मुनिगण, साध्वी संघ एवं श्रद्धाशील सुश्रावको, शीलवती बहिनो !

आज का दिन मेरे लिये, चतुर्विध संघ के लिये एक नया सन्देश लेकर आया है। कुछ समय पूर्व तक हम एक कल्पवृक्ष से मनोवांछित फल पा रहे थे, एक ज्ञान सूर्य के आलोक से आलोकित होकर मोक्ष मार्ग में कदम बढ़ा रहे थे, एक साधक शिरोमणि के सान्निध्य में शीतल छाया पा रहे थे। उनके रहते हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि एक दिन आचार्य भगवन्त की छत्र-छाया

से, उनके प्रेरणास्पद सान्निध्य से वंचित होकर भी हमें कुछ सोचना पड़ेगा, किन्तु प्रकृति के अटल नियम, कराल काल की क्रूर लीला के सामने हमारी क्या चल सकती है ? अतः आज हम उस महापुरुष के सान्निध्य से वंचित होकर भविष्य के लिये कुछ नये उपक्रम की तैयारी में लगे हैं।

भगवान् महावीर प्रभु ने मुमुक्षु को सुगमता-सरलता से संसार-सागर से पार होने के लिए निर्ग्रन्थ प्रवचन फरमाया, तीर्थ की स्थापना की अर्थात् चतुर्विध संघ स्थापित हुआ।

तित्थं किं ? चाउवण्णो समण संघो। 'नन्दी सूत्र' में संघ रूपी तीर्थ की विस्तार से महिमा कही है। अनेकानेक उपमाओं से उपमित गुण-समुद्र, गुणों के आकर संघ को मैं वन्दन करता हूँ।

साधनाशील साधक के जीवन में दो प्रकार की साधना कही है। एक-व्यक्तिगत, दूसरी—समूहगत। व्यक्तिगत साधना से संघ-सेवा का अधिक महत्त्व है। संघ की सेवा का ही महत्त्व है कि श्रुत केवली भद्रबाहु स्वामी को अपनी महा-प्राण ध्यान साधना को गौण कर संघ की आज्ञा स्वीकारनी पड़ी।

संघ में दो प्रकार के साधक होते हैं। दो कल्प हैं। एक जिनकल्प तो दूसरा स्थविरकल्प। कुछ साधक साधना के क्षेत्र में स्वचलित यंत्र की तरह ज्ञान-दर्शन-चारित्र की साधना में स्वतः बिना प्रेरणा के चलते रहते हैं। विषम परिस्थितियों में भी वे अपने मार्ग को नहीं छोड़ते। दूसरे स्थविर कल्प हैं जहाँ वृद्ध, रुग्ण, बाल, अप्रमत्त, प्रमत्त सभी तरह के साधक हैं जिनके लिए सारणा, वारणा की आवश्यकता होती है।

भगवान् महावीर प्रभु के इस संघ में सुधर्मा से त्यागी, जम्बू से वैरागी, प्रभव से सौभागी, भद्रबाहु से ध्यानी, देवर्द्धि से ज्ञानी स्वचलित साधक हुए हैं तो सत्कार-सम्मान के परिषह से पराजित होने पर, शिथिलता आने पर लोंका-शाह से क्रियोद्धारक भी हुए। मरुधरा प्रदेश में ज्ञान-गंगा बहाने वाले पूज्य श्री धन्नाजी भी हुए जिनके शिष्य पूज्य श्री भूधर जी थे। गुणग्राही भावाभिमुखी स्थानकवासी परम्परा सम्यक्ज्ञान एवं निराडम्बरी क्रिया की आराधक रही है। यहाँ निर्मल ज्ञान और पवित्र आचार का अनूठा संगम है।

मैं एक ऐसे संघ एवं गण का सदस्य हूँ जिसका गौरव दो शताब्दियों के बीत जाने पर भी आज तक अक्षुण्ण रहा है। रत्नवंश की आज तक की गौरव-गरिमा और महिमा का वर्णन करते आज मन प्रसन्नता से हर्षित हो रहा है।

यह वही संघ है जिसे पूज्य श्री कुशलचन्द जी महाराज ने अपनी विनम्र आत्म-साधना और समर्पण की भावना से गुप्त बीज से आरोपित किया। पूज्य आचार्य श्री गुमानचन्द्र जी महाराज ने रत्नवंश की परम्परा को आगे बढ़ाया। महा-प्रतापी-महायशस्वी पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज ने क्रियोद्धार कर इसे वटवृक्ष का रूप दिया और हजारों-हजार पथच्युत लोगों को पुनः सन्मार्ग पर आरूढ़ किया। कई राजकर्मी जिनमें शिकार करने वाले भी थे, मांसाहार करने वाले भी थे और व्यसनी जीवन जीने वाले थे, पूज्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज की ओजस्वी वाणी से उन्होंने सही मार्ग अंगीकार किया। उस महापुरुष ने उस समय साठ हजार लोगों को जिनधर्मी बनाया। राज दीवान लक्ष्मीचन्द जी मूथा ने रात्रि भोजन का त्याग उनके प्रभावशाली वचनों से किया। आज हमारी परम्परा पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज से पहिचानी जाती है। गुरुभक्त पूज्य श्री हमीरमल जी महाराज कवित्व की शक्ति होते हुए भी जीवन भर आचार्य श्री के चरणों में रहे, एक भी चातुर्मास अलग से नहीं किया। उन्होंने अपने शिष्यों को अलग से चातुर्मास करवाये परन्तु स्वयं गुरु चरणों में रहे। ओज-तेज के धनी, कड़वे तूम्बे का मधुर रसायन बनाने वाले आचार्य पूज्य श्री कजोड़ीमल जी महाराज ने विरोध पर विजय प्राप्त की। सर्वजन प्रिय श्रुत केवली आचार्य पूज्य श्री विनयचन्द जी महाराज ने प्रत्येक परम्परा से अपना मधुर सम्बन्ध बनाए रखा। शांत-सौम्य आलोक पुन्ज दूरदर्शी पूज्य आचार्य भगवान् जैसे बालक के भीतर रहे व्यक्तित्व को पहिचाना, उन्हें बनाया, पल्लवित और पुष्पित किया।

साधना के प्रतीक श्री प्रेमचन्द जी महाराज, वादियों से सतत लोहा लेने वाले श्री कनीराम जी महाराज, चन्दनमल जी महाराज जिनके चरणों में आचार्य स्वयं आलोचना करते एवं अपनी समस्याओं में आपको निर्णायक चुनते। अभिग्रहधारी वचन सिद्ध तपस्वी श्री बालचन्द जी महाराज, शासन सेवी बाबाजी श्री सुजानमल जी महाराज, चौथे आरे की बानगी स्वामी जी श्री अमरचन्द जी महाराज, सरल तपस्वी पं० रत्न श्री लक्ष्मीचन्द जी महाराज, गुरुभ्राता तपस्वी श्री श्रीचन्द जी महाराज, संस्कारदाता लघु श्री लक्ष्मीचन्द जी महाराज का सहज स्मरण होता है। महासती श्री अमरकँवर जी महाराज, महासती श्री छोगा जी महाराज, महासती श्री धनकँवर जी महाराज, महासती श्री हरकँवर जी महाराज, प्रवर्तिनी महासती श्री सुन्दरकँवर जी महाराज आदि सती मण्डल ने भी शासन की शोभा बढ़ाने में योगदान दिया है।

मेरे जीवन निर्माता, रत्नत्रय दाता, हीरक भाग्य विधाता, स्व० आचार्य भगवन्त को किन शब्दों में प्रस्तुत करूँ जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन ही जिनशासन की सेवा में समर्पित कर दिया, अपनी प्रखर बुद्धि और प्रयत्न से इतिहास का लेखन

ही नहीं स्वयं इतिहास बनकर अमर हो गये। कौनसा ऐसा सत्कर्म है जो उन्होंने नहीं किया ? कौनसा ऐसा भक्त है जिसकी झोली उन्होंने त्याग एवं नियम से नहीं भरी ? कौनसा ऐसा कीर्तिमान है जो उन्होंने कायम नहीं किया ? वे अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में बेजोड़ रहे। आठ वर्ष में उनका वैराग्य कीर्तिमान है तो दस वर्ष में उनकी दीक्षा, संयम सुमेरु स्वीकार भी कीर्तिमान है। उनकी वचन-कला, उनका अध्ययन, उनकी निर्णय करने की अनूठी शक्ति तथा उनकी फक्कड़ता आपने देखी है। उनका संथारा, समाधिमरण और समाधिभाव भी एक नया कीर्तिमान है। मैं किन शब्दों में उनके गुणों का वर्णन करूँ, मेरी समझ से परे है। मैं उस युगद्रष्टा का विस्तार से परिचय नहीं दे सकता, मैं उस महा-पुरुष का मात्र स्मरण ही कर पा रहा हूँ। हमारे पूज्य आचार्य भगवन्तों ने अपने ज्ञान के आलोक से जन-जन के हृदय को आलोकित किया, अपनी साधना की स्निग्धता से स्नेह का तेल दिया तथा उपवन के माली बनकर संघ रूपी बगीचे का सिंचन किया।

संसार में हर समय प्रत्येक काल में मूल्यवान सारभूत पदार्थ थोड़े होते हैं। मिथ्यात्वी से सम्यक्त्वी, सम्यक्त्वी से श्रावक, श्रावक से साधु, अधर्मी से धर्मी सदा कम होते हैं। सामान्य लकड़ियों में चन्दन, पत्थरों में रत्न हमेशा थोड़े होते हैं किन्तु उनकी अनमोलता, उपयोगिता कम नहीं होती। रत्नवंश के रत्नों की एक ऐसी ही विरासत मुझे मिली है जो कई गुणों की सुवास से सम्पन्न है, समृद्ध है।

स्व० आचार्य भगवन्त ने एक ऐसा ही चमन खिलाया है जिसकी मधुर-मधुर महक से हर कोना सुरभित है, सुगन्धित है। पूज्य आचार्य भगवन्त के सान्निध्य से हम आज वंचित हैं पर उनके कृपा प्रसाद से हमें आज भी परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर का वरद् हस्त एवं मंगल सान्निध्य प्राप्त है। शासन सेवा की भावना वाले श्री शुभेन्द्र मुनि; ज्ञान-महेन्द्र रूपी सहयोगी भुजाएँ मुझे प्राप्त हैं। बसंत-प्रकाश जैसे मासक्षमण के तपस्वी संत हैं तो कवित्व कला का विकास गौतम मुनि कर रहे हैं। नंदीषेण जी का नाम ही सेवा का परिचय करा देता है। प्रमोद मुनि की ज्ञानार्जन चेष्टा देखकर प्रमोद होना स्वाभाविक है। अर्हत-दास ज्ञानाराधन में लीन हैं तो कैलाश मुनि एकान्तर तप कर चुके हैं। हरीश, दया और राममुनि भी स्वाध्याय सेवा में रमण करते रहते हैं। साध्वी प्रमुखा प्रवर्तिनी स्थविरा महासती श्री बदनकँवर जी, उप प्रवर्तिनी श्री लाडकँवर जी की शुभ भावना मुझे सदा मिलती रही है। सरलहृदया सायरकँवर जी, शासन प्रभाविका मैना सुन्दरी जी, सेवाभावी संतोषकँवर जी, शांत स्वभावी शांति कँवर जी, महासती तेजकँवर जी, महासती सुशीलाकँवर जी से संघ गौरवान्वित है।

बन्धुओ हमारा ! संघ गौरवशाली था, आज भी संघ की वही गरिमा है लेकिन हमें सन्तोष करके ही नहीं बैठ जाना है। हमें इस उपवन के संरक्षण के साथ इसकी अभिवृद्धि करनी है और यह हमारा सबका दायित्व है। मैं तो एक प्रतीक हूँ, संघ का सेवक हूँ। स्व० आचार्य भगवन्त की आज्ञा से आप सबने मिलकर जो अपार स्नेह, प्रेम एवं आदर देकर मुझे गौरवान्वित किया है, इस गौरव की रक्षा का भार आप पर भी है।

अभी जो चादर मुझे ओढ़ाई गई वह प्रेम, श्रद्धा, स्नेह एवं निष्ठा का प्रतीक है। जैसे चादर का एक-एक तार एक दूसरे से अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है, ऐसे ही संघ का हर एक सदस्य संघ व्यवस्था और अनुशासन से जुड़ा है, किसी का किसी से अलगाव नहीं रहे। किसी को कोई हल्का या छोटा नहीं समझे। सब एक दूसरे के सतत सहयोग से शासन-सेवा में संलग्न रहें, यही चादर का मूक सन्देश है।

सबके हृदय में सर्वदा, संवेदना की आह हो।
हमको तुम्हारी चाह हो, तुमको हमारी चाह हो।।

हम एक दूसरे के पूरक हैं। संघ में ज्ञान-दर्शन-चारित्र की जो निधि पूर्वाचार्यों ने दी है उसका रक्षण एवं अभिवर्द्धन हो, स्वाध्याय की ज्योति निरन्तर घर-घर में जगे। इसमें हमारा-आपका सभी का सम्मिलित प्रयास रहना चाहिये। जिस बगीचे को आचार्य भगवन्त ने ७० साल की साधना से सींचा है वह बगीचा, वह उपवन पुष्पित हो, पल्लवित हो, सुगन्धित हो।

आप सबके सहयोग से, प्रेम व स्नेह से, श्रद्धा एवं कर्तव्यपालन से मैं इस बाग को सुवासित रख सकूँगा। पूर्वाचार्यों का आशीर्वाद, परम श्रद्धेय उपाध्याय पं० रत्न श्री मानचन्द्र जी म० सा० के सहयोग एवं मार्गदर्शन से हमारा संघ सही दिशा में आगे बढ़ेगा। मैं इस प्रसंग पर उन सभी महापुरुषों का भी श्रद्धा सहित स्मरण करना चाहूंगा जिनका प्रेम व स्नेह हमें सदैव मिलता रहा है विशेषकर आचार्य श्री नानालाल जी महाराज, पूज्य तपस्वीराज श्री चम्पालाल जी महाराज, पूज्य प्रवर्तक श्री सोहनलाल जी महाराज, शासन प्रभावक श्री सुदर्शनलाल जी महाराज, श्रमण संघीय आचार्य सम्राट् श्री आनन्द ऋषिजी महाराज, उपाध्याय श्री पुष्कर मुनिजी महाराज, उपाचार्य श्री देवेन्द्र मुनिजी महाराज प्रभृति अनेक महापुरुषों का स्नेह हमें मिला है और मिलता रहेगा। स्नेह को साकार रूप दिया है तपस्वीराज श्री चम्पालाल जी महाराज के बहुश्रुत विद्वान् शिष्य पंडित श्री घेवरचन्द जी महाराज ने एवं आचार्य कल्प श्री शुभचन्द्र मुनिजी महाराज ने, जिन्होंने आज यहाँ पधार कर अपनी शुभ-कामनाएँ प्रकट की हैं। साध्वी प्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकँवर जी

महाराज शरीर से अशक्त और स्थविर होते हुए भी यहाँ पधारे हैं। इन सबकी शुभ कामनाओं से मैं निरन्तर ज्ञान-दर्शन-चारित्र में आगे बढ़ता रहूँ, यही मंगल-भावना है।

श्रद्धेय पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द जी म० सा० के मांगलिक उद्बोधन के पश्चात् **आचार्य कल्प श्री शुभचन्द्र जी म० सा०** ने उपस्थित जन-समुदाय को मांगलिक सुनाई। उपस्थित जन समुदाय ने जय-जयकार कर चादर महोत्सव कार्यक्रम पर पुनः पुनः हर्ष प्रकट किया।

चादर महोत्सव कार्यक्रम निर्धारित समय में अत्यन्त उत्साह और उमंग के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

आचार्य पद चादर महोत्सव पर प्राप्त मंगल-सन्देश एवं शुभकामनाएँ

आचार्य पद चादर महोत्सव के मंगल प्रसंग पर देश के विभिन्न क्षेत्रों के भाई-बहिनों ने जहाँ प्रत्यक्ष में उपस्थित होकर अपने आराध्य परम पूज्य आचार्य श्री हीराचन्दजी म. सा. के प्रति एवं श्रद्धेय उपाध्याय श्री मानचन्दजी म. सा. के प्रति अपनी शुभ कामनाएँ एवं श्रद्धाभक्तिपूर्वक वन्दनांजलि अर्पित की, वहाँ किसी कारणवश अनुकूलता न होने से जो भाई-बहिन उपस्थित न हो सके, उन्होंने भी तार और पत्र द्वारा अपनी श्रद्धाभक्तिपूर्ण वन्दना और शुभ कामनाएँ प्रेषित की हैं। संघ कार्यालय में बड़ी संख्या में तार और पत्र प्राप्त हुए हैं, उनमें से कतिपय चयनित अंश यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

स्वाध्याय प्रवृत्ति को वेग देने की जिम्मेदारी

आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज साहब की स्वाध्याय प्रवृत्ति को वेग देने तथा उनके तत्त्व चिन्तन की भूमिका का प्रचार-प्रसार व मार्गदर्शन की वृहत्तम जिम्मेदारी नव आचार्यश्री पर आई है। भगवान उन्हें सफलता प्रदान करें।

पूज्य आचार्य श्री हीराचन्दजी महाराज साहब के विद्वत्तापूर्ण मार्गदर्शन से समाज को योग्य दिशा निर्देश मिलता रहेगा और स्वध्याय आन्दोलन को अधिक प्रेरणा व बल मिलता रहेगा, इसी विश्वास के साथ।

—**मधु श्री काबरा**

सम्पादक—'समाज प्रवाह', १०, शहीद भगतसिंह मार्ग, बम्बई-२३

जैन धर्म को सतत सबलतर सिद्ध करें

इस शुभ अवसर पर मैं अवश्य उपस्थित होता, किन्तु स्वतन्त्र रूप से चलने-फिरने में असमर्थता के कारण अपनी उत्कट इच्छा को कार्य-रूप में परिणत नहीं कर पाऊँगा। क्षमाप्रार्थी हूँ। भगवान महावीर के आशीर्वाद से उत्पन्न सर्व-प्रकारेण प्रेरणा-प्रदायक हो, यह प्रार्थना है।

छोटा मुँह बड़ी बात, किन्तु भावना-वश श्रद्धेय श्री हीराचन्दजी म. सा. के चरण-कमलों में अभिनन्दन निवेदन करने का साहस करता हूँ। आपश्री बड़े महाराज सा. के आदर्शों को सार्वभौमिक रूप में प्रसारित कर जैन धर्म को सतत सबलतर सिद्ध करने में योग देंगे, यह निश्चित है।

—**फैयाज अलीखां**, किशनगढ़

उनका चयन सर्वोपरि है

मैं तो गुरुदेव के लिए गत ५० वर्षों से समर्पित हूँ। आपको अब क्या अर्ज करूँ वे तो मोक्ष में पधार गये, लेकिन उनके चयन किये हुए उत्तराधिकारी की अब उसी प्राणप्रण से सेवा करने का हमारा फर्ज हमको सदा निभाना है।

उनका चयन सर्वोपरि है। मैंने तो गुरु महाराज का चयन भी देखा है। बड़े-बड़े सन्तों की उपस्थिति में एक छोटे से सन्त को 'उत्तराधिकारी' बनाना तथा उस वक्त के बड़े-बड़े सन्तों को कुछ अखरा भी, लेकिन वे यह नहीं जानते थे कि स्व. आचार्य शोभाचन्दजी महाराज का चयन कितना अभूतपूर्व सिद्ध होगा। आज आचार्य भगवन्त-गुरु महाराज ने तो अपनी सम्प्रदाय को कितना ऊँचा उठाया तथा एक अभूतपूर्व स्थान दिला दिया जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण हम सबको २१-४-९१ एवं २२-४-९१ को निमाज में आँखों से देखने को मिला। अतः मेरा तो पक्का विश्वास है कि गुरु महाराज का यह चयन भी एक दिन उनके आशीर्वाद व वरद हस्त के कारण हमारी सम्प्रदाय में चार चाँद लगा देगा।

—**प्रो. बी. सी. मेहता**
जैन एस्ट्रोलोजिकल ब्यूरो, ब्यावर

संघ धर्मनिष्ठ एवं संगठित बना रहे

रत्नवंश के पूर्व आचार्य एक से बढ़कर एक आध्यात्मिक, क्षमायोगी, हीरों के समान संयम में कठोर एवं साधना में तेजस्वी हुए हैं। उनकी संयम साधना

में शिथिलता एवं अनावश्यक प्रपंच की कोई जगह नहीं थी। अब नूतन आचार्य श्री भी धर्म संघ का संचालन, उपाध्याय श्री मान मुनिजी महाराज सा. की पूर्ण मर्यादा रखते हुए, उनके विचारों को मानते हुए अपने संघ को धर्म मार्ग की ओर अग्रसर करेंगे। संघ धर्मनिष्ठ एवं संगठित बना रहे, जिसे हमारे पूर्व आचार्य भगवन्त ने विरासत में छोड़ा है, यही मेरी मंगल भावना है।

रत्नवंश उपाध्याय एवं आचार्यश्री जो सूर्य एवं चाँद की तरह हैं, के सुनेतृत्व में धर्मपथ पर आरूढ़ हो और जिनेश्वर भगवन्त असीम शक्ति प्रदान करें, यही मेरी जिनेश्वर भगवान से प्रार्थना है।

आयोजित चादर महोत्सव सुन्दर, सुव्यवस्थित एवं शोभामय हो, यह मेरी सच्चे मन से मनोकामना है।

—कनकमल दौलतमल चौरड़िया

१०४, अडियप्पा नायकन स्ट्रीट, मद्रास-६०००७९

संघ की गरिमा कायम रखें

जिस प्रकार पूज्य आचार्य १००८ श्री शोभाचन्दजी म. सा. के पाट को पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. ने दीपाया था, उसी तरह वर्तमान आचार्य श्री तथा उपाध्यायश्री जी को दीपाने की शक्ति देवें, ऐसी मैं शासन देव से प्रार्थना करता हूँ।

हमारे से जो सूर्य का तेज अदृश्य हुआ है, वही तेज सभी सन्त-सती मंडल प्रकाश में लाने का प्रयत्न करेंगे, ऐसी मैं आशा रखता हूँ। श्रावकों का साथ देना उनका कर्तव्य है, सम्प्रदाय की जो गरिमा है उसे कायम रखें। इसी से सन्त मंडल एवं श्रावक संघ की शोभा रहेगी।

—मदनचन्द मेहता

'नीलम', उम्बरगांव रोड-३९६१६५ (वलसाड) गुजरात

रत्नवंश फलेगा, फूलेगा, बढ़ेगा

रत्नवंश में रत्न समय-समय पर अनायास ही मिलते हैं। इस बात का मुझे विश्वास है। रत्नों की इस वंश में कमी नहीं है। पू. आचार्य प्रवर की नेश्राय में हर रीति से रत्नवंश फलेगा, फूलेगा, बढ़ेगा, ऐसी शुभ कामनाएँ बार-बार प्रेषित करता हूँ।

—रेखचन्द

२३ बी, कलावई रोड, आरकाट-६३२५०३

संघ फले-फूले

आपश्री के नेश्राय में संघ फले-फूले, धर्म आराधना में आगे बढ़े व भगवान महावीर के शासन की प्रभावना करते हुए जैन धर्म का खूब प्रचार-प्रसार हो।

—इन्दरमल जैन
अध्यक्ष, श्री व. स्था. जैन श्रावक संघ, नीम चौक, रतलाम

जिनशासन की प्रभावना हो

आचार्यश्री जी का चादर समारोह २ जून, १९९१ को सम्पन्न होने जा रहा है। इस मांगलिक अवसर पर चाँदनी चौक श्री संघ की हार्दिक शुभ कामनाएँ उपाध्याय प्रवर एवं आचार्य प्रवर की सेवा में प्रस्तुत करें। हम सभी वीर प्रभु से यही मंगल कामना करते हैं कि आपश्री के नेतृत्व में जिनशासन की प्रभावना हो और पूज्य आचार्य प्रवर का सन्देश "सामायिक और स्वाध्याय" ज्यादा से ज्यादा लोगों के हृदय में संचारित हो।

—प्रमोदचन्द जैन
मंत्री, श्री श्वे. स्था. जैन श्रावक प्रबन्धक समिति,
१४१७, महावीर भवन (बारादरी) चांदनी चौक, दिल्ली-६

प्रभु महावीर के मार्ग को दीपावें

आचार्य श्री हीरामुनिजी म. सा. के सान्निध्य में रत्न हितैषी श्रावक संघ उन्नति की ओर अग्रसर हो एवं प्रभु महावीर के मार्ग को दीपावें, ऐसी शुभ कामना करते हैं।

—फकीरचन्द मेहता
महामंत्री, श्री व. स्था. जैन श्रावक संघ, इन्दौर

शासन को देदीप्यमान करें

चादर महोत्सव समारोह में आचार्य पद की चादर सभी सन्त-सतियों एवं चतुर्विध संघ द्वारा समर्पित की जायगी। यह संघ का सौभाग्य होगा और जोधपुर संघ भाग्यशाली है कि ऐसा शुभ अवसर का लाभ प्राप्त करेगा। नये आचार्य प्रवर से समाज व संघ को पूर्ण आशा है कि स्वर्गीय आचार्य प्रवर के शासन को देदीप्यमान करें।

—श्रीलाल कावड़िया, नया बाजार, अजमेर

कोहिनूर हीरे के समान चमकायेंगे

रत्नवंश के अष्टम आचार्य श्रद्धेय श्री हीराचन्दजी म. सा. एक महान् सन्त हैं। आपश्री भ० महावीर के मार्ग को अपना कर अपने आपको, अपने वंश को, अपने जैन समुदाय को जैसा नाम वैसे चमकायेंगे और हम सर्व सज्जन उनके बताये मार्ग पर चलकर रत्नवंश की महिमा और बढ़ायेंगे, धर्म ध्यान में और जागृत होंगे। आचार्य श्री हीराचन्दजी म. सा. जैसा नाम है, हम सबको कोहिनूर हीरे के समान चमकायेंगे। इसी भावना के साथ।

—**के. गौतमचन्द बम्ब**, निमाज़वाला
१५२, कामराज स्ट्रीट, बिल्लपुरम्-६०५६०२

जैन समाज में आपसी सौहार्द बढ़ेगा

श्री हीराचन्दजी म. सा. के आचार्य पदारोहण समारोह की सूचना प्राप्त कर प्रसन्नता हुई। भावी आचार्यश्री का शासनकाल जैन एकता को सुदृढ़ करने वाला, जन-जन को स्वाध्याय की प्रेरणा देने वाला, विश्व भर में विश्व बन्धुत्व व विश्व मैत्री की भावना प्रसारित करने वाला एवं जैन शासन की प्रभावना को विस्तार देने वाला हो, ऐसी अपेक्षायें रखता हूँ एवं सुन्दर भविष्य की शुभकामनायें प्रेषित कर रहा हूँ। आशा है, उनके शासनकाल में जैन समाज में आपसी सौहार्द बढ़ेगा। संवत्सरी महापर्व समस्त जैन समाज एक साथ मनाये, इस हेतु आशा है आचार्यश्री से समाज को प्रबल प्रेरणा मिलेगी।

—**सम्पतकुमार**, श्रीचन्द गणेशदास कॉरपोरेशन,
११३-ए, मनमोहनदास कटरा, कलकत्ता-७००००७

आदर्श जीवन समग्र विश्व के सम्मुख रखेंगे

परमाराध्य पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० ने आप जैसे महान् सन्त को संघ का दायित्व सौंपा है कि संघ सहित, श्रमण-श्रमणियाँ एवं गृहस्थ श्रावकों का, आप योग्य रीति से मार्गदर्शन करेंगे। सबको सहजता से, धर्म-मार्ग में दृढ़ करेंगे, जिनवाणी का उद्धार कर, विलुप्त साहित्य का प्रकाशन करायेंगे। आप यशस्वी हों, दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें, एवं राष्ट्र-हित को सर्वोपरि मान कर, जन-जन का कल्याण करने में पूज्य श्री गुरुदेव की भांति एक आदर्श जीवन समग्र विश्व के सम्मुख रखेंगे जो अनेक पीढ़ियों के लिए अनुकरणीय एवं वन्दनीय रहेगा।

—**आर. पी. शर्मा**, ज्योतिषाचार्य, निवाई (राज०)

स्व-पर कल्याण का पथ प्रशस्त करेंगे

आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० जैन धर्म की प्रभावना हेतु सतत प्रयत्नशील रहे। उनके जीवन ने जैन धर्म को तेजस्विता प्रदान की। आशा है, अष्टम आचार्य उस कार्य को और गति प्रदान कर स्व-पर कल्याण का पथ प्रशस्त करेंगे। प्रेक्षाध्यान परिवार की ओर से विनीत हार्दिक शुभकामनायें।

—**शंकरलाल मेहता**, सम्पादक–"प्रेक्षाध्यान"
जैन विश्व भारती, लाडनूँ

हमारे मार्गदर्शक गुरु

पंच परमेष्ठी में सिद्धों के बाद आचार्य ही क्रम से आते हैं। वर्तमान युग में वे ही हमारे मार्गदर्शक गुरु हैं। मैं आचार्यश्री के चरणों में वन्दन करता हुआ उनके प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित करता हूँ।

—**अशोककुमार जैन**
अध्यक्ष, दिगम्बर जैन समाज, दिल्ली

दीर्घ दृष्टि

आचार्य प्रवर की दीर्घ दृष्टि जैन एकता के भागीरथ कार्य को आगे बढ़ाने में प्रेरणादायी रहेगी, ऐसा विश्वास है।

—**शुभकरण सुराणा**
२३७, न्यू क्लॉथ मार्केट, अहमदाबाद

दिन दुगुनी रात चौगुनी प्रतिष्ठा प्राप्त करें

हम इस उत्सव पर अपनी हार्दिक वन्दनांजलि आचार्यश्री के प्रति भेज रहे हैं, हमारी शुभकामना है कि उनके नेतृत्व में श्रावक संघ दिन दुगुनी और रात चौगुनी प्रतिष्ठा को प्राप्त करता रहे।

—**सुबोधकुमार जैन**
संचालक, श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान
श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा (बिहार)

आचार्य पद की गरिमा बहुत बढ़े

आचार्य श्री हीराचन्दजी म. को वन्दन कर कामना करता हूँ कि आप

आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के शास्त्र एवं साहित्य के कार्य को आगे बढ़ाते हुए जैन समाज को दिशा प्रदान करेंगे। आपके आचार्य पद की गरिमा बहुत बढ़े तथा आपके दीर्घायु होने की कामना करता हूँ।

—निहालचन्द गांधी
७८, बजाजखाना, रतलाम, म.प्र.-४५७००१

युगों-युगों तक आप विराजें

[१]

जेठ बदी पांचम रविवारी, नगरी जोधपुरी इठलाई।
दिव्य-भव्य शुभ अवसर आया, हर घर में बजती शहनाई।।
पुण्य बढ़े हैं इस धरती के, चद्दर महोत्सव का दिन आया।
मंगलमय संवाद श्रवण कर, घर-घर में अति आनन्द छाया।।

[२]

उपाध्याय हुए मान मुनिसा, चरण कमल में वन्दन है।
आचार्य प्रवर श्री हीरा मुनिवर, का करते अभिनन्दन हैं।।
रत्नवंश का पाट प्रतापी, श्री हीरा मुनिवर आज संभाले।
आचार्य प्रवर पूज्य हस्तीमलजी, से पाये हैं ज्ञान उजाले।।

[३]

श्री संघ व कोठारी जितेन्द्र सब चरण कमल वन्दन करते हैं।
'पूज्य हस्ती' पूज्य 'मान मुनिसा', 'पूज्य हीरा' अर्चन करते हैं।।
इस युग में पूज्य हीरा मुनिवर, युगों-युगों तक आप विराजें।
पूज्य प्रवर गुरु हस्तीमलजी सम, इस दुनिया में हरदम गावें।।

—जितेन्द्र कोठारी
अधिशासी अभियन्ता, सिंचाई बिसलपुर परियोजना, देवली

उन्नत हो सकल समाज

गांधी मोतीलाल के, प्रकटे हीरालाल,
विवाह बन्ध बांधा नहीं, छै काया प्रतिपाल।
छै काया प्रतिपाल, ज्ञानी गुरु हस्ति पाये,
गुरु सेवा में लगे, मर्म आगम बतलाये।

परख करी गुरुराज, ज्ञान-क्रिया व्यवहार में,
लिख धर दीना लेख, मांझी अगले काल में ।।१।।

वैसाख सुदी नवमी को, खोला संघ ने लेख,
घोषित किया आचार्य पद, संघ ने चिट्ठी देख।
संघ ने चिट्ठी देख, सब सन्तों के सामने,
स्वागत था गुरु लेख, पदवी उनको थामने।
दिव्य दृष्टि हस्तितरणी, क्षण में हो गया काज,
आशा सबकी यही, लोग लाख वहाँ आज ।।२।।

मान मुनि प्रमुदित हुए, पूरा देंगे साथ,
लाखों में विरले मुनि, सभी झुकाये माथ।
सभी झुकाये माथ, साध्वाचार अनोखा,
हँस कर बोले बात, सभी को लागे चोखा।
मानमुनि हीरामुनि, दो रतन वंश के ताज,
शुद्ध धर्म आराधना, उन्नत हो सकल समाज ।।३।।

—**रिखबराज कर्णावट**
४४८, रोड १ सी, सरदारपुरा, जोधपुर-३

इनके अतिरिक्त विभिन्न संघों के अध्यक्षों, मंत्रियों एवं समाज के प्रमुख व्यक्तियों से हमें जो शुभकामना संदेश प्राप्त हुए हैं, उनमें उल्लेखनीय हैं—

दिल्ली से श्री मुखचन्द जैन, प्रधान जैन समाज चिराग, श्री प्रमोदचन्द जैन, अध्यक्ष, युवा शाखा श्वे० स्था० जैन कांफ्रेंस, श्री अशोक मेहता, अध्यक्ष, मरुधर ग्रुप, श्री वी० सी० संचेती, प्रिंसीपल श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉलेज, श्री रमेशचन्द जैन, **बम्बई** से श्री पुखराजमल लुंकड़, अध्यक्ष, अ० भारतीय श्वे० स्था० जैन कांफ्रेंस, श्री चन्दनमल 'चाँद' प्रधान मंत्री, भारत जैन महामण्डल, श्री किशोरचन्द्र एम० वर्धन, श्री एस० पी० जैन, श्री ए० एम० कुम्भट, श्री खुशीलाल दक, **मद्रास** से श्री केशरीचन्द सेठिया, संयोजक, साहित्य समिति, अ० भा० साधुमार्गी जैन संघ, श्री पी० एम० चौरड़िया, श्री गौतमचन्द हुण्डीवाल, श्री बादलचन्द कांकरिया, श्री जवाहरलाल बाघमार, श्रीमती पारसकंवर भण्डारी, **बंगलौर** से श्री भंवरलाल गोटावत, **मैसूर** से तेजराज भण्डारी, **कोयम्बटूर** से श्री लूणकरण पुखराज एण्ड कम्पनी, **रोबर्टसनपेठ** से श्री पूसालाल, **कुम्भकोणम्** से संकलेचा परिवार, **सिकन्दराबाद** से श्री हस्तीमल मुणोत, अध्यक्ष विश्व जैन परिषद, **जलगाँव** से श्री दलीचन्द जैन, **नासिक** से श्री चम्पालाल

बाफना, **देवनगर** से श्री केवलचन्द गांधी, **यादगिरि** से श्री सम्पतराज धोका, **भोपाल** से श्री फतेहचन्द बाफना, **उज्जैन** से श्री पारसमल चौरड़िया, **इन्दौर** से म० प्र० जैन स्वाध्याय संघ के श्री फकीरचन्द मेहता, श्री अशोक मंडलिक, श्रीमती भुवनेश भण्डारी, **सनावद** से मै० सरदारमल समरथमल जैन, **जयपुर** से डॉ० गुलाबसिंह दरड़ा, शासन उप सचिव, श्री महीपतराज मेहता, **जोधपुर** से महाराजा श्री गजसिंह, **कोटा** से श्री ज्ञानचन्द रांका, **सवाईमाधोपुर** से श्री गोपीकृष्ण हाड़ा, **किशनगढ़** से श्री ताराचन्द जैन, **पाली** से श्री नथमल भण्डारी, **सोजतसिटी** से जैन श्री संघ के अध्यक्ष श्री सम्पतराज मेहता एवं मंत्री श्री चम्पालाल छाजेड़, **भवानीमण्डी** से श्री राजेन्द्रप्रसाद जैन, एडवोकेट, श्री कालूराम जैन, श्री बसन्तीलाल जैन, श्री सौभाग्यमल छाजेड़, जागीरदार, उपाध्यक्ष, स्था० जैन श्री संघ, श्री कैलाश बोहरा, अध्यक्ष जैन युवा संघ, **पचपहाड़** से श्री माणकचन्द बोहरा, अध्यक्ष, स्था० जैन श्री संघ, **निमाज** से श्री विष्णु कल्याण पंचारिया और **कुण्डेरा** से श्री रामस्वरूप जैन ।

आदर्श - चार्ट

□ श्री महावीरप्रसाद जैन

- सर्वोत्तम दिन — आज
- सबसे उपयुक्त समय — अभी
- सबसे बड़ा पाप — भय
- सबसे खतरनाक वस्तु — घृणा
- सबसे बुरी भावना — ईर्ष्या
- सबसे बड़ी आवश्यकता — सामान्य ज्ञान
- सबसे बड़ी बाधा — अधिक बोलना
- सबसे बड़ी भूल — समय की बरबादी
- सबसे विश्वसनीय मित्र — आपका अपना हाथ
- सबसे बड़ा गुरु — जो सीखने की प्रेरणा दे
- सबसे बड़ा दिवालिया — जिसने अपना विश्वास खो दिया
- सबसे भाग्यशाली — जो अपने काम में संलग्न हो
- सब धर्मों का सार — सच्चाई, ईमानदारी, विनम्रता
- सबसे सुखी — आशावादी

—ए-६, साधना भवन
महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-१५

समाज-दर्शन

आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन

जयपुर—श्री अखिल भारतीय जैन विद्वत् परिषद् एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में जोधपुर में आचार्य श्री हीराचन्दजी म. सा. व उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म.सा. के सान्निध्य में दिनांक १६, १७ व १८ अक्टूबर, १९९१ को उक्त संगोष्ठी का आयोजन किया गया है, जिसमें साधना, साहित्य, इतिहास, संस्कृति—धर्म-दर्शन के विविध क्षेत्रों में आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के विशिष्ट योगदान के सम्बन्ध में विद्वानों द्वारा अपने निबन्ध प्रस्तुत किये जायेंगे और उन पर विस्तृत चर्चा होगी। विद्वानों/साधकों से निवेदन है कि वे इच्छित विषय पर अपने निबन्ध ३० सितम्बर, १९९१ तक अवश्य भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क सूत्र—**डॉ० नरेन्द्र भानावत,** महामंत्री, अ. भा. जैन विद्वत् परिषद्
सी-२३५ ए, दयानन्द मार्ग, तिलक नगर, जयपुर-३०२००४

स्वाध्याय-प्रचार हेतु विनम्र निवेदन

परम श्रद्धेय प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद आचार्य प्रवर पूज्य **श्री हस्तीमलजी म. सा.** का समस्त जीवन **सामायिक एवं स्वाध्याय** हेतु समर्पित रहा है। जो भी श्रद्धालु उनके चरणों में उपस्थित हुआ, आपने सदैव उसे इन दो मूल मन्त्रों की प्रेरणा अवश्य दी। प्रत्येक श्रद्धालु का यह दायित्व है कि पूज्य आचार्यदेव की प्रेरणाओं को आगे बढ़ाने में अपनी पूर्ण क्षमतानुसार सहयोग दें। स्वाध्याय आचार्यदेव के जीवन का मिशन रहा, इसे सफल बनाकर आप हम सब उनके प्रति सच्ची श्रद्धा व भक्ति की अभिव्यक्ति करें, यही विनम्र अनुरोध है।

१. यदि आप स्वाध्याय संघ के पहले से ही सक्रिय सदस्य हैं तो पर्वाधिराज पर्युषण के पावन प्रसंग पर सेवा देने को सर्वोच्च प्राथमिकता देकर चातुर्मास से वंचित क्षेत्रों में पर्वाराधन एवं धर्म प्रचार हेतु अपना योगदान करें।

२. यदि आप सभी संघ के सदस्य नहीं हैं तो नियमित स्वाध्याय कर, ज्ञान व क्रिया के समन्वय से अपनी स्वयं की योग्यता को विकसित करें एवं स्वाध्यायी के रूप में अपनी सेवायें प्रदान करने का सुसंकल्प ग्रहण करें।

३. यदि आप धार्मिक जानकारी से सम्पन्न, विद्वान् चिन्तक, वक्ता अथवा गायक हैं और संघ के सक्रिय सदस्य नहीं बने हैं तो आप स्वाध्यायी

अवश्य बनें एवं अधिकाधिक क्षेत्रों में पर्वाराधन के हमारे लक्ष्य की पूर्ति में सहभागी बनें ।

४. नेतृत्व क्षमता सम्पन्न, प्रभावशील, समाजसेवी महानुभाव स्वाध्याय-प्रवृत्ति के प्रचार-प्रसार एवं दूसरों को प्रेरणा देने हेतु प्रतिवर्ष कम से कम तीन दिन या उससे अधिक समय देने का संकल्प कर स्वाध्याय प्रवृत्ति को घर-घर पहुँचाने में अपना सहयोग प्रदान करें ।

समाज का प्रत्येक सदस्य स्वाध्याय प्रवृत्ति की उपयोगिता को समझे एवं आचार्य श्री का प्रत्येक श्रद्धालु व्यक्ति किसी न किसी रूप से स्वाध्याय संघ की गतिविधियों से जुड़कर अपने अमूल्य समय, महती श्रम एवं साधनों का अधिकाधिक उपयोग, स्वाध्याय के प्रति जनचेतना को जागृत करने में लगावे ताकि पूज्य आचार्य श्री द्वारा रोपित यह पौधा एक विराट वृक्ष बन कर समग्र समाज में ज्ञान प्रकाश का आलोक कर सके । संकल्प-पत्र में आपकी अनुकूलता के अनुसार संकल्प व्यक्त कर कार्यालय को लौटावें ।

आप हम सब अपने घर, परिवार, समाज तथा सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को स्वाध्याय के प्रति प्रेरित करें एवं पूज्य आचार्यदेव के प्रति सच्ची श्रद्धा भक्ति की अभिव्यक्ति करें, इस मंगल कामना के साथ

—विनयावनत—

सम्पतसिंह भांडावत
अध्यक्ष
टीकमचन्द हीरावत
कार्याध्यक्ष
चैतन्यमल ढढ्ढा
मन्त्री
सम्यग् ज्ञान प्रचारक मंडल, जयपुर

सम्पतराज डोसी
संयोजक
चंचलमल चौरड़िया
सचिव
एवं सदस्यगण
संचालन समिति
स्वाध्याय संघ, जोधपुर

हार्दिक अभिनन्दन एवं बधाई

कलकत्ता—जोधपुर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति एवं कलकत्ता विश्वविद्यालय के सेवा-निवृत्त आचार्य प्रो. कल्याणमल लोढ़ा का विख्यात अन्तर्राष्ट्रीय संस्था दि बाइग्रोफिकल इंस्टीट्यूट ऑफ अमेरिका ने शिक्षा के क्षेत्र में उनके विशिष्ट अवदान के लिए सम्मानित किया है एवं उनसे संस्था के डिप्टी गवर्नर का पद स्वीकार करने का आग्रह किया है । इसके साथ ही उन्हें अपनी शोध समिति का सम्मानित व मानद परामर्शदाता भी मनोनीत किया है। हार्दिक बधाई !

लाडनूं—जैन विश्वभारती (मान्य विश्वविद्यालय) की संचालन परिषद् ने राजस्थान के पूर्व कॉलेज शिक्षा निदेशक डॉ० महावीर राज गेलड़ा को विश्व-विद्यालय का कुलपति मनोनीत किया है। डॉ० गेलड़ा ने "कैन्सर निदान के उपयोग में आने वाले रासायनिक यौगिक" विषय पर रसायन शास्त्र में पी-एच. डी. की है। आप भारतीय विद्या एवं जैन दर्शन के मनीषी विद्वान् हैं। जापान, जर्मनी, इटली आदि देशों में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में आपने जैन विद्या पर शोध निबन्ध प्रस्तुत किये हैं। आशा है, आपके मार्गदर्शन में विज्ञान और जैन दर्शन के अन्तर सम्बन्धों पर शोध के कई नये आयाम उद्घाटित होंगे। हार्दिक बधाई !

जोधपुर—जोधपुर वि. वि. ने विदुषी साध्वी डॉ. मुक्तिप्रभा जी की सुशिष्या जैन साध्वी अनुपमा श्रीजी (हर्षा दौमड़िया) को उनके शोध प्रबन्ध **"जैन साहित्य (८०० से १२०० ई. तक) का अनुशीलन—चरित्र काव्य के विशेष संदर्भ में"** पर पी-एच. डी. की उपाधि प्रदान की है। साध्वी श्री ने प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. राजकृष्ण दुग्गड़ के निर्देशन में यह शोध प्रबन्ध लिखा था। पानीपत में राज. वि. वि. के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. नरेन्द्र भानावत द्वारा उनकी मौखिकी सम्पन्न हुई। साध्वी श्री ने इस शोध प्रबन्ध में प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी के चरित काव्य की परम्पराओं का तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया, जो विशेष महत्त्वपूर्ण है। हार्दिक बधाई !

बम्बई—बम्बई विश्वविद्यालय ने श्रमण संघीय महामंत्री श्री सौभाग्य मुनि 'कुमुद' के सुशिष्य युवा मनीषी मुनि श्री राजेन्द्र 'रत्नेश' को उनके शोध प्रबन्ध 'हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों में श्रमण संस्कृति' पर पी-एच. डी. की उपाधि प्रदान की है। मुनि श्री ने यह शोध प्रबन्ध डॉ. रविनाथसिंह के निर्देशन में तैयार किया था। मुनिश्री प्रबुद्ध विचारक, संवेदनशील लेखक और सफल कथाकार हैं। आपके दो उपन्यास 'अश्रुपथ' और 'रूपकोशा' तथा एक निबन्ध संग्रह (लहर की प्यास) प्रकाशित हो चुके हैं। हार्दिक बधाई !

जयपुर—राज. वि. वि. ने कु० इन्द्रा जैन को उनके शोध प्रबन्ध **'श्रीमद् जवाहराचार्य : जीवन और साहित्य'** पर पी-एच. डी. की उपाधि प्रदान की है। डॉ. नरेन्द्र भानावत के निर्देशन में यह कार्य सम्पन्न हुआ। इस शोध प्रबन्ध में श्रीमद् जवाहराचार्य के समग्र साहित्य का मूल्यांकन करते हुए उनके क्रांतधर्मी आचार्यत्व को उजागर किया गया है। हार्दिक बधाई !

जयपुर—राज. वि. वि. ने श्री कैलाशचन्द्र पारीक को उनके शोध प्रबन्ध **'आधुनिक हिन्दी जैन धर्म सम्बन्धी उपन्यास : एक अनुशीलन'** विषय पर

पी-एच. डी. की उपाधि प्रदान की है। डॉ. नरेन्द्र भानावत के निर्देशन में यह शोध प्रबन्ध तैयार किया गया। श्री पारीक ने इसमें ५० से अधिक जैन उपन्यासों का पहली बार अध्ययन कर जो निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं, वे आधुनिक उपन्यास के मूल्यांकन-क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। हार्दिक बधाई !

जयपुर—मेधावी छात्र श्री पंकज सिंघवी ने I. A. S. परीक्षा में ७वां स्थान प्राप्त कर समाज को गौरवान्वित किया है। आप श्री सवाईसिंह जी सिंघवी, उपायुक्त, खाद्य एवं रसद विभाग के सुपुत्र एवं श्री के. एल. कोचर, प्रेस सलाहकार, मुख्यमंत्री के भानजे हैं। हार्दिक बधाई !

जयपुर—श्री राजीव जैन राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयनित हुए हैं। आप श्री एम. पी. जैन, उपकुल सचिव, राज. वि. वि. के सुपुत्र है, हार्दिक बधाई!

जोधपुर—नीरज कुम्भट ने इन्स्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स द्वारा आयोजित सी. ए. फाइनल की परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर पर ३९वां स्थान तथा जोधपुर में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इससे पूर्व नीरज वरीयता सूची में इन्टरमीडियट की सी. ए. परीक्षा में ३८वाँ, कम्पनी सेक्रेटरी में तीसरा स्थान तथा बी. कॉम. (ऑनर्स) में स्वर्ण पदक प्राप्त कर चुके हैं। इन्होंने सी.ए. की आर्टिकलशिप, माणक संचेती, संचेती एण्ड कम्पनी के मार्ग-दर्शन में पूर्ण की। नीरज समाज सेवी डॉ. पी. एम. कुम्भट के पुत्र हैं। नीरज के ज्येष्ठ भ्राता पंकज कुम्भट भी सी. ए., सी. एस. हैं जो इस समय मस्कट में कार्यरत हैं।

उदयपुर—मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय ने श्रीमती कविता मेहता को पी-एच. डी. की उपाधि प्रदान की है। श्रीमती कविता ने अपना शोध प्रबन्ध 'दशामाता व्रत कथाओं को सांस्कृतिक अध्ययन' विषय पर प्रस्तुत किया था। यह प्रबन्ध डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' के निर्देशन में लिखा गया। इसमें दशामाता विषयक ५१ लोककथाओं का केन्द्र बिन्दु मान कर राजस्थानी महिला समुदाय के धार्मिक आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्यों का सर्वांग चित्रण किया गया है। श्रीमती कविता लोकसंस्कृतिविज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत की सुपुत्री एवं 'जिनवाणी' की सम्पादक डॉ. शान्ता भानावत की भतीजी हैं।

जयपुर—स्वाध्याय-शिक्षा के सम्पादक एवं श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, जयपुर के पूर्व छात्र डॉ. धर्मचन्द जैन को राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर ने सन् १९९० के 'अम्बिकादत्त व्यास पुरस्कार' से सम्मानित किया है। डॉ. जैन महारानी श्री जया स्वायत्तशासी महाविद्यालय, भरतपुर के संस्कृत-विभाग में व्याख्याता हैं। उन्हें यह पुरस्कार संस्कृत में सर्वश्रेष्ठ गद्य लेखन के लिए प्रदान किया गया है। हार्दिक बधाई !

दीक्षार्थियों के संयमी जीवन के लिए मंगल कामनाएँ

ढोल—विदुषी साध्वी श्री कुसुमवती जी की सुशिष्या साध्वी श्री चारित्र-प्रभाजी आदि ठाणा—६ के सान्निध्य में १९ मई को विरक्ता सुमन कुमारी की दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई।

पाली—तपस्वीराज पूज्य श्री चम्पालाल जी म. आदि ठाणा—८ तथा विदुषी महासती श्री त्रिशला जी आदि ठाणा—१७ के सान्निध्य में १९ मई को वैराग्यवती कु. संजूलता मुणोत, बम्बई की दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई।

नई दिल्ली—प्रवर्तक श्री रमेश मुनिजी एवं विदुषी महासती श्री केशरदेवी जी के सान्निध्य में २६ मई को कु. सरस्वती सिंघवी, मद्रास एवं कु. साक्षी जैन, दिल्ली की दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई।

अहमदनगर—आचार्य सम्राट श्री आनन्दऋषि जी म. सा. के सान्निध्य में कु. संगीता सुराणा, चालीसगाँव की दीक्षा ६ जून को सानन्द सम्पन्न हुई।

लीमड़ी—गोंडल सम्प्रदाय के पूज्य श्री धीरज मुनि, विदुषी महासती श्री नर्मदा बाई एवं श्री शांतिकुंवर जी आदि ठाणा के सान्निध्य में कु० सुनन्दा बहिन दुगड़, लीमड़ी की दीक्षा ९ जून को सानंद सम्पन्न हुई।

आत्म कल्याण एवं लोक कल्याण के संयम पथ पर अग्रसर उक्त साधकों का हार्दिक अभिनन्दन एवं निरतिचार यशस्वी, संयमी जीवन की मंगलकामनाएँ।

विविध धार्मिक शिक्षण-संस्कार शिविरों का आयोजन

बैंगलोर—कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ के तत्त्वावधान में मल्लेश्वरम् स्थानक भवन में महासती श्री सूर्यकान्ता जी, श्री इन्दुबाई जी आदि ठाणा के सान्निध्य में २१ अप्रैल से एक मई तक धार्मिक शिक्षण संस्कार शिविर आयोजित किया गया, जिसमें ९६ बालक-युवकों ने भाग लिया।

कोंडागाँव—यहां आचार्य नानेश की सुशिष्या महासती श्री पारसकंवरजी, सुलोचना जी आदि ठाणा के सान्निध्य में ४ मई से १६ मई तक धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें १८६ शिविरार्थियों ने भाग लिया।

दिल्ली—त्रिनगर जैन स्था. में महासती श्री वीरमतीजी एवं प्रकाशवतीजी के सान्निध्य में दस दिवसीय आध्यात्मिक ज्ञान संस्कार शिविर आयोजित किया गया, जिसमें १०० बालक-बालिकाओं ने भाग लिया।

सादड़ी—महासती श्री त्रिशलाकंवर जी के सान्निध्य में १० जून से २६ जून तक धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें मेवाड़, मारवाड़, मालवा आदि क्षेत्रों के बालक-बालिकाओं ने भाग लिया।

बम्बोरा—समता युवा संघ के तत्त्वावधान एवं श्री धर्मेश मुनिजी के सान्निध्य में पंच-दिवसीय धर्म संस्कार शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें ६९ शिविरार्थियों ने भाग लिया। यहाँ से उदयपुर तक मुनि श्री के साथ १०० से अधिक युवकों ने पदयात्रा की।

अतरिया—विदुषी साध्वी ताराकंवर जी, सरोजबाला जी के सान्निध्य में २ जून से १४ जून तक नैतिक दिशाबोध शिविर आयोजित किया गया, जिसमें स्वास्थ्य, शाकाहार, मैत्रीत्व विकास, नशा-निवारण, मादक द्रव्यों के सेवन के दुष्परिणाम विषयों पर विशेष प्रशिक्षण दिया गया।

गीदम (बस्तर)—महासती श्री पारसकंवरजी, सुलोचना श्रीजी ठाणा-५ के सान्निध्य में १७ जून से २६ जून तक धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें १०५ शिविरार्थियों ने भाग लिया।

बडेर (अलवर)—यहाँ २५ जून से २७ जून तक स्थानीय शिविर आयोजित किया गया, जिसमें ३० भाई-बहिनों ने भाग लिया। इसका संयोजन श्री सूरजमलजी मेहता ने किया।

छुई खदान—महासती श्री ताराकंवरजी, श्री सरोजबाला जी के सान्निध्य में २८ जुलाई से ३ अगस्त तक छत्तीसगढ़ स्तरीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

नांगलोई (दिल्ली)—महासती श्री मिनेषकुमारी जी, मनीषा जी, एवं मुक्ताजी के सान्निध्य में सात-दिवसीय आध्यात्मिक ज्ञान संस्कार शिविर आयोजित किया गया, जिसमें ५० बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। शिविर का संचालन श्री नरेन्द्र भाई कामदार ने किया।

जोधपुर—श्री जैन रत्न-हितैषी श्रावक संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में आध्यात्मिक, नैतिक एवं धार्मिक संस्कार शिविर का आयोजन ३ जून से १८ जून तक किया गया जिसमें ९० बालक-बालिकाओं ने भाग लिया।

B Shantilal Ji Jain
Kankarya
Ganesh Bagh
9 Infantry Rd.
Shivajinagar
Bangalore

२८ दिन की निर्जल तपस्या एक विश्व-कीर्तिमान

बगलौर—यहाँ गणेश बाग, ९ इनफेन्ट्री रोड, शिवाजी नगर में चातुर्मासार्थ विराजित युवाचार्य डॉ० शिवमुनीजी की धर्म-प्रेरणा से श्रीमती विमला देवी कांकरिया धर्मपत्नी श्री बी. शान्तिलालजी कांकरिया ने ६ अगस्त, १९९१ तक २८ दिनों की निर्जल तपस्या (उपवास) कर विश्व में नया कीर्तिमान स्थापित किया है। इस दिशा में उनकी और आगे बढ़ने की भावना है। आछ या गरम पानी के आधार पर तो लगभग ६ माह की तपस्या तक की गई है पर बिना पानी लिये १५० वर्ष पूर्व महान् जैन संत स्वर्गीय श्री निहालचन्दजी म. द्वारा २१ दिन की तपस्या करने का उदाहरण मिलता है। २१ दिन के कीर्तिमान को लांघ दिया है श्रीमती विमला कांकरिया ने। इस अपूर्व सफलता के लिए हार्दिक बधाई एवं अभिनन्दन!



पर्युषण पर्व में धर्माराधन हेतु स्वाध्यायियों को आमंत्रित कीजिए

पर्युषण पर्व में संत-सतियों के चातुर्मासों से वंचित क्षेत्रों में धर्माराधना हेतु विभिन्न स्वाध्यायी संघ अपनी ओर से योग्य एवं अनुभवी स्वाध्यायी बन्धुओं को बाहर भेजकर जिन-शासन एवं समाज की महती सेवा में विगत कई वर्षों से संलग्न हैं। अत: सम्बन्धित क्षेत्रों के संघ मंत्रियों से निवेदन है कि वे अपने गाँव एवं नगर का पूरा विवरण देते हुए निम्नलिखित पतों पर स्वाध्यायी-बन्धुओं को भेजने के लिए सम्पर्क करें—

१. श्री चंचलमल चौरड़िया, सचिव, स्वाध्याय संचालन समिति, चौरड़िया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर—३४२००३

२. मंत्री, श्री श्वे. स्था. जैन स्वाध्यायी संघ, गुलाबपुरा—३११ ०२१ (भीलवाड़ा)

३. मंत्री, श्री वर्धमान जैन स्वाध्याय संघ, समदड़ी-३४४०२१ (बाड़मेर)

४. श्री शान्तिलाल बोहरा, संयोजक, कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ ६१, नगरथ पैठ, बैंगलोर—५६०००२

५. श्री रिखबदास लोढ़ा, मंत्री, श्री दक्षिण भारत जैन स्वाध्याय संघ ३४८, मिन्ट स्ट्रीट, मद्रास—६०००७९

स्वाध्याय निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक–७

गुलाबपुरा:—स्वाध्यायी संघ, गुलाबपुरा ने वरिष्ठ वर्ग एवं कनिष्ठ वर्ग के लिए अलग-अलग निबन्ध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया है। वरिष्ठ वर्ग (२१ वर्ष की आयु प्राप्त) के लिए विषय रखा है—**"जैन धर्म में तप का महत्त्व"** शब्द सीमा २०००। प्रथम पुरस्कार २५१/– रुपया, द्वितीय पुरस्कार १५१/- रुपया। कनिष्ठ वर्ग के लिए विषय है—**"सम्यक् दर्शन"** शब्द सीमा १५००। प्रथम पुरस्कार ७१/- रुपये, द्वितीय पुरस्कार ५१/- रुपये। निबन्ध भेजने की अन्तिम तिथि ३१ अगस्त, ९१ है।

स्वाध्याय निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक–६ वरिष्ठ वर्ग में रायपुर के श्री उगरसिंह बोलिया प्रथम व जगपुरा के श्री विमलकुमार नवलखा द्वितीय रहे। कनिष्ठ वर्ग में विजयनगर की श्रीमती प्रकाश देवी पोखरणा प्रथम एवं भीलवाड़ा के श्री बन्टी खमेसरा द्वितीय रहे।

अ. भा. महिला-निबन्ध प्रतियोगिता

भवानीमण्डी:—प्रमुख समाजसेवी श्री राजेन्द्रप्रसाद जी जैन की विज्ञप्ति के अनुसार अहिंसा-प्रचार समिति पचपहाड़ के तत्त्वावधान में श्री गादिया मदनलाल जी ज्ञानोन्मुख योजना, बैंगलौर' के सहयोग से **'संस्कार निर्माण में नारी की भूमिका'** विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई है। शब्द सीमा १०००। अन्तिम तिथि–३० सितम्बर, ९१। निबन्ध श्री माणकजी बोहरा, **पचपहाड़** (झालावाड़) के पते पर भेजें।

ज्ञान-दान के साथ सुसंस्कार की प्रेरणा

जलगाँव—अ. भा. जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के प्रमुख कार्यकर्ता, स्वर्ण आभूषण के सुप्रसिद्ध व्यवसायी, समाजसेवी श्रीमान् रतनलाल जी बाफणा द्वारा इस वर्ष जलगांव जिले के २९८ स्कूलों में १२ हजार विद्यार्थियों को स्वयं उपस्थित रहकर पाठ्यपुस्तकें व स्लेटें निःशुल्क वितरित की जा रही हैं। पुस्तकें समारोह आयोजित करके दी जाती हैं। समारोह में विद्यार्थियों, विद्यार्थियों के पालक, सरपंच वगैरह को आमंत्रित किया जाता है। पुस्तकों के साथ-साथ जीवन निर्माण की अमूल्य भेंट के रूप में विद्यार्थियों, उनके पालकों व खास कर अध्यापकों को मांसाहार व शराब जैसी घृणित वृत्तियों से दूर रहने की प्रेरणा दी जाती है। प्रत्येक स्कूल में श्री बाफणा जी इस सम्बन्ध में प्रेरणात्मक भाषण देते हैं जिसके परिणामस्वरूप अनेक व्यक्ति इन दुर्व्यसनों से मुक्ति पा चुके हैं। ये सारे प्रोग्राम शहरों में न होकर ग्रामीण भागों में किये जा रहे हैं।

शिक्षा बिभाग के पदाधिकारियों का इस कार्य की व्यवस्था में बड़ा योगदान प्राप्त हुआ है। शिक्षणाधिकारी श्री पवार साहब व विकास अधिकारी गायकवाड़ साहब ने इस कार्य में बहुत रुचि से गाँव-गाँव में साथ चल कर बहुत उत्साह दिखाया है। प्रत्येक स्कूल में "मांसाहार पाप है" "शराब पीना जीवन के लिए हानिकारक है" आदि वाक्य पेन्ट करवा दिये गये हैं जिनसे विद्यार्थी निरन्तर प्रभावित रहते हैं। अध्यापकों को बहुत समझा कर यह कहा गया है कि विद्यार्थियों को ज्ञान-दान के साथ शराब व मांसाहार जैसी घृणित प्रवृत्ति से दूर रहने की शिक्षा देते रहें। समाज के सभी धनिक वर्ग तथा अहिंसा प्रेमियों के लिए यह योजना प्रेरणादायी व अनुकरणीय कही जा सकती है। बाफणाजी द्वारा किया गया यह कार्य ज्ञान के साथ संस्कार देने का अनूठा कार्य है।

लुंकड़ परिवार द्वारा सागर कल्याण योजना प्रारम्भ

बम्बई—मानव मात्र की सेवा के लिए बम्बई के उद्योगपति, समाजसेवी, उदारमना श्री पुखराजमल जी एस० लुंकड़ ने 'सागर कल्याण' योजना प्रारम्भ की है। पी. एस. लुंकड़ एण्ड सन्स चेरिटेबल ट्रस्ट तथा श्रीमती सुलोचनादेवी पी. लुंकड़ चेरिटेबल ट्रस्ट में २५ लाख रुपयों की सुरक्षित राशि रखकर यह योजना प्रारम्भ की गई है। भविष्य में क्रमशः इस योजना में अधिक राशि भी होती रहेगी। अ. भा. श्वे. स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, दिल्ली के अध्यक्ष श्री पुखराजमल जी एस० लुंकड़ ने अपनी सेवाभावना एवं उदारता की दृष्टि से जहाँ स्वयं की यह योजना प्रारम्भ की है वहीं दो वर्षों से कॉन्फ्रेंस के अन्तर्गत 'जीवन प्रकाश' योजना भी चला रहे हैं जिसका लाभ स्थानकवासी जैन समाज को मिल रहा है।

सृजनधर्मी लेखकों को चुनौतीपूर्ण आमंत्रण

इन्दौर—भावी पीढ़ी को संस्कारित करने, उनमें नैतिक जीवन मूल्यों के प्रति आस्था उत्पन्न करने एवं धर्म के मूलभूत सिद्धान्तों/शिक्षाओं का ज्ञान प्रदान करने हेतु रात्रिकालीन पाठशालाओं के महत्त्व को सर्वत्र गंभीरता से अनुभव किया जा रहा है, किन्तु ऐसी पाठशालाओं के प्रति बालकों/किशोरों की उदासीनता एवं वर्तमान में चल रही पाठशालाओं में न्यून उपस्थिति से प्रबुद्ध सामाजिक कार्यकर्ता एवं पाठशालाओं के संचालकगण चिन्तित हैं। कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर ने पाठशालाओं के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु दृश्य/श्रव्य माध्यमों के उपयोग की एक महत्त्वाकांक्षी योजना बनाई है। इसके प्रथम चरण में १०-१५ मिनट अवधि की वीडिओ फिल्मों का निर्माण इस क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा आधुनिकतम तकनीक से कराया जायेगा। लक्ष्य की प्राप्ति हेतु हमें प्रबुद्ध लेखकों के सहयोग

की आवश्यकता है। वर्तमान परिवेश को दृष्टिगत रखते हुए प्राचीन जैन साहित्य से सुरुचिपूर्ण प्रसंगों का चयन कर आधुनिक शैली में लघु वीडियो फिल्मों के लिये स्क्रिप्ट आमन्त्रित हैं। प्राप्त स्क्रिप्टों का वीडियो क्षेत्र में कार्यरत विशेषज्ञों द्वारा परीक्षण किया जायेगा। तकनीकी आधार पर उपयुक्त पाई गई स्क्रिप्टों में से कुछ पर लघु वीडिओ फिल्मों का निर्माण किया जायेगा। चयनित लेखकों को पुरस्कृत करने की भी योजना है। योजना के विस्तृत विवरण हेतु सम्पर्क करें—

देवकुमार सिंह कासलीवाल, अध्यक्ष—कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, ५८४, महात्मा गाँधी मार्ग, इन्दौर-४५२ ००१।

अ० भा० ओसवाल महासंघ

कलकत्ता—दिनांक २ फरवरी, १९९१ को अखिल भारतीय ओसवाल महासम्मेलन के आयोजनार्थ विचार हेतु समाज के स्थानीय विशिष्ट जनों की एक बैठक श्री जैन विद्यालय, १८ डी, सुकियास लेन, कलकत्ता के ऑडीटोरियम में साहित्य-मनीषी श्री कन्हैयालाल सेठिया के सान्निध्य में आयोजित की गई। सर्वश्री डॉ० कल्याणमल लोढ़ा, गुलाबमल सिंघवी, सरदारमल कांकरिया, सम्पतकुमार भादानी, इन्द्रचन्द्र संचेती, गणेश ललवानी, गणेशमल वैद, अभय-सिंह सुराणा, सम्पतमल दस्सानी, प्रभृति समाज के सचेत शुभाकांक्षियों ने गोष्ठी को संबोधित किया। गोष्ठी की फलश्रुति स्वरूप 'श्री ओसवाल महासंघ' के निर्माण को मूर्त रूप प्रदान किया गया एवं इस हेतु श्री गुलाबमल सिंघवी को महासंघ का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। गोष्ठी में पारित एक प्रस्ताव द्वारा अध्यक्ष श्री सिंघवी को सम्मेलनार्थ एक अखिल भारतवर्षीय 'तदर्थ समिति' (Adhoc Committee) निर्माण करने, महासंघ का संविधान बनाकर उसे पंजीकृत कराने, संविधानानुसार महासंघ की प्रथम कार्यकारिणी समिति मनोनीत करने एवं योजनाओं के प्रारूप बनाकर उनके संचालन करने हेतु कार्यकारी प्रतिवेदन बनाने का अधिकार दिया गया। गोष्ठी का संयोजन श्री माँगीलाल भूतोड़िया ने किया।

विशाल मांसाहार होटल शाकाहार में परिवर्तित

रुड़की—श्रमण संघीय क्रान्तिकारी युवा जैन संत श्री कमल मुनि 'कमलेश' के अथक प्रयास से शहर में प्रसिद्ध विशालतम प्रेम होटल जिसमें कि ३५ व्यक्ति काम करते हैं, साथ ही बीयर, बार एवं मांसाहार की प्रमुखता है। इस होटल के मालिक श्री छोटेलाल गुप्ता के घर पर ही मुनि श्री का २ दिन

ठहरना हुआ। मुनिश्री ने धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, राष्ट्रीय दृष्टि से मांसाहार और शराब को अत्यन्त घातक बताते हुए इसके दुष्परिणामों से अवगत कराया, जिससे प्रभावित होकर छोटेलाल गुप्ता (वैष्णव) ने ६ भाई मय परिवार के मांसाहार न करने का संकल्प लिया, साथ ही नई होटल शाकाहार में परिवर्तन करने का तथा पुरानी प्रेम होटल को शीघ्र ही शाकाहार में परिवर्तित करने का निर्णय लेकर अनुपम गुरु-भक्ति का परिचय दिया।

पोरवाल क्षेत्र में प्रचार-प्रसार कार्यक्रम सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर एवं स्वाध्याय संघ, शाखा बजरिया के संयुक्त तत्त्वावधान में स्वाध्यायियों में जागृति लाने एवं सामायिक स्वाध्याय के प्रति रुचि बढ़ाने के उद्देश्य से पोरवाल क्षेत्र में दिनाक २०-३-९१ से २७-३-९१ तक प्रचार-प्रसार का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत सवाई माधोपुर, आलनपुर, आदर्शनगर, लहसोड़ा, डागरवाड़ा, फलोदी क्वारी, श्यामपुरा, चकेरी, कुण्डेरा, बजरिया, चौथ का बरवाड़ा, चोरू, अलीगढ़ रामपुरा, पचाला, कुस्तला, बाबई, सुमेरगंज मण्डी, इन्दरगढ़, जरखोदा, देई, नैनवा, समीधी, टोंक, दूनी, देवली आदि स्थानों पर प्रचारक पधारे। प्रचार-प्रसार कार्यक्रम में सर्वश्री फूलचन्द जी सा० मेहता, उदयपुर, श्री प्रकाश जी सालेचा, जोधपुर, श्री गोपीलाल जी सा० जैन, बजरिया, श्री गिरधारीलाल जी जैन, श्री मथुरालाल जी जैन ने अपनी अमूल्य सेवायें प्रदान कीं। प्रत्येक स्थान पर सामूहिक रूप से सामायिक, स्वाध्याय की आराधना करने, कुरीतियों को मिटाने, व्यसन मुक्त जीवन बनाने की एवं बच्चों को सुसंस्कारित बनाने की प्रेरणा की गयी। साथ ही पाठशालाएँ प्रारम्भ करने की भी प्रेरणा की गयी। इस प्रचार कार्यक्रम में आठ नये स्वाध्यायी बनाये गये। विशेष उपलब्धि यह रही कि पोरवाल क्षेत्र में पहली बार महिलाओं ने बाहर जाकर पर्युषण में सेवा देने की स्वीकृति के साथ स्वाध्याय संघ की सदस्यता ग्रहण की।

ऋण छात्रवृत्तियाँ

अजमेर—इस वर्ष १९९१-९२ के लिए श्री श्वेताम्बर जैन छात्र-छात्राओं के उच्च शिक्षा (मुख्यतः मेडिकल, इंजीनियरिंग. सी. ए. व टेकनिकल एज्यूकेशन) हेतु ऋण-छात्रवृत्ति/छात्रवृत्ति प्रदान की जावेगी। वे छात्र-छात्राएँ जिन्हें पूर्व में इस संस्था से ऋण-छात्रवृत्ति मिल रही है उन्हें भी नवीनीकरण हेतु पुनः आवेदन करना होगा। पाँच रुपये धनादेश (मनीआर्डर) से भेजकर आवेदन पत्र मंगवा सकते हैं। आवेदन पत्र मय समस्त सत्यापित फोटो स्टेट

प्रमाण पत्रों एवं छाया चित्र के साथ भेजने की अंतिम तिथि ३१-८-९१ है। पोस्टल आर्डर स्वीकार्य नहीं। मनीआर्डर कूपन पर अपना पूर्ण पता सुपाठ्य अक्षरों में लिखें। दिनांक ३१-८-९१ के पश्चात् प्राप्त आवेदन पत्र तथा अपूर्ण आवेदन पत्रों को निरस्त कर दिया जायेगा।

—महेन्द्रकुमार पारख
महामंत्री
श्री जिनदत्तसूरि मण्डल, दादाबाड़ी, अजमेर

धार्मिक ज्ञान संस्कार के लिए सहयोग

बंगलौर—बच्चों में धार्मिक ज्ञान संस्कार बढ़ाने हेतु अपने (स्व.) पुत्र की स्मृति में **"गादिया मदनलाल ज्ञानोन्मुख योजना"** प्रारम्भ की गयी है।

जो भी संस्था या संघ अपने यहाँ, धार्मिक विषय पर (१) निबन्ध (२) भाषण (३) प्रश्न मंच के रूप में बच्चों तथा युवा-वर्ग में प्रतियोगिता का आयोजन करवाना चाहें तो उनमें I, II, III एवं सांत्वना पुरस्कार देने की व्यवस्था उपर्युक्त योजना द्वारा की गयी है। इस योजना के इच्छुक संस्था/संघ निम्न पते पर आवेदन करें—

सम्पर्क सूत्र—
B. RAMESH JAIN
10/8, Banswadi Road,
M. S. Nagar, BANGLORE-560033

जी. भीकमचन्द जुगराज गादिया
अशोक नगर, बंगलौर-25
फोन : 563675

वृद्ध भाइयों के लिये समाचार

रतलाम में जैन दिवाकर भवन पर श्री जैन दिवाकर वृद्धाश्रम २० वर्ष से चल रहा है। उसमें रहने की और भोजन की सुन्दर व्यवस्था है। जो भी जैन वृद्ध भाई आना चाहें, आ सकते हैं। खर्चा कुछ भी नहीं लगेगा।

सम्पर्क सूत्र :
माणकलाल भण्डारी
फर्म : **हुक्मीचन्द केसरीमल भण्डारी**
बजाजखाना, **रतलाम** (म. प्र.)

हार्दिक क्षमा-याचना

मेरी उम्र ८८ वर्ष है। शरीर अस्वस्थ रहता है। आयुष्य का कोई भरोसा नहीं है। अतः मेरे द्वारा पूज्य संत, सतियों, श्रावक, श्राविकाओं एवं समस्त संघ के प्रति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कोई अविनय आशातना हुई हो, किसी के दिल को ठेस पहुँचाई हो तो मैं चतुर्विध संघ और चौरासी लाख जीवयोनि से हार्दिक क्षमा याचना करता हूं।

—पी. सी. सुखराज दुगड़, विल्लुपुरम (तमिलनाडु)
बगडी नगर (राजस्थान)

पार्श्वनाथ विद्याश्रम प्रांगण में दर्शन परिषद् सम्पन्न

वाराणसी—पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी के प्रांगण में अखिल भारतीय दर्शन परिषद् का ३५वाँ अधिवेशन दिनांक ५, ६, ७ मई को सानन्द सम्पन्न हुआ। अधिवेशन का उद्घाटन माननीय डॉ. नथमल टाटिया (निदेशक, जैन विश्व भारती, लाडनूं) ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो. त्रिभुवननाथसिंह तथा गोरखपुर विश्व विद्यालय के भूतपूर्व कुलपति प्रो. बी. एम. शुक्ल उपस्थित थे। इस अवसर पर संस्थान की प्रबन्ध समिति की ओर से श्री नृपराज जैन (उपाध्यक्ष) एवं भूपेन्द्रनाथ जैन (मंत्री) उपस्थित थे। इस अधिवेशन में देश भर से लगभग १०० से अधिक दार्शनिकों तथा दर्शन के अध्यापकों ने भाग लिया। पूना, राजस्थान, मेरठ, जबलपुर, रांची, बिहार, मगध, दरभंग, लखनऊ, कानपुर आदि अनेक विश्व विद्यालयों से प्रतिनिधि आये थे।

आ. कुन्दकुन्द हस्तलिखित श्रुत भण्डार की स्थापना

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र खजुराहो की प्रबन्ध समिति द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द द्विसहस्राब्दि वर्ष में किए गये निर्णयानुसार "बुन्देलखण्ड के कतिपय जैन मन्दिरों एवं विद्वानों के निजी भण्डारों में जो हस्तलिखित शास्त्र विद्यमान हैं जिनकी यथोचित देख-भाल नहीं हो पा रही है, उनको सुरक्षित तथा सुव्यवस्थित करने एवं उनका सदुपयोग करने कराने की दृष्टि से" क्षेत्र के अन्तर्गत आचार्य कुन्दकुन्द हस्तलिखित श्रुत भण्डार की स्थापना की गई है।

इस पुनीत कार्य हेतु समाज के सभी प्रबुद्ध वर्ग के लोगों से हमारी अपेक्षा है कि—

१. खजुराहो को अधिक से अधिक हस्तलिखित शास्त्र उपलब्ध करावें।

२. उनकी सुरक्षा एवं व्यवस्था हेतु लोहे की आलमारियों तथा अन्य साधन सामग्री उपलब्ध करायें।

३. उक्त ग्रन्थों की सूचियाँ एवं उनके संक्षिप्त विवरण तैयार करने में सुयोग्य विद्वान् अपनी सेवायें प्रदान करें।

—**कमलकुमार जैन,** मंत्री
श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
खजुराहो, जैन धर्मशाला के पास
छतरपुर–४७१००१ (म. प्र.)

डाक-टिकट भेजकर निःशुल्क प्राप्त करें

जयपुर—आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी जन्म-शताब्दी के उपलक्ष्य में श्री रवीन्द्र पाटनी फैमिली चैरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई की ओर से आचार्य कुन्दकुन्द कृत महान् ग्रन्थराज 'समयसार' पर हुए पूज्य श्री कानजी स्वामी के प्रवचनों का संकलन 'प्रवचन रत्नाकर' भाग–४, पृष्ठ ४००, मूल्य १० रु. जिनमन्दिरों, मुनिराजों, त्यागियों, वाचनालयों एवं विद्वानों को स्वाध्यायार्थ भेंट की जा रही है। इच्छुक महानुभाव ३/५० (तीन रुपये पचास पैसे) से डाक-टिकट निम्न पते पर भेजकर उक्त ग्रन्थ मंगा सकते हैं। ध्यान रहे डाक-टिकट भेजने की अन्तिम तिथि ३० सितम्बर, १९९१ है।

पता—निःशुल्क साहित्य वितरण विभाग
श्री टोडरमल स्मारक भवन
ए-४, बापू नगर, जयपुर-३०२०१५ (राज.)

जोधपुर—श्री जैन किंग सिटी क्लब, जोधपुर द्वारा २५ बोल प्रश्नोत्तर एवं विवेचन युक्त व ६७ बोल मूल की पुस्तकें छपकर तैयार हो गयी हैं। जिन संघों, धार्मिक स्कूलों एवं महानुभावों को आवश्यकता है वे निम्न पते पर सम्पर्क करें।

—**मनोजकुमार जैन,**
सिटी पुलिस, जोधपुर

आचारांग सूत्र एवं उत्तराध्ययन सूत्र अमूल्य प्राप्त करें

जिस किसी भाई को उत्तराध्ययन एवं आचारांग सूत्र के सारांश की सम्मिलित एक पुस्तक की आवश्यकता हो वे डाक खर्च आदि के लिए दो रुपये का टिकट भेजकर प्राप्त करें।

सम्पर्क सूत्र—**समरथमल सूरिया**
स्टेशन रोड, खेडब्रह्मा–३८३२५५ (गुजरात)

संक्षिप्त-समाचार

मद्रास—श्री एस. एस. जैन संघ, मद्रास के चुनाव में श्री कनकमलजी चौरड़िया अध्यक्ष, श्री बादलचन्दजी चौरड़िया एवं श्री दीपचन्दजी बोकड़िया उपाध्यक्ष, श्री पी. एम. चौरड़िया मंत्री, श्री प्रसन्नचन्दजी चौरड़िया सहमंत्री, श्री भूमरमलजी बाघमार कोषाध्यक्ष चुने गये।

श्री एस. एस. जैन युवक संघ के चुनाव में श्री पी. एम. चौरड़िया अध्यक्ष, श्री सोहनलालजी चौरड़िया एवं श्री रतनराजजी चौधरी उपाध्यक्ष, श्री पन्नालालजी सुराणा मंत्री, श्री सिद्धेचन्दजी लोढ़ा सहमंत्री एवं श्री प्रेमसिंहजी लोढ़ा कोषाध्यक्ष चुने गये।

नगरी—श्री जैन महावीर मण्डल के चुनाव में श्री राजेशकुमार संचेती अध्यक्ष, श्री विनयकुमार नाहटा उपाध्यक्ष, श्री देवीचन्दजी डेलड़िया मंत्री, श्री जिनेश नाहटा कार्यालय मंत्री एवं श्री महेश नाहटा पुस्तकालय मंत्री चुने गये।

कोण्डा गाँव (बस्तर)—श्री जैन धार्मिक शिक्षण एवं संगीत समिति के चुनाव में श्री बसन्तकुमार पारख अध्यक्ष, श्री दिलीपकुमार ओस्तवाल एवं श्री ललितकुमार कोटड़िया उपाध्यक्ष, श्री राजेन्द्रकुमार गोलेछा सचिव एवं श्री शेषमल सुराणा कोषाध्यक्ष चुने गये।

बीगोद—श्री व. स्था. जैन श्रावक संघ के चुनाव में श्री यशवन्तसिंह पगारिया अध्यक्ष, श्री समुद्रसिंह पगारिया मंत्री, श्री दिनेश संचेती 'दिनकर' कोषाध्यक्ष चुने गये।

लोहाई हथिया, कानपुर—जैन स्था. संघ के चुनाव में श्री पवनकुमार जैन अध्यक्ष, श्री छबीलदास बोहरा एवं श्री सम्पतलाल बेताला उपाध्यक्ष,

श्री लालचन्द वोरा महामंत्री, श्री लूणकरण लोढ़ा एवं श्री विजयकुमार जैन मंत्री तथा श्री भँवरलाल जैन कोषाध्यक्ष चुने गये।

भवानीमण्डी—'जिनवाणी' के 'बालकथामृत स्तम्भ' के नियमित उत्तरदाता १४ वर्षीय अजैन बालक सुनील भाटी ने अपनी बचत से आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. की स्मृति में ११/– रुपये 'जिनवाणी' कार्यालय को भेजकर अपनी अगाध श्रद्धा-भक्ति व्यक्त की है, जो अनुकरणीय है।

दिल्ली—दिल्ली कोल्हापुर मार्ग स्थित जैन स्थानक में प्रवर्तक श्री रमेश मुनिजी एवं उप प्रवर्तिनी श्री केशरदेवी म. सा. के सान्निध्य में १६ जून को मालवरत्न उपाध्याय श्री कस्तूरचन्दजी म. सा. का जन्म-शताब्दी समारोह तप-त्यागपूर्वक मनाया गया।

जयपुर—अ. भा. श्वे. स्था. जैन कॉफ्रेंस की 'जीवन-प्रकाश' योजना के अन्तर्गत सवाईमाधोपुर के एक भाई को राजस्थान संभाग के अध्यक्ष श्री उमरावमल चौरड़िया ने १५०००/– की सहयोग राशि गुर्दा प्रत्यारोपण के लिए भेंट की। मोनीलेक अस्पताल जवाहर नगर में सफलतापूर्वक प्रत्यारोपण कार्य सम्पन्न हुआ।

जयपुर—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक एवं श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान के मंत्री श्री हीराचन्दजी बैद व उनके परिवार द्वारा मालवीय नगर में निर्मित शंखेश्वर पार्श्वनाथ मन्दिर के प्रतिष्ठा महोत्सव का कार्यक्रम आचार्य श्री विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी के सान्निध्य में १४ जून से २१ जून तक विविध धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुआ। समापन समारोह में मुख्य अतिथि अहमदाबाद के श्री श्रेणिक भाई कस्तूर भाई थे। विशेष अतिथि थे श्री अरविन्द भाई, श्री कुमारपाल वी. शाह एवं श्री डी. आर. मेहता। इस अवसर पर आचार्य श्री की प्रेरणा से जीव दया के लिए अच्छा फण्ड एकत्र किया गया।

जयपुर—राजस्थान वि. वि. के गाँधी भवन में २४ जुलाई को आयोजित 'गाँधी और समाज विज्ञान' विषयक संगोष्ठी में प्रो. आनन्द कश्यप ने गाँधी-विचार को आज के संदर्भ में विशेष उपयोगी बताया। डॉ. नरेन्द्र भानावत ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि गाँधीजी ने जीवन में वित्त-लिप्सा के स्थान पर व्रत-निष्ठा को महत्त्व दिया और जैन धर्म के व्रत-नियम तथा तप के आधार पर एकादश व्रतों की विशेष प्रतिष्ठा की। संयोजन किया भवन के सह-निदेशक डॉ. नरेश दाधीच ने।

१९ जुलाई को आदर्श नगर के महावीर भवन में पं. र. श्री विजय मुनिजो के सान्निध्य में श्रीमद् जवाहराचार्य की पुण्यतिथि तप-त्यागपूर्वक मनाई गई। मुनि श्री ने जवाहराचार्य के संयमी-जीवन पर तथा डॉ. नरेन्द्र भानावत ने आत्मधर्मी जवाहराचार्य की राष्ट्र-धर्मिता पर विशेष प्रकाश डाला।

११ अगस्त को लाल भवन में पं. र. श्री विजय मुनिजी के सान्निध्य में आचार्य सम्राट् श्री आनन्द ऋषिजी म. सा. की ९२वीं जयन्ती तप-त्यागपूर्वक मनाई गई। डॉ. नरेन्द्र भानावत ने आचार्य श्री की धार्मिक, साहित्यिक-सांस्कृतिक, देन पर विशेष प्रकाश डाला। संघ अध्यक्ष श्री उमरावमल चौरड़िया ने अ. भा. श्वे. स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस, राजस्थान संभाग की ओर से ९२ विकलांगों को कृत्रिम पैर लगाने के लिए अर्थ-सहयोग देने की घोषणा की। इस अवसर पर डॉ. कमलचन्द सोगानी, श्री मोहनलाल मूथा के अलावा विरक्ता बहिन सीमा सेठिया व कुमुद दस्साणी ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए आचार्य श्री के दीर्घायु होने की कामना की।

जयपुर—अन्तर्अनुशासनीय संस्था 'संदर्भ' में १० अगस्त को डॉ. नरेन्द्र भानावत ने 'अनेकान्त दर्शन' पर अपना निबन्ध प्रस्तुत किया। परिचर्चा में डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा, डॉ. के. एल. शर्मा, डॉ. धनराज चौधरी, डॉ. वीरेन्द्रसिंह, प्रो. आनन्द कश्यप, प्रो. महेन्द्र रायजादा आदि ने भाग लिया। सभी ने यह महसूस किया कि अनेकान्त दर्शन विचार तक ही सीमित न रहे, वह आचार में भी उतरे।

जयपुर—अमर जैन मेडिकल रिलीफ सोसायटी एवं अ. भा. जैन विद्वत् परिषद् के संयुक्त तत्त्वावधान में २३ जून से १ जुलाई तक जय भगवान एक्युप्रेशर सेन्टर (इण्टरनेशनल) बम्बई के आचार्य श्री बिपिन भाई शाह के निर्देशन में एक्युप्रेशर चिकित्सा प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया जिसमें लगभग २७५ शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर का उद्घाटन किया एस. एम. एस. के अधीक्षक डॉ. ओंकार सक्सेना ने और अध्यक्षता की कान-नाक-गला विशेषज्ञ डॉ. छंगानी ने। समापन समारोह की अध्यक्षता की श्री टीकमचन्द हीरावत ने और मुख्य अतिथि थे उप-महानिरीक्षक श्री अरुण दुगड़। जोधपुर, बीकानेर और सवाईमाधोपुर में भी विपिन भाई के निर्देशन में दस दिवसीय शिविर आयोजित किये गये जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया। सोसायटी के मंत्री श्री उमरावमल चौरड़िया ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

□

शोक-श्रद्धांजलि

तरुण तपस्वी श्री कैलाश मुनिजी का असामयिक देवलोकगमन

जोधपुर—श्रद्धेय पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्दजी म. सा. के आज्ञानुवर्ती रत्नवंश के तरुण तपस्वी, संतरत्न श्री कैलाश मुनिजी का ज्येष्ठ कृष्णा नवमी शुक्रवार, दिनांक ७ जून की रात्रि में करीब १ बजे असामयिक देवलोकगमन हो गया। तरुण तपस्वी मुनि श्री को पश्चिमी राजस्थान में प्रचण्ड गर्मी और लू के प्रकोप के कारण सरदारपुरा क्षेत्र में विराजते समय तीव्र ज्वर हो गया। स्थानीय श्रावकों ने श्रमणोचित औषधोपचार सरदारपुरा स्थित कोठारी भवन में सेवाभावी चिकित्सक डॉ. दिनेश कोठारी के नेतृत्व में प्रारम्भ करवाया। औषधोपचार के बाद भी मुनि श्री के ज्वर का ज्वार कम नहीं होने के कारण मुनि श्री को ७ जून को प्रातः सूर्योदय के साथ महात्मा गांधी अस्पताल में आपातकालीन गहन चिकित्सा कक्ष में भर्ती करवाया गया। डॉ. दिनेश कोठारी ने अस्पताल में सम्पूर्ण रूप से चिकित्सा सुविधा का पूरा-पूरा प्रयास किया, परिणामस्वरूप अपराह्न ४ बजे तक मुनि श्री का ज्वर कम हो गया, नाड़ी संचलन सामान्य बन गया, ब्लड प्रेशर भी नियमित हो गया किन्तु मस्तिष्क चेतना उस समय तक नहीं थी। स्वास्थ्य में कुछ सुधार से और सुधार की अपेक्षा बन गई परन्तु संध्या में करीब ७ बजे के आस-पास मुनि श्री के हेमरेज हो जाने पर चिकित्सकों को आशा की किरण धुंधली दिखाई देने लगी। श्रद्धेय पूज्य आचार्य प्रवर एवं परम श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर ने तरुण तपस्वी के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चिन्तन कर निर्णय लिया कि अब उन्हें अस्पताल में रखने के बजाय ज्ञान-ध्यान सुनाना अधिक श्रेयस्कर रहेगा।

रात्रि में करीब ९ बजे पश्चात् तरुण तपस्वी संत को आलोचना-प्रायश्चित्त के साथ महाव्रतारोपण कराया गया एवं संथारे का प्रत्याख्यान कराकर उन्हें नमस्कार मंत्र सुनाते रहे। रात्रि में करीब १२.५० पर तरुण तपस्वी मुनि ने एकाएक आँखें खोलीं और दोनों हाथ ऊपर उठाये। देखते-देखते मुनि श्री ने विनश्वर देह का परित्याग कर दिया।

दिनांक ८ जून, शनिवार को प्रातः ८ बजे घोड़ों के चौक स्थानक से महाप्रयाण यात्रा प्रारम्भ हुई. जिसमें सैकड़ों-हजारों भाई-बहिनों ने तरुण

तपस्वी को श्रद्धांजलि दी। महाप्रयाण यात्रा में मुख्य बाजारों में भाई-बहिन उदास चेहरा लिये यत्र-तत्र-सर्वत्र दिखाई दे रहे थे।

तरुण तपस्वी श्री कैलाश मुनिजी का जोधपुर के श्रद्धानिष्ठ अनन्य गुरु-भक्त सुश्रावक श्री शुभलालजी सिंघवी के यहां ९-८-१९६१ को जन्म हुआ। पारिवारिक संस्कारों के कारण एवं अपने दादीसा अचरजकंवरजी के २३ दिन के संथारे पूर्वक देहावसान और परमाराध्य महामहिम आचार्य-देव पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. के कृपापूर्ण आशीर्वाद से युवक कैलाश की भावना असार संसार से हटकर गुरुचरणों में शाश्वत सुख की ओर बढ़नी शुरू हुई। जोधपुर में युवक श्री कैलाश की भागवती दीक्षा आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के मुखारविन्द से ८-२-१९८७ **वि. सं. २०४३ माघ शुक्ला दशमी, रविवार** को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुई।

दीक्षा लेने के पश्चात् श्री कैलाश मुनिजी ने सेवा भावना और तपाराधना से थोड़े समय में सेवाभावी तरुण तपस्वी के रूप में ख्याति प्राप्त कर ली। युवकों को प्रेरणा करने में वे सदा आगे रहते थे। लू के प्रकोप से अकस्मात् मुनि श्री का असमय देवलोक हो जाएगा, ऐसा स्वप्न में भी नहीं सोचा जा सकता था, परन्तु होनी होकर रहती है।

मुनि श्री के देवलोक गमन के २ दिन पूर्व उनके पिता श्रीमान् शुभलालजी सा. सिंघवी का देहावसान हुआ था। वीर पिता के देहावसान के दो दिन बाद तरुण तपस्वी का देवलोक गमन होने से रत्नवंश में अपूरणीय क्षति हुई है।

दिनांक १० जून को घोड़ों के चौक स्थानक में तरुण तपस्वी की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन रखा गया। स्मृति सभा में मुनि श्री के गुणानुवाद करते परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री हीराचन्दजी म. सा., परम श्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म. सा., विदुषी महासती श्री सुशीला कंवरजी म. सा., महासती श्री सुशीला कंवरजी म. सा., महासती श्री सौभाग्यवतीजी म. सा. ने कहा कि मुनि श्री की सेवा भावना, संयम साधना और तपाराधना के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने का अच्छा उदाहरण तभी प्रस्तुत किया जा सकता है जबकि हम उनके सद्गुणों को अपने जीवन में उतारें।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष एवं संघ के पूर्व अध्यक्ष डॉ. सम्पतसिंहजी भाण्डावत ने तरुण तपस्वी के गुणों के प्रति श्रद्धा व्यक्त

करते दिवंगत आत्मा की चिर-शांति की प्रार्थना की। स्वाध्याय संघ के पूर्व संयोजक एवं सेवाभावी सुश्रावक श्री सरदारचन्दजी भण्डारी ने मुनिश्री का जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए उनके कृतित्व पर प्रकाश डाला।

उपस्थित जन समुदाय ने चार लोगस्स का ध्यान कर अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि व्यक्त की।

बीकानेर—उत्कृष्ट संयम साधक, शासन प्रभावक, दीर्घ तपस्वीराज श्री ईश्वर मुनिजी का १० जून को ७६ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। चैत्र शुक्ला तृतीया सं. १९७२ में देशनोक में आपका जन्म हुआ। अपने पिता श्री जोरावरमलजी सुराणा एवं माता श्रीमती हरकबाई से आपको धार्मिक संस्कार विरासत में मिले। सं. १९९९ में मिगसर कृष्णा चौथ को आपने आचार्य श्री गणेशीलालजी म. सा. के सान्निध्य में भीनासर में जैन भागवती दीक्षा धारण की। आप सरल, सोम्य, क्रियानिष्ठ, अप्रमत्त तपस्वी सन्त थे। आपने मासखमण से ऊपर तक की कई कीर्तिमानीय तपस्याएँ कीं। आप आचार्य श्री नानेश के आज्ञानुवर्ती सन्त थे। तपस्या के साथ-साथ आप मौन, ध्यान, स्वाध्याय एवं वैयावृत्य में लीन रहते थे। शास्त्राध्ययन के साथ-साथ आपको कई थोकड़े, स्तवन, सज्भाय, बोल आदि कण्ठस्थ थे।

बालोतरा—ज्ञान गच्छाधिपति पूज्य तपस्वीराज श्री चम्पालालजी म. सा. के आज्ञानुवर्ती बाबाजी श्री खुशालचन्दजी म. सा. का ११ जून को ८४ वर्ष की आयु में संथारा सहित स्वर्गवास हो गया। लगभग २½ वर्ष तक निवृत्तिमय जीवन बिताने के बाद आपने सं. २०१८ में आषाढ़ सुदी एकम को खीचन में अपनी धर्मपत्नी श्रीमती गंगाबाई (स्व. महासती श्री बोधकुंवरजी म. सा.) एवं कनिष्ठ पुत्र प्रकाशचन्द्र (वर्तमान में पं. र. श्री प्रकाशचन्दजी म. सा.) के साथ पूज्य बहुश्रुत श्री समर्थमलजी म. सा. के पास दीक्षा अंगीकृत की। आप सरल स्वभावी, भद्रिक परिणामी आत्मार्थी सन्त थे।

बीकानेर—सेवा एवं साधना की अप्रतिम प्रतिमूर्ति विदुषी महासती श्री रोशनकंवरजी म. सा. का १० जून को संथारा सहित स्वर्गवास हो गया। आपका जन्म उदयपुर में सं. १९८८ में माघ सुदी ग्यारस को श्री मनोहरसिंहजी हिरण एवं श्रीमती मोहनबाई की पुत्री रूप में हुआ। सं. २०१६ में आसोज सुदी पूनम को आचार्य श्री गणेशीलालजी म. सा. की निश्रा में आपने कानोड़ में भागवती दीक्षा अंगीकृत की। आप हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत की अच्छी ज्ञाता थीं और जैन दर्शन, साहित्य का आपने

तलस्पर्शी अध्ययन किया। आप शान्त, प्रशान्त स्वभावी, समता साधिका थीं। आचार्य श्री नानेश की आज्ञानुवर्ती सतियों में आप अग्रगण्य थीं।

इन्दौर—समता विभूति आचार्य श्री नानेश की सुशिष्या महासती श्री हुलासकंवरजी का ५५ वर्ष की आयु में १८ मई को संथारापूर्वक स्वर्गवास हो गया। आपने महान् ध्यानयोगी श्री ऐवन्त मुनिजी से १२ मई को तिविहार संथारा ग्रहण किया था। २६ वर्ष की आयु में आपने संयम जीवन स्वीकार किया था। आपका जीवन समता, सहिष्णुता और संयम का त्रिवेणी संगम था।

बालोतरा—तपस्वीराज श्री चम्पालालजी म. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री सूरजकुंवरजी के सिंघाड़े की महासती श्री प्रकाशकुंवरजी का लगभग ८० वर्ष की आयु में ७ जून को स्वर्गवास हो गया।

गंगाशहर—तपस्वीराज श्री चम्पालालजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री किस्तूरकंवरजी का १२ जून को संथारे सहित स्वर्गवास हो गया। आप शांत स्वभावी, सेवाभावी साधिका थीं।

सिवाना—तपस्वीराज श्री चम्पालालजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी विदुषी साध्वी श्री सायरकुंवरजी की सुशिष्या महासती श्री चम्पाकुंवरजी का ७ जून को ९० वर्ष की आयु में संथारापूर्वक स्वर्गवास हो गया। आपकी दीक्षापर्याय लगभग ६० वर्ष की थी।

देशनोक—तपस्वीराज श्री चम्पालालजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी वयोवृद्धा महासती श्री इन्द्रकुंवरजी म. सा. का ६ जून को समाधिभावों में स्वर्गवास हो गया। यहीं सेवा में विराजित विदुषी महासती श्री भँवरकुँवरजी की सुशिष्या महासती श्री दिव्याजी का उसी दिन रात्रि २.३० बजे आकस्मिक स्वर्गवास हो गया।

उपर्युक्त सभी चरितात्माओं को हार्दिक श्रद्धांजलि।

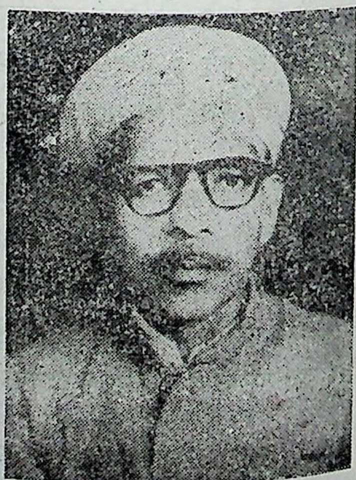
पेरुम्बदूर—यहाँ एक चुनाव-सभा में २१ मई को भारत के प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की बर्बरतापूर्ण जघन्य हत्या कर दी गई। भारत जैसे अहिंसाप्रेमी देश के लिए यह एक कलंक है। श्री गांधी ने अपने प्रधानमंत्रित्व काल में विश्व-शांति के लिए निर्गुट आन्दोलन को विशेष प्रभावी एवं संगठित बनाया। वे शक्ति, साहस और विश्वास के धनी थे। श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद वे देश के प्रधानमंत्री बने और उन्होंने एक

सीमा तक देश को स्थिरता प्रदान की। वे युवकों के प्रेरणास्रोत थे। उनका निधन राष्ट्र के लिए अपूरणीय क्षति है।

पाली—श्री स्था. जैन नवयुवक मण्डल के सक्रिय कार्यकर्ता नितिन गोलेछा सुपुत्र श्री करणराजजी गोलेछा, सुपौत्र श्री भँवरलालजी गोलेछा (राजेन्द्र सिनेमा) का २० वर्ष की अल्पायु में २६ मार्च को असामयिक निधन हो गया। आप बहुत ही मृदुभाषी, मिलनसार व धर्मनिष्ठ कार्यकर्ता थे। अल्पायु में ही आपने कई व्रत-प्रत्याख्यान ले रखे थे।

आगर—धर्मनिष्ठ श्रावक श्री केवलचन्दजी तातेड़ का ५० वर्ष की आयु में २७ मार्च को असामयिक निधन हो गया। आप महासती श्री कलावतीजी, राजमतीजी व मंगलाजी के सांसारिक बहनोई थे।

भादसोड़ा—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री नानालालजी भादविया का २८ मार्च को संथारापूर्वक असामयिक निधन हो गया। आप स्वाध्याय संघ जोधपुर के सरलमना, भद्रिक, त्यागी एवं वरिष्ठ स्वाध्यायी थे। धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में आप सदैव अग्रणी रहते थे और लम्बे समय से स्वाध्याय संघ को अपनी सेवाएँ दे रहे थे।



निम्बाहेड़ा—बड़ीसादड़ी निवासी श्री गेहरीलालजी मेहता का ८३ वर्ष की आयु में १९ अप्रेल को तप-त्याग-प्रत्याख्यान सहित असामयिक निधन हो गया। आप धमनिष्ठ, सहिष्णु, सरलस्वभावी, उदारमना श्रावक थे। 'जिनवाणी' के पूर्व सम्पादक पं. श्री रत्नकुमारजी जैन 'रत्नेश' के आप ज्येष्ठ भ्राता थे। आप प्रतिदिन नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आपने बड़ीसादड़ी में समता-अतिथिगृह के निर्माण हेतु २५ हजार की राशि प्रदान की थी। आपकी पुण्य स्मृति में आपके सुपुत्र श्री शांतिचन्दजी मेहता ने परिवार की ओर से एक लाख रुपये शुभ खाते में व्यय करने की भावना व्यक्त की है। आपका पूरा परिवार धार्मिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक प्रवृत्तियों में सेवा-रत है। आपके सुपुत्र श्री अमृतलालजी मेहता देवानन्द जैन गुरुकुल, राजनांदगांव के गृहपति के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं और छत्तीसगढ़

क्षेत्र में धार्मिक शिक्षण और नैतिक जागरण का उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। 'जिनवाणी' एवं सम्यक्ज्ञान प्रचारक मण्डल से सम्बद्ध सक्रिय कार्यकर्ता श्री पार्श्वकुमारजी मेहता के आप बड़े चाचा थे।

मेड़तासिटी—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री प्रेमराजजी बैद मूथा का २१ अप्रैल को निधन हो गया। आप एक प्रतिष्ठित सुश्रावक, कर्मठ कार्यकर्ता एवं अग्रणी समाजसेवी थे। कई वर्षों तक आप नगरपालिका के सदस्य रहे। जयमल्ल जैन छात्रावास के आप ट्रस्टी थे। आयुर्वेदिक औषधालय के निर्माण में आपकी विशेष प्रेरणा रही। प्रमुख कार्यकर्ता एवं श्री वर्धमान जैन ज्ञानपीठ के संयोजक श्री जतनराजजी मेहता के आप पिताश्री थे।

बल्लारी—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री अमरचन्दजी बोहरा का २२ अप्रैल को निधन हो गया। आप राष्ट्रीय विचारों के कर्मठ सामाजिक कार्यकर्ता थे। आपका जीवन श्रमनिष्ठ एवं सादगीप्रिय था। जीवदया, प्राकृतिक चिकित्सा, स्वाध्याय आदि में आपकी विशेष रुचि थी। आपने कई व्रत-प्रत्याख्यान ले रखे थे। आपने जीवन-पर्यन्त खादी के वस्त्रों का प्रयोग किया और दवाई आदि का सेवन नहीं किया।

मद्रास—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक दानवीर सेठ श्री हेमराजजी सिंघवी की धर्मपत्नी श्रीमती पतासीबाई का २९ अप्रैल को ६८ वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप धर्मपरायणा सुश्राविका थी। सामायिक स्वाध्याय, व्याख्यान-श्रवण, व्रत-प्रत्याख्यान आदि में आपकी विशेष रुचि थी। आपने कई नियम ग्रहण कर रखे थे और तपाराधना के क्रम को भी आपने जीवनपर्यन्त बनाये रखा।

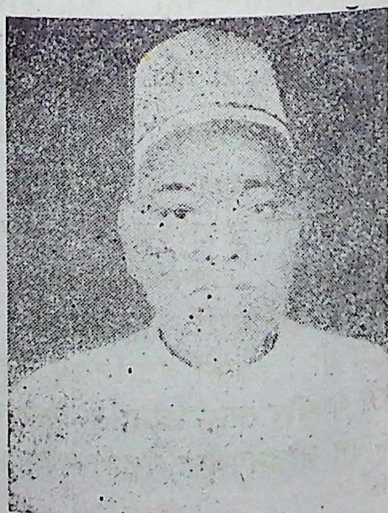


ब्यावर-खास—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री कंवरलालजी कोठारी का ८ दिन के संथारे सहित ३० अप्रैल को निधन हो गया। आप एक धर्मप्रेमी, आचारवान सुश्रावक थे। वर्षों से रात्रि भोजन, जमीकन्द, कच्चे पानी आदि के आपके त्याग थे। पर्युषण के दिनों में धर्माराधना हेतु आप स्वाध्यायी के रूप में वर्षों से अपनी सेवाएँ दे रहे थे। आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी।

जोधपुर—यहाँ के प्रतिष्ठित वयोवृद्ध श्रावक श्री सुगनचन्दजी कांकरिया का २ मई को संथारापूर्वक निधन हो गया। आप संत-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। प्रत्येक चतुर्दशी को उपवास करते थे। आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धा-भक्ति थी। आपके लघु भ्राता श्री मुकुनचन्दजी कांकरिया की सुपुत्री सोहनकंवर ने उपप्रवर्तिनी महासती लाडकंवरजी की निश्रा में दीक्षा ग्रहण की, जिनका दीक्षा नाम महासती सौभाग्यवतीजी है।

जोधपुर—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री श्रीचन्दजी मेहता का ९ मई को इण्डोनेशिया की राजधानी जकार्ता में हृदयगति रुक जाने से ६६ वर्ष की आयु में दुःखद निधन हो गया। आप ओसवाल सिंह सभा के अध्यक्ष रहे व कई सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, औद्योगिक एवं राजनैतिक प्रवृत्तियों से आपका सक्रिय जुड़ाव रहा। आप प्रगतिशील विचारधारा के प्रमुख समाजसेवी थे।

जयपुर—श्री जगदीशमलजी भंसाली के पिताश्री जौहरीमलजी भंसाली का ११ मई को बम्बई में आकस्मिक निधन हो गया। आप सरल प्रकृति के धर्मपरायण व्यक्ति थे।



मद्रास—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री एस. बादलचन्दजी चौरड़िया का ६९ वर्ष की आयु में हृदयगति रुक जाने से १३ मई को आकस्मिक निधन हो गया। आप नोखाचांदावता के मूल निवासी थे। धार्मिक, सामाजिक सेवा-प्रवृत्तियों में आपकी बड़ी रुचि थी। आप एस. एस. जैन संघ, मद्रास के उपाध्यक्ष थे। एस. एस. जैन एज्यूकेशन सोसायटी, जैन भवन, भगवान् महावीर अहिंसा प्रचार संघ मद्रास के आप प्रमुख स्तम्भ थे। श्री वर्धमान सेवा समिति, नोखा के आप वंश परम्परागत सदस्य थे। आपने नोखाचांदावता में स्व. हजारीमलजी म. स्मृति भवन का निर्माण कराया, जहाँ प्रतिवर्ष नेत्र शिविर का आयोजन होता है। मद्रास में श्री बादलचन्द सायरमल चौरड़िया प्राइमरी स्कूल के भवन में आप मुख्य दानदाता थे। कई छात्रावास, गौशाला, अस्पताल, साहित्य-प्रकाशन व

स्थानक-निर्माण आदि में आप प्रतिवर्ष विशेष सहयोग दिया करते थे। आपका जीवन सरल एवं सादगीपूर्ण था। संत-सतियों की सेवा में आप सदैव तत्पर रहते थे।

इन्दौर—यहाँ के प्रमुख समाजसेवी एवं धर्मनिष्ठ श्रावक स्व. श्री भँवरलालजी धाकड़ की धर्मपत्नी श्रीमती कंचनबाई धाकड़ का ९० वर्ष की आयु में १४ मई को निधन हो गया। आप सरल स्वभावी, मृदुभाषी एवं धर्मनिष्ठ महिला थीं। इन्दौर के प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता श्री शांतिलालजी धाकड़ की आप मातुश्री थीं।

उदयपुर—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक एवं प्रमुख समाजसेवी श्री फतहलालजी हिंगड़ का ७२ वर्ष की आयु में १७ मई को आकस्मिक निधन हो गया। आप राष्ट्रीय विचारधारा के कर्मठ कार्यकर्ता एवं कुशल प्रबन्धक थे। कई धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, राजनैतिक सेवा क्षेत्रों से आपका सक्रिय जुड़ाव था। उदयपुर में आयुर्वेद सेवाश्रम को आपकी उल्लेखनीय सेवाएँ रहीं और वहीं से उपमहाप्रबन्धक के पद से आप सेवानिवृत्त हुए। वर्धमान स्था. जैन श्रावक संघ, उदयपुर, गणेश जैन छात्रावास, उदयपुर, आगम, अहिंसा, समता एवं प्राकृत संस्थान, श्री जवाहर जैन शिक्षण संस्थान आदि के आप अध्यक्ष, मन्त्री व संयोजक रहे और इनके विकास में आपकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। आप स्पष्टवक्ता और प्रबुद्ध विचारक थे। अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ के आप उपाध्यक्ष भी रहे।

भवानीमण्डी—यहाँ की धर्मपरायणा श्राविका श्रीमती सोहनबाई धर्मपत्नी श्री मोतीलालजी कुण्डल बोहरा का २६ मई को ६१ वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। संसार पक्ष में आप विदुषी महासती श्री हंसमतीजी की मामी एवं साध्वी श्री भावना श्रीजी की काकी थीं।

इन्दौर—यहाँ के सुश्रावक श्री मोतीलालजी चेलावत का ३० मई को ६० वर्ष की आयु में निधन हो गया। सन्तोष, सरलता, सादगी, विनय आदि गुणों की आप प्रतिमूर्ति थे। आप बाल-ब्रह्मचारी थे।

बम्बई—यहाँ के प्रमुख समाजसेवी एवं कर्मठ कार्यकर्ता श्री कान्तिलाल डाह्याभाई कोरा का २१ मई को आकस्मिक निधन हो गया। आप महावीर जैन विद्यालय के आधार स्तम्भ थे और सन् १९३७ में गृहपति के रूप में विद्यालय की प्रवृत्तियों से जुड़े। महावीर विद्यालय की अहमदाबाद, बड़ौदा, पूना, वल्लभ विद्यानगर, भावनगर, अंधेरी आदि शाखाओं की स्थापना एवं संचालन में आपका मार्गदर्शन एवं सक्रिय

सहयोग रहा। आप अत्यन्त निष्ठावान, शांत प्रकृति के सादगीप्रिय, मितभाषी श्रावकरत्न थे। हजारों विद्यार्थियों के चरित्र-गठन एवं जीवन-निर्माण में आपका उल्लेखनीय योगदान रहा।

जयपुर—अशोक फाउण्डरी एण्ड मेटल वर्क्स के श्री देवराजजी मेहता की मातुश्री श्रीमती सारीबाई मेहता का एक जून को असामयिक निधन हो गया। आप धार्मिक प्रकृति की सरल स्वभावी महिला थीं।

जोधपुर—सुधर्म प्रचार मण्डल के संयोजक, 'सुधर्म प्रवचन' के सम्पादक पं. श्री महेशचन्दजी जैन का २ जून को ७८ वर्ष की आयु में असामयिक निधन हो गया। आप कानोड़ के निवासी थे और छोटी सादड़ी जैन गुरुकुल में आपने जैन धर्म, दर्शन की शिक्षा प्राप्त की थी। प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी के आप उत्कृष्ट विद्वान् थे। विद्वता के साथ सरलता और निरभिमानता आपका विशेष गुण था। जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला, जैन उच्च विद्यालय सनवाड़, जवाहर विद्यापीठ कानोड़ और जवाहर विद्यापीठ, भीनासर को अध्यापक एवं गृहपति के रूप में आपकी सेवाएँ उपलब्ध रहीं। विगत २० वर्षों से जोधपुर में रहकर आपने धार्मिक अध्ययन-अध्यापन एवं सुधर्म प्रचार मण्डल की प्रवृत्तियों को आगे बढ़ाने में उल्लेखनीय योगदान दिया।

जोधपुर—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री सौभाग्यमलजी डागा का २ जून को एवं इनकी धर्मपत्नी श्रीमती गुमानकुंवर डागा का २९ मई को आकस्मिक निधन हो गया। आप दोनों धर्मपरायण श्रावक-श्राविका थे।

जोधपुर—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक एवं अ. भा. जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व महामन्त्री श्री माणकमलजी भण्डारी के सुपुत्र श्री शान्तिलालजी भण्डारी का ५ जून को अल्पायु में आकस्मिक निधन हो गया। आप समाज के होनहार, सेवाभावी युवक थे।

जोधपुर—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री शुभलालजी सिंघवी का ५ जून को ७३ वर्ष की आयु में असामयिक निधन हो गया। आप धर्म-परायण, श्रद्धानिष्ठ सुज्ञ श्रावक थे। आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धा-भक्ति थी। आपके सुपुत्र श्री कैलाशजी ने आचार्य श्री के चरणों में जोधपुर में दीक्षा अंगीकृत की थी, जिनका ७ जून को देवलोक हो गया।

जोधपुर—यहाँ की धर्मपरायणा श्राविका श्रीमती गुलाब भण्डारी धर्मपत्नी श्री सम्पतराजजी भण्डारी एडवोकेट का विद्युत्-दुर्घटना में ७ जून को आकस्मिक निधन हो गया। आप न्यायाधिपति श्री चाँदमलजी लोढ़ा की ज्येष्ठ पुत्री थीं।

जोधपुर—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री पन्नराजजी भंसाली का ८ जून को असामयिक निधन हो गया। आप धर्मपरायण, संघनिष्ठ श्रावक थे।

जोधपुर—यहां की धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती बंचोलकंवर भण्डारी धर्मपत्नी स्व० श्री भगवतीदान जी भण्डारी का ८ जून को असामयिक निधन हो गया। आप सरल प्रकृति की भद्र महिला थीं।

जोधपुर—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री किशनचन्द जी मेहता (नाहर) का ९ जून को असामयिक निधन हो गया। आपकी आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा० एवं संत-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति थी।

जोधपुर—यहाँ की सुज्ञ श्राविका श्रीमती सरदारकंवर धर्मपत्नी श्री नरेन्द्रसिंह जी कोठारी महामंदिर का १७ मार्च को असामयिक निधन हो गया।

जोधपुर—सेवाभावी सुश्रावक श्री फतहराज जी सिंघवी के सुपुत्र श्री गुमानमल जी सिंघवी का ६ अप्रेल को असामयिक निधन हो गया।

जोधपुर - संघ के सुश्रावक श्री पारसमल जी भंसाली की धर्मपत्नी श्रीमती निध्यान कंवर का १३ अप्रेल को असामयिक निधन हो गया।

जोधपुर—धर्मप्रेमी सुश्रावक श्री सज्जनराज जी कुम्भट का १ मई को असामयिक निधन हो गया।

पन्नरुटी (मद्रास)—अनन्य गुरुभक्त, सुश्रावक श्री अजीतराज जी सिंघवी का निमाज में हृदयगति रुक जाने से १६ अप्रेल को आकस्मिक निधन हो गया।

जोधपुर—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री अजीतमल जी भण्डारी का ९ मई को हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया। आप कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए थे और सन्त-सतियों की सेवा में आगे रहते थे। आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा० के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धा-भक्ति थी।

जोधपुर—धर्मप्रेमी सुश्रावक श्री धनपतचन्द जी भंसाली मास्टर सा० का २ जून को असामयिक निधन हो गया ।

पचपहाड़—यहाँ के सुश्रावक श्री राधाकृष्ण जी गुलाबचन्द जी आचोलिया की मातुश्री श्रीमती मथुराबाई का १ जून को असामयिक निधन हो गया ।

जोधपुर—श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री जौहरीमल जी चौधरी (संचेती) का ५ जून को असामयिक निधन हो गया । आप बारह व्रतधारी श्रावक थे ।

जोधपुर—नन्दकिशोर स्याही वाले वयोवृद्ध श्रावक, सादगीप्रिय श्री कानराजजी मेहता का ६ जून को असामयिक निधन हो गया । आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा० के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी ।

जोधपुर—श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती उगमकंवर संचेती धर्मपत्नी श्री रूपराज जी संचेती का ७ जून को असामयिक निधन हो गया ।

जोधपुर—यहाँ के प्रतिष्ठित सेवाभावी श्रावक श्री दौलतराज जी चौपड़ा का ८ जून को असामयिक निधन हो गया । आपकी आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा० के प्रति अनन्य श्रद्धाभक्ति थी । अपने स्वास्थ्य की चिन्ता न करते हुए भी आप आचार्य श्री के जोधपुर से पाली तक के विहार में साथ रहे और पैदल चलकर सेवा भक्ति का आदर्श प्रस्तुत किया । आप अपना अधिकतर समय आचार्य श्री की सेवा में ही बिताते थे ।

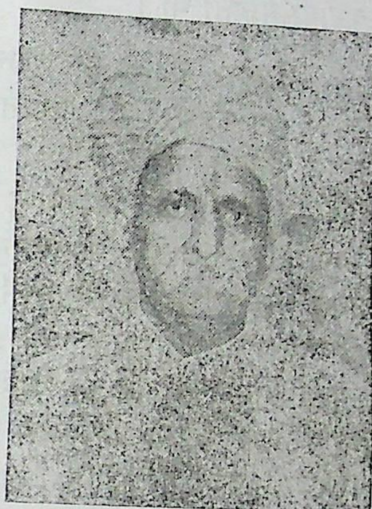
जोधपुर—यहाँ के सेवाभावी श्रावक श्री प्रेमराज जी विनायका का ८ जून को असामयिक निधन हो गया ।

जोधपुर—यहाँ के धर्मपरायण सुश्रावक श्री दौलतराज जी अव्वाणी का १२ जून को असामयिक निधन हो गया ।

भवानीमण्डी—अहिंसा प्रचार को समर्पित नगर के प्रतिष्ठित वयोवृद्ध श्रावक श्री लालचन्द जी गंगवाल का १४ जून को ७५ वर्ष की आयु में असामयिक निधन हो गया ।

आगरा—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक, प्रमुख समाजसेवी, प्रबुद्ध विचारक, वयोवृद्ध श्री प्रतापचन्द जी जैन का १८ जून को असामयिक निधन हो गया । आपने समाज-सुधार, साहित्य-प्रचार, लेखन एवं समाज-संगठन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया ।

चौपड़ा—खीचन निवासी धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री माणकलाल जी टाटिया का ७९ वर्ष की आयु में १९ जून को संथारापूर्वक निधन हो गया। आप दयालु, स्नेही, सरल स्वभावी, सेवाभावी, धर्मनिष्ठ श्रावक थे। चौपड़ा जैन संघ के आप अध्यक्ष थे। तपस्वीराज जी चम्पालाल जी म० सा० के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपने कई व्रत-प्रत्याख्यान ले थे रखे। दैनिक सामायिक, प्रतिक्रमण के साथ-साथ तपाराधना का क्रम भी चालू रहता था। आपने ४५ वर्ष की आयु में ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर अनूठा आदर्श प्रस्तुत किया। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं।



बारां—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक एवं सक्रिय कार्यकर्ता श्री शिवलाल भाई 'पतीरा' का हृदयगति रुक जाने से २२ जून को आकस्मिक निधन हो गया। आप व० स्था० जैन श्रावक संघ, बारां के मंत्री श्री नवनीत भाई 'पतीरा' के बड़े भ्राता थे।

जोधपुर—यहाँ के प्रतिष्ठिक श्रावक डॉ० पदमचन्द जी गांधी का २३ जून को असामयिक निधन हो गया। आप धार्मिक प्रवृत्ति के सेवा-भावी व्यक्ति थे।

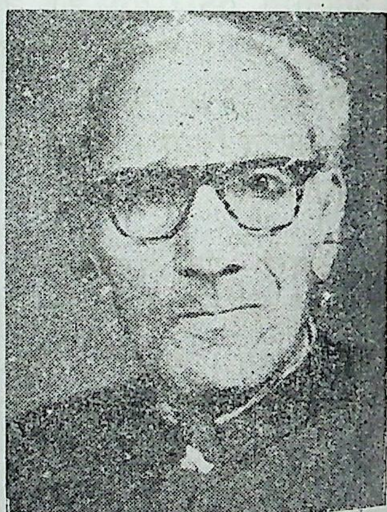
उदयपुर—कानोड़ निवासी श्री मनोहरसिंह जी पोखरना का ८६ वर्ष की आयु में २८ जून को हृदयगति रुक जाने से असामयिक निधन हो गया। आप धार्मिक वृत्ति के सरल स्वभावी, श्रद्धानिष्ठ श्रावक थे। श्वे० जैन संघ, जवाहर नगर, जयपुर के मंत्री श्री सुरेन्द्र पोखरना के आप पिताश्री थे।

भवानीमण्डी—प्रमुख समाजसेवी एवं लेखक, अधिवक्ता श्री राजेन्द्र प्रसाद जी जैन के बहनोई श्री नेमीचन्द जी सिंघवी का ८ जुलाई को असामयिक निधन हो गया। आप सरल स्वभावी, प्रामाणिक जीवन जीने वाले भद्र पुरुष थे।

पचपहाड़—यहाँ के प्रमुख समाजसेवी, वयोवृद्ध श्री मिश्रीलाल जी सुराणा की जीवन सहचरी श्रीमती सूरजबाई का ८० वर्ष की आयु में

हृदयाघात से आकस्मिक निधन हो गया । आप धार्मिक प्रवृत्ति की सरल-स्वभावी महिला थीं ।

जयपुर—यहाँ के प्रतिष्ठित वयोवृद्ध श्रावक श्री देवराज जी भण्डारी का ९१ वर्ष की आयु में ६ अगस्त को निधन हो गया । आप मूलत: जोधपुर के निवासी थे । आपका जन्म २४-४-१९०१ को हुआ । आपका अध्यापन अमरावती (महाराष्ट्र) में हुआ । आपने जोधपुर (मारवाड़) राज्य में ३०-१-१९३० से सेवायें शुरू कीं । आप राजस्थान सरकार से नायब तहसीलदारी के पद से दिनांक २४-४-५८ को सेवा निवृत्त हुए । सेवा निवृत्ति के बाद आपने कई महत्त्वपूर्ण पदों पर भी सेवायें दीं—जैसे नगर-पालिका, नदबई, राजाखेड़ा, बांदीकुई, लाखेरी, लालसोट में प्रशासक के रूप में, राष्ट्रीकरण पाठ्य पुस्तक मण्डल आदि आदि । इसके बाद में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के व्यवस्थापक के रूप में १७ वर्षों तक बड़ी लगन से सेवायें दीं । 'जिनवाणी' के प्रचार-प्रसार में आपका बड़ा योगदान रहा । सन् १९८३ में मण्डल से सेवा निवृत्त हुए ।



आपकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए मण्डल ने वर्ष १९८८ में आपको रु० १०,००१/- प्रदान कर व शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया । आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं। आपकी एक पौत्री और पौत्रवधू मन्दिरमार्गी आम्नाय में गुणाश्री जी और शुभाश्री जी के नाम से दीक्षा लिए हुए हैं। आप बड़े ही धर्मनिष्ठ, कर्तव्यपरायण, कर्मठ सेवाभावी, स्वधर्मी वात्सल्य, मण्डल एवं रत्नवंश के प्रति जीवन समर्पित आदर्श थे। आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा० के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी। वृद्धावस्था में भी आप युवकोचित उत्साह लिये हुए थे ।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति हम सम्यक्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 'जिनवाणी' एवं अ० भा० जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोकविह्वल परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं ।

—सम्पादक

साभार प्राप्ति स्वीकार

२५१) रु. "जिनवाणी" की आजीवन सदस्यता हेतु प्रत्येक

२७५७. श्री धर्मदास मित्र मण्डल, रतलाम
२७५८. श्री अमरसिंहजी संचेती, भीलवाड़ा
२७५९. श्री के. सी. सिंघल, जोधपुर
२७६०. श्री धनपतमलजी सा. लोढ़ा, सिरोही
२७६१. श्री एस. इन्द्रचन्दजी बाघमार, मद्रास
२७६२. श्री जी. डी. जैन और बीना जैन, अलीगढ़
२७६३. श्री आर. पदमचन्द जैन, मद्रास
२७६४. डॉ. सी. एम. लूणावत, मद्रास
२७६५. श्री दिनेशजी सेठिया, जैतारण
२७६६. श्री उगमचन्दजी पटवा, जोधपुर
२७६७. श्री किशनजी जैन, मद्रास
२७६८. श्री मोतीलालजी भीकमचन्दजी कोठारी, बर
२७६९. श्री जितेश जैन, नवसारी
२७७०. मैसर्स बाफना एण्ड कम्पनी, जोधपुर
२७७१. श्री धींगडमलजी गौतमचन्दजी, सिवाणा
२७७२. श्री मदनराजजी मेहता, जोधपुर
२७७३. श्री अर्पूनराजजी भंसाली, जोधपुर
२७७४. श्री एस. सी. भण्डारी, मकराना
२७७५. श्री जी. एम. पारख, जोधपुर
२७७६. श्री धीरजकुमार चाँदमलजी मल्हारा, जलगाँव
२७७७. श्री भंवरलालजी जैन, बैंगलोर
२७७८. श्री सुरेशजी भन्डारी, जोधपुर
२७७९. श्री अजयजी नाहर, भोपाल
२७८०. श्री रिद्धकरणजी बूरड़, गुहाटी
२७८१. श्री पारसमलजी मेहता, जयपुर
२७८२. श्री उच्छबराजजी सिंघवी, जोधपुर
२७८३. श्री माणकचन्दजी संचेती, जोधपुर
२७८४. श्री कैलाशजी टाटिया, जोधपुर
२७८५. श्री मांगीलालजी जसराजजी ब्रहमेचा, रासलगांव

२७८६. श्री चम्पालाल एण्ड ब्रदर्स, भद्रावती (कर्नाटक)
२७८७. श्री कंवर मदनलालजी जैन, भद्रावती (कर्नाटक)
२७८८. श्री के. एच. विजराम जैन, भद्रावती (कर्नाटक)
२७८९. श्री अमीचन्दजी जैन, हुबली (कर्नाटक)
२७९०. श्री जवाहरलालजी जैन, भद्रावती (कर्नाटक)
२७९१. श्री किशनमलजी मनीषजी लोढ़ा, जोधपुर
२७९२. श्री सौभागमलजी जैन, भवानी मण्डी
२७९३. श्री सन्तोषकुमारजी जैन, कानपुर
२७९४. श्री सी. जवरीलालजी जैन, पालिपेठ
२७९५. श्री बाफना आटो फाइनेंस, मद्रास
२७९६. श्री शांतिचन्दजी रतनजी बोहरा, जोधपुर
२७९७. श्री बसन्तराजजी रतनचन्दजी जैन, सिकन्दराबाद
२७९८. श्री सोहनमलजी गांग, जोधपुर
२७९९. डॉ. एन. सी. जैन, जयपुर
२८००. मैसर्स छाजेड़ एण्ड कम्पनी, अहमदाबाद
२८०१. श्री प्रेमकुमारजी जैन, जोधपुर
२८०२. श्री शरबतचन्दजी सिंघवी, जोधपुर
२८०३. श्री वर्धमान महावीर चेरीटेबल ट्रस्ट, बडू, जिला नागौर
२८०४. श्री राजेन्द्रमलजी टाटिया, नई दिल्ली
२८०५. श्री बी. आर. जैन, बम्बई
२८०६. श्री सुभाषचन्दजी जैन, उज्जैन
२८०७. श्री महेन्द्रजी भण्डारी, नरसिंहगढ़
२८०८. श्री आनन्दप्रकाशजी जैन, जोधपुर
२८०९. श्रीमती सुनीता राजेन्द्र बैंगानी, मद्रास
२८१०. श्री लेखराजजी पारख, जोधपुर
२८११. श्री प्रसन्नमलजी रंगरूपमलजी फोफलिया, जोधपुर
२८१२. श्री मुल्तानमलजी चौपड़ा, जोधपुर
२८१३. श्री जवरीलालजी लोढ़ा (जैन), हीरादेसर
२८१४. श्री रतनलालजी सुराणा सेवकी कला
२८१५. श्री चम्पालालजी चौपड़ा, बुचेटी
२८१६. श्री मोहनलालजी देसरला, अरटिया खुर्द
२८१७. श्री जसवन्तराजजी कर्णावट, अरटिया कलां
२८१८. श्री भंवरलालजी लोढ़ा, भोपालगढ़
२८१९. श्री दानराजजी जैन, रायपुर
२८२०. श्रीमती शान्तिदेवी ओसवाल, कानपुर

२८२१. श्री एल. कपूरचन्दजी महावीरचन्दजी सिंघवी, अरवी
२८२२. श्री प्रशान्तजी कोठारी, गुलबरगा
२८२३. श्री चंचलचन्दजी गिडिया, जोधपुर
२८२४. श्री मोहनलालजी सुरेन्द्रकुमारजी डोसी, जोधपुर
२८२५. श्री अशोककुमारजी जैन, कलिजरा
२८२६. श्री इन्द्रमलजी प्रमोदकुमारजी जैन, पाली मारवाड़

'जिनवाणी' को सहायतार्थ भेंट

१००१) श्री हंसराजजी कांकरिया, विजयपुरा देवनहल्ली (कर्नाटक)
आचार्य प्रवर के संथारा काल में दर्शनार्थ पधारने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५०१) श्री चंचलमलजी किशोरमलजी सुराणा, बीकानेर
आचार्य प्रवर के निमाज में दर्शनार्थ पधारने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५०१) श्री सोहनलालजी सा. मोहनलालजी सा. बोहरा, तिरुयनामलाज
आचार्य प्रवर के संथारे के समय दर्शनार्थ पधारने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५०१) श्री पारसमलजी शिखरचन्दजी सुराणा, मैलापुर
जैनाचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. को भावभीनी श्रद्धान्जलि अर्पित करते हुये भेंट।

५०१) श्रीमान् चांदमलजी सा. ढढ्ढा, जयपुर
अपने भतीजे चि. संजय ढढ्ढा (सुपुत्र श्री चैतन्य ढढ्ढा) का शुभ विवाह सौ. कां. रीटा (सुपुत्री श्रीमान् धनपतराजजी सा. सिंघवी) के साथ दिनांक ४.४.१९९१ को जोधपुर में सम्पन्न हुआ, उस खुशी में सप्रेम भेंट।

५००) श्री चांदमलजी सा. ढढ्ढा, जयपुर
आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा. के संथारे के उपलक्ष्य में भेंट।

३००) श्री धनराजजी किशोरचन्दजी चौपड़ा, बालोतरा
श्री प्रेमचन्द पुत्र श्री मानमलजी चौपड़ा, बालोतरा (राज.) के स्वर्गवास की स्मृति में भेंट।

२५१) श्री नाहर परिवार (बरेली वाले) "मानिक" भोपाल
आचार्य प्रवर के संथारे के उपलक्ष्य में भेंट ।

२५१) श्री घीसूलालजी दुलीचन्दजी बाघमार, मूल निवासी कोसाणा, हाल मुकाम साहूकार पेठ, मद्रास
चि. अरुण बाघमार सुपुत्र श्री दुलीचन्दजी बाघमार के शुभ विवाह एवं आचार्य प्रवर १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. आदि ठाणा १६ के निमाज दर्शनार्थ पधारने के उपलक्ष्य में भेंट ।

२५१) श्री सी. जवरीलालजी जैन, पालिपेठ
आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा. के संथारे के उपलक्ष्य में भेंट ।

२५१) श्री पी. उम्मेदराजजी सिंघवी, मैसूर
चि. आलोक सुपुत्र श्री पी. एम. चौरड़िया का शुभ विवाह सौ. कां. कविता सुपुत्री श्री उम्मेदराजजी सिंघवी के साथ सम्पन्न होने की प्रसन्ननता में भेंट ।

२५१) वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, कुड़ी, जिला–जोधपुर
आचार्य प्रवर श्री हीराचन्दजी म. सा. के पधारने के उपलक्ष्य में भेंट ।

२५१) श्री लूणकरणजी नाहर, लखनऊ
अपने सुपुत्र चि. विजय नाहर का शुभ विवाह ब्यावर निवासी सौ. कां. मधु के साथ दिनांक २२-५-१९९१ को सम्पन्न होने की खुशी में भेंट ।

२५०) श्री सायरचन्दजी चौरड़िया
अपने भ्राता श्री बादलचन्दजी चौरड़िया की पुण्य स्मृति में भेंट ।

२०१) श्री दलीचन्दजी गौतमराजजी गणधर चौपड़ा, जोधपुर
अपने सुपुत्र चि. उत्तम संग संगीता के विवाह के उपलक्ष्य में भेंट ।

२०१) श्रीमती तेजकंवरजी लोढ़ा, धर्मपत्नी स्व. श्री कीरतमलजी लोढ़ा, जोधपुर
आचार्य श्री के संथारे के उपलक्ष्य में भेंट ।

२०१) श्री रतनचन्दजी मेहता, जयपुर

सौ. कां. वन्दना सुपौत्री श्रीमान् मिलापचन्दजी सा. मेहता, सुपुत्री श्री रतनचन्दजी मेहता एवं आयुष्मान् राजेश सुपुत्र श्री प्रेमचन्दजी सा. बरड़िया के मंगल परिणय दिनांक २८-५-१९९१ को होने के उपलक्ष्य में मेहता परिवार एवं बरड़िया परिवार की ओर से सप्रेम भेंट ।

२०१) श्रीमान् विमलचन्दजी रिखबचन्दजी एवं श्रेणिक कुमारजी, निमाज

श्रीमती रुकमा बाई धोका एवं श्रीमती नौरतन कंवर डागा के एकान्तर तप की पूर्णाहुति आचार्य प्रवर श्री हीराचन्दजी म. सा. एवं उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्दजी म. सा. के सान्निध्य में हुई, उस खुशी में सप्रेम भेंट ।

२०१) श्री शान्तिलालजी प्रेमचन्दजी गांधी

दिनांक २-६-१९९१ को पं. रत्न श्री १००८ श्री हीराचन्दजी म. सा. के आचार्य पद चादर महोत्सव के उपलक्ष्य में भेंट ।

२०१) श्री चैनरूपचन्दजी भण्डारी, बारणी, जिला–जोधपुर

आचार्य प्रवर श्री हीराचन्दजी म. सा. के बारणी ग्राम पधारने की खुशी में भेंट ।

२००) लूणीया चेरेटीज द्वारा श्री सुरेन्द्र लूणीया, हैदराबाद

श्री अजीतराजजी सुराणा की पुण्य स्मृति में भेंट ।

२००) श्री जे. सुमेरमलजी, मद्रास

अपनी सुपुत्री सौ. कां. संगीता का शुभ विवाह दिनांक ८-७-१९९१ को सम्पन्न होने की खुशी में भेंट ।

२००) श्री हीराचन्दजी वैद, जयपुर

श्री शंखेश्वर मन्दिर की प्रतिष्ठा होने की खुशी में भेंट

१५१) श्री पुखराजजी पारख, जलगाँव

आचार्य प्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के निमाज में दर्शन हेतु पधारने के उपलक्ष्य में भेंट ।

१५१) श्री बुद्धराजजी कोठारी, मेड़ता सिटी
अपने सुपुत्र चि. सुरेन्द्रकुमार कोठारी का शुभ विवाह सौ. कां. सरला कुमारी सुपुत्री श्री श्रीचन्दजी पगारिया, बोरावड़ निवासी के साथ दिनांक ३-७-१९९१ को सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

१०१) श्री पन्नालालजी सुधीरकुमारजी मूथा, इचलकरणजी
आचार्य प्रवर के संथारे के उपलक्ष्य में भेंट।

१०१) श्री मनसुखलालजी आनन्दरामजी गुगलिया, पूना
आचार्य प्रवर के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की मंगल कामना हेतु भेंट।

१०१) श्री जवाहरलालजी प्रेमचन्दजी बाघमार, मद्रास
पूज्य आचार्य प्रवर के दर्शनार्थ निमाज आने की खुशी में सप्रेम भेंट।

१०१) श्री पुखराजी पारसमलजी गिरिया, जोधपुर
अपनी सुपुत्री संगीता संग उत्तम के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में भेंट।

१०१) श्रीमती कान्ताबाई कटारिया, निमाज
आचार्य प्रवर के दर्शनार्थ निमाज पधारने के उपलक्ष्य में भेंट।

१०१) श्री प्रसन्नमलजी लोढ़ा, अनिलकुमारजी लोढ़ा, जयपुर
आचार्य श्री के संथारे के उपलक्ष्य में भेंट।

१०१) श्री जतनराजजी मेहता, मेड़ता सिटी
श्री प्रेमराजजी मेहता की पुण्य स्मृति में भेंट।

१०१) श्री हेमराजजी सिंघवी (साहूकार पेठ), मद्रास
श्रीमती पताशीबाई सिंघवी की पुण्य स्मृति में भेंट।

१०१) श्री दुलीचंदजी प्रबोधकुमारजी पींचा, मद्रास
जैनाचार्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए भेंट।

१०१) श्री संजयजी ढढ्ढा, जयपुर
पूजनीय पिताजी स्व. धनरूपमलजी ढढ्ढा की प्रथम पुण्य तिथि के अवसर पर भेंट।

१०१) श्रीमती सिणगार बाई सा. धर्मपत्नी श्री रणजीतचन्दजी लोढ़ा, जोधपुर
आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा. की पावन स्मृति में भेंट।

१०१) श्रीमान् रेखचन्दजी बाघमार, कोसाना
सुपौत्री प्रेमलता का शुभ विवाह श्री यशवंतराजजी भण्डारी के साथ होने की खुशी में भेंट।

१०१) श्री कपूरचन्दजी ओमप्रकाशजी जैन, चौथ का बरवाड़ा
पूज्य पिताजी श्री रामप्रतापजी जैन का दिनांक २५-५-१९९१ को देहावसान होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

१०१) श्री नवरतनमलजी पारसमलजी डागा, जोधपुर
अपने पूज्य पिताजी श्रीमान् छोटमलजी डागा के दिनांक १८-६-९१ को आकस्मिक निधन होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

१०१) श्रीमान् हीराचन्दजी कांकरिया (भोपालगढ़ वाले) जोधपुर
अपने पूज्य पिताजी श्रीमान् सुगनचन्दजी कांकरिया का संथारे पूर्वक दिनांक २-५-१९९१ को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

१०१) श्री मिश्रीमलजी अमरचन्दजी लोढ़ा, हीरादेसर
आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्दजी म. सा. के हीरादेसर पधारने के उपलक्ष्य में भेंट।

१०१) श्री धर्मचन्दजी हंसराजजी बाघमार, कोसाणा
आचार्य प्रवर के पधारने एवं चि. अशोककुमार के विवाह के उपलक्ष्य में तथा चि. अशोककुमार के पूज्य आचार्य श्री से गुरु आमना लेने की खुशी में भेंट।

१०१) श्री शिवराजजी नथमलजी देवराजजी नाहर, कोसाणा
आचार्य प्रवर श्री हीराचन्दजी म. सा. के प्रथम बार कोसाणा पधारने की खुशी में भेंट।

१०१) श्री अन्नराजजी पन्नालालजी कोठारी (साहूकार पेठ), मद्रास
चि. महेन्द्र (सुपौत्र श्री अन्नराजजी सुपुत्र श्री पन्नालालजी कोठारी) साहूकार पेठ, मद्रास के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में भेंट।

१०१) श्री जयदीपजी ढढ्ढा, जयपुर
'जिनवाणी' को सप्रेम भेंट ।

१०१) श्री शान्तिलालजी प्रेमराजजी गांधी, पीपाड़ सिटी
रत्नवंश के अष्टम पट्टधर आगमवेत्ता, सोम्यमूर्ति परम श्रद्धेय पूज्य आचार्य श्री हीराचंदजी म. सा. के दिनांक २-६-१९९१ को आचार्य पद ग्रहण कर प्रथम बार पीपाड़ शहर को पावन करने की खुशी में सप्रेम भेंट ।

१०१) श्रीमान् प्रकाशचन्दजी चौरड़िया, जयपुर
महासती मैना सुन्दरीजी म. सा., श्री रतनकंवरजी म. सा. के निमाज (जोधपुर) से विहार कर जयपुर पधारने एवं अपनी मातुश्री को दर्शन लाभ देकर कृतार्थ करने एवं गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. की द्वितीय मासिक पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में भेंट ।

१०१) श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पालासनी
परम श्रद्धेय पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्दजी म. सा. के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने के पश्चात् प्रथम बार पालासनी पधारने एवं महासती सरलेश प्रभाजी म. सा. आदि ठाणा ३ के चातुर्मास की खुशी में भेंट ।

१०१) श्री विजयकुमारजी शिवलालजी "पतीरा", बारां
श्री शिवलाल भाई मंत्री, वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी श्रावक संघ, बारां के दिनांक २२-६-१९९१ को निधन होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट ।

१००) श्री बाबूलालजी कन्हैयालालजी जैन बाघमार, (मालेगांव), नासिक
सौ. कां. सरला देवी सुपुत्री श्री बाबूलालजी बाघमार, मालेगांव का शुभ विवाह दिनांक २२-५-१९९१ को शाह प्रेमचंदजी बोरा, नासिक वालों के सुपुत्र श्री राजेशकुमारजी के साथ सम्पन्न होने की खुशी में भेंट ।

१००) श्री मांगीलालजी, बसन्तकुमारजी एवं शान्तिलालजी, बम्बई
अपनी मातुश्री श्रीमती मगनदेवीजी नदिया का दिनांक ७ जुलाई, १९९१ को ७४ वर्ष की आयु में स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट ।

५५) श्री पारसमलजी धनराजजी जैन, जामनेर
श्रीमती जबरीबाई की पुण्य स्मृति में भेंट।

५१) श्री राधेश्यामजी जैन सुपुत्र श्री रामगोपालजी जैन, करमोदा वाले, सवाईमाधोपुर
आचार्य प्रवर के दर्शनार्थ एवं बच्चों द्वारा आचार्य प्रवर के चरण स्पर्श लाभ की खुशी में सप्रेम भेंट।

५१) श्रीमती विमलाजी जैन, अजमेर
पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के संथारे के उपलक्ष्य में भेंट।

५१) श्रीमती विमलाजी जैन, अजमेर
पूज्य पिताजी श्री पूनमचंदजी सा. मुणोत के ९१वें जन्म दिवस दिनांक ३१-३-१९९१ के उपलक्ष्य में भेंट।

५१) श्री मोतीलालजी बोहरा, जे. एम. बी. वाले, सवाईमाधोपुर
आचार्य प्रवर के निमाज में संथारा ग्रहण के उपलक्ष्य में भेंट।

५१) श्री एस. जयसिंहजी छाजेड़, "रत्नेश" संयोजक, श्री वर्धमान जैन स्वाध्याय संघ, नया बास, समदड़ी (जिला—बाड़मेर)
उपाध्याय पूज्य गुरुदेव श्री पुष्कर मुनिजी म. सा., उपाचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी म. सा. ठाणा ८ के अक्षय तृतीया महोत्सव प्रसंग पर समदड़ी पदार्पण के उपलक्ष्य में भेंट।

५१) श्री एम. सागरमलजी छाजेड़, मद्रास
आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के संथारे में दर्शनार्थ पधारने के उपलक्ष्य में भेंट।

५१) श्री राजकुमारजी दिनेशकुमारजी सुराणा, अमनावरम, मद्रास
श्री इन्द्र सुराणा व सौ. कां. उमरावकंवर, बिलाड़ा (राज.) निवासी हाल मुकाम अमनावरम, मद्रास के दाम्पत्य जीवन की रजत जयन्ती के उपलक्ष्य में भेंट।

५१) श्री मोहनलालजी रिखबचन्दजी बोहरा, बडपलनी, मद्रास
चि. राजेश (सुपौत्र श्री मोहनलालजी बोहरा सुपुत्र श्री रिखबचन्द

जी बोहरा) बडपलनी मद्रास का शुभ विवाह सौ. कां. मंजुकुमारी के साथ व सौ. कां. अंजु कुमारी (सुपौत्री श्री मोहनलालजी बोहरा) का शुभ विवाह चि. दिलीपकुमारजी के साथ होने के उपलक्ष्य में भेंट।

५१) श्री जशकरणजी सुरेन्द्रकुमारजी डागा, टोंक

पू. जैनाचार्य १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. के सपरिवार व मित्रों सहित अन्तिम दर्शन करने के उपलक्ष्य में भेंट।

५१) श्री आनन्दजी भण्डारी, जयपुर

पिता श्री देवराजजी सा. भण्डारी, भूतपूर्व व्यवस्थापक, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर के ९०वीं वर्ष गांठ एवं नवीन गृह प्रवेश के उपलक्ष्य में भेंट।

५१) श्री पारसमलजी बाफना, अहिवारा (दुर्ग)

श्रीमती पतंगदेवी बाफना धर्मपत्नी श्री पारसमलजी बाफना अहिवारा (दुर्ग) वालों का १५वां वर्षीतप का पारणा अक्षय तृतीया को इन्द्रकंवरजी म. सा. के सान्निध्य में सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

५१) श्री अमृतलालजी समरथमलजी जैन विजावत, बोलिया वाला (भवानी मण्डी)

अपने सुपुत्र चि. हेमन्तकुमार (बी. कॉम.) का विवाह सौ. कां. मंगला (बी. ए.) सुपुत्री श्री राजमलजी मेहता, नीमच के साथ सम्पन्न होने व १००५ श्री कलावतीजी, श्री राजमतीजी, श्री मंगलाजी, श्री विभावनाजी का चातुर्मास, भवानी मण्डी में होने की खुशी में भेंट।

५१) श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, मु. पो. ढोल, उदयपुर

परम विदुषी महासतियाँजी श्री चारित्र प्रभाजी ठाणा के सान्निध्य में साध्वी श्री अभिलाषा श्रीजी की दीक्षा के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५१) श्री फूलचन्दजी माणकलालजी टाटिया, चौपड़ा, जलगाँव

श्री माणकलालजी टाटिया की पुण्य स्मृति में भेंट।

५१) श्री जवरचन्दजी सुरेशचन्दजी नाहर, मेहुवालयम (तमिलनाडु)
सौ. कां. सविता सुपुत्री श्री जबरचन्दजी नाहर का शुभ विवाह चि. महावीरचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री आसकरणजी बाफना (मन्नारगुढ़ी) के संग दिनांक २८-६-१९९१ को सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

५१) श्री चम्पालालजी राजकुमारजी लोढ़ा, हीरादेसर
आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्दजी म. सा. के हीरादेसर पधारने के उपलक्ष्य में भेंट।

५१) श्री चैन रूपचन्दजी भण्डारी, (बारणी) जोधपुर
श्री कैलाशमुनिजी म. सा. के असामयिक देहावसान होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

५१) श्री प्रेमकुमारजी सिंघवी, (बारणी) जोधपुर
श्री कैलाशमुनिजी म. सा. के असामयिक देहावसान होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

५१) श्री नथमलजी बाघमार, कोसाणा हाल मुकाम, मद्रास
आचार्य प्रवर श्री हीराचन्दजी म. सा. के प्रथम बार कोसाणा पदार्पण की खुशी में भेंट।

५१) श्री सायरचन्दजी गनपतराजजी बाघमार, कोसाणा
आचार्य प्रवर श्री हीराचन्दजी म. सा. के प्रथम बार कोसाणा पधारने की खुशी में भेंट।

५१) श्री रेखचन्दजी मदनलालजी बाघमार, कोसाणा
आचार्य प्रवर श्री हीराचन्दजी म. सा. के प्रथम बार कोसाणा पधारने की खुशी में भेंट।

५१) श्री किशनलालजी ईश्वरलालजी कोठारी, जामनेर
चि. प्रसन्न एवं सौ. कां. प्रीति का शुभ विवाह होने की खुशी में भेंट।

५१) श्री महावीर पान भण्डार, सवाईमाधोपुर
श्रीमती सन्तरा जैन धर्मपत्नी श्री महावीरप्रसादजी जैन, पान वाले की अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

५१) श्री हीरालालजी जैन, भरतपुर
अपनी सुपुत्री रेखा जैन के चि. राधेश्याम सुपुत्र श्री सुमतप्रकाशजी जैन, करौली के साथ विवाहोपलक्ष्य में भेंट ।

५१) श्री गणपतलालजी जैन, धणोली वाले, बजरिया, सवाईमाधोपुर
श्री नेमीचन्दजी धणोली वालों की पुत्रवधू श्रीमती रूपादेवी जैन धर्मपत्नी श्री गणपतलालजी के अठाई की तपस्या की खुशी में भेंट।

४०) श्री कमलचन्दजी मेहता, शुले (बैंगलौर)
अपनी धर्मपत्नी श्रीमती उगमा बाई का दिनांक २४-४-१९९१ को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट ।

३०) श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्री संघ, कोटा
संघ सेवाभावी श्री मोहन मुनिजी के पधारने एवं श्री संघ कोटा के महावीर भवन के शिलान्यास के उपलक्ष्य में श्री संघ की ओर से भेंट ।

२१) श्री मदनलालजी जैन सुपुत्र श्री उच्छवरायजी जैन, जयपुर
सुपुत्री गुणमाला की दिनांक १-४-१९९१ को दूसरी वर्ष गांठ के उपलक्ष्य में २४ घंटे के नवकार मंत्र जाप के उपलक्ष्य में भेंट ।

२१) श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन, एडवोकेट, भवानी मण्डी
शाश्वत सत्य, अहिंसा एवं संयम मार्ग के दिवंगत राही आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा. की पावन स्मृति में भेंट ।

२१) श्री कैलाशचन्दजी अशोककुमारजी बोहरा, भवानी मण्डी
आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा. की पावन स्मृति में भेंट ।

२१) श्री ज्ञान कांकरिया, जोधपुर
स्वर्गीय पिताजी विजयराजजी सा. कांकरिया की पुण्य स्मृति में भेंट ।

२१) श्री भैरूलालजी दौलतरामजी चौरड़िया, बड़ौद
श्री भैरूलालजी सागरमलजी चौरड़िया की माताजी श्रीमती फूलीबाई धर्मपत्नी स्व. श्री दौलतरामजी चौरड़िया का दिनांक २७-७-१९९१ को स्वर्गवास हो गया; उनकी पुण्य स्मृति में भेंट ।

११) श्री कजोड़मलजी जैन, आलनपुर
अपने पुत्र श्री राजेशकुमार का विवाह श्री सागरमलजी जैन, जरखोदा की सुपुत्री निर्मलाकुमारी के साथ होने के उपलक्ष्य में भेंट।

११) श्री गोरधनलालजी कन्हैयालालजी पोरवाल, भवानी मण्डी
श्री जतिन भाई एवं श्रीमती भारतीजी के प्रव्रज्या ग्रहण करने के उपलक्ष्य में भेंट।

११) श्रीमती कंचनबाई धर्मपत्नी स्व. श्री सूरजमलजी मूथा, भवानी मण्डी
प्रवर्तक उमेश मुनि श्रीजी की सरल स्वभावी चरित्र निष्ठा, विदुषी महासती श्री मधुबालाजी, श्री चरित्र प्रभाजी एवं श्री सुनीताजी के प्रथम बार नगर पदार्पण की प्रसन्नता में भेंट।

११) श्री मथुरालालजी जैन, भूरी पहाड़ी वाले, सवाईमाधोपुर
अपनी मातु श्रीमती दाखाबाई की पुण्य स्मृति में भेंट।

११) श्री बागमलजी राजकुमारजी कुण्डल बोहरा, भवानी मण्डी
सामायिक, स्वाध्याय प्रणेता आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा. की स्मृति में भेंट।

११) श्री साधुरामजी खत्री, संस्थापक जल सेवा और अन्नसेवा, भवानी मण्डी
आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा. की स्मृति में भेंट।

११) श्री बलवंतसिहजी चौरड़िया, संरक्षक श्री वर्धमान जैन नवयुवक मण्डल, झालरापाटन
आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा. की स्मृति में भेंट।

११) श्री सुनीलकुमार आत्मज श्री लक्ष्मीनारायणजी राठोड़ (भाटी)
आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा. की पुण्य स्मृति में भेंट।

११) श्री कालूरामजी बसन्तीलालजी जैन ठीकरिया वाले, भवानी मण्डी
प्रतिभाशाली छात्रा कुमारी साधना हिंगड के अखिल भारतीय स. द. वार्षिक प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता में प्रथम स्थान आने की प्रसन्नता में भेंट।

११) श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन, एडवोकेट, भवानी मण्डी
परिवार के विपिन, सपना एवं शिखा के सभी विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त करने की प्रसन्नता में भेंट ।

११) श्री राधाकृष्णजी गुलाबचन्दजी, पचपहाड़
अपनी मातुश्री मथुराबाई मेड़तवाले की पावन स्मृति में भेंट ।

११) श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन, भवानी मण्डी
भाई माणकचन्दजी बोहरा, अध्यक्ष, अहिंसा प्रचार समिति, पचपहाड़ को भारतीय जीव जन्तु कल्याण बोर्ड द्वारा आनरेरी पशु कल्याण अधिकारी नियुक्त करने की प्रसन्नता में भेंट ।

११) श्री कालूरामजी बसन्तीलालजी ठीकरिया वाले, भवानी मण्डी
भाई श्री माणकचन्दजी बोहरा एवं श्री बागमलजी कुण्डल बोहरा को पशु कल्याण बोर्ड (पर्यावरण एवं वन मंत्रालय) द्वारा बोर्ड के आनरेरी पशु कल्याण अधिकारी नियुक्त करने की प्रसन्नता में भेंट ।

११) श्री जमनालालजी चांदमलजी चौपड़ा, भवानी मण्डी
श्री माणकचन्दजी बोहरा अध्यक्ष, अहिंसा प्रचार समिति, पचपहाड़ को पशु कल्याण बोर्ड (पर्यावरण एवं वन मंत्रालय) भारत सरकार द्वारा बोर्ड के आनरेरी पशु कल्याण अधिकारी नियुक्त करने की प्रसन्नता में भेंट ।

११) श्री कैलाशचन्दजी अशोकजी बोहरा, भवानी मण्डी
२० जुलाई को चातुर्मास हेतु विदुषी सतियाँ श्री कलावतीजी, श्री राजमतीजी, श्री मंगलाजी एवं श्री विभावनाजी के नगर मंगल प्रवेश की प्रसन्नता में भेंट ।

११) श्री रमाबल्लभजी कचोल्या, अध्यक्ष श्री माहेश्वरी सेवा मण्डल, भवानी मण्डी
१५ अगस्त, १९९१ को अहिंसा प्रचार में संलग्न अहिंसा प्रचार समिति, पचपहाड़ की प्रथम वर्षगांठ की प्रसन्नता में भेंट ।

११) श्री कैलाशचन्दजी अशोककुमारजी बोहरा, भवानी मण्डी
१५ अगस्त, १९९१ को अहिंसा प्रचार समिति में संलग्न अहिंसा प्रचार समिति पचपहाड़ की प्रथम वर्षगांठ की प्रसन्नता में भेंट ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर को भेंट

५००) श्री चांदमलजी ढढ्ढा, जयपुर
आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा. के संथारे के उपलक्ष्य में भेंट।

२४१) श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, यादगिरि
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को भेंट।

१०१) श्री सोहनलालजी बोथरा (जैन)
अपने सुपुत्र चि. महावीरचन्द बोथरा का शुभ विवाह सौ. कां. उषा सुपुत्री श्री बादलचन्दजी कटारिया के साथ दिनांक २८-६-१९९१ को सम्पन्न होने की प्रसन्नता में भेंट।

१००) श्री दगडूलालजी चुन्नीलालजी साण्ड, लासलगांव
स्व. जतनबाईजी की पुण्यस्मृति में भेंट।

५१) श्री मोतीलालजी बोहरा, जे. एम. बी. वाले, सवाईमाधोपुर
अपने सुपौत्र चि. गौरव के द्वारा निमाज में आचार्य प्रवर के चरण स्पर्श के उपलक्ष्य में भेंट।

५१) श्री विजयकुमारजी अजयकुमारजी गोलेच्छा, जयपुर
सौ. कां. संगीता सुपुत्री श्री विजयकुमारजी गोलेच्छा का शुभ विवाह सिद्धि निवासी श्रीमान् सुशीलकुमारजी जैन के सुपुत्र चि. संजय के साथ होने के उपलक्ष्य में भेंट।

५१) श्री अमृतलालजी मेहता, निम्बाहेड़ा
अपने पूज्य पिताजी श्री गेहरीलालजी मेहता की पुण्यस्मृति में भेंट।

५०१) साहित्य प्रकाशन की आजीवन सदस्यता हेतु

३९२. श्री मनसुखलालजी आनन्दरामजी धुधलिया, लोनेवाला (पूना)
३९३. श्री धनकुमारजी धाकड़, रामपुरा
३९४. श्री पारसजी जैन, जलगाँव
३९५. श्री धींगड़मलजी गौतमचन्दजी, सिवाना
३९६. श्री हस्तीमलजी मूलचन्दजी रातुकुड़िया, रातुकुड़िया
३९७. श्री मदनलालजी सुमेरचन्दजी बैद, मद्रास
३९८. श्री एल. के. सेठिया, मद्रास

३९९. श्री शान्तिलालजी सेठिया, मद्रास
४००. श्री सुरेशकुमारजी उमरावचन्दजी मूथा, सिकन्दराबाद
४०१. श्री शिवलाल भाई, बारां (कोटा)
४०२. श्री रतनचन्दजी पारसचन्दजी डांगी, झालरापाटन
४०३. श्री रिखबचन्दजी जैन, अजमेर

साहित्य प्रकाशन हेतु सहायतार्थ भेंट

५,०००) श्रीमती सुवाबाई भण्डारी, जोधपुर
आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के जीवनचरित्र के लिये भेंट।

४,०००) श्री प्रेमराजजी गांधी (थांवला वाले)
आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के जीवनचरित्र के लिये भेंट।

'स्वाध्याय शिक्षा' के लिये भेंट

१०१) मैसर्स शान्तिलालजी प्रेमचन्दजी गांधी, नई दिल्ली
दिनांक २-६-१९९१ को पं. रत्न श्री १००८ श्री हीराचन्दजी म. सा. के आचार्य पद चादर महोत्सव के उपलक्ष्य में भेंट।

स्वाध्याय संघ को भेंट

३५,०००) स्वाध्याय समिति, मद्रास
स्वाध्याय संघ को भेंट।

---

१०१ रुपये में १०८ पुस्तकें प्राप्त करें

अ. भा. जैन विद्वत् परिषद् द्वारा प्रारम्भ की गई "ज्ञान प्रसार पुस्तकमाला" के अन्तर्गत अब तक ७६ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। कुल १०८ पुस्तकें प्रकाशित करने की योजना है। प्रत्येक पुस्तक का फुटकर मूल्य दो रुपया है पर जो व्यक्ति या संस्था १०१ रुपये भेजकर ट्रैक्ट साहित्य सदस्य बन जायेंगे, उन्हें १०८ पुस्तकें निःशुल्क प्रदान की जायेंगी। कुछ पुस्तकें अप्राप्त हैं, वे दुबारा प्रकाशित होने पर सदस्यों को भेजी जायेंगी।

तपस्या, विवाह, जयन्ती, पुण्यतिथि पर प्रभावना के रूप में वितरित करने के लिए १०० या अधिक पुस्तकें खरीदने पर २५ प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा।

कृपया १०१ रुपये मनीआर्डर या ड्राफ्ट द्वारा "अखिल भारतीय जैन विद्वत् परिषद्" के नाम सी-२३५ ए, तिलक नगर, जयपुर-३०२००४ के पते पर भेजें।

—डॉ० नरेन्द्र भानावत
सम्पादक-संयोजक

Shri Bhudar Kushal Dharam Bandhu Kalyan Kosh, Jaipur

AUDITOR'S REPORT

We have examined the Balance Sheet of SHRI BHUDAR KUSHAL DHARAM BANDHU KALYAN KOSH, JAIPUR as at 31st March, 1989 and 1990 and the Income & Expenditure Account for the Year ended on that date which are in agreement with the books of accounts maintained by the said TRUST.

We have obtained all the information and explanations which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purpose of the audit. In our opinion, proper books of accounts have been kept by the above said Trust as far as appears from our examination of the books.

In our opinion and to the best of our information and according to information given to us, the said accounts give a true and fair view :—

(i) in the case of the Balance Sheet of the state of affairs of the above named trust as at 31st March, 1989 and 1990.

(ii) in the case of Income & Expenditure Account of the excess of Expenditure over Income of its accounting year ending on 31st March, 1989 and 1990. The prescribed particulars are annexed hereto.

JAIPUR
Dated : 11th Sep., 1989
and
Dated : 13th. February, 1991

For N. C. DHADDA & CO.,
(S. K. JAIN)
Partner
Chartered Accountant

Shri Bhudar Kushal Dharam Bandhu

Income and Expenditure Account for

Expenditure	Amount
To Cash grants to poor, grants for Medical & Education	2,44,392.05
To Postage Expenses	7,603.95
To Bank Commission	20.00
To Miscellaneous Expenses	397.30
To Difference in Trial Balance	1.00
	2,52,414.30

Balance Sheet as on

Liabilities		Amount
General Fund :		
As per last Balance Sheet	12,57,807.88	
Add : Contributions received towards corpus of the Trust	1,14,552.00	
	13,72,359.88	
Less : Excess of Expenditure over Income for the year	3,650.57	13,68,709.31
		13,68,709.31

JAIPUR

Dated : 11th Sep., 1989

Kalyan Kosh, Jaipur
the year ended on 31st March, 1989

Income	Amount
By Donations	82,101.00
By Interest on Deposits	1,66,662.73
By Excess of Expenditure over Income	3,650,57
	2,52,414.30

31st March, 1989

Assets		Amount
Deposits : (Including Accrued Interest)		
Hindusthan Zinc Ltd.	1,00,000.00	
Hindusthan Machine Tools Ltd.	1,00,000.00	
Cement Corporation of India Ltd.	1,50,000.00	
Steel Authority of India Ltd.	8,51,812.50	
Indian Telephone Industries Ltd.	1,00,000.00	13,01,812.50
Income-tax deducted at source		6,967.00
Balance with New Bank of India in S. B. A/c		40,905.40
Cash - in - hand		19,024.41
		13,68,709.31

AUDITOR'S REPORT
As per our report of even date
For N. C. DHADDA & CO.
(S. K. JAIN)
Partner
Chartered Accountant

Shri Bhudar Kushal Dharam Bandhu

Income & Expenditure Account for the

Expenditure	Amount (Rs.)
To Cash grants to poor, grants for Medical & Education	2,63,196.00
To Postage Expenses	8,688.20
To Bank Commission	10.00
To Miscellaneous Expenses	529.40
To Differences in Trial Balance	0.40
To Excess of Income over Expenditure	9,583.02
	2,82,007.02

Balance Sheet

Liabilities		Amount (Rs.)
General Fund :		
As per last Balance Sheet	13,68,709.31	
Add : Excess of Income over Expenditure for the year	9,583.02	13,78,292.33
		13,78,292.33

Jaipur

Dated : 13th February, 1991

Kalyan Kosh, Jaipur

year ended on 31st March, 1990

Income	Amount (Rs.)
By Donations	1,05,351.00
By Interest on Deposits	1,76,656.02
	2,82,007.02

as on 31st March, 1990

Assets		Amount (Rs.)
Deposits (including accrued interest)		
Cement Corporation of India Ltd.	1,50,000.00	
Steel Authority of India Ltd.	10,50,000.00	
Indian Telephone Industries Ltd.	1,03,394.01	13,03,394.01
Income Tax deducted at source		6,434.00
Balance with New Bank of India in S. B. A/c		46,363.91
Cash in hand		22,100.41
		13,78,292.33

AUDITORS' REPORT

As per our report of even date

For N. C. DHADDA & CO.

(S. K. JAIN)

Partner

Chartered Accountant

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल, बापू बाजार, जयपुर

आवश्यक सूचना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर और सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल, जयपुर के कार्यकारिणी की संयुक्त बैठक दिनांक १९ सितम्बर, १९९१ (तदनुसार भादवा सुदी ११, गुरुवार) को मध्याह्न १ बजे रेनबो हाउस, पावटा, जोधपुर में रखी गई है। कार्यकारिणी के सभी परामर्श-दाताओं और सदस्यों से नम्र निवेदन है कि इस मीटिंग में पधारने की कृपा करावें।

मंडल के विचारणीय बिन्दु

(i) गत मीटिंग की जो जोधपुर में दिनांक १ जून, १९९१ को हुई, उसकी कार्यवाही की पुष्टि,

(ii) मंडल द्वारा साहित्य की प्रगति,

(iii) मंडल के साहित्य की पुस्तकों का मूल्य-निर्धारण

(iv) 'जिनवाणी' पत्रिका का वार्षिक शुल्क, त्रिवार्षिक शुल्क, आजीवन सदस्यता शुल्क (देश और विदेश में) बढ़ाना

(v) स्वाध्याय संघ की प्रगति

(vi) मंडल को अ० भा० श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा अनुदान

(vii) अध्यक्ष महोदय की आज्ञा से अन्य विषयों पर विचार।

मोफतराज मुणोत
अध्यक्ष
जगदीशमल कुम्भट
महामंत्री
अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी
श्रावक संघ, जोधपुर

डॉ. सम्पतसिंह भाण्डावत
अध्यक्ष
चैतन्य ढढ्ढा
मन्त्री
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,
जयपुर

यह शरीर नौका रूप है, जीवात्मा उसका नाविक है और संसार समुद्र है। महर्षि इस देह रूपी नौका के द्वारा संसार-सागर को तैर जाते हैं।

उत्तराध्ययन २३/७३

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर

आपके लिए उपयोगी साहित्य जो उपलब्ध है

क्र.सं.	नाम पुस्तक		लेखक/सम्पादक/अनुवादक	मूल्य
१.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग–१, ३, ६	:	,,	४.५०,५.०० व ७.००
२.	उत्तराध्ययन सूत्र भाग-१-२-३	:	,,	१५.००, ३५.०० व २५.००
३.	व्रत प्रवचन संग्रह	:	पं. र. श्री हीरामुनिजी	४.००
४.	जैन संस्कृति और राजस्थान	:	डॉ. नरेन्द्र भानावत	२५.००
५.	स्वाध्याय स्तवनमाला	:	सम्पतराज डोसी	११.००
६.	सप्त चरित्र संग्रह भाग–२	:	,,	५.००
७.	आनुपूर्वी	:	,,	०.२५
८.	सामायिक सूत्र	:	,,	१.००
९.	आध्यात्मिक पाठावली	:	पं० शशिकान्त झा	१.००
१०.	दीक्षा कुमारी का प्रवास	:	अनु० लालचन्द्र जैन	१५.००
११.	आध्यात्मिक आलोक	:	पं० शशिकान्त झा	३०.००
१२.	जैनदर्शन : आधुनिक दृष्टि	:	डॉ० नरेन्द्र भानावत	२०.००
१३.	जैन विवाह विधि	:	जशकरण डागा	१.००
१४.	कर्म सिद्धान्त	:	डॉ. नरेन्द्र भानावत	४०.००
१५.	कर्म ग्रन्थ	:	सं. केवलमल लोढ़ा	८.००
१६.	उपमिति भवप्रपंच कथा	:	सिद्धर्षिगणि	१५०.००
१७.	श्रमण आवश्यक सूत्र	:	पार्श्वकुमार मेहता	२.००
१८.	स्वाध्याय शिक्षा (भाग १ से १५)	:	ज्ञान वृद्धि हेतु	—
१९.	निर्ग्रन्थ भजनावली	:	गजसिंह राठौर	२०.००
२०.	अन्तगड दसा सुतं	:	श्री धर्मचन्द जैन	२०.००
२१.	श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र (मूल)	:	श्री पार्श्वकुमार मेहता	१.००
२२.	जैन तमिल साहित्य और तिरुक्कुरल	:	डॉ. इन्दरराज वैद	२०.००
२३.	अपरिग्रह : विचार और व्यवहार	:	डॉ. नरेन्द्र भानावत	५०.००
२४.	श्रावक धर्म और समाज	:	,,	१५.००
२५.	जैन बाल शिक्षा	:	कन्हैयालाल लोढ़ा	१.००
२६.	ज्ञान-प्रसार पुस्तकमाला (ट्रेक्ट साहित्य) भाग ३१ से ७२	:	विविध लेखक प्रत्येक का मूल्य	२.००
२७.	गृहस्थ साधक टीप	:		०.५०
२८.	पर्युषण-सन्देश	:	जशकरण डागा	११.००
२९.	जैन तत्त्व प्रश्नोत्तरी	:	कन्हैयालाल लोढ़ा	५.००
३०.	दुःख मुक्तिः सुख प्राप्ति	:	कन्हैयालाल लोढ़ा	३०.००

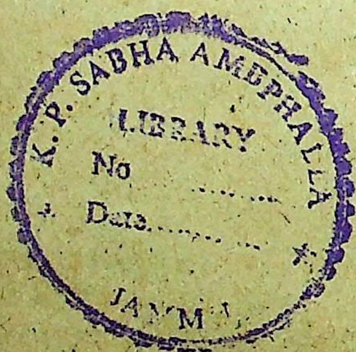
(Regd. No. R. J. 2529
Licenced to post without prepayment. Licence No. 6)

अपना घर

शरीर को अपना घर माना और उसमें रहा। किन्तु वह अपना नहीं आँसू बहाते विवशता से एक दिन उसे खाली करना पड़ा। यदि वह अपना तो उसे खाली न करना पड़ता। अनन्त जन्मों में हर बार ऐसा हुआ। भी आँखें नहीं खुली। कितनी रोमांचक है जीवन की कहानी! खैर, अब आँखें खुल जाएं तो अतीत घटनाचक्र प्रेरक बन जाएगा।

—संत अमि

"जिनवाणी" बापू बाजार, जयपुर (राजस्थान)



R ND S

ON INDIA GOV